उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम

संस्कृत व्याकरण-३४६

पुस्तक-१

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान)

ए-२४-२५, संस्थागत क्षेत्र, सेक्टर-६२, नोएडा-२०१३०९ (उत्तरप्रदेश)

वेबसाइट - www.nios.ac.in, टोल फ्री नंबर-१८००१८०९३९३

उच्चतर माध्यमिक
संस्कृत व्याकरण (३४६)

सलाहकार समिति

प्रो. सरोज शर्मा
अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तरप्रदेश-२०१३०९

डॉ. राजीव कुमार सिंह
निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तरप्रदेश-२०१३०९

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

प्रो. अर्कनाथ चौधरी (समिति अध्यक्ष)
उपकुलपति
श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय
वेरावल-३६२२६६ (गुजरात)

डॉ. नीरज कुमार भार्गव (समिति उपाध्यक्ष)
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय
बेलुड़ मठ, हावड़ा-७११२०२ (प. बंगाल)

डॉ. हरि राम मिश्र
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

स्वामी वेदतत्त्वानन्द
प्राचार्य
रामकृष्ण मठ विवेकानन्द वेद विद्यालय
बेलुड़ मठ, हावड़ा-७1१२०२ (प. बंगाल)

डॉ. विजेन्द्र सिंह
वरिष्ठ प्राध्यापक (संस्कृत)
शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार
नई दिल्ली

श्री मलय पोडे
सहायक प्राध्यापक (WBES) (संस्कृत विभाग)
राणीबाँध सरकारी महाविद्यालय
स्थान-राणीबाँध, मण्डल-बाँकुड़ा-७२२१३५
(प. बंगाल)

श्री सुमन्त चौधरी
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
सबं सजनीकान्त महाविद्यालय
पत्रालय-लुटुनिया, रक्षालय-सबं
मण्डलम-पश्चिम मेदिनीपुरम-७२११६६
(प. बंगाल)

डॉ. राम नारायण मीणा
सहायक निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तरप्रदेश-२०१३०९

संपादक मण्डल

डॉ. नीरज कुमार भार्गव
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय
बेलुड़ मठ, हावड़ा-७११२०२ (प. बंगाल)

स्वामी वेदतत्त्वानन्द
प्राचार्य
रामकृष्ण मठ विवेकानन्द वेद विद्यालय
बेलुर मठ, मण्डल-हावडा-७११२०२ (प. बंगाल)

पाठ लेखक

(पाठ १-८)
श्री मलय पोडे
सहायक प्राध्यापक (WBES)
(संस्कृत विभाग)
राणीबाँध सरकारी महाविद्यालय
स्थान-राणीबाँध, मण्डल-बाँकुड़ा-७२२१३५
(प. बंगाल)

(पाठ ९-११)
डॉ. नीरज कुमार भार्गव
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय
बेलुड़ मठ, हावड़ा-७११२०२ (प. बंगाल)

(पाठ १२-२०)
स्वामी वेदतत्त्वानन्द
प्राचार्य
रामकृष्ण मठ विवेकानन्द वेद विद्यालय
बेलुर मठ, मण्डल-हावडा-७११२०२ (प. बंगाल)

(पाठ २१-२७, ३०-३१)
श्री राहुल गाजी
अनुसन्धाता (संस्कृत विभाग)
जादवपुर विश्वविद्यालय
कलकता-७०००३२ (प. बंगाल)

(पाठ २८-२९)
श्री विष्णु पदपाल
अनुसन्धाता (संस्कृत अध्ययन विभाग)
रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय
मण्डल-हावडा-७११२०२ (प. बंगाल)

अनुवादक मंडल

डॉ. योगेश शर्मा
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग
बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान-३०४०२२

डॉ. राम नारायण मीणा
सहायक निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तर प्रदेश-२०१३०९

श्री गैंदा राम जाट
वरिष्ठ अध्यापक (संस्कृत)
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान,
राजस्थान सरकार

श्री पुनीत त्रिपाठी
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तर प्रदेश-२०१३०९

सुश्री प्रियंका जैन
अनुसन्धाता
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग
बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान-३०४०२२

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. राम नारायण मीणा
सहायक निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तर प्रदेश-२०१३०९

रेखा चित्रांकन, मुखपृष्ठ चित्रण तथा संगणकीय विन्यास

मुखपृष्ठ चित्रण
स्वामी हररूपानन्द
रामकृष्ण मिशन
बेलुड मठ
मण्डल-हावडा-७११२०२ (प. बंगाल)

संगणकीय विन्यास
श्रीकृष्णा ग्राफिक्स
दिल्ली

आपसे दो बातें...

अध्यक्षीय सन्देश

प्रिय विद्यार्थी,

'भारतीय ज्ञान परम्परा' पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए आपका हार्दिक स्वागत है।

भारत अति प्राचीन और अति विशाल है। भारत का वैदिक वाङ्मय भी उतना ही प्राचीन, प्रशसनीय और महान है। सृष्टिकर्ता भगवान् ही भारतीयों के सम्पूर्ण विद्याओं के प्रेरक है, ऐसा सिद्धान्त शास्त्रों में प्राप्त होता है। भारत के अच्छे विद्वान, सामान्य जनमानस तथा अन्य ज्ञानी लोगों का प्राचीन काल में आदान-प्रदान का माध्यम सस्कृत भाषा ही थी ऐसा सभी को ज्ञात है। इतने लम्बे काल में भारत के इतिहास में जो शास्त्र लिखे गए, जो चिन्तन उत्पन्न हुए, जो भाव प्रकट हुए वे सभी संस्कृत भाषा के भण्डार में निबद्ध हैं। इस भण्डार का आकार कितना, भाव कितने गभीर, मूल्य कितना अधिक इसका निर्धारण करने में कोई भी समर्थ नहीं है। प्राचीन काल में भारतीय क्या क्या पढ़ते थे, वो एक श्लोक के माध्यम से प्रकट होता है -

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश॥ (वायुपुराणम् ६१.७८)

इस श्लोक में चौदह प्रकार की विद्याएँ बताई गयी है। चार वेद (और चार उपवेद) छः वेदाङ्, मीमांसा (पूर्वोत्तरमीमांस) न्याय (आन्वीक्षिकी) पुराण (अठाहर मुख्य पुराण और उपपुराण) धर्मशास्त्र (स्मृति) ये चौदह विद्या कहलाते हैं। अनेक काव्य और बहुत शास्त्र हैं इन सभी विद्याओं का प्रवाह जल के समान ज्ञान प्रदान करने वाला प्रगति करने वाला और वृद्धि करने वाला लम्बे समय से चल रहा है। समाज के कल्याण के लिए भारत के विद्या दान परम्परा में गुरुकुलो में आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, आयुर्वेद, राजनीति, दण्डनीति, काव्य, काव्यशास्त्र और अन्य बहुत से शास्त्र पढ़ते-पढ़ाते थे।

विद्या के शिक्षण के लिए ब्रह्मचारी परिवार को छोड़कर गुरुकुल में ब्रह्मचर्याश्रम को धारण कर जीवन बिताते थे और इन विद्याओं में पारंगत होते थे। इन विद्याओं में आज भी कुछ पारंगत लोग है। प्राकृतिक परिवर्तन के कारण, विदेशी आक्रमण के कारण, स्वदेश में हो रही ऊठा-पटक इत्यादि अनेक कारणों से पहले जैसा अध्ययन-अध्यापन की परम्परा अब छूटती जा रही है। इन पाठ्यक्रमों की परीक्षा प्रमाणपत्र इत्यादि आधुनिक शिक्षण पद्धति के द्वारा कुछ राज्यों में होता है, परन्तु बहुत से राज्यों में नहीं होता है। अतः इन प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन, परीक्षण, और प्रमाणीकरण का होना आवश्यक है। इसे ध्यान में रखकर यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के द्वारा प्रारम्भ किया गया है। लोगों के कल्याण के लिए जितना ज्ञान आवश्यक है वैसा ज्ञान इन शास्त्रों में निहित किया गया और मनुष्य के सामने प्रकट हो, ऐसा लक्ष्य है। जिसके द्वारा सभी यहाँ पर सुखी हो, सभी निरोगी हो, सभी कल्याण दृष्टि से कल्याणकारी हों। किसी को कोई दुख प्राप्त नहीं हो, कोई किसी को दुःख नहीं दे, इस प्रकार अत्यन्त उदार उद्देश्य को ध्यान में रखकर 'भारतीय ज्ञान परम्परा' इस नाम से इस पाठ्यक्रम की रचना की गई है। विज्ञान शरीरारोग्य का चिन्तन करता है, कला विषय मनोविज्ञान को तथा मनोविज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान का पोषण करता है। विज्ञान साधनस्वरूप और सुखोपभोग साध्य है। अतः निःसन्देह रूप से कहा जा सकता है कि कला विषय शाखा विज्ञान से भी श्रेष्ठ है। लोग कला को छोड़कर विज्ञान से सुख नहीं प्राप्त कर सकते हैं परन्तु विज्ञान को छोड़कर कला से सुख को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

यह संस्कृत व्याकरण का पाठ्यक्रम छात्रानुकूल, ज्ञानवर्धक, लक्ष्यसाधक और पुरुषार्थ साधक है ऐसा मेरा मानना है।

इस पाठ्यक्रम के निर्माण में जिन हिताभिलाषी, विद्वांन, उपदेष्टा, पाठलेखक, त्रुटिसंशोधक और मुद्रणकर्ता ने साक्षात् या परोक्षरूप से सहायता की, उनको संस्थान पक्ष से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञपित करते हैं। रामकृष्ण मिशन-विवेकानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीमान् स्वामी आत्मप्रियानन्द जी का विशेषरूप से धन्यवाद जिनकी आनुकूलता और प्रेरणा के बिना इस कार्य की परिसमाप्ति दुष्कर थी।

इस पाठ्यक्रम के अध्येताओं का विद्या से कल्याण हो, सफल हो, विद्वांन हो, सज्जन हो, देशभक्त हो, समाज सेवक हो ऐसी हमारी हार्दिक इच्छा है।

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

आपसे दो बातें...

निदेशकीय वाक्

प्रिय पाठक,

'भारतीय ज्ञान परम्परा' पाठ्यक्रम को पढ़ने की इच्छा से उत्साहित भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरागी और उपासकों का हार्दिक स्वागत करते है। अत्यधिक हर्ष का विषय है, की गुरुकुलों में पढ़ाये जाने वाला पाठ्यक्रम हमारे राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित किया गया है। आशा है की लम्बे समय से हमारी संस्कृति से जो दूरी थी वह अब समाप्त हो जाएगी। हिन्दु जैन बौद्धों के धर्मिक, आध्यात्मिक और काव्यादि वाङ्मय प्रायः संस्कृत में लिखा हुआ है। इस 24 करोड़ मनुष्यों के प्रिय विषयों की भूमिका के माध्यम से प्रस्तुत प्रवेश योग्यता के द्वारा और मन को प्रसन्न करने के लिए माध्यमिक स्तर और उच्चतर माध्यमिक स्तर में कुछ विषय पाठ के माध्यम से सम्मिलित किये गए हैं। जैसे आंग्ल, हिंदी, आदि भाषा ज्ञान के बिना उस भाषा के लिखे गए माध्यमिक स्तरीय ग्रन्थ पढ़ने में और समझ में सक्षम नहीं हो सकते हैं, वैसे ही यहाँ पर प्रारम्भिक संस्कृत को नहीं जानते तो इस पाठ्यक्रम को जानने में समर्थ नहीं हो सकते हैं। अतः प्रारम्भिक संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के जानकार छात्र यहाँ इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के अधिकारी है ऐसा जानना चाहिए।

गुरुकुलों में अध्ययन करने वाले छात्र आठवीं कक्षा तक जितना अपनी परंपरा से अध्ययन करें। नौवीं, दशवीं कक्षा और ग्यारहवीं तथा बारहवीं कक्षा तक भारतीय ज्ञान परम्परा के इस पाठ्यक्रम का निष्ठा से नियमित अध्ययन करें। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए योग्य होंगे।

संस्कृत के विभिन्न शास्त्रों में किया गया कठिन परिश्रम विद्वान्, प्राध्यापक, शिक्षक और शिक्षाविद् इस पाठ्यक्रम का प्रारूप रचना में, विषय निर्धारण के लिए विषय परिमाण निर्धारण में विषय प्रकट करने का भाषा स्तर निर्णय में और विषय पाठ लिखने में संलग्न हैं। अतः इस पाठ्यक्रम का स्तर उन्नत होना है।

संस्कृत व्याकरण की यह स्वाध्याय सामग्री आपके लिए पर्याप्त सुबोध रुचिकर आनन्दरस को देने वाली, सौभाग्य देने वाली धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, उपयोगी रहेगी ऐसी हम आशा करते हैं। इस पाठ्यक्रम का प्रधान लक्ष्य है की भारतीय ज्ञान परम्परा का शैक्षणिक क्षेत्रों में विशिष्ट और योग्य स्थान स्वीकृत होना चाहिए। वह लक्ष्य इस पाठ्यक्रम के माध्यम से पूर्ण होगा, ऐसा हमारा दृढ विश्वास है। पाठक अध्ययनकाल में यदि मानते है की इस अध्ययन सामग्री में पाठ के सार में जहाँ संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन संस्कार चाहते हैं, उन सभी के प्रस्तावों का हम स्वागत करते हैं। इस पाठ्यक्रम को फिर भी और अधिक प्रभावी, उपयोगी और सरल बनाने में आपके साथ हम हमेशा तत्पर है।

सभी अध्येताओं के अध्ययन में सफलता और जीवन में सफलता के लिए और कृतकृत्य के लिए हमारे आशीर्वचन-

किं बाहुना विस्तरेण। अस्माकं गौरववाणीं जगति विरलाम् सर्वविद्याया लक्ष्यभूताम् एव उद्धरामि॥

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे आवेश्यतां नो मतिरप्य हैतुकी॥

निदेशक

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

आपसे दो बातें...

समन्वयक वचन

प्रिय जिज्ञासुओं

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु सह वीर्य करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

परम्परा को आधार मानकर यह प्रार्थना कि हमारा अध्ययन विघ्नों से रहित हो। अज्ञान का नाश करने वाला तेजस्वि हो। द्वेष भावना का नाश हो। विद्यालाभ के द्वारा सभी कष्टों की शान्ति हो।

भारतीय ज्ञान परम्परा इस पाठ्यक्रम के अङ्गभूत यह पाठ्यक्रम उच्चतर माध्यमिक कक्षा के लिए निर्धारित किया गया है। इस पाठ्यक्रम की अध्ययन सामग्री आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं परम हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। जो सरल संस्कृत तथा हिन्दी भाषा को जानता है, वह इस अध्ययन में समर्थ है।

संस्कृत व्याकरण का अध्ययन स्तर के अनुसार होता है। इस लिए स्तरों के प्रत्येक पर्व का आरोहण क्रम के अनुसार ही होना चाहिए। अतः पाणिनीय अष्टाध्यायी का विद्वानों ने भिन्न क्रमानुसार व्याख्या किया है। यहाँ भी उसी प्रक्रिया का क्रम है। उसी क्रम को स्वीकार कर यह अध्ययन सामग्री सोपान, पर्व आदि के क्रम में निर्मित है। एक भाग माध्यमिक और अन्य भाग उच्चतर माध्यमिक कक्षा में है। इससे पाणिनीय तंत्र में प्रवेश के लिए छात्र की योग्यता बढ़ती है।

उच्चतर माध्यमिक कक्षा में दिया हुआ पाणिनीय व्याकरण विषय भी अत्यन्त उपकारक है। यह सामग्री पाणिनीय व्याकरण के श्रद्धा सहित अध्ययन में प्रवेश के लिए और मन को शांति देने वाली है। इस ग्रन्थ के आकार पर नहीं जाना चाहिए और न इससे भय होना चाहिए अपितु गम्भीर रूप से अध्ययन करना चाहिए।

सम्पूर्ण पाठ्य पुस्तक तीन भागों में विभक्त है। इसके अध्ययन से छात्र पाणिनीय व्याकरण के मूलभूत ज्ञान को प्राप्त करेंगे।

पाठक पाठों को अच्छी तरह से पढ़कर पाठ में आये प्रश्नों के उत्तरों पर स्वयं विचार कर अन्त में दिए हुए प्रश्नों के उत्तरों को देखें, और उन उत्तरों को अपने उत्तरों से मिलाएं। प्रत्येक पत्र में दिए हुए रिक्त स्थान पर टिप्पणी करना चाहिए। पाठ के अन्त में दिये प्रश्नों के उत्तरों का निर्माण करके परीक्षा के लिए तैयार हो जाएँ। अध्ययन काल में किसी भी कठिनता का अनुभव करते हैं, तो अध्ययन केन्द्र में किसी भी समय जाकर के समस्या के समाधान के लिए आचार्य के समीप जाएँ। या राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के साथ ई-पत्रद्वारा सम्पर्क करें। वेबसाइट पर भी संपर्क व्यवस्था है। वेबसाइट www.nios.ac.in इस प्रकार से है।

ये पाठ्य विषय आपके ज्ञान को बढ़ाए, परीक्षा में सफलता को प्राप्त करवाए, रुचि बढाए, मनोरथ पूर्ण करे, ऐसी कामना करते हैं।

अज्ञानान्धकारस्य नाशाय ज्ञानज्योतिषः दर्शनाय च इयं में हार्दिकी प्रार्थना.
ॐ असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भवत्कल्याणकामी

पाठ्यक्रम समन्वयक
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

अपने पाठ कैसे पढ़ें !

प्रिय शिक्षार्थी एनआईओएस हर कदम पर आपके साथ है और विशेषज्ञों के दल के साथ मिलकर स्तर को ध्यान में रखते हुए ''संस्कृत व्याकरण'' की यह पाठ्य सामग्री तैयार की गई है। इसमें अपनाया गया प्रारूप स्वतंत्र शिक्षण के अनुकूल है। यदि आप इसमें दिए अनुदेशों का पालन करेंगे तो आप इस सामग्री से अधिकाधिक लाभ ले सकेंगे। इस सामग्री में प्रयुक्त प्रासंगिक आइकॉन आपका मार्गदर्शन करेंगे। इन आइकॉन को आपकी सुविधा के लिए नीचे स्पष्ट किया गया है।

शीर्षक : आपको अंदर की पाठ्य सामग्री का स्पष्ट संकेत देगा।

परिचय : यह आपको पूर्ववर्ती पाठ से जोड़ते हुए पाठ का परिचय कराएगा।

उद्देश्य : ये ऐसे कथन हैं, जिनसे आपको पता चलेगा कि आप इस पाठ से क्या सीखने जा रहे हैं। उद्देश्य आपको यह जांचने में भी सहायता करेंगे कि आपने इस पाठ को पढ़ने के बाद क्या सीखा है। इन्हें अवश्य पढ़ें।

नोट्स : प्रत्येक पृष्ठ पर किनारे के हाशियों में खाली स्थान है, जिसमें आप महत्वपूर्ण बिंदु लिख सकते हैं या नोट्स बना सकते हैं।

पाठगत प्रश्न : प्रत्येक खंड के बाद स्वयं जांच हेतु बहुत छोटे उत्तरों वाले प्रश्न हैं, जिनके उत्तर पाठ के अंत में दिए गए हैं। इनसे आपको अपनी प्रगति जांचने में सहायता मिलेगी। इन्हें अवश्य हल करें। इनको सफलतापूर्वक पूरा करने पर आप जान सकेंगे कि आपको आगे बढ़ना चाहिए या इसी पाठ को दोबारा पढ़ना चाहिए।

आपने क्या सीखा : यह पाठ के मुख्य बिंदुओं का सारांश है। इससे आपको संक्षिप्त में दोहराने में सहायता मिलेगी। इसमें आप अपने बिंदु भी जोड़ सकते हैं।

पाठांत प्रश्न : यह लंबे व छोटे उत्तरों वाले प्रश्न हैं जो आपको पूरे विषय की स्पष्ट समझ प्राप्त करने के लिए अभ्यास करने का अवसर प्रदान करते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर : इससे आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि आपने प्रश्नों के उत्तर ठीक दिए हैं या नहीं।

पुस्तक-१

समास और स्त्री प्रत्यय

१. केवल समास और अव्ययीभाव समास

२. तत्पुरुष समास-द्वितीयादि तत्पुरुष समास

३. तत्पुरुष समास-तद्धितार्थादितत्पुरुषसमास

४. तत्पुरुष समास-कुगतिप्रादि समास और, उपपद समास

५. बहुब्रीहि समास-व्यधिकरण बहुब्रीहि और समान्त प्रत्यय

६. बहुब्रीहि समास-समासान्त प्रत्यय निपात व्यवस्थादिकम्

७. द्वन्द्व समास-पूर्वपरनिपात विशेषकार्य और एकशेष

८. प्रकीर्ण समासप्रकरण

स्त्री प्रत्यय

९ स्त्रीप्रत्यय-चाप् टाप् डाप् प्रत्यय

१० स्त्रीप्रत्यय-डाप् डीप् प्रत्यय

११ स्त्रीप्रत्यय-डाप् प्रत्यय

पुस्तक-२

तिङन्त प्रकरण

१२. भ्वादि प्रकरण में - भू धातु के लट् लकार में रूपसिद्धि-१

१३. भ्वादि प्रकरण में - भू धातु के लट् लकार में रूपसिद्धि-२

१४. भ्वादि प्रकरण में - भू धातु के लिट् और लुट् लकार में रूपसिद्धि

१५. भ्वादि प्रकरण में - भू धातु के लृट् और लोट् लकार में रूप सिद्धियाँ

१६. भ्वादि प्रकरण में - भू धातु के लिङ्, लुङ् और लृङ् लकारों में रूप सिद्धियाँ

१७. भ्वादि प्रकरण में - लट् लिट् के सूत्रशेष

१८. भ्वादि प्रकरण में - लिट् लकार का सूत्रशेष

१९. भ्वादि प्रकरण में - लिङ् लुङ् के सूत्रशेष

२०. भ्वादि प्रकरण में आत्मनेपद प्रकरण

२१. अदादि से दिवादि तक - अद्, हु, दिव् धातुएं

२२. स्वादि से रुधाादि तक - सु तुद् रुध धातवः

२३. तनादि से चुरादि तक - तन् कृ क्री चुर् धातवः

पुस्तक-3

णिजन्त प्रत्यय

२४. णिजन्त प्रकरण

२५. सन्नन्त प्रकरण

२६. परस्मैपदात्मनेपद प्रकरण

२७. भावकर्म प्रकरण

तद्धित प्रत्यय

२८. अपत्याधिकार प्रकरण

२९. मत्वर्थीय प्रकरण

३०. रक्ताद्यर्थक प्रकरण

३१. ठञधिकारादि प्रकरण

विषय सूची

पुस्तक-१

समास और स्त्री प्रत्यय

१.	केवल समास और अव्ययीभाव समास	१
२.	तत्पुरुष समासः-द्वितीयादि तत्पुरुष समास	२९
३.	तत्पुरुष समास-तद्धितार्थादि तत्पुरुष समास	५२
४.	तत्पुरुष समास-कुगतिप्रादि समास और, उपपद समास	७६
५.	बहुब्रीहि समास-व्यधिकरण बहुब्रीहि और समान्त प्रत्यय	९९
६.	बहुब्रीहि समास-समासान्त प्रत्यय निपातव्यवस्थादि	११९
७.	द्वन्द्व समास-पूर्वपर निपात विशेष कार्य और एकशेष	१३७
८.	प्रकीर्ण समास प्रकरण	१५७

स्त्री प्रत्यय

९.	स्त्री प्रत्यय-चाप् टाप् डाप् प्रत्यय	१७७
१०.	स्त्री प्रत्यय-डाप् डीप् प्रत्यय	१८९
११.	स्त्री प्रत्यय-डाप् प्रत्यय	२०३

1

केवल समास और अव्ययी भाव समास

''समसनं समास:'' यह समास का सामान्य लक्षण है। एकीभवन के अर्थ में विद्यमान होने से सम् उपसर्गपूर्वक असु धातु से ''भावे'' इस सूत्र द्वारा घञ् प्रत्यय होने पर समास शब्द निष्पन्न होता है। समसनम् नाम बहुत सारे पदों के मेल से एकपदी होता है। पठितुम् इच्छति इस अर्थ में पिपठिषति इत्यादि में सन् प्रत्यय होने पर एकपदी भाव होता है। तो भी यहाँ समाज होने पर आपत्ति है। इसके निराकरण के लिए ''पाणिनीयसङ्केतसम्बन्धेन समास पदत्वम्'' ऐसा समास का लक्षण करना चाहिए। ''सह सुपा'' इत्यादि सूत्रों द्वारा विहित ''समासपदवाच्या भवन्तु'' ऐसा संकेत पाणिनी द्वारा किया गया है। एवम् यहाँ तात्पर्य यह है कि पाणिनी द्वारा जिनमें समाज संज्ञा की गई है वे ही समास पद माना जाना चाहिए।

समास पदविधियों में अन्यतम है। और जहाँ जो पद होते हैं उनमें ''समर्थ:पदविधि'' इस सूत्र बल से समान अर्थ होते हैं। और सामर्थ्य के दो भेद होते हैं (1) एकार्थीभाव सामर्थ्य (2) अपेक्षासामर्थ्य। समास में एकार्थीभावसामर्थ्य यही सिद्धान्त है।

समास के भेद के विषय में बहुत सी विप्रतिपत्ति है। सामान्यतया समास के पञ्च (पाँच) भेद होते हैं। (1) केवल समास (2) अव्ययीभावसमास (3) तत्पुरुष समास (4) द्वन्द्व समास (5) बहुब्रीहि समास। समास के भेद विषय में अन्तिम पाठ में विस्तारपूर्वक आलोचन (विचार) किया जायेगा इस पाठ में केवल समास और अव्ययी भाव समास का विस्तारपूर्वक विवरण है। अत: उन दोनों के स्वरूप का वर्णन किया जा रहा है।

केवल समास - अव्ययी भाव समास, तत्पुरुष समास, बहुब्रीहि द्वन्द्व समास इनको समास की विशेष संज्ञाये हैं। इन विशेष संज्ञाओं से निर्युक्त जो समास है वही केवल समास अथवा सुप्सुपा समास कहलाता है।

अव्ययी भाव समास–जिस समास में प्राय: पूर्व पदार्थ प्रधान होता है अव्ययी भाव समास कहा जाता है। पूर्व पद का अर्थ पूर्व पदार्थ। पूर्वपद का अर्थ प्रधान जिस में हैं वही पूर्वपदार्थ

प्रधान है। जैसे अधिहरि: भक्ति: अस्ति यहाँ पर अधिहरि पद में अव्ययीभाव समास है। यहाँ अधि पूर्व पद है। उसका अर्थ ही अधिकरण (आधार) है। हरि उत्तर पद है। जिसका अर्थ विष्णु है। यहाँ पर अधिहरि इस समस्त पद हरि आधार है। और वाक्य का हर्याविकरणिका: भक्ति: ऐसा अर्थ है। और यह सुस्पष्ट है कि अधिहरि इस पद में विद्यमान अधि इस पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता है।

इस पाठ में क्रमश: केवल समास और अव्ययीभाव समास सूत्रों की आलोचना की जा रही है।

समास विधायक सूत्रार्थ लेखन अवसर पर ''बहुत समस्यते'' इस पद का प्रयोग है। समस्थते इस पद का अर्थ होता है। समास संज्ञक होना। यथा–''सहसुपा'' इस सूत्र द्वारा सुबन्त की सुबन्त के साथ समास होता है। इसका तात्पर्य होता है सुबन्त की सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। यही दूसरी अवधारणा है।

''व्याकरणाध्यनकाले कुत्र अवधानं देयम्''

बहुत जगह शास्त्रों में मूल के कष्ठपाठ भी आवश्यक नहीं होना चाहिए। परन्तु व्याकरण के रूप साधना चाहिए क्योंकि सूत्रों के उल्लेख के आगे रूप साधे गये हैं। सूत्र का लक्षण ही बोला जाता है। क्योंकि लक्षण जिस शब्द स्वरूप का संस्कार करता है वही शब्दस्वरूप उसका लक्ष्य कहा जाता है। अत: व्याकरण के छात्र द्वारा उसके लक्षण और लक्ष्य का अच्छी प्रकार से ज्ञान होना चाहिए। जो लक्षण का अर्थ जानता है वही लक्ष्य का संस्कार करने के लिए होता है। अत: लक्षण का अर्थ लक्ष्य यह त्रितय निष्ठा से जानना चाहिए। यहीं व्याकरण अध्ययन के रास्ते हैं। निश्चित रूप से जो वैद्य रोग जानता है और औषधि जानता है और औषधि का प्रयोग भी जानता है। इनमें एक भी नहीं जानता तो वह किस प्रकार का वैद्य है? इस प्रकार वही निश्चित रूप से वैयाकरण है जो लक्षण जानता है, अर्थ जानता है और लक्ष्य जानता है और लक्षण से लक्ष्य का संस्कार करता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- समास में कितने प्रकार के सामर्थ्य अपेक्षा की जाती है यह जान पाने में;
- केवल समास विधान किससे होता है यह जान पाने में;
- अव्ययी भाव समास विधायक सूत्र कौन से हैं यह जान पाने में;
- अव्ययी भाव समास में समासान्त प्रत्यय कौन से हैं यह जान पाने में।

1.1 ''समर्थ: पदविधि:''

सूत्रार्थ– पद सम्बन्धि जो कार्य उसका एकार्थीभाव सामर्थ्य के समान पदात्रित होता है।

सूत्र व्याख्या–सूत्र के छः विधियों में पाणिनीय सूत्रों में यह परिभाषा सूत्र है इस सूत्र में दो पद हैं। वहाँ समर्थः यह प्रथमाविभक्ति का एकवचनान्त पद है। पदविधि यह प्रथमा विभक्ति एकवचनान्त पद है। विधान किया जाता है अर्थात् विधीयते ऐसा विधि कार्य है। वि उपसर्ग पूर्वक डू धाञ् धारण और पोषण इस अर्थ में धातु से ''उपसर्गे धोः किः'' इस सूत्र से कर्म में कि प्रत्यये होने पर विधि शब्द निष्पन्न होता है। पदों की विधि। इसमें षष्ठीतत्पुरुष समास है। इससे पद के सम्बन्धी विधि ऐसा अर्थ होता है। समर्थः यह पद यहाँ समर्थ आश्रित होने पर लाक्षणिक है। सूत्र का अर्थ होता है– पद सम्बन्धी विधि समर्थ आश्रित होता है। समर्थ आश्रितः इसके **अर्थ में सामर्थ्यवान् जो पद उन पदों को आश्रित प्रवर्न्तमान होना।**

सामर्थ्य दो प्रकार का होता है–एकार्थीभाव रूप और व्यपेक्षा भाव रूप। समासादि पक्ष विधियाँ तो एकार्थीभाव का सामर्थ्य ही स्वीकृत किया गया है यही सिद्धान्त है। इससे आयी हुई **जो समासादिपद विधियों में एकार्थीभावक सामर्थ्यवान् उन पदों को जिन पर आश्रित होते हैं।**

एकार्थी भाव सामर्थ्य की प्रक्रिया दशा में प्रत्येक अर्थवत् के अलग गृहित होने वाले पदों की समुदाय शक्ति से विशिष्ट एक अर्थ प्रतिपादित होता है। जैसेः- राजपुरुषः इसमें समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

राज्ञः पुरुषः यह वाक्य है। यहाँ राजपद का राजन् यह अर्थ है। उसके उत्तर में ङस् प्रत्यय का सम्बन्ध यही अर्थ है। पुरुष शब्द का पुरुष यही अर्थ है। इसका उत्तर सुप्रत्यय स्वार्थिक है। और ऐसे समान पदों के मिलन से राज सम्बन्धी पुरुष यही अर्थ होता है। इससे यह सुस्पष्ट होता है कि वाक्य में प्रत्येक पदों का स्वकीय अर्थ है। ''षष्ठी'' इस सूत्र से यहाँ समास किया जाता है। और समास और अलौकिक विग्रह वाक्य में होता है। और राजन् ङस् पुरुष सु यह अलौकिक विग्रह वाक्य होता है किन्तु समास एकार्थीभावरूप में सामर्थ्य में ही होता है। अतः इनके द्वारा अलौकिक विग्रह वाक्य में एकार्थी भाव रूप सामर्थ्य स्वीकृत किया जाता है। स्वीकृत होने पर एकार्थी भाव रूप में सामर्थ्य में राजन् ङस पुरुष सु इस समुदाय और समुदाय शक्ति से ही राजसम्बन्धी पुरुष यह विशिष्ट अर्थ के लिए बोध होता है। पदों की पृथक्-पृथक् उपस्थिति नहीं होती है। अतः राजन् ङ्स पुरुष सु यहाँ समुदाय शक्ति से विशिष्ट अर्थ प्रतिपादित होने से एकार्थीभावरूप सामर्थ्य होता है।

परिभाषा सूत्र दीपक के समान होता है। जिस प्रकार दीपक एकस्थान पर स्थित होकर पूरे घर में प्रकाश फैलाता है उसी प्रकार परिभाषा सूत्र एक जगह स्थित होकर भी सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में प्रवर्न्त हो रहे है। और जहाँ-जहाँ पदसम्बन्धी कार्य वहाँ-वहाँ उसका कार्य समर्थ पद आश्रित होकर ही होगा यही सूत्र का सार है।

अत्रेदं बोध्यम्–(यहाँ यह ज्ञान होना चाहिए)

समास उन दो पदों के मध्य ही होता है उन दो पदों के अर्थों के मध्य परस्पर सम्बन्ध होता है। यथा–राज्ञः पुरुषः उन दोनों राजपुरुष पदों में अर्थों के मध्य परस्पर सम्बन्ध होता है। अतः यहाँ समास होता है। इससे राजपुरुष प्रयोग सिद्ध होता है। जिन दो पदों के अर्थों में परस्पर सम्बन्ध नहीं होता है उन पदों के मध्ये समान नहीं होता है। जिस प्रकार पुत्रः राज्ञः पुरुषः देवदत्तस्य यहाँ राजा के पुत्र से सम्बन्ध है और पुरुष का देवदत्त के साथ सम्बन्ध है। राजा और

टिप्पणियाँ

पुरुष के मध्य में तो सम्बन्ध नहीं हैं। अत: यहाँ राजपुरुषों: में समाप्त नहीं होता है। यही इस सूत्र से बोध होता है।

समास के तीन फल एकपद, एकस्वर और एक भाव होता है। समस्त पद एकपद होता है। अत: उसका ऐकपद्य होता है। समास में एक ही उदात स्वर होता है। अत: उसका एकस्वर होता है। यहाँ उदात ही मुख्य स्वर है। समास में व्यपेक्षाभाव सामर्थ्य नहीं होता है ऐसा कहा गया है। समास में एकार्थीभाव है। इस फलत्रय को लाघव कहा जाता है। समास शब्द का लाघव को संक्षेप भी अर्थ है। यहाँ समास में एक से अधिक पद होते हैं वहाँ प्राय: सभी पदों के अन्त में एक ही विभक्ति दिखाई देती हैं। अन्य विभक्तियाँ लुप्त हो जाती है। अत: विभक्तियों की अल्पता से लाघव होता है।

शब्दावली–समास प्रकरण में बाहुल्य से प्रयुक्त कुछ पारिभाषिक शब्दों का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

(क) वृत्ति–समाज एक से अधिक पदों का होता है। ये पद समास के अवयव होते हैं। वहाँ प्रत्येक पदों का अपना कुछ अर्थ होता है। अवयवभूत पदों का अर्थ से अलग भिन्न अर्थ कहा जाता है, प्रतिपादित किया जाता है उससे ही परार्थाभिद्यान कहलाता है। यहाँ अभिधान इस करण में ल्युट् प्रत्यय है। दूसरा अर्थ जिससे प्रतिपादित होता है वह वृत्ति है। दूसरे अर्थ में वृत्ति है जो परार्थवृत्ति कहलाता है। राज्ञ: पुरुष: इस उदाहरण में दोनों पदों के अलग अर्थ है। परन्तु उन दोनों के समास के लिए कुछ राज के सम्बन्धीत पुरुष यह विशिष्ट अर्थ कहा जाता है। प्रतिपादित किया जाता है। विशिष्ट अर्थ किसी एक पद का नहीं है। अत: यह विशिष्ट अर्थ समास अवयवपदों के अर्थों से अलग अर्थ से है। समास पदार्थोभिद्यान कहा जाता है। अत: यही वृत्ति है।

संस्कृत व्याकरण में पाँच वृत्तियाँ होती हैं।

(1) कृदन्त वृत्ति

(2) तद्धितान्तवृत्ति

(3) समासान्तवृत्ति

(4) एकशेषवृत्ति

(5) सनाद्यान्तवृत्ति

(ख) विग्रह–वत्यर्थावबोधक वाक्य विग्रह कहलाता है। वृत्ति के अर्थ के बोध के लिए जो पदसमुदायात्मक वाक्य को प्रयुक्त किया जाता है वह विग्रह कहलाता है। वह विग्रह लौकिक और अलौकिक भेद से दो प्रकार के होते हैं।

(ग) लौकिक विग्रह–राजपुरुष यह समास वृत्ति है। उसका राज्ञ: पुरुष: जो विग्रह लौकिक संस्कृत भाषा में व्यवहार करने योग्य वह लौकिक विग्रह कहलाता है।

(घ) अलौकिक विग्रह–व्याकरण प्रक्रिया सख्त सौकर करने के लिए राजपुरुष: इस वृत्ति का

राजन् ङस् पुरुष सु इस प्रकृति का विभक्ति प्रत्यय सहित प्रकट करना अलौकिक विग्रह: कहा जाता है। इसका लोक में प्रयोग नहीं होता है। केवल प्रक्रिया में ही प्रयोग होता है। (लौकिक लौकिभाषा)

स्वपदविग्रह और अस्वपर विग्रह इस भेद से भी विग्रह दो प्रकार होता है।

(ङ) स्वपद विग्रह–समास के पदों के अवयवों को लेकर किया गया विग्रह स्वपदविग्रह कहलाता है। अपने स्वयं के पद को प्रद्युवत कर किया गया विग्रह स्वपदविग्रह है। यथा:– राजपुरुष इस समास के अवयव में राजन पुरुष दो पद हैं। उन दोनों पदों का प्रयोग कर विग्रह किया गया है जैसे: राज्ञ: पुरुष:। अत: यही स्वपदविग्रह है। जहाँ समास विकल्प से किया जाता है वहाँ लौकिक स्वपदविग्रह: सम्भव होता है। यहाँ नित्य समास होता है वहाँ लौकिक स्वपद विग्रह नहीं होता है। लौकिक विग्रह हमेशा स्वपरविग्रह ही होता है।

(च) अस्वपद विग्रह–समाज के पदों के अवयवों को बिना ग्रहण किये या बिना प्रयोग किये किया गया विग्रह अस्वपद विग्रह: होता है। अपने पदों का बिना प्रयोग कर किया गया विग्रह अस्वपद विग्रह कहलाता है। जैसे:–उपशमम् (अव्ययीभाव समास में समास के अवयवों में उपराम ये दो पद हैं। उन दोनों में (उप और राम) उप इस पद को त्यागकर उसके अर्थ के लिए दूसरा समीप इस पद का प्रयोग कर विग्रह होता है-समस्य समीपम् (राम के समीप)। अत: यही अस्वपदविग्रह है। नित्यसमास के लौकिक में अस्वपदविग्रह होता है। अलौकिक विग्रह: तो कभी भी अस्वपर विग्रह नहीं होता है।

1.2 ''प्राक्कडारात् समास:''

सूत्रार्थ:–''कडारा: कर्मधारय'' इस सूत्र से प्राकृ समास यह अधिकार है।

सूत्रव्याख्या–यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यहाँ प्राक् यह पूर्वार्थवाचक अवयव पद है। कडारात् यह पंचमी विभक्ति का एकवचनान्त पद है। समास यह प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। यहाँ प्राक् पद दो बार आवृत हुआ है। सूत्र में कडारापद से ''कडारा कर्मध ारये'' सूत्र से ग्रहण किया गया है। उससे ''कडारा: कर्मधारये'' इस समास से पूर्व समास और प्राक् पद क्रियान्वित किया गया है यही सूत्र का अर्थ होता है। अर्थात् अष्टाध्यायी में पहले ''कडारात् समास:'' यहाँ से आरम्भ होकर कडारा कर्मधारय इस सूत्र से पूर्व विद्यमान सूत्रों में समास में यही पद और प्राक् लिये जा रहे हैं।

प्राक् इस आवर्ति का फल एक संज्ञा अधिकार में समास संज्ञा के साथ अन्ययीभाव आदि संज्ञाओं का समावेश होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''समर्थ: पदविधि:'' यह किस प्रकार का सूत्र है।
2. सूत्र में समर्थ इस पद का क्या अर्थ है।

टिप्पणियाँ

3. पदविधि क्या है?
4. ''समर्थः पदविधिः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
5. वृत्ति का लक्षण क्या है?
6. वृत्ति के कितने भेद होते हैं?
7. विग्रह का लक्षण क्या हैं?
8. विग्रह के कितने भेद होते है?
9. ''प्राक्कडारात्समासः'' यह किस प्रकार का सूत्र है?
10. ''प्राक्कडारात् समासः'' इस सूत्र में कडारापद से किसका ग्रहण होता है?

1.3 ''सह सुपा''

सूत्रार्थ–सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है।

सूत्र व्याख्याः–यह संज्ञा सूत्र है। इससे समास संज्ञा होती है। इस सूत्र में दो पद हैं। उनमें **सह** अव्ययपद है। सुपा यह तृतीया विभक्ति एकवचनान्त पद है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप पद की अनुवर्ती होती है। ''प्राक्कडारात्समासः'' इस सूत्र से समासः इस पद **अधिक्रियान्वित** किया गया है। ''प्रत्यय ग्रहणे यस्मात्स विहितस्तदादेसदन्तस्य च ग्रहणम्'' इस परिभाषा से सुप् प्रत्ययबोधक प्रत्याहार के ग्रहण से तदन्तविधि है। उस सुप् प्रत्यय से सुबन्तम् यह अर्थ और सुपा इस पद से सुबन्तेन यह अर्थ लिया गया है। और सूत्रार्थ होता है ''सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है यह अर्थ लिया गया है। इसका तात्पर्य है कि सुबन्त का सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। यहाँ यह भी जानना चाहिए कि इस सूत्र से विधीयमान समास संज्ञा उन दोनों सुबनतों के मध्य होता है जिन दोनों के मध्य एकार्थीभावसामर्थ्य है।

उदाहरणः–भूतपूर्व इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण हैं। पूर्व भूतः यह लौकिक विग्रह है। पूर्व अम् भूत सु यह अलौकिक विग्रह है। पूर्व अम् इस सुबन्त का भूत सु इसके साथ सुबन्न को प्रकृत सूत्र से समाससंज्ञा प्राप्त होती है। उससे पूर्व अम् भूत सु यह समुदाय समास संज्ञक होता है। इसके बाद प्रक्रियाकार्य में भूतपूर्वः रूप सिद्ध होता है।

1.4 ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्''

सूत्रार्थ–समासविधायकशास्त्र में प्रथमान्त बोधित पद में उपसर्जन संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है। इस सूत्र में तीन पद होते हैं। इसमें **प्रथमानिर्दिष्टं समासे उपसर्जनम्** यह पदच्छेद है। प्रथमानिर्दिलृम् पर प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। समासे पद में सप्तमी विभक्ति का एकवचनान्त पद है। उपसर्जनम् यह प्रथमा विभक्ति एकवचनान्त पद है। यहाँ प्रथमानिर्दिष्ट समास में संज्ञिदल को उपसर्जन संज्ञापद

है। प्रथमा से निर्दिष्ट प्रथमानिर्दिष्टम् इसमें तृतीया तत्पुरुष समास है। प्रथमानिर्दिष्टम् नामक पद प्रथमान्त बोधित होना चाहिए। समास में और इसमें समास विधायक सूत्र में यही अर्थ होता है। सूत्रार्थ होता है कि ''समास'' विधायक सूत्र में जहाँ प्रथमान्त बोधित पद की उपसर्जन संज्ञा होती है''। अर्थात् समासविधायक सूत्र में प्रथमान्तपद के बोधित अर्थ लक्ष्य में उपसर्जनसंज्ञा होती है।

उदाहरण–कृष्ण अम् श्रित सु इस अलौकिक विग्रह में ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' इस सूत्र से समास संज्ञा होती है। इस सूत्र में द्वितीया प्रथमान्त पद है। उसका अर्थ द्वितीयान्त है। और प्रकृत लक्ष्य में कृष्ण अम् है। अतः उसकी इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है।

पूर्व अम् भूत सु यहाँ ''सह सुपा'' इस सूत्र से समास संज्ञा की गई है। समासविधायक सूत्र है सहसुपा। और यहां पर सुप् इस पद की अनुवर्ती है। और वह प्रथमान्त है। और उसका बोध पूर्व अम् यह है भूत सु यह भी है। अतः उसका इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है।

पूर्व अम् भूत सु यहाँ पर सहसुपा इस सूत्र से समाससंज्ञा की गई है। समासविधायक सूत्र है सह सुपा। और यहां पर सुप् पद की अनुवर्ती है और प्रथमान्त पद है। उसका बोध्य पूर्व अम् यह है, भूत सु यह भी है। अतः इन दोनों में भी उपसर्जन संज्ञा प्राप्त हुई है।

1.5 ''उपसर्जनं पूर्वम्'' (2.2.30)

सूत्रार्थ–समासे में उपसर्जन संज्ञक को पूर्व में प्रयोग करना चाहिए।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। वहां उपसर्जन यह पूर्व ये दो पद प्रथमाविभक्ति एकवचनान्त है। ''प्राक्कडारात्समासः'' इस सूत्र से समास पद का अधिग्रहण किया गया है। उसका और प्रथमान्त का सप्तम्यन्त पद से विपरिणाम होता है। और समास में उपसर्जन पूर्व यह पदयोजना है। समास में उपसर्जनसंज्ञक का पूर्व में प्रयोग किया जाना चाहिए यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण यथा ''द्वितीयाकीतातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' सूत्र है। कृष्णं श्रितः इस लौकिकविग्रह में कृष्ण अम् श्रित सु इस अलौकिक विग्रह में द्वितीया पद का प्रथमानिदिष्ट होने से उस बोध का कृष्ण अम् इसका ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपर्जनम्'' इससे उपसर्जन संज्ञा होती है। इसके बाद प्रकृतसूत्र से समास में उपसर्जनसंज्ञक का कृष्ण अम् इसका पूर्व निपात होता है। और प्रक्रिया कार्य में कृष्णश्रित यह रूप सिद्ध होता है।

और यहाँ पूर्व अम् भूत सु इस स्थिति में समासविधायक शास्त्र में ''सह सुपा'' यहाँ दोनों का सुबन्त के निर्देश से उन दोनों की उपसर्जन संज्ञा में उन दोनों का पूर्वनिपात प्राप्त होता है। परन्तु भगवान पाणिनी का सूत्र ''भूतपूर्वेचरट्'' विद्यमान है। यहाँ भूतशब्द का पूर्व प्रयोग दिखाई देता है। अतः उसके अनुरोध से भूतशब्द का ही पूर्व प्रयोग किया जाता है। न कि पूर्व शब्द का। इसके बाद भूत सु पूर्व अम् इस स्थिति में सुप् के लुक (लोप) के विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त है।

पाठगत प्रश्न-2

11. ''सह सुपा'' इस सूत्र से किस प्रकार का समास होता है?
12. ''सह सुपा'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
13. ''सह सुपा'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?
14. ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र से क्या होता है?
15. समास पद से ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र में किसका ग्रहण किया गया है?
16. ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
17. ''प्रथमानिर्दिष्टम्'' इस पद का क्या अर्थ है?
18. ''प्रथमानिर्दिष्टमं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र में संज्ञासंज्ञि निर्णय करो।
19. ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इस सूत्र से क्या होता है?
20. ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
21. ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

1.6 ''सुपो धातु प्रातिपदिकयो:''

सूत्रार्थ–धातु का और प्रातिपदिक के अवयव के सुबन्त का लुक् (लोप) होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सुप् का लुक् (लोप) होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ पर सुप: यह षष्ठी एकवचान्त पद है और धाकप्रातिपदिकयो: षष्ठीद्विवचनान्त पद है। धातु और प्रतिपदिक का समासपद ''धातु प्रातिपदिके'' है। उन दोनों में धातु प्रातिपदिक में इतरेतरयोगद्वन्दसमास है। ''व्यक्षत्रियार्षञितो यूनिलुगणिञो:'' इस सूत्र से लुक पद का अनुपर्तन होता है। प्रस्तुत सूत्र का अर्थ धातु के और प्रातिपदिक के अवयव के सुबन्त (सुप) का लोप होता है।

''प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुप:'' इस सूत्र के अनुसार प्रत्यय की अदर्शनलुक् संज्ञा होती है।

उदाहरण–इस सूत्र के धातु के अवयव के लुक का उदाहरण होता है ''पुत्रीयति''। आत्मन: पुत्रम् इच्छति इस विग्रह में ''सुप: आत्मन: क्यच्'' इस सूत्र से पुत्र अम् इस द्वितीयान्त से क्यच् होने पर पुत्र अम् क्यच् यह होने पर पुत्र अम् क्यच् इस समुदाय के क्यच् प्रत्यय होने पर ''सनाद्यन्ता धातव:'' इससे धातु संज्ञा होती है। यहाँ पुत्र अम् क्यच् यह समुदाय धातुसंज्ञक है। उसका अवयव अम् सुप् है। इस प्रकृत सूत्र से लुक् होता है। इसके पश्चात् प्रक्रियाकार्य में पुत्रीयति रूप सिद्ध होता है।

प्रातिपदिक के अवयव के लोप का उदाहरण भूतपूर्वः ऐसा है। भूत अम् पूर्व सु इस स्थिति में ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से समास की प्रातिपदिक संज्ञा होती है। इसके बाद प्रकृतसूत्र से प्रातिपदिक के अवयव के ''सुपः सो अमश्च'' से लोप होता है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में भूतपूर्व रूप निष्पन्न होता है।

1.6.1 ''इवेन समासो विभक्त्थलोपश्च'' (वार्तिकम्)

वातिकार्य–इन इस शब्द के साथ सुबन्त की समास संज्ञा होती है। समास अवयव विभक्ति का लोप नहीं होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक केवल समास विधायक है। इस वार्तिक में चौथा पद है। इवेन समासः विभक्त्पलोपः यह पदच्छेद है। यह इवेन तृतीया एकवचान्त पद है। समासः वियक्त्यलोपः ये दोनों यह प्रथमा विभक्ति के एकवचनान्त है। और अत्ययपद है। न लोपः अलोपः पद में नञ्तत्पुरुषसमास है। विभक्तेः अलोपः विभक्त्यलोपः यह षष्ठीतत्पुरुषसमास है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् पद की अनुवृत्ति हुई है। ''प्रत्ययग्रहणे यस्मात्स विहितः तदादेशस्तदन्तस्य ग्रहणम्'' इस परिभाषा से सुप् प्रत्ययबोधक का प्रत्याहार ग्रहण से तदन्त विधि है। उससे सुबन्त प्राप्त होता है। इवेन सह सुबन्तं समासः विभक्त्यलोपश्च यह पद योजना है। यहाँ वार्तिक अर्थ होता है'' इन शब्द के साथ सुबन्त को समास होता है। समास अवयव और विभक्ति का लोप नहीं होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण वागर्थाविव है। वाक् च अर्थः च इस वागर्थो इसमें इतरेतरयोगद्वन्द समास है। वागर्थौ इव इस लौकिक विग्रह में वागर्थ और इव इस अलौकिकविग्रह में प्रकृतकार्तिक से इव शब्द के साथ वागर्थ और इस सुबन्त का समास संज्ञा होती है। समास होने पर वागर्थ और इस पद का सुबन्त का प्रथमान्त बोध होने से ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है। और इसके बाद ''उपसर्जनंपूर्वम्'' इस सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होता है। उससे वागर्थ और इव यह स्थिती होती है। और इसके बाद समास के ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। प्रातिपदिक संज्ञा में सत्थ में ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इससे प्राप्त के लुक् निषेध होने पर ''विभक्त्यलोपश्च'' इस वार्तिक से होता है। और वागर्थ औ इव इस स्थिति में ''वृद्धिरेचि'' इस सूत्र से आकार के और औकार के स्थान पर वृद्धि होने पर औकार होने पर ''एचोऽयवायावः'' इस सूत्र से औकार के स्थान पर आवादेश होने पर प्रक्रियाकार्य में सर्वसंयोग होने पर वागर्थाविव रूप निष्पन्न होता है।

पाठगत प्रश्न-3

22. ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से क्या होता है?

23. ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

24. ''धातुप्रातिपदिकयोः'' यहाँ पर कौन सी विभक्ति और कौन समास है?

टिप्पणियाँ

25. ''भूतपूर्व:'' यहाँ पर भूतशब्द का पूर्वनिपात कैसे होता है?

26. ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

27. ''इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

28. ''इवेन समासो विभक्त्थलोपश्च'' इस वार्तिक का क्या उदाहरण है?

9.6 ''अव्ययीभाव:''

सूत्रार्थ–तत्पुरुष इस सूत्र से प्राक् अव्ययीभाव: अधिकार

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह अधिकार सूत्र है। यह संज्ञा अधिकार है। इस सूत्र में अव्ययीभाव यह प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। ततत्पुरुष:'' इस सूत्र से पहले प्राक् अव्ययीभाव: पद अधिग्रहण किया गया है। इस सूत्र से उत्तर ''तत्पुरुष'' इस सूत्र से प्राक् विद्यमान सूत्रों में अव्ययीभाव: पद अनुवर्ती हुई है। प्रतिसूत्रम् उपतिष्ठते यही भाव है। और इसके बाद जिन-जिन सूत्र से हित समास का अव्ययीभाव संज्ञा होती है। अत: यह संज्ञा अधि कार है।

9.6 ''अव्ययं विभक्ति समीप-समृद्धि-व्यृद्व्यर्थाभावात्ययाऽसम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव-पश्चात् यथाऽऽनुपूर्व्य-योंगपद्य-सादृश्य- सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु''

सूत्रार्थ–विभक्ति आदि अर्थों में वर्तमान अव्यम का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अव्ययीभाव समास होता है। इस सूत्र में दो पद है। यहाँ अव्यय यह प्रथमा एक वचनान्त पद हैं। ''विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यार्थया वाऽल्ययाऽसम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्य थाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य- सम्पत्ति-साकल्याडन्तवचनेषु यही सप्तमी बहुवचनान्त पद है। वच् धातु से कर्म में ल्युट् होने पर वचन शब्द निष्पन्न होता है। जो बोला जाता है वचन उसका अर्थ है वाच्य:। विभक्तिश्च समीपश्च समृद्विश्च वृद्धिश्च अर्थाभावश्च अत्ययश्च असम्प्रतिश्च शब्दप्रादुर्भावश्च पश्चात् च यथा च आनुपूर्व्यं च यौगपद्यं च सादृश्यं च सम्पत्तिश्च साकल्य: च अन्त: च इस विग्रह में इतरेतरयोग में द्वन्द समास होने पर विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावाऽत्ययाऽसम्प्रति-शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य सादृश्य-सम्पत्ति- साकल्याऽन्तवचना: यह शब्द निष्पन्न होता है। इसका ही सप्तमी बहुवचनान्त रूप सूत्र में होता है। ''द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकमभिसम्बध्यते'' इस न्याय से वचन शब्द का विभक्ति तक प्रत्येक सम्बन्ध होता है।

विभक्ति पद से यहाँ अधिकरण कारक का ग्रहण किया गया है। समीप नाम निकटता है। समृद्धि नाम उन्नति का है। बीत गई है ऋद्धि यह व्यृद्धि ऋद्धि का अभाव। अर्थ का अभाव: अर्थाभाव:। अति का ध्वंस होता है। सम्प्रति (अब) प्रयोग नहीं है असम्प्रति। शब्द प्रादुर्भाव नाम

शब्द का नाम प्रादुर्भाव: प्रसिद्ध है। जिस प्रकार शब्द की योग्यता वीप्सा-पदार्थानतिवृत्ति-सादृश्यानि इस प्रकार चार अर्थ हैं। पद का अर्थ ही पदार्थ है। नहीं है जिसमें अतिवृत्ति यही अनतिवृत्ति है। जो अतिक्रमण नहीं है वही अनतिक्रम अर्थ हैं अर्थात् सीमा से बाहर नहीं होना। पद के अर्थ की (अनतिवृत्ति) सीमा से बाहर न होने की स्थिति पदार्थानतिवृत्ति है। अर्थात् पद के अर्थ का अनुल्लङ्घन है। जिस प्रकार सादृश्य नाम तुल्यता। अनुपूर्वम् अनुक्रम: उसका भाव ही आनुपूर्व्यम् है। पूर्वता का क्रम यही अर्थ है। यौगपद्यम् का अर्थ है एककालता है। यथार्थता से सादृश्य के अर्थ के ग्रहण से पुन: सादृथ्य का सूत्र में किसलिए प्रश्न उत्पन्न होता है। यहाँ उत्तर तब तक सादृश्य के गौण होने पर भी समास के विधान के लिए सूत्र में पुन: सादृश्य ग्रहण किया गया है। ऋद्धि का आधिक्य समृद्धि:। सम्पत्ति का नाम अनुरूप आत्मभाव है। अर्थात् योग्य स्वचित भाव सम्पत्ति इससे कहा गया है। साकल्य का नाम सम्पूर्णता है। अन्त नाम समाप्ति का है।

इस सूत्र में ''सुबामन्तिपराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् ''सह सुपा'' इस सम्पूर्ण सूत्र का अनुवर्तन किया गया है। समास और अव्ययीभाव दो पद अधिकृत किया गया है। सुप् इस पद का तदत्तविधि से सुबन्त प्राप्त होता है। सुप का और तदत्तविधि से सुबन्त को प्राप्त करना चाहिए। समर्थ: पदविधि: इस सूत्र से समर्थ पद आता है। और तृतीयावचनान्त होने से विपरिभाग होने पर और उसके समर्थन से यह होता है। एवं ''विभक्ति आदि में वर्तमान अव्यय का सुबन्त का समर्थन से सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। यही सूत्र का अर्थ आता है। विभक्त्यर्थक वाचक अव्यय का सुबन्त के समर्थ से सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। और अन्य समीप अर्थक अव्यय का सुबन्त के समर्थन से सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है और वही समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। और क्रम से अन्य का भी होता है। 4. समृद्ध्यर्थक 5. वृद्ध्यर्थकम् 6. अर्थभावअर्थक 7. अव्ययार्थक 8. असम्प्रत्ति अर्थक 9. शब्दप्रादुर्भावार्थक 10. पश्चादर्थक 11. आनपूव्यर्थक 12. यौगयद्यार्थकम् 13. सादृश्यार्थक 14. सम्पत्त्यर्थक 15. साकल्यार्थक 16. अन्तार्थकम् अव्यय का सुबन्त के समर्थन सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। और वह समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है। और सूत्र के पठित अर्थों का वाचकों का अव्ययों के समर्थन से सुबन्त के साथ समास होता है यहीं फलितार्थ है।

अवधेयम्–सामान्यत: सूत्रोक्त स्वर से समास विधायक सूत्र के अर्थ प्रकट करने के लिए सुबन्त का सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। ऐसा वाक्य लिखा जाना चाहिए। तथापि इसका तात्पर्य ग्रहण करके बहुत सारे स्थानों पर सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है। इत्यादि रूप से भी प्रकट किये जाते हैं।

अत्रैदं वोध्यम् (यहाँ यह ज्ञान होना चाहिए)

इस सूत्र में अव्ययम् यह प्रथमान्त पद है। अत: इस सूत्र से जहाँ समास किया जाता है वहाँ अव्ययम् इस प्रथमान्त बोध का अत्यय की उपसर्जन संज्ञा होती है और उसका पूर्व प्रयोग होता है। अव्ययीभाव समास की ''अव्ययीभावश्च'' सूत्र से अव्यय संज्ञा होती है।

इस सूत्र से विधीयमान समास नित्य होता है। नित्य समास का प्राय: लौकिकविग्रह नहीं होता

टिप्पणियाँ

है। अथवा अस्वपदलौकिक विग्रह होता है। अत एव अविग्रह अथवा अस्वपदविग्रह नित्यसमास होता है। जहाँ जिसका विग्रह नहीं है वह अविग्रह है। समास के अर्थबोधक वाक्य को विग्रह कहा जाता है। जिस समास का विग्रह नहीं होता है वह अविग्रह नित्य समास होता है। नहीं है अपने पदों से विग्रह जिसका वह अस्वपदविग्रह है। अर्थात् जिसका समास का सभी सामासिक पदों द्वारा विग्रह नहीं किया जाता है अपि तु सामासिक पदों के समानार्थक अन्य पद से समास किया जाता है, वह भी नित्य समास होता है। इस सूत्र में विधीयमान अव्ययीभाव अस्वपदविग्रह नित्यसमास होता है और इस सूत्र का उदाहरणों के अस्वपदविग्रह ही किया जाता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

अधिहरि–विभक्त्यर्थक वाचक अव्यय का सुबन्त के समर्थ से सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। इसका उदाहरण है **अधिहरि।**

अधिहरि इसका हरौ यह लौकिक विग्रह है। हरि ङि अधि यह अलौकिक निग्रह है। यहां अधि इस अन्यय का सप्तमी विभक्ति के अर्थ का अधिकरण का वाचक है। उससे अधि अव्यय का विभक्त्यर्थकवाचक है। और हरि ङि अधि यह अलौकिक विग्रह में विभक्त्यर्थवाचक् 'अधि :'' अव्यय सुबन्त के समर्थ से हरि ङि इस सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में अव्यय इसका प्रथमा निर्दिष्ट होने से उसके बोध के अधि इसका ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इससे उपसर्जन संज्ञा होती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे उसका पूर्व निपात होता है। उससे अधि हरि ङि यह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके समास होने पर ''कृतद्धितसमासाश्च'' इस समास के प्रातिपादिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इस प्रातिपदिक अव्यय का (सुप: डे: लुक्) विभक्ति का लोप हो जाता है। उससे अधिहरि रूप उत्पन्न होता है। इसके बाद ''एकदेशविकृतमनन्यवद्'' इस परिभाषा से अधि हरि ङि यहाँ पर प्रातिपदिक संज्ञा वह अधिहरि यहाँ पर 1 उससे प्रातिपदिक लेकर ''स्वौजसमौट्छष्टाभ्या–म्भिङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्या–म्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप'' इस सूत्र से क्रम से खादय विभक्तियाँ प्राप्त होती हैं। वहाँ प्रथम एकवचन होने पर सु प्रत्यय होने पर अधिहरि सु इस स्थिति में अधिहरि इसका ''अव्ययीभावश्च'' इस सूत्र से अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्ययादाप्सुप:'' इस सूत्र से सुप् का लोप होने पर अधिहरि यह रूप सिद्ध होता है। और अधिहरि इससे पर द्वितीयादिविभक्तियों का भी ''अव्ययादाप्सुप:'' इससे लोप होता है। अत: सभी विभक्तियों में अधिहरि यही रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-4

29. ''अव्ययीभाव:'' यह सूत्र किस प्रकार का है?

30. ''अव्ययीभाव:'' इसका अधिकार कहाँ तक हैं?

31. ''अव्ययीभाव:'' इत्यादि सूत्र का अर्थ क्या है?

32. ''अव्ययं विभक्ति'' इत्यादि सूत्र में विभक्ति पद का क्या बोध होता है?

33. ''अव्ययं विभक्ति'' इत्यादि सूत्र में वचनशब्द का प्रत्येक का कैसे अन्वय हुआ है।

34. समृद्धि-सम्पत्ति में क्या भेद है?

35. पदार्थानतिवृत्ति का क्या नाम है?

36. यथार्थता के सिद्ध होने पर पुनः सूत्र में सादृश्य का ग्रहण किसलिए किया गया है।

यहाँ विभक्ति में अन्य उदाहरण अधिगोपम् होता है। तथाहि माः पाति इति इस विग्रह में गोपा शब्द निष्पन्न होता है। गोपि इस लौकिक विग्रह में गोपा ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में समास संज्ञा होने पर उपसर्जन का पूर्वनिपात होने पर प्रातिपदिक से सुप् के ङे का लोप होने पर प्रक्रिया में अधिगोवा यह निष्पन्न होता है। तब विशेषकार्य साधना के लिए सूत्र कहा गया है।

(1.9) ''अव्ययीभावः च''

सूत्रार्थ–अव्ययीभाव समास संज्ञक शब्द नपुंसक होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधायक सूत्र है। इससे अव्ययीभावसमास का नपुंसकत्व विधान होता है। यह सूत्र दो पदात्मक है। यहाँ अव्ययीभाव ऐसा पदच्छेद है। अव्ययीभाव यह प्रथमा विभक्ति एकवचनान्त पद है। और अव्यय पद है। चकार से ''स नपुंसकम्'' इस सूत्र से नपुंसकम् इस पद को ग्रहण किया गया है। और ''अव्ययीभावसामससंज्ञक शब्द नपुंसक होता है।'' यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–अधिगोपा इस स्थिति में अव्ययीभाव समाजसंज्ञक के इसके प्रकृतसूत्र से नपुंसकसंज्ञा होने पर ''छस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य'' इससे आकार के ह्स्व (लघु) होने पर अधिगोप शब्द निष्पन्न होता है। उसका प्रातिपदिक से इसके बाद प्रथमाविभक्ति के एकवचन होने पर सौ अधि गोप सु यह होने पर ''अव्ययीभावश्च'' इससे अव्ययीभाव का अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्ययादाप्सुपः'' इससे सु का लोप प्राप्त होने पर-

(9.10) ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः''

सूत्रार्थ–अदन्त अव्ययीभाव से सुप् का लोप नहीं हो, और उसको पञ्चमी विभक्ति के बिना अमादेश होता है।

सूत्रव्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अमादेश होता है। न अव्ययीभावाद् अतः अम् तु अपञ्चम्याः इति पदच्छेदः। यहाँ निषेधपरक अव्ययपद नहीं है। अव्ययीभावात् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। अतः यह भी पञ्चमी एकवचनान्त पद है। न पञ्चमी अपञ्चमी यह नञ्तत्पुरुष समास है। यहाँ अतः यह पद अव्ययीभाव से इसका विशेषण है। विशेषण का

तदन्तविधि में अदन्त से अव्ययीभाव से होता है। इस सूत्र में ''अव्ययादाप्सुप:'' इस सूत्र से सुप: ऐसा षष्ठयन्त पद को ''व्यक्षत्रियार्ष ञितो यूनि लुगणिञो: इस सूत्र से लोप होने पर ऐसा प्रथमा एकवचनान्त की अनुवृत्ती होती है। अत्र सूत्र होने पर अत: अव्ययीभाव से सुप् न लोप इस एक वाक्य अम् तु अपञ्चम्या: यह दूसरा वाक्य है। अत: अव्ययीभाव से सुप् का लोप नहीं होने पर वाक्य का अर्थ होता है पञ्चमी को अम् नहीं होता है। और अदन्त अव्ययीभाव से पर सुप् लोप नहीं होता है किन्तु अमादेश होता है। पञ्चमी का लोप होता है और अमादेश नहीं होता है।

उदाहरण–अधिगोप सु ऐसा होने पर ''अव्ययीभावश्च'' इस से अव्ययीभाव का अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्ययादाप्सुप:'' इससे सुप् लोप प्राप्त होने पर अदन्त होने पर अव्ययीभाव संज्ञक होने पर अधिओप शब्द का इसके आगे सु अमादेश होने पर अधिगोप अम् ऐसा होने पर ''अभिपूर्व:'' इससे दोनों अकारों के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होने पर अकार होने पर ''अधि गोपम्'' यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-5

37. ''अव्ययीभावश्च'' इस सूत्र से क्या विधान होता है।

38. ''अव्ययीभावश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

39. ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चभ्या:'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

40. ''नाव्ययीभावादतोडम्त्वपञ्चम्या:'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

41. ''नाव्ययीभावादतोडम्त्वपञ्चम्या:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

(1.11) ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्''

सूत्रार्थ–अदन्त अव्ययीभाव से तृतीया विभक्ति और सप्तमी विभक्ति का बहुल अमादेश होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्'' का बहुल अमादेश विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। पदद्वयात्मक होने पर इस सूत्र में तृतीयासप्तमी का षष्ठीडिवचनान्त पद है। तृतीया च सप्तमी च तृतीयासप्तम्यो: में इतरेतरयोग द्वन्द समास है। बहुलम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। पूर्व सूत्र से अत: अव्ययीभाव से अम् इस तीन पदों की अनुवर्ती हुई। और ''अदन्त अव्ययीभाव से तृतीयासप्तमी के बहुल अमादेश होता है। यही सूत्रार्थ फलित होता है।

पूर्वसूत्र से प्राप्त नित्य के अमादेश इस सूत्र के बाहुलता से विधान होता है। यहाँ बहुल ग्रहण से तृतीया और सप्तमी होने पर कहीं पर अमादेश होता है और कहीं नहीं होता है।

उदाहरण–समीप अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण उपकृष्णम् हैं। कृष्णस्थ समीपम् (कृष्ण के समीप) इस लौकिक विग्रह होने पर कृष्णङ्स उप इस अलौकिकविग्रह में ''अव्ययं विभक्ति.....'' इत्यादिसूत्र से समीप अर्थ में विद्यमान उप इस अव्यय कृष्ण ङस् इस समर्थ होने से सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास संज्ञा होती है। इसके बाद अव्यय इसका प्रथमानिर्दिष्ट होने से बोधित होने पर उप की उपसर्जन संज्ञा होने पर उसका पूर्व निपात होने पर उपकृष्ण ङस् होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसामासाश्च'' इस सूत्र से प्रातिपादिक होने से सुप् ङ्स का लोप होने पर उपकृष्ण रूप सिद्ध होता है। ''एकदेशविकृत न्याय'' से उसका प्रातिपदिक होने के बाद प्रथमा एकवचन में सौ उपकृष्ण+सु होने पर ''अव्ययीभावश्च'' इससे समास की अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्यथादाप्सुपः'' इससे सुप् का लोप होने पर उसको बाधकर ''नाव्ययीभावादन्तोऽम्त्वपञ्चम्याः'' इस सूत्र से सु को अमादेश होने पर ''अभिपूर्वः'' सूत्र द्वारा द्वो अकार के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होने पर उपकृष्णम् प्रयोग सिद्ध होता है।

वहाँ उपकृष्ण शब्द से तृतीया एकवचन की विवक्षा में टाप् प्रत्यय उपकृष्ण टा इस स्थिति में सुप् का लोप प्राप्त को बाधकर ''नाव्ययी भावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः'' इस सूत्र से टा प्रत्यय का नित्य अमादेश प्राप्त होता है। उसको बाधकर ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्'' इस प्रस्तुत सूत्र से बहुलक से अमादेश होता है। अम् पक्ष में पहले के समान प्रक्रियाकार्य में उपकृष्णम् रूप सिद्ध होता है। और अम भाव पक्ष में ''टाङसिङसामिनात्स्थाः'' इस सूत्र से इन आदेश होने पर उपकृष्ण+इन होने पर ''आदगुणः'' इस सूत्र से अकार और इकार के स्थान पर एकार गुण होने पर उपकृष्णेन रूप हुआ। और सप्तमी होने से उपकृष्णम् और उपकृष्णे ऐसा दो रूप हुए।

समृद्धि अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण होता है सुमद्रम्। मद्राणां समृद्धि इस लौकिक विग्रह में मद्र आम् सु ऐसा अलौकिकविग्रह होने पर ''अव्ययं विभक्ति'' आदि सूत्र से समृद्धि अर्थ में विद्यमान सु इस अव्यय को मद्र आम् इसके समर्थ से सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमास संज्ञा होती है। इसके बाद उपसर्जन संज्ञक का सु इस अव्यय का पूर्व निपात होने पर सु मद्र आम् यह होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिक होने पर उसके अवयव के सुपः आम लुकि निष्पन्न होने पर प्रातिपदिक होने पर समुद्र इससे प्रथमा एकवचन में सौ समुद्र सु ऐसा होने पर ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः'' इससे भी सु के स्थान पर अमादेश होने पर दोनों अकारों के स्थान पर पूर्व रूप होने पर तसुमद्रम्'' रूप निष्पन्न होता है। बहुलग्रहण सामर्थ्य से यहाँ सप्तमी होने पर नित्य अमादेश होता है। उससे सुमद्रम् यही रूप होता है। किन्तु सुमद्रे में नहीं।

व्यृद्धि अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण दुर्यवनम्। यवनानां व्यृद्धिः इस लौकिक विग्रह और यवन् आम् दुर् यह अलौकिक विग्रह है।

अर्थ अभाव अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण होता है अतिहिमस् हिमस्थ अत्ययः यह लौकिक विग्रह और हम ङ्स अति यह अलौकिक विग्रह है।

असम्प्रति अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण होता है अतिनिद्रम्। निद्रा सम्प्रति न युज्यते यह लौकिक विग्रह है। निद्रा ङ्स अति यह अलौकिक विग्रह है।

पश्चात् अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण हौ अनुविष्णु। विष्णोः पश्चात् यह लौकिकविग्रह है। विष्णु ङ्सु अनु यह लौकिक विग्रह है।

टिप्पणियाँ

योग्यतारूप में यथा अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण होता है अनुरूपम्। रूपस्थ योग्यम् यह लौकिक विग्रह है। रूप ङ्स अनु यह अलौकिक विग्रह है।

वीप्सारूप में यथा अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण है प्रत्यर्थम्। अर्थम् अर्थम् प्रति यह लौकिक विग्रह है। अर्थअम् प्रति यह अलौकिक विग्रह है।

पदार्थानतिवृत्तिरूप में यथा अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण है। यथाशक्ति शक्तिम् अनतिक्रम्य यह लौकिकविग्रह है और शक्ति अम् यथा यह अलौकिक विग्रह है।

सादृश्यरूप में यथार्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण है सहरि। हरेः सादृश्यम् यह लौकिक विग्रह में हरिङस् सह यह अलौकिक विग्रह में ''अव्ययविभक्ति-इत्यादि सूत्र से सादृश्य अर्थ में विद्यमान के साथ इस अव्यथ का हरि ङस् इस समर्थन से साथ अव्ययीभावसमास संज्ञा होती है। इसके वादं उपसर्जन संज्ञक का सह के साथ पूर्व निपात में सह हरि ङस् ऐसा होने पर समास के प्रातिपदिक होने पर उसके अनयव सुपः ङ्सः लुकि सहहरि पद निष्पन्न होता है। इसके बाद सह इसका स आदेश विधायक सूत्र है। (अगले सूत्र देखा जाना चाहिए)

पाठगत प्रश्न-6

42. ''तृतीयासप्तम्योबर्हुलम्'' यह सुत्र किस प्रकार का है?

43. ''तृतीयासप्तम्योबर्हुलम्'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

44. ''तृतीया सप्तम्योबर्हुलम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

45. समीप अर्थ में अव्ययीभावसमास का क्या उदाहरण है?

46. समृद्धयर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण क्या है?

47. व्यृद्धि अर्थ में अव्ययीभावसमास का क्या उदाहरण है?

48. अर्थ अभाव अर्थ में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

49. अति के अर्थ में अव्ययीभाव समास उदाहरण क्या हैं?

50. असम्प्रति अर्थ में अव्ययीभावसमास का क्या उदाहरण है?

51. शब्दप्रादुर्भाव अर्थ में अव्ययीभावसमास का क्या उदाहरण है?

52. पश्चात् अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण क्या है।

53. यथाअर्थ में अव्ययीभावसमास का अर्थ लिखो।

54. वीप्सा अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण लिखो।

55. पदार्थ के अनतिवृत्ति में अव्ययीभाव समास का उदाहरण लिखो?

(1.12) ''अव्ययीभावे चाकाले''

सूत्रार्थ–सह शब्द का स आदेश होता है अव्ययीभाव में, कालविशेष वाचक और उत्तरपद में पर होने पर नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से सह शब्द के स आदेश होता है। त्रयपदात्मक इस सूत्र में अव्ययीभाव में सप्तम्येकवचनान्त पद है। और यह अव्यय पद है। अकाल होने पर सप्तम्येकवचनान्त पद है। ''सहस्य सः संज्ञायाम्'' इस सूत्र से सह इसके षष्ठयन्त पद सः यह प्रममात्त और पद अनुवर्न्तन। ''अलुगुन्तर पदे'' इस सूत्र से उत्तरपद होने पर पद की अनुवर्ती हुई है। न काले अकाले यह नञ्तत्पुरुषसमास। कालशब्द से यहाँ कालविशेषवाचक पूर्वाछ आदि तक ग्रहण किया गया। और सह शब्द का सादेश (सह = स) होता है अव्ययीभाव समास में। कालविशेषवाचक उत्तरपद के परे न होने पर यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–सह हरि इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से सह शब्द के स्थान पर स आदेश निष्पन्न होने पर प्रातिपादिक से सु अवयव से समास के ''अव्ययादाप्सुपः'' इससे सुप् लुक होने पर सहरि पद निब्पन्न हुआ। सचक्रम्, ससखि, साग्नि इत्यादि इसके सूत्र का उदाहरण है।

आनुपूर्व्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण होता है। अनुज्येष्ठम्। ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण यह लौकिक विग्रह है। ज्येष्ठ सुस् अनु यह अलौकिक विग्रह है।

यौगपद्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण है सचक्रम्। चक्रेण युगपद् यह लौकिक विग्रह है। ज्येष्ठ ङस् अनु यह अलौकिक विग्रह है। सहचक्र इस स्थिति में ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस प्रस्तुत सूत्र से सहशब्द का स आदेश निष्पन्न होने पर प्रातिपादिक होने पर सचक्र इससे प्रथमा एकवचन में प्रक्रियाकार्य में सचकम् यह रूप है।

सादृश्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण है। ससखि। सख्या सदृशः लौकिक विग्रह है और सखिटा सह यह अलौकिक विग्रह है। यहाँ भी प्रस्तुत सूत्र से सह शब्द का सादेश होता है।

साकल्य अर्थ में

साकल्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण होता है सतृणम्। तृणम् अपि अपरित्यज्य यह लौकिक विग्रह है और तृण टा सह यह अलौकिक विग्रह है। यहाँ भी प्रस्तुत सूत्र से सहशब्द के स्थान पर स आदेश होता है।

अन्त अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण है साग्नि। अग्नि ग्रन्थ पर्यन्तम् यह लौकिक विग्रह है और अग्नि टा सह यह अलौकिक विग्रह है। यहाँ भी प्रस्तुत सूत्र से सहशब्द का सादेश होता है।

पाठगत प्रश्न-7

56. ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

टिप्पणियाँ

57. ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

58. ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

59. ''आनुपूर्व्यार्थे अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

60. यौगपद्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

61. सादृश्यार्थे में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

62. सम्पत्ति अर्थ में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है

63. अन्त अर्थ में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

(1.13) ''यावदवधारणे''

सूत्रार्थ–अवधारण अर्थ में यावत अव्यय का सुबन्त के समर्थ से समास संज्ञा होती है, और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अव्ययीभाव समास का विधान होता है। द्वि पदात्मक इस सूत्र में यावत् इस अव्ययपद के अवधारण होने पर सप्तम्येकवचनान्त पद है। **अवधारण नाम इयत्त ताप परिच्छेद है।** इस सूत्र में ''समर्थः पदविधिः'' इस समर्थ अधिग्रहित किया जाता है। ''सह सुपा'' सूत्र अनुवर्तन होता है। समर्थ का विशेषण होने से तदन्त विधि में सुबन्तेन होता है। समास यह अव्ययीभाव यह अधिकृत किया गया है। एवं अवध ारणे अर्थ में यावत् इस अव्यय का सुबन्त से समर्थ के साथ समास संज्ञा होती है और वह समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है यही सूत्रार्थ है। इस सूत्र में विग्रह वाक्य में यावत् इस तद्वितान्त का उपयोग होता है समास में तो यावत् इस अव्यय का विशेष अर्थ है।

उदाहरणम्–इस सूत्र का उदाहरण होता है यावच्छलोकम्। यावन्तः श्लोकाः इस लौकिक विग्रह में यावत् श्लोक जस् इति अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत से अवधारण अर्थ में विद्यमान के यावत् इस अव्यय श्लोक जस् इस समर्थ से सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमाससंज्ञा होती है। इसके बाद ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपरार्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में प्रथमा निर्दिष्ट का यावत् इसकी उपसर्जन संज्ञा होने पर उसका पूर्व निपात होने पर यावत् श्लोक जस् ऐसा होने पर समास के प्रातिपदिकत्व होने से उसके अवयव के सुप का जस प्रत्यय का लोप होने पर यावत् श्लोक होने पर चुत्व होने पर और छत्त्वे होने से निष्पन्न प्रातिपदिक यावत् श्लोक इससे प्रथमा एकवचन में सु के स्थान पर अमादेश होने पर प्रक्रियाकार्य में **यावच्छलोकम्** यह रूप निष्पन्न होता है।

1.14 ''सुप्प्रतिना मात्रार्थे''

सूत्रार्थ–मात्र अर्थ में विद्यमान प्रति के साथ समर्थ का सुबन्त का अव्ययीभाव संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से अव्ययी भाव समास का विधान होता है। त्रयपदात्मक इस सूत्र में सुप् इस प्रथमान्त प्रति से तृतीयान्त और मात्रार्थ में सप्तम्यन्त पद है। मात्र अर्थ नाम लेश है। इस सूत्र में ''समर्थपदविधि:'' इससे समर्थ अधिगृहित किया गया है। ''सह सुपा'' इस सूत्र की अनुवृत्ति होती है। समास: इस अव्ययीभाव में दो पद अधिकृत किया गया है। और मात्र अर्थ में विद्यमान से प्रति के साथ समर्थ सुबन्त को अव्ययीभावसंज्ञा होती है यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण होता है शाकप्रति। शाकस्य लेश: इस लौकिक विग्रह होने पर शाक डस् प्रति ''अलौकिकविग्रह होने पर प्रकृतसूत्र से मात्र अर्थ में विद्यमान के प्रति इस अव्यय के साथ सह शाक डस् इससे समर्थ का सुबन्त को अव्ययी भाव संज्ञा होती है। इसके बाद ''प्रथमानिर्दिष्ट समास उपसर्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में सुबन्त का प्रथमानिर्दिष्ट होने पर उसके बोधक का ज्ञाक ङस् इसकी उपसर्मन संज्ञा होने पर उसका पूर्व नियात होने पर **शाक ङस्** प्रति ऐसा होने पर समास का प्रातिपदिक से अवयप का सुप का ङस् प्रत्यय का लोप होने से प्रातिपदिक से शाक प्रति इससे प्रथमा एकवचने सु होने पर, अव्ययत्व होने से सु का लोप होने पर शाक प्रति यह रूप निष्पन्न होता है।

(1.16) समासान्ता:

सूत्रार्थ–पञ्चम का चतुर्थपाद का परिसमाप्ति तक समासान्त अधिकार है।

सूत्र व्याख्या–यह अधिकार सूत्र है। इस समासान्त अधिकार का विधान होता है। पञ्चम अध्याय का चतुर्थपाद का परिसमाप्ति तक यह सूत्र का अधिकार है। उससे इस सूत्र से पर पञ्चमाध्याय परि समाप्ति तक जब तक विद्यमान सूत्रों के द्वारा विहित कार्य का समासान्त संज्ञा होती हैं।

(1.17) अव्ययीभावेशरत्प्रभुतिभ्य:

सूत्रार्थ–अव्ययीभाव समास होने पर शरदादि प्रातिपदिक से पर समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। समासान्त के टच् प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। वहाँ अव्ययीभाव होने से सप्तमी एकवचनान्त को शरद आदि तक पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ''प्रत्यय'', ''परश्च'', ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' इस पञ्च सूत्र का अधिकार है। सरत प्रञ्तति येषां ते शरत्प्रभृतय: तेभ्य: शरद् प्रभुतिभ्य: (शरद आदि हैं जिनके वे.... तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास है। तराजाह: राखिभ्य: टच्'' इस सूत्र से ट्च प्रञ्मान्त की अनुवृत्ति है। एवं अव्ययीभाव समास होने पर शरहादि से प्रातिपदिक से पर समासान्त तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस का उदाहरण है उपशरदम्। शरद: समीप इस लौकिक विग्रह होने पर शरद् ङस्

उप इसका अलौकिक विग्रह होने पर ''अव्यय विभक्ति....'' इत्यादि सूत्र से अव्ययीभाव समास होने पर उपशरद शब्द निष्पन्न होता है। तब शरदादि अण में शरद शब्द पढ़ा गया है। अत: उपशरद इस अव्ययीभाव संज्ञा होने पर प्रस्तुत सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टच् के टकार का और ''चुटू'' इस चकार का ''हलन्त्यम्'' यह संज्ञा होने पर इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोप:'' यह लोप होने पर उपशरद् अ होता है। इसके बाद सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न होने पर उपशरद इस प्रातिपदिक से सुके स्थान पर अम् होने पर प्रक्रिया कार्य में **उपशरदम्** रूप निष्पन्न होता है। इस प्रकार ही प्रतिविपाशम् उपजरसम् इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-8

71. ''नदीभिश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

72. ''नदीभिश्च'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

73. समाहार अर्थ में एवं ''नदीभिश्च'' इस सूत्र से समास कैसे होता है?

74. ''तद्धिता'' इस सूत्र का अधिकार कहाँ तक है?

75. ''समासान्ता:'' इस सूत्र का अधिकार कहाँ तक है?

76. ''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्य'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

77. ''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्य:'' यहाँ शरद् प्रभृति: यहाँ कौन सा समास है।

78. ''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्य:'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

1.20. ''अनश्च''

सूत्रार्थ–पाणिनीय सूत्रों में विधि सूत्र है। समासान्त टच् प्रत्यय के विधान यह प्रवृत्त हुआ है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। वहाँ अन यह पञ्चमी एकवचनान्त और अव्यय पद है। अव्ययीभाव में शरद आदि इससे स्वीकृत का अव्ययीभाव होने पर इसके विभक्तिविपरिणाम से अव्ययीभाव से होता है। अव्ययीभाव से होता है। अव्ययीभाव से इस विशेषण से अन: तदन्त विधि में अन्नन्ताद् से होता है। ''लद्धिता:'' तसमासान्ता:'' तप्रत्यय:'' तपश्च'' ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' पञ्चक सूत्र का अधिकार सूत्र है। ''राजाह: सखिभ्यष्टच्'' इस सूत्र से टच् के प्रथमान्त की अनुवृत्ति होती है। और अन् अदन्त से अव्ययीभाव से पर समासान्त तद्धिसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है यही सूत्रार्थ है।

1.21. ''नस्तद्धिते''

सूत्रार्थ–नान्त (न हो अन्त में जिसके) के असंज्ञक के टि का लोप होता है तद्धित पर में होने पर।

''सूत्र व्याख्या'' पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। उपराजन् अ इस स्थिति होने पर (न अन्त वाले) नान्त का उपराजन् इस टि लोप विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। वहाँ न का षष्ठीवचनान्त तद्धित होने पर सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''भस्य'' यह अधिकृत सूत्र है। ''टेः'' इस सूत्र से टेः इस षष्ठयन्त पद की अनुवृत्ति होती है। ''अल्लोपोडनः'' इस सूत्र से लोप के प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। नः पद भ का विशेषण है।

पूर्व+ +पर

अतः तदन्त विधि में नकारान्त का होता है। ''नकारान्त यसंज्ञक का टि का लोप होता है तद्वित पर में होने पर यही सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–अव्ययीभाव समास होने पर उपराजन् अ इस स्थिति होने पर तद्धित प्रत्यय होने पर टच् प्रत्यय होने पर 'यचिभम्' इससे भसंज्ञा होती है। इसके बाद प्रस्तुत सूत्र से भसंज्ञक उप राजन् शब्द के टि का अन् लोप होने पर उपराज् अ य होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न होने पर उपराज शब्द से यु, यु का अम् होने पर प्रक्रिया कार्य में उपराजम्रूप निष्पन्न होता है।

(1.22) ''नपुंसकादन्यतरस्याम्''

सूत्रार्थ–नपुंसक अन् अन्त से अव्ययीभाव से पर समासान्त का तहितसंज्ञक टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। विकल्प से समासान्त टच् विधान के लिए यह प्रवृत्त हुआ है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। यहाँ नपुंसक से पञ्चमी एक वचनान्त का और अन्यतरस्य का विकल्प अर्थक अव्ययपद है। ''अनश्च'' इस सूत्र से अनः इस का ''अव्ययीभावशरद्प्रभृतिः'' यहाँ से अव्ययीभाव होने पर विशेषणत्व होने से अन् का तदन्त विधि में अत्रन्तात् होता है। ''राजाहः सखिभ्यष्टच्'' इस सूत्र से टच् इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति होती है। ''तद्धिताः'' ''समासान्ता'' ''प्रत्ययः'', ''परश्च'' ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' इन पञ्चक सूत्रों का अधिकार है। और 'नपुंसक से अन् अन्त से अव्ययीभाव से पर समासान्त तद्धित संज्ञक का टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।'' यही सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है उपचर्मम्। चर्मणः समीपम् इति इस लौकिक विग्रह में चर्मन् ङस् उप यह अलौकिक विग्रह होने पर ''अव्ययं विभक्ति...'' आदि सूत्र से अव्ययीभाव समास होने पर उपचर्मन् शब्द निष्पन्न होता है। उपचर्मन् इस अव्ययीभाव समास के अत्रत्व नपुंसक होने पर विद्यमान मान से इस सूत्र से विकल्प से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टच् पक्ष होने पर उपचर्मन् अ इस स्थिति होने पर ''नस्तद्धिते'' इस सूत्र से तहित में टच् प्रत्यय होने पर ''याचिभम्'' इससे भसंज्ञक उपचर्मन् शब्द के टि का अनलोप होने पर सर्वसंयोग होने पर उपचर्म शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद उपचर्म शब्द सुका अम् होने पर प्रक्रियाकार्य में उपचर्यम् रूप निष्पत्र होता है। टच् अभाव पक्ष में उपचर्मन् प्रतिपादिक से सु का लोष होने पर ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्थ' इससे न लोप होने पर उपचर्म रूप निष्पन्न होता है।

1.23 ''झयः''

सूत्रार्थ- क्षयन्त अव्वयीभाव से पर समासान्त तहित टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या :- पाणिनीप्रणीत छः विधि सूत्रों में यह विधि सूत्र है। विकल्प से समासान्त टच् प्रत्यय विधायक यह सूत्र है। इस सूत्र में क्षयः यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''अव्ययीभावेशरत्प्रमृतिम्यः'' यहाँ से अव्ययीभाव में पद की अनुवृत्ति है। अव्ययीभाव में इसका विभक्ति विपरिणाम से **अव्ययीभावाद्** होता है। अव्ययीभाव से इस विशेषण से (क्षयः) क्षि का तदन्त विधि होने पर क्षयत्तात् होता है। ''नपुंसकादन्यतरस्थाम्'' इस सूत्र से अन्यतरस्याम् पद की अनुवृत्ति होती है। ''राजाहः सखिभ्यश्च'' इस सूत्र से टच् इस प्रथमान्त पद की अनुवर्ती होती है। ''समासान्ताः'', ''तद्विताः'' ''प्रत्ययः'' ''परश्च'' यह चार सूत्र अधिकार हैं। क्षयन्त अव्यर्थाभाव से पर समासान्त तहित से टच् प्रत्यय विकल्प से होता है यही सूणर्थ है।

उदाहरणः- इस सूत्र का उदाहरण है उपसमिधम्। समिधः समीपम् इस लौकिकविग्रह में समिध् ङस् उप यह अलौकिक विग्रह होने पर ''अव्यय विभक्ति--'' इस सूत्र से अव्ययीभाव समाज होने पर पर उपसमिध् शब्द निष्पन्न होता है। उपसमिध इस अव्ययीभाव का चकार का क्षय होने पर प्रस्तुत सूत्र में विकल्प से उससे समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टच् पक्ष में उपसमिध् अ इस स्थिति होने पर सु की प्रक्रियाकार्य में उपसमिधम् रूप होता है। टच् के अभाव में उपसमिध इस प्रातिपदिक से सु उपसमित यह रूप है।

पाठगत प्रश्न-9

79. ''अनश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

80. ''अनश्च'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

81. ''नस्तद्धिते'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

82. ''नस्तद्धिते'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

83. ''नपुंसकादन्यतरस्याम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

84. ''नपुंसकादन्यतरस्याम्'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

85. ''क्षयः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

86. ''क्षयः'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

पाठसार

पदविधियों में अन्यतम का समास होता है। उसके समास का लक्षण है- ''पाणिनीयसङ्केक्तसम्बन्ध समासपदवत्त्वम्'' (पाणिनी के सङ्केक्त सम्बन्ध से समासपदवत् है। समास में जिन सामाजिक पद हैं उनका ''समर्थः पदविधिः सूत्र द्वारा बलपूर्वक समर्थ होते हैं। समान अर्थ होने पर समाज

में एकार्थीभाव का सिद्धान्त है।

समास के भेद विषय में बहुत सी विप्रतिपत्तियाँ हैं। सामान्यतया पाँच भेद होते हैं- 1. केवलसमास 2. अव्ययीसमास 3. तत्पुरुषसमास 4. द्वन्दसमास और 5. बहुत्रीहि समास। उनमें इस पाठ मे केवलसमास का और अव्ययीभावसमास का विवरण किया गया है।

अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द इत्यादि में विशेष संज्ञा विनिर्मुक्त समास होता है केवलसमास। अव्ययीभाव में प्राय: पूर्वपदार्थप्रधान होता है। यहाँ ''समर्थ:पदविधि'' इस सूत्रवर्णन अवसर में वृत्तिविग्रह आदि पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया। इसके बाद समास अधिकार कहां तक है इस बोधक ''प्राक्कडारात्समास:'' यह सूत्र प्रस्तुत किया गया। इस सूत्र के सामर्श्य से ''कडारा: कर्मधारये'' यहाँ से प्राकृ पर्यन्त समास अधिकार है। परन्तु ''सहसुपा'' इस सूत्र का ''इवेन सह समासो विभक्त्यज्ञोपश्च'' इस वार्तिक का केवलसमासविधायक का प्रतिपादन हुआ। वहाँ प्रसङग् से उपसर्जन संज्ञा विधायक ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' और इस पूर्वनियात विधायक ''उपसर्जनपूर्वम्'' पर सूत्र प्रस्तुत किया गया। इसके बाद समास का प्रातिपदिक संज्ञक का अवयनभूत का सूत्र लोपविधायक को ''सुणेधातुप्रातिपडिकया:'' सूत्र की व्याख्या की गई है।

अव्ययीभावसमास के अधिकार बोधक सूत्र हैं ''अव्ययीभाव:''।

इसके बाद ''अव्ययं विभक्ति समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावाऽत्ययाऽसम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव पश्चात्-यथाऽऽनुपूर्व्य- यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु'' इस सूत्र का अव्ययीभाव समास संज्ञक का व्याख्यान अवसर पर बहूनि अव्ययीभाव कार्य विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई। वहाँ ''अव्ययीभावश्च'' अव्यय भाव का नपुंसकत्वविधायक सूत्र है। गोपि इस विग्रह में अधिगोप इस स्थिति में अदत्त अव्ययीभाव से पर सु का अमादेश विधायक ''नाव्ययी भावादतोऽभ्त्वपञ्चभ्या:'' और ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्'' इन दोनों सूत्रों की व्याख्या की गई।

इसके बाद हरे:सादृश्यम् इस लौकिक विग्रह में सह हरि इस स्थिति में सह का स आदेश विधायक सूत्र ''अव्ययीभावेचाकाले'' प्रस्तुत किया गया। इसके बाद ''अव्ययीभावसमास विध ायक सूत्र ''यावदवधारणे'' ''सुग्रतिना मात्रार्थे'' ''संख्या वेश्येन'' ''नदीभिश्च'' ये चार सूत्र इस पाठ में प्रस्तुत किया गया है। इससके बाद ततद्धिता: ''समासान्ता:'' इन दो अधिकार सूत्रों का वर्णन विहित है। ''अव्ययीभावेशरत् प्रभृतिभ्य:'' ''अनश्च'' इस अव्ययीभावसमासान्त का टच् प्रत्यय विधायक दोनों सूत्रों की व्याख्या की गई है। इसके बाद उपराजम् इत्यादि में टि लोप के लिए ''नस्तद्धिते'' सूत्र की व्याख्या की गई है। उससे टच् पर को विकल्प से विधायकसूत्र ''नपुंसकारन्यतरस्याम्'' ''झथ:'' ये दो सूत्र प्रस्तुत किये गये। इस पाठ में केवल सामस के अव्ययीभाव समास के विधायक और उससे सम्बन्धीकार्य विधायक सूत्रों का प्रतिपादन किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' सूत्र की व्याख्या की गई?

2. ''अव्ययंविभक्ति'' इत्यादि सूत्र की व्याख्या की गई है?
3. उपकृष्णम् कप की सिद्धि कीजिये?
4. अधिहरि यह रूप सिद्धि कीजिये?
5. यथाशक्ति रूप को सिद्ध कीजिये?
6. ''संख्यावंश्येन'' इस सूत्र की व्याख्या की गई?
7. ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस सूत्र की व्याख्या की गई है?
8. ''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्य:'' इस सूत्र की व्याख्या की गई?
9. उपशरदम्'' रूप को सिद्ध करो?
10. उपसमिघम् रूप को सिद्ध करो?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. परिभाषासूत्रम्
2. समर्थ आश्रित
3. पदसम्बन्धी विधि
4. पदसम्बन्धी जो विधि वह समर्थ आश्रित होता है।
5. परार्थ का अभिधान (कथन) वृत्ति।
6. पञ्च (पाँच)
7. वृत्ति अर्थक बोधक वाक्य को विग्रह कहते है।
8. विग्रह के दो भेदों में।
9. अधिकारसूत्र
10. तकडारा: कर्मधारये'' सूत्र का ग्रहण।

उत्तर-2

11. दो सुबन्तों का समास होता है।
12. सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है।
13. भूतपूर्व:

14. उपसर्जनसंज्ञा
15. समास विधायक सूत्र का ग्रहण
16. समास विधाायक सूत्र में जो प्रथपान्त का बोधित उपसर्जन संज्ञा होती है?
17. प्रथमानिर्दिष्ट नाम प्रथमान्तपद बोधित होना चाहिए।
18. प्रथमानिर्दिष्टं समास होने पर संज्ञिदल और उपसर्जन संज्ञापद है।
19. उपसर्जन संज्ञक का पूर्व निपात होता है।
20. समास में उपसर्जन संज्ञक का पूर्व प्रयोग होना चाहिए यह सूत्र का अर्थ है।
21. कृष्णाश्रित

उत्तर-3

22. लुक (लोप) होता है।
23. धातु और प्रातिपदिक के अवयव के द्युप् का लुक् (लोप) होता है।
24. धातु और प्रातिपदिक में षष्ठी विभक्ति होती है। इतरेतरयोग द्वन्द है।
25. भूतपूर्वे चरट् (भूतपूर्व में चरट्) इस निर्देश से।
26. भूतपूर्वः
27. द्वव शब्द के साथ सुबन्त की समास संज्ञा होती है। समास के अवयव की विभक्ति का लोप नहीं होता है।
28. वागर्थविव।

उत्तर-4

29. अधिकार सूत्र।
30. तत्पुरुष इस सूत्र से पहले (प्राक्) अव्ययीभाव का अधिकार है।
31. विभक्ति आदि अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है।
32. विभक्तिपद अधिकरणकारक बोधित होता है।
33. ''द्वन्द्वान्ते श्रूथमाणं पदं प्रत्येकमभिसम्बध्यते'' इस न्याय से वचन शब्द का विभक्ति आदि से प्रत्येक सम्बन्ध होता है।
34. ऋद्धेराधिक्यं समृद्धिः सम्पत्ति नाम अनुरूप आत्मभाव।
35. पदार्थ का अनुलङ्घन।

टिप्पणियाँ

36. सादृश्य के गौण होने पर भी समास विधान के लिए सुत्र में पुनः सादृश्य ग्रहण किया गया है।

उत्तर-5

37. नपुंसकत्वं का विधान होता है।

38. अव्ययीभाव संज्ञक शब्द नपुंसक होता है।

39. विधि सूत्र।

40. अमादेश।

41. अदन्त अव्ययीभाव से सुप् का लोप नहीं होता है, और उसका पञ्चमी के बिना अमादेश होता है।

उत्तर-6

42. विधि सूत्र।

43. अमादेश।

44. अदत्त अव्ययीभाव से तृतीया और सप्तमी के बहुल का अमादेश होता है।

45. उपकृष्णम्।

46. सुमद्रम्

47. दुर्यवनम्

48. निर्मक्षिकम्।

49. अतिहिमम्

50. अतिनिद्रम्।

51. इतिहरि।

52. अनुविष्णु।

53. अनुरूपम्।

54. प्रत्यर्थम्।

55. यथाशक्ति।

उत्तर-7

56. सह शब्द का स आदेश होता है।

57. सह शब्द का स आदेश होता है अव्ययीभाव होने पर, काल विशेष वाचक उत्तरपद पर होने पर नहीं होता है।

58. सहरि

59. अनुज्येष्ठम्।

60. सचक्रम्।

61. ससखि।

62. सक्षत्रम्।

63. साग्नि।

उत्तर-8

64. अवधारण अर्थ होने पर यावत इस अव्यय का सुबन्त के समर्थ के साथ समास संज्ञा होती है। और यह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है।

65. यावच्छालोकम्।

66. मात्र अर्थ में विद्यमान प्रति के साथ समर्थ का सुबन्त की अव्ययीभाव समास संज्ञा होती है।

67. शाकप्रति।

68. वेश्यवाचक सुबन्त के साथ संख्यावाचक सुबन्त को विकल्प से समास संज्ञा होती है और वह अव्ययीभाव संज्ञक होता है।

69. त्रिमुनि।

70. दो प्रकार के।

उत्तर-9

71. नदी विशेषवाचक सुबन्त के साथ संख्यावाचक सुबन्त का विकल्प से अव्ययीभाव समास संज्ञा होती है।

72. पञ्चगङ्गम्।

73. ''समाहारे चापामिथ्यते'' इस सूत्रस्थ वार्तिक बल से।

74. पञ्चम अध्याय समाप्ति पर्यन्त।

75. पञ्चम अध्याय के चतुर्थ वाद के परिसमाप्ति तक इस सूत्र का अधिकार है।

76. अव्ययीभाव समास में शरद आदि प्रातिपदिक से पर (आगे) समासान्त से तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

77. उसके (संज्ञा के) गुणसंविज्ञान में बहुव्रीहि समास होता है।

78. उपशरदम्।

उत्तर-10

79. अदन्त अव्ययीभाव समासान्त तहिक संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

80. उषराजम्

81. तद्धित पर में होने पर नान्त (न अन्त वाले) टि (अन्) का लोप होता है।

82. उपराजन्।

83. नपुंसक अदन्त अव्ययीभाव से पर समासान्त तहित संज्ञक टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।

84. उपचर्मम्।

85. झयन्त अव्ययीभाव से पर समासान्त तद्धित को टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।

86. उपमिघम्।

प्रथम पाठ समाप्त

2

तत्पुरुष समास
''द्वितीयादि तत्पुरुष समास''

अव्ययीभाव समास से पर तत्पुरुष उपस्थित होता है। (आता है।) (किया जाता है) ''तत्पुरुषः'' इसको अधिकृत करके यह समास (तत्पुरुष) प्रवृत्त होता है। प्रायेण उत्तरपद प्रधान होता है वह यही (तत्पुरुष) समास है। उत्तर पद का अर्थ उत्तरपदार्थ। उत्तरपदार्थ प्रधान है जिसमें वह उत्तरपदार्थप्रधान। जैसेः राज्ञः पुरुषः इस विग्रह में राजपुरुष है। यहाँ समासिक दोनों पदों के उत्तर पद का पुरुष पद का अर्थ ही प्रधान है। जिस प्रकार राजपुरुषम् आनय (राजपुरुष को लाओ) ऐसा कहने पर पुरुष रूप अर्थ का आनयम् (बुलाना) इण्ट न ही है राजन् पद का अर्थ राज्ञः। और सामान्यतः उत्तरपदार्थ प्राधान्य को तत्पुरुष समास में दिखाई देता है।

यह तत्पुरुषसमास समानाधिकरण और व्यधिकरण दो विधियों में विभक्त (प्रकार) बोल सकते हैं। समान अधिकरण जिन दोनों में वे पद पद सयानाधिकरण कहा जाता है। समान विभक्ति के कौन से पद हैं। समान अधिकरण में ये दो है समानाधिकरण अर्थ आदि होने से अच् प्रत्यय होता है। और व्यधिकरण नाम असमान विभक्ति होने का है। व्याधिकरण में है जिसका है व्यधिकरण यह अर्श आदि अच् प्रत्यय होता है। अर्थात् जिस पुरुष में समस्यमान पदों की समान विभक्तियाँ नहीं होती है। इस पाठ में आदि में तत्पुरुष अधिकार का वर्णन है। इसके बाद विशेष प्रयोजन साधन के लिए द्विगु समास की तत्पुरुष संज्ञा का वर्णन किया गया या तत्पुरुष संज्ञा वर्णित है। इसके बाद व्यधिकरण तत्पुरुष समास विधायकों सूत्रों द्वितीयाश्रितातीत ... इन सूत्रों की यहाँ आलोचना होती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- तत्पुरुष अधिकार की सीमा जान पाने में;
- द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा को जान पाने में;
- व्यधिकरण तत्पुरुष विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- षष्ठी समास निषेध सूत्रों को जान पाने में।

2.1 ''तत्पुरुषः''

सूत्रार्थ–''शेषो बहुव्रीहि'' इस सूत्र पर्यन्त तत्पुरुष अधिकार है।

सूत्रव्याख्या–यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास अधिकार का विधान होता है। इस सूत्र में तत्पुरुषः यह पद प्रथमा एकवचनान्त है। ''प्राक्कडारात्समासः'' अधिकृत किया गया है यहाँ। तत्पुरुष समास के अधिकार का इस सूत्र से विधान होता है। अथम् अधिकारः ''शेषोबहुव्रीहिः'' इस सूत्र से प्राव-पर्यन्त है। एवं तत्पुरुष इस सूत्र से ''शेषो बहुव्रीहिः'' इससे पहले सूत्रों से जो समास होता है वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

(2.2) ''द्विगुश्च''

सूत्रार्थ–द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्रव्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से द्विगुसमास की तत्पुरुष संज्ञा होती है। इस सूत्र में द्विगु इस पद प्रथमा एकवचनान्त है और अव्ययपद है। ''तत्पुरुषः'' ऐसा पूर्व सूत्र से अधिकृत किया गया है। तत्पुरुषः इस संज्ञापद को द्विगु इस संज्ञिपद है। और सूत्रार्थ होता है–''द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।

इससे आगे ''तद्वितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र से तत्पुरुष अधिकार होने से त्रयसमास का विधान हुआ। तीनों समासो में जिस समास में पूर्वपदसंज्ञावाचक होता है उस समास की ''संख्यापूर्वो द्विगुः'' इस सूत्र से द्विगु संज्ञा का विधान होता है। ''आकडारादेका संज्ञा'' इस एक संज्ञा अधिकार से अन्य प्रकार से द्विगु तत्पुरुष का बाधक होता है। परन्तु द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा अभीष्ट होती है अतः विशेषण सूत्र से तत्पुरुषसंज्ञा का विधान किया गया है। पाँच राजाओं का समाहार (पञ्चानां राजानां समाहार) इस विग्रह में पञ्चराजन् यहाँ तत्पुरुषसमासान्त का ''राजाहः सखिभ्यष्टच्'' इससे टच की प्रवृत्ति होती है। इससे बाद प्रक्रिया कार्य में पञ्चराजम्' शब्द निष्पन्न होता है।

(2.3) ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः''

सूत्रार्थ–द्वितीयान्त सुबन्त को श्रित आदि प्रकृति के सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष सामस संज्ञा होती है।

सूत्रव्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में द्वितीया इस प्रथमा एक वचनान्त ''श्रितातीतपतिगतात्यस्तप्राप्तापचैः'' यह तृतीया बहुवचनान्त पद है। अतीतश्च पतितश्च गतश्च अल्यस्तश्चनाप्राप्तस्य आपन्नश्च श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नाः उनके द्वारा इतरेतरयोगद्वन्दसमास हैं। ''यह सुपा'' इस सू से सुपा की अनुवृत्ति होती है। और उसका --श्रितातीत पतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' इसके विशेषण से वचन परिणाम से तदन्तविधि में सुबन्त के द्वारा समाज प्राप्त होता है। यहाँ शंका (प्रश्न) उत्पन्न होती है कि श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः इसका और सुबन्तों के द्वारा किस प्रकार समानाधिकरण होता है? क्योंकि श्रित आदि सुबन्त्व नहीं है। और जिनके सुबन्तत्व नहीं होता है उनका श्रितादित्व नहीं होता है। अतः श्रित आदि शब्दों के उसकी प्रकृति (स्वभाव) के लक्षण हैं। अर्थात् श्रित आदि प्रकृति का जिनके वे सब श्रित आदि प्रकृतिक यहाँ श्रित आदि पदों से ग्रहण किये गये हैं। श्रितादि सुबन्तों के द्वारा श्रितादिप्रकृति के द्वारा सुबन्त आदि का समास होता है यही सूत्र का अर्थ है। ''प्राक्कडारात्समासः''' ''सहसुपा'' ''तत्पुरुषः'' ''विभाषा'' ये चार प्रकार के सूत्र अधिकृत किये गये हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। इस तदन्त विधि में सुबन्त। सुबन्त के विशेषण से द्वितीया इसका तदन्तविधि में द्वितीयान्त सुबन्त को तत्पुरुष समास होता है। और सूत्रार्थ आता है–''द्वितीयान्त सुबन्त को श्रितादि प्राकृतिकों द्वारा सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

यहाँ द्वितीयात्त को समर्थ से सुबन्त से समास होता है। और वह समास है तत्पुरुषसमास। अतः यह समास द्वितीयातत्पुरुष समास कहा जाता है।

उदाहरणम्–इस सूत्र का अर्थ है ''कृष्णश्रितः''। कृष्णं श्रितः इस लौकिक विग्रह में कृष्ण अम् श्रित सु इस अलौकिक विग्रह में प्रस्तुतसूत्र से द्वितीयान्त कृष्ण अम् इस सुबन्त को श्रित सु इस श्रितप्रकृतिक से सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद समासविद्यायकसूत्र में द्वितीया इसका प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसके बोध्य का **कृष्ण अम्** इसका ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इससे उपसर्जन संज्ञा होने पर ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व निपात होने पर **कृष्ण अम् श्रित सु** होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे समास की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपो धातुप्रातिपदिकथोः'' इस सूत्र से प्रातिपदिक अव्यय का सुप् का अय् आदेश एवं सु प्रत्यय का लोप होने पर कृष्णश्रित होता है। ''एकदेशविकृतमनन्थवत्'' इस न्याय से कृष्णश्रित शब्द के प्रातिपदिक आक्षय से इसके बाद ''प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय होने पर कृष्ण+यु स्थिति होती है। सु के उकार का ''उपदेशेजनुनासिक इत्'' इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप (उकार का) होने पर कृष्णश्रित स् होता है। इसके बाद ''सुप्तिङन्तं पदम्'' इससे समुदाय की पद संज्ञा होने पर ''समश्रुषोक्तः'' इससे सकार का रुकार होने ''खखसानयोर्विसर्जनीयः'' इस सूत्र से पदान्त के रकार का विसर्ग आदेश होने पर ''कृष्णश्रितः'' रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार दु:खम् अतीत: दु:खातीत: नरकं पतित: नरकपतित: ग्राम गत: ग्रामगत:, ग्रामं अस्त्यस्त: ग्रामात्यस्त:, यामं प्राप्त: ग्राम प्राप्त: संशयम् आपन्न: संशयापन्न: आदि इस सूत्र के उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''तत्पुरुष:'' इसका अधिकार कहाँ तक (कितने सूत्रों तक) है?
2. ''द्विगुश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
3. द्विगुसमास का तत्पुरुष संज्ञा विज्ञान में क्या प्रयोजन है?
4. ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' सूत्र का क्या अर्थ है?
5. ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' सूत्र का क्या अर्थ है?
6. ''श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' यहाँ कौन सा समास है और कौन सा विग्रह है?
7. श्रितादि शब्दों की लक्षण किसमें है?
8. ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

(2.8) ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन''

सूत्रार्थ–तृतीयान्त सुबन्त को तृतीयान्त विभक्ति अर्थ में गुण, वचन और अर्थ शब्द के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

सूत्र का अवतरण:–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्रव्याख्या–इस सूत्र में तृतीया तत्कृत अर्थेन गुणवचनेन यही पदच्छेद है। तृतीया यह प्रथमाविभक्ति एकवचनान्तपद है। तत्कृत यह लुप्ततृतीयान्त पद है। अर्थेन गुणवचनेन ये दो पद तृतीया एकवचनान्त हैं। ''प्राक्कडारात्समास:'' ''तत्पुरुष:'' ''विभाषा'' ये तीन सूत्र अधिकार सूत्र है। ''सुवामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृति हुई है। सुप् का तदन्त विधि में युबन्तम् होता है। सुबन्त का विशेषण होने से तृतीया का तदन्त विधि में तृतीयान्तम् पद प्राप्त होता है।

''छन्दोवत्सूत्राणि भवन्ति'' इस भाष्यवचन से ''सुपां सुलुक'' इस सूत्र से तृतीया एकवचन का लोप होने पर **तत्कृत** रूप प्राप्त हुआ। तत्कृतेनत्यर्थ (उसके लिए यह अर्थ होता है)। तेन कृतं तकृतम्, तेन इति उससे तृतीयातत्पुरुष समास हुआ। तत्कृतपद का तृतीयान्त अर्थक किया हुआ अर्थ प्राप्त हुआ। गुणमुक्तवान इस विग्रह में ''कृत्यल्युटोबहुलम्'' यहाँ बहुल ग्रहण से कर्तृअर्थ में भूतकाल में ल्युट् प्रत्यय होने पर गुणवचनशब्द निष्पन्न होता है। जो शब्द पूर्व गुणवाचक थे

अब द्रव्यवाचक वे ही गुणवचनशब्द से गृहित होते हैं। जैसे श्वेतशब्द का गुणवाचक गुण और गुणिन (गुणयों) के मध्य उपचार से श्वेतगुणविशिष्ट पदार्थ का अर्थ स्वीकार किया है। अथवा उससे मत्रुप् प्रत्यय होने पर ''गुणवचनेभ्यो मतुपो लुगिष्टः'' इस वार्तिक से मतुप् प्रत्यय का लोप होने पर श्वेतशब्द का श्वेत-गुणविशिष्ट पद की वाचकता प्राप्त हुई है। और श्वेत शब्द गुणवचन है। तत्कृत का गुणवचन से यहाँ अन्वय हुआ है। एवम् यहां अर्थ हैं तृतीयान्तार्थकृतेन गुणवचनेन (तृतीयान्तर्थक कृत गुण वचन से) अर्थ से इसका अर्थ प्रकृति से सुबन्त से यही अर्थ हैं। इस सूत्र का अर्थ है'' तृतीयान्त सुबन्त को तृतीयान्तर्थकृत गुणवचन और अर्थशब्द के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

यहाँ तृतीयान्त के समान अर्थ से सुबन्त से समास होता है। और वह तत्पुरुष समास है। अतः यह समास तृतीयातत्पुरुषसमास कहा जाता है।

उदाहरण–तृतीयान्त का तृतीयान्तार्थ गुण और वचन के साथ समास में इस सूत्र का उदाहरण है शङ्कुलाखण्डः है। यहाँ खण्डशब्द खण्डगुणबोधक होकर खण्डनगुणविशिष्ट के अंश का बोधक है। शङ्कुलया खण्डः इस लौकिक विग्रह में शङ्कुला टा खण्ड सु यह अलौकिक विग्रह होने पर प्रस्तुत सूत्र से तृतीयान्त शङ्कुला टा यह सुबन्तखण्ड सु ऐसा तृतीयान्त अर्थ गुणवचन से सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में तृतीया के प्रथमाविभक्ति निर्दिष्ट होने पर उसके बोध का शङ्कुला टा इसकी उपसर्जनसंज्ञा होने पर पूर्वनिपात में शङ्कुला टा खण्ड सु होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिक होने पर प्रातिपदिक अवयव का सुबन्त का टा प्रत्यय क और सु का लोप होने पर शङ्कुलाखण्ड शब्द निष्पन्न होता है। उसका प्रातिपदिक होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय होने पर खङ्कुलाखण्डः रूप सिद्ध होता है।

अर्थ प्रकृति से सुबन्त के साथ तृतीयान्त का समास में उदाहरण होता है। धान्येन अर्थः धान्यार्थः (धान्य से अर्थ यह धान्यार्थ है)

2.5 ''कर्तृकरणेकृता बहुलम्''

सूत्रार्थ–कर्ता और करण में विद्यमान तृतीयान्त सुबन्त को कृदन्त के साथ बहुल तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से तृतीय तत्पुरुष समास होता है। तीन पदात्मक इस सूत्र में **कर्तृकरणे** में सप्तमी एकवचनान्त, कृता यह तृतीया एकवचनान्त बहुल यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। तृतीया तत्कृत अर्थ से गुण और वचन से इस सूत्र से तृतीया इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति होती है। ''प्राक्कडारात्समासः'' ''तत्पुरुषः'' ''विभाषा'', ये तीनों अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रितेपराङ्गवत्सरे'' इससे सुप् की अनुवृति होती है। सुप् का तदन्तविधि में सुबन्तम् होता है। कर्ता और करण यही कर्तृकरणम् तस्मिन् (उसमें) कर्तृकरणे में समाहार द्वन्द है। तृतीया का सुबन्त का विशेषण से तदन्तविधि में तृतीयान्त सुबन्त प्राप्त होता है। कतृकरणे इसका तृतीयान्त सुबन्त की इससे अन्वय होता है। उससे कर्ता और करण में विद्यमान तृतीयान्त सुबन्तः को समास होता है यही अर्थ है। सुपा यहाँ पर तदन्त विधि में सुबन्तेय रूप होता है।

टिप्पणियाँ

सुबन्तेन इसके विशेषण से कृता पद इसका तदन्तविधि में कृदन्त से सुबन्तेन (सुबन्त से) प्राप्त होता है। कृदन्त का सुबन्त के अभाव से कृदन्तशब्द से कृदन्त प्रकृति का ग्रहण किया गया है। और कृदन्त प्रकृति से सुबन्तेन (सुबन्त से) यही तात्पर्य है। ''कर्तरि करणे च'' विद्यमान तृतीयान्त सुबन्त को कृदन्त के साथ बहुल तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ है।

सूत्र में बहुलग्रहण किया गया है। बहुल शब्द का अर्थ है–विधि विधान का बहुत प्रसार से समीक्षा करके ''कहीं प्रवृति से, कहीं अप्रवृत्ति से कहीं अन्य से ही, कहीं विकल्प से, इस प्रकार चार प्रकार का बाहुलक कहे जाते हैं।

अत: कर्ता में और करण में तृतीया का कहीं समास नहीं होता है। कहीं पर विभक्ति के अन्तर में भी समास होता है।

''कृद्ग्रहण में गतिकारक पूर्व पद का भी ग्रहण किया गया है।'' यही परिभाषा का इस सूत्र में उपयोग है।'' कृदन्त के ग्रहण में गतिपूर्व के कारक पूर्व का भी ग्रहण होता है'' यही परिभाषा का अर्थ है। सूत्र में कृता इससे कृदन्त ग्रहण से यहाँ प्रसङ्ग से गति पूर्व का भी कृदन्त का भी ग्रहण होता है।

उदाहरण–कर्ता में तृतीयान्त का कृदन्त से समास का उदाहरण है हरित्रात:। त्रातशब्द कृदन्त है और हरि यहाँ तृतीयान्त कर्ता है। हरिणा त्रात: इस लौकिक विग्रह में हरि टा त्रात सु इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से कर्ता में विद्यमान हरि टा इस सुबन्त को त्रात सु सुबन्त के साथ तत्पुरुषसंज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न हरिशब्द से प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय होने हरित्रात: रूप सिद्ध होता है। करण में समारा का उदाहरण है नखैभिन्न: नखभिन्न। भेदन क्रिया में नख (नाखून) करण और भिन्नशब्द कृदन्त है।

बहुल ग्रहण से समास अभाव का उदाहरण जैसे: दात्रेण, लुनवान इत्यादि है। विभक्ति के अन्तर को समास होता है जैसे: पादसारक छिपते इति हारक: बहुलक से कर्म से ण्वुल् प्रत्यय है। पादाभ्याम् से अपादानपञ्चम्यन्त का समास होता है।

गतिपूर्वक के ग्रहण में नखनिर्भिध: उदाहरण है। यहाँ निर्भिन्न: यहाँ पर निर् गतिसंज्ञक है। और निर्भिन्न: इस गतिपूर्वक कृदन्त के साथ नखै: इस करण में तृतीयान्त वार्तिक सहायता से प्रस्तुत सूत्र से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। उससे नखनिर्भिव: रूप सिद्ध होती है।

पाठगत प्रश्न-2

9. ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' इस सूत्र का क्या अर्थ है।

10. तत्कृत इसका क्या अर्थ है?

11. गुणवचनपद से किसका ग्रहण किया गया है?

12. ''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये?

13. ''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

14. बहुल ग्रहण का क्या फल है?

15. ''कृद्ग्रहणे गतिकारक पूर्वपदस्यापि ग्रहणम्'' इस परिभाषा अर्थ क्या है?

16. ''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये?

(2.6) ''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुख रक्षितैः'' (2.1.36)

सूत्रार्थ–चतुर्थ्यन्त अर्थ के लिए जो तद् वाची अर्थबलिहित सुख रक्षा के साथ चतुर्थ्यन्त सुबन्त को विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनी सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। यहाँ चतुर्थी प्रथमा एकवचनान्त तथा तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षित शब्दों द्वारा तृतीया बहुवचनान्त पद है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुष ऐसे पद पहले से अधिकृत हैं। और तदर्थश्च, अर्थश्च बलिश्च हितश्च सुखश्च रक्षितश्च **तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितानि** तैः तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः यही इतरेतरद्वन्द हैं। ''प्राक्कडारात्समासः'' ''तत्पुरुषः'' ''विभाषा'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्रासाः'' इस परिभाषा से यहाँ चतुर्थी विभक्ति तदन्त विधि में चतुर्थ्यन्त **सुबन्तम्** पद होता है।

सूत्र में उसके अंश से चतुर्थ्यन्त दिखाई देता है। उससे तदर्थ इस उक्ति में चतुर्थ्यन्त अर्थ जाता है। और कुछ चतुर्थ्यन्त के शब्दस्वरूप से उससे किसी वस्तु का परामर्श अभाव से लक्षणा से चतुर्थ्यन्तेन कहना चाहिए उससे ग्रहण किया जाना चाहिए। उससे ''चतुर्थ्यन्तवाच्य को उस तद्वाची और अर्थादि सुबन्तों के द्वारा और सुबन्त को विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है यही अर्थ प्राप्त होता है।

यहाँ चतुर्थ्यन्त को समर्थ से सुबन्त के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुषसमास होता है। अतः यह समास चतुर्थी तत्पुरुष कहा जाता है।

इस सूत्र के व्याख्यान अवसर पर ''अर्थेन नित्यसमासो विशेष्य लिङ्गता चेति वक्तत्यम्'' यह वार्तिक प्रक्र्तत होता है।'' अर्थशब्द से चतुर्थ्यन्त का नित्यसमास और समास में विशेष्यलिङ्गता होती है। यही वार्तिक का अर्थ है। इस वार्तिक से अर्थ शब्द से चतुर्थी अन्त गले पद को नित्य समास होता है अन्यथा विभाषा अधिकार से अर्थ से समास में विकल्प की आपत्ति होनी चाहिए। यहाँ यह भी ज्ञान होना चाहिए जिस अर्थ से समस्यमान शब्दस्वरूप के विशेषणात्मक प्रधानीभूत की विशेष्यलिङ्कता होनी चाहिए। अन्यथा अर्थशब्द की नित्य पुंसकता से ''परवल्लिङ्गं द्वन्द तत्पुरुषयोः'' इससे सभी जगह पुंसत्व होनी चाहिए।

उदाहरण–तदर्थ का उदाहरण है ''यूपदारु''। यूपाय दारु इस लौकिक विग्रह में यूप ङे दारु सु इस अलौकिक विग्रह में प्रस्तुत सूत्र से चतुर्थ्यन्त यूप ङे इस सुबन्त को दारु सु इस तदर्थ से सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमाससंज्ञा होती है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में चतुर्थी विभक्ति के प्रथमा विभक्ति के निदिष्ट होने से उरा बोध्य के यूप ङे इसकी उपसर्जन होने पर पूर्व नियात में यूप ङे दारु सु होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से प्रातिपदिक अवयव

टिप्पणियाँ

का सुबन्त के ङे प्रत्यय का और सु प्रत्यय का लोप होने पर यूपदारु शब्द निष्पन्न होता है। उसके प्रातिपदिकत्व से प्रथमा विभक्ति की एकवचन विवक्षा में सुप्रत्यय होने पर यूपदारु रूप सिद्ध होती है।

क्या रन्धनाथ स्थाली यहाँ पर भी तदर्थसत्व होने से उससे चतुर्थान्त का सुबन्त समास होना चाहिए? यह शंका (प्रश्न) पैदा होती है। इसका समाधान बताया गया है कि सूत्र में तदर्थशब्द से जहाँ प्रकृति विकृति भाव हो वहीं पर ही समास की प्रसक्ति होती हैं दूसरी जगह नहीं।

अर्थशब्द के साथ समास में तावत् द्विजायायं द्विजार्थः सुपः, द्विजार्था यवागूः द्विजार्थं पथः आदि इसके उदाहरण है। उसी प्रकार भूतबलि, गोहितम्, गोमुखम्, गोरक्षितम् इत्यादि भी इस सूत्र के उदाहरण होते हैं।

(2.6) ''पञ्चमी भयेन''

सूत्रार्थ–पञ्चम्यनत सुबन्त को भय प्रकृति के द्वारा सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह विधायक सूत्र है। इस सूत्र से पञ्चमीतत्पुरुष समास होता है। यह द्वयात्मक सूत्र है। यहाँ पञ्चमी इस प्रथमा एकवचनान्त तथा **भयेन** यह तृतीया एक वचनान्त पद हैं। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''तत्पुरुषः'' ''विभाषा'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवल्स्वरे'' इस पद से सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् इसका तदन्त विधि में सुबन्तम् होता है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः'' इस परिभाषा से तदन्त विधि में पञ्चमी इसके द्वारा पञ्चम्बत्त सुबन्त को ग्राह्य करना चाहिए। भयशब्द के सुबन्तत्व के अभाव से भय प्राकृतिक लक्षणा है। एवं ''पञ्चम्यन्त सुबन्त को भयप्रकृतिक सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ है।

यहाँ पञ्चम्यन्त के सञ् अर्थ से सुबन्त के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुषसमास है। अतः यह समास पञ्चमी तत्पुरुष कहा जाता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है चोरभयम्। चोराद् भयम् इस लौकिक विग्रह में चोर ङसि त्रय सु इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से भय प्रकृतिक द्वारा सुबन्त से त्रय सु इसके साथ चोर ङसि इस पञ्चम्यन्त सुबन्त को तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद पञ्चम्यन्त का पूवनियात होने पर चोर ङसि भय सु ऐसा होने पर प्रातिपदिकत्व से सुलोप होने पर निष्पन्न चोर भयशब्द से सु प्रत्यये की प्रक्रियाकार्य में यह रूप निष्पन्न होता है।

पाठगत प्रश्न-3

17. ''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' इस सूत्र का अर्थ क्या हैं?

18. ''तदर्थखण्ड से किसका ग्रहण होता है।

19. ''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

20. ''अर्थेज नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है।

21. ''पञ्चमी भयेन'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

22. ''पञ्चमी भयेन'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

(2.6) ''स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि वतेन'' (2.9.37)

सूत्रार्थ–स्तोक, अन्तिक, दूर अर्थ वाची और कृच्छशब्द पञ्चम्यन्त को सुबन्त को वत्तान्त प्रकृति सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या– यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से पञ्चमीतत्पुरुषसमास होता है। यह सूत्र का पदद्वयात्मक है। यहाँ रतोकान्तिदूरार्थकृच्छ्राणि यह प्रथमाबहुवचनान्त तथा वतेन तृतीया एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''तत्पुरुषः'', ''विभाषा'' ये तीनों सूत्र अधिकृत हें।'' सुबामकिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति हुई है। सुप् का तदन्तविधि में सुबन्तम् होता है। ''पञ्चमी भयेन'' इस सूत्र से अनुवृत्ति का पञ्चमी का ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः'' इस परिभाषा से तदन्त विधि में पञ्चम्यन्त सुबन्त यही अर्थ है। स्तोकान्तिक इराणि अर्था येवां ते रत्तोकान्तिकइरार्थाः यही बहुब्रीहि समास है और रत्तोकान्तिक दूरार्थाः कृञ्च्छ्रञ्च स्तोकान्तिकइरार्थकृच्छ्राणि यही इतरेतरयोगद्वन्द है। वत्तेन इस अर्थ का तदन्त विधि में तत्प्रकृतिक लक्षणा से क्तान्तप्रकृतिक यही अर्थ है। और सूत्रार्थ आता है ''स्तोकान्तिदूरार्थवाची कृच्छ्रशब्द और पञ्चम्यन्त सुबन्त को क्तान्त प्रकृतिक सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

उदाहरण–इस सूत्र का अर्थ है **स्तोकान्मुक्तः।** इसी प्रकार अल्पान्युक्तः, अन्तिकादागतः इरात् आगतः (दूरादागतः) कृछ्रादागतः इत्यादि अन्य सूत्र के उदाहरण है। स्तोकान्मुक्तः यहाँ स्तोकान्मुक्तः इस लौकिकविग्रह में स्तोक ङसि मुक्त सु इस अलौकिक विग्रह में स्तोकङसि इस पञ्चम्यन्त सुबन्त को मुक्त सु इस क्तान्त प्रकृतिक द्वारा सुबन्त के साथ प्रकृतसूत्र द्वारा तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। इसके बाद प्रथमा विभक्ति के निर्दिष्टता से उसके बोध्य का स्तोक ङसि इसका ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र से पूर्व निपात होता है। इसके बाद स्तोक ङसि मुक्त सु समास की प्रातिपदिक संज्ञा में ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् का ङसि प्रत्यये और सु प्रत्यय का लोप होने पर पञ्चमी का अलुक् विधायक सूत्र प्रवृत्त हुई है।

(2.7) ''पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः'' (6.3.2)

सूत्रार्थ–रतोकान्तिक इरार्थवाचकों से और कृच्छ्र शब्द से विहित पञ्चमी के उत्तरपद पर में लोप नहीं होता है।

टिप्पणियाँ

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से अलुक् होता है। अलुक् नाम यानि लुक् नहीं होता है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ पञ्चमी के षष्ठी एकवचनान्त को स्तोक आदि से पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से अलुक् उत्तर पदे इन दोनों पदों की अनुवृत्ति होती है। स्तोक आदि शब्द से पूर्व सूत्र द्वारा उक्त (स्तोकान्तिक दूरार्थकृच्छ्राणां) स्तोक, अन्तिक, इरार्थ, कृच्छ आदि का ग्रहण किया गया है। और सूत्रार्थ आता है ''स्तोक, अन्तिक, इरअर्थवाची कृच्छ्र शब्द से विहित जो पञ्चमी उसका उत्तरपद पर में लोप नहीं होती है।''

उदाहरण–स्तोकान्मुक्तः यहाँ उदाहरण है। स्तोक ङसि मुक्त सु समास का प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधाकप्रातिकयोः'' इससे सुप् का ङसि और सु प्रत्यय प्राप्त होता है। तब प्रस्तुत सूत्र से पञ्चमी के ङसि प्रत्यये का अलुक् होता है। और सु प्रत्यय का ''सुपोधातुप्रातिपदिकपोः'' इस सूत्र से लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर स्तोकान्मुक्त शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सौ प्रक्रियाकार्ये होने पर ''स्तोकान्मुक्तः'' रूप होता है।

(2.10.) ''षष्ठी''

सूत्रार्थ–षष्ठयन्त सुबन्त को समर्थ से सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास संज्ञा वाला होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुष समास होता है। यह सूत्र एकपदात्मक (एक पद वाला) है। वह षष्ठी पद प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। ''समर्थपदविधिः'', ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष'', ''विभाषा'' ये पूर्व से अधिकृत हैं। ''प्रत्यय ग्रहणे-तदन्ता ग्राह्याः'' इस परिभाषा से इससे षष्ठयन्त सुबन्त प्राप्त होता है। और षष्ठयन्त सुबन्त को सम अर्थ होने से सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ आता है।

यहाँ षष्ठयन्त को समान अर्थ से सुबन्त के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुषसमास होता है। अतः यह समास षष्ठी तत्पुरुष कहा जाता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है राजपुरुषः। राज्ञः पुरुष उस लौकिक विग्रह में राजन् ङस् पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह में राजन् ङस् इस षष्ठयन्त सुबन्त पुरुष सु इस समान अर्थ से सुबन्त के साथ प्रकृत सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद षष्ठयन्त का राजन् ङस् इसके उपसर्जनत्व से पूर्व निपात होने पर राजन् ङस् पुरुष सु होता है। समुदाय की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातुप्रातिपदिकमे'' इससे सुप् का ङस् और सु प्रत्यय का लोप होने पर राजन् पुरुष होता है। तब ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इस सूत्र से राजन् शब्द का नकार का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न होने से राजपुरुष शब्द से सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में राजपुरुष रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-4

23. ''रत्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

24. ''रत्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

25. ''स्तोकान्मुक्त: इत्यादि में पञ्चमीविभक्ति का अलुक कैसे होता है?

26. ''पञ्चम्या: स्तोकादिभ्य:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

27. ''षष्ठी'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

28. ''षष्ठी'' सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

प्रसङ्गत: षष्ठीतत्पुरुष निषेध सूत्रों का वर्णन किया जा रहा है।

(2.11) ''न निर्धारणे'' (2.2.90)

सूत्रार्थ–निर्धारण में षष्ठयन्त को सुबन्त के साथ समास नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधि है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास निषेध किया गया है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। इस सूत्र में ''निर्धारणे'' सप्तम्यन्त पद है। निषेध बोधक अन्ययपद नहीं है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये अधिकृत हैं। ''षष्ठी'' सूत्र से षष्ठीपद की अनुवृत्ति होती है। निर्धारण में विधीयमान जो षष्ठी उस षष्ठयन्त सुबन्त का सुबन्त के साथ ''षष्ठी'' इससे षष्ठी तत्पुरुष समास प्राप्त होता है। वह समास इससे निषेध किया गया है। अत: सूत्र का अर्थ होता है–निधारण कार्य में जो षष्ठी तदन्त को सुबन्त को समास नहीं होता है।

निर्धारण नाम जातिगुण किया संज्ञाओं से एकदेश समुदाय का पृथक्करण है। जैसे:–नृणां द्विज: (आदमियों में ब्राह्मण) श्रेष्ठ है। यहाँ ''यतश्च निर्धारणम्'' इससे नृणाम् यहाँ पर निर्धारण में षष्ठी विहित होती है। यहाँ नृसमुदाय से श्रेष्ठत्व धर्म से द्विज का (ब्राह्मण का) पृथक्करण हुआ। जिससे पृथक्करण हुआ है वहाँ षष्ठी होती है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है जैसे आदमियों में ब्राह्मण श्रेष्ठ होता है। (नृणां द्विज: श्रेष्ठ:) ''यतश्च निर्धारणम्'' इससे नृणाम् यहाँ पर निर्धारण में षष्ठी विहित है। इसके बाद षष्ठी इस सूत्र से नृणाम् इस षष्ठयन्त सुबन्त का द्विज: इय सुबन्त से समास प्राप्त होने पर प्रकृत सूत्र से निर्धारणषष्ठयन्त से नृणाम् इस पद का उस से साथ समास निषेध होता है।

(2.11.1) प्रतिपद विधाना षष्ठी न समस्यते (वार्तिकम्)

वातिकार्थ–प्रतिपदविधान जो षष्ठी अन्त वाले पद को सुबन्त के साथ समास नहीं होता है।

टिप्पणियाँ

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक षष्ठी समास निषेध प्रसंङ्ग में विराजता है। इस वार्तिक से षष्ठीतत्पुरुषसमास का निषेध होता है। यह वार्तिक चार यह वाला है। यहाँ प्रतिपदविधाना षष्ठी ये दो पद वाला प्रथमा एकवचनान्त है। यह निषेध बोधक अव्यय नहीं है। समास होता है क्रियापद है। पदं पदं प्रति इस प्रतिपदम् इस वीप्सा में अव्ययीभाव है। ''षष्ठी शेषे'' इस शेष लक्षणा षष्ठी को वर्जित करके सभी भी षष्ठी प्रतिपदबिछाना महाभाव्य से ग्रंथ से जाना जाता है। और प्रतिपद विधानषष्ठयन्त के षष्ठी इससे समास प्राप्त होने पर उक्त वार्तिक से उसका निषेध होता है।

उदाहरण–वार्तिक का उदाहरण है सर्पिषः ज्ञानम्। सर्पिषः यहाँ पर ''ज्ञोऽविदर्थस्थ करणे'' इससे षष्ठी विहित है। और वह षष्ठी प्रतिपदविधाना षष्ठी होती है। अतः सपिषः इस षष्ठयन्त का सुबन्त का ज्ञान इससे सुबन्त के साथ ''षष्ठी'' इस सूत्र से समास प्राप्त होने पर सपिषः का प्रतिपदविधानषष्ठयन्त होने से प्रोक्त वार्तिक से समास निषेध होता है।

पाठगत प्रश्न-5

29. ''न निर्धारणे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

30. नृणां द्विजः श्रेष्ठः यहाँ पर षष्ठी समास क्यों नहीं हुआ?

31. निर्धारण क्या है?

32. ''प्रतिपदविधाना षष्ठी न समस्यते'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

33. प्रतिपदविधाना षष्ठी क्या है?

34. सर्पिषोज्ञानम् यहाँ समास कैसे नहीं हुआ?

(2.12) ''पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्य समानाधिकरणेन''

सूत्रार्थ–पूरण आदि अर्थों से और सदादि से षष्ठयन्त सुबन्त को समास संज्ञा नहीं होती है (समास नहीं होती है)

सूत्र व्याख्या–छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से षष्ठी तत्पुरुष समास निषेध होता है। यह एकपदात्मक सूत्र हैं। यहाँ ''पूरणगुणसुहितार्थ सदव्ययतव्य-समानाधि करणेन यह तृतीया एक वचनान्त पद है। पूरणश्च, गुणश्च, सहितं च पूरणगुणसुहितानि यहाँ इतरेतरयोगद्वन्दसमास है। तानि अर्था येषां ते पूरणगुणसुहितार्थाः यह बहुव्रीहिसमास है। पूरणगुणसुहितार्थाश्च सच्च अव्ययं च तव्यश्च समानाधिकरणञ्च इति पूरणगुणसुहितार्थसदव्यय समानाधिकरणम्, पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययसमानाधिकरणेन यहाँ समाहारद्वन्द है।

पूरणार्थशब्द से पुरणार्थक प्रत्ययों के शब्दों का ग्रहण है। गुणार्थशब्द से प्रधानत्व और उपसर्जनत्व गुणवाची जो शब्द है उसका ग्रहण किया गया। सुहितार्थ का नाम तृप्त्यर्थक है। ''**सत**'' इस पद से ''तौसत्'' सूत्र से सत्संज्ञक जो दोनों शतृशानच् प्रत्ययों को तदन्त का बोध

होता है। यहाँ अव्ययपद से सन्तव्य इस पूर्व और उत्तर के साहचर्य से कृदन्त क्त्वा, तोसुन्, सुन्नन्त प्रत्ययों का ग्रहण किया गया है। उनमें क्त्वा, तोसुन्, कसुन इस अव्यय संज्ञा विधान से। उससे उसके ऊपर उसके ऊपर इत्यादि में समास दुर्वार है। तव्य का प्रत्यय से तदन्त का बोध होता है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये अधिकृत किये गये हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी पद को ''न निर्धारणे'' इससे पद की अनुवृत्ति नहीं होती है। इस सूत्र का अर्थ होता है–षष्ठयन्त सुबन्त को पूरण आदि अर्थों से सदादि से समास नहीं होता है। अर्थात् ''पूरण आदि अर्थों से और सदादि से षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

पूरण अर्थ से निषेध होने पर उदाहरण है–सतां षष्ठ:। षष्णां पूरण: इस अर्थ में ''तस्य पूरणे डट्'' इससे डट् प्रत्यय होने पर ''षट्कतिकतिपयचतुरां थुक्'' इससे थुक् प्रत्यय होने पर षष्ठ: रूप होता है। यहाँ **सताम्** षष्ठयन्त का पूरणार्थक षष्ठ शब्द से ''षष्ठी'' इससे षष्ठी समास होने पर उसका निषेध प्रकृत सूत्र से होता है।

गुण से निषेध होने पर काकस्य काष्ण्यम् यह उदाहरण है। कृष्णशब्द से भाव में ष्यञ् प्रत्यय होने पर काष्ण्य: शण्ड निष्पन्न होता है। अत: काष्ण्यम् इसके गुणवाची होने के कारण उसके साथ काकस्य इस षष्ठयन्त का ''षष्ठी'' इस षष्ठी समास होने पर वह प्रकृतसूत्र से निषेध होता है। गुण से जो निषेध विहित है वह अनित्य है। ''तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात्'' इस सूत्र में संज्ञा के गुणभूतप्रमाणिता खण्ड के साथ समास दर्शन से होता है। निषेध के अनित्यत्व अर्थस्य गौरवम् (अर्थ का गौरवम्)-अर्थगौरवम्। बुद्धे: मान्द्यम् (बुद्धि से मंदता) बुद्धिमान्धम् आदि में निषेध नहीं होता है।

सुहितार्थ से निषेध होने पर फलानां सुहित: इत्यादि एक उदाहरण है। यहाँ षष्ठयन्त फलशब्द का सुहित शब्द के साथ प्राप्त षष्ठी समास का प्रकृतसूत्र से निषेध होता है।

सदन्त से निषेध होने पर द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा इसका उदाहरण है। कृ धातु से शतृप्रत्यय और शानच् प्रत्यय होने पर क्रमके अनुसार कुर्वन् और कुर्वाण: ये दो रूप हैं। यहाँ षष्ठयन्त का द्विजशब्द का कुर्वन् इससे कुर्वाण: इस योग में प्राप्त हुआ इससे षष्ठी समास का निषेध होता है।

अव्यय के निषेध होने पर ब्राह्मणस्य कृत्वा इत्यादि यहाँ उदाहरण है। **कृत्वा** से अव्ययसंज्ञक होने से ब्राह्मणस्य यह षष्ठ्यन्त से प्राप्त हुआ षष्ठी समास इससे निषेध होता है।

तल्यप्रत्ययात्त से निषेध होने पर ब्राह्मणस्य कर्न्तव्यम् इसका यहाँ उदाहरण है। कृ धातु से ''तव्यतव्यानीयर:'' इससे तव्यत् प्रत्यय होने पर कर्त्तव्यम् रूप होता है। षष्ठयन्त ब्राह्मण का सुबन्त का तल्य प्रत्ययान्त से कर्न्तव्यम् इससे प्राप्त षष्ठी समास का इससे निषेध होता है। तत्थत्प्रत्ययान्त के योग होने पर तो समास होता ही है। स्वस्थ कर्त्तव्यम् इस विग्रह में स्वकर्त्तव्यम् में षष्ठी समास होता है। तव्यति कृते कृत् उत्तर पद प्रकृति स्वर से प्रकृति स्वर, तव्यत् में तो फलभेद नहीं होता है।

समानाधिकरण से निषेध होने पर तक्षकस्य सर्पस्य इति आदि उदाहरण है। यहाँ तक्षकस्य इस

टिप्पणियाँ

षष्ठयन्त का सुबन्त का षष्ठयन्त से सर्पस्य इस सुबन्त से प्राप्त षष्ठी समास समानाधिकरण से प्रकृत सूजेण से निषेध होता है। यहाँ ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे प्राप्त कर्मधारय बहुलग्रहणसामर्थ्य से नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न-6

35. ''पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन'' इस सूत्र का क्या अर्थ हैं?

37. गुण शब्द से षष्ठीसमास निषेध अनित्य कैसे होता है?

38. पूरण अर्थ से षष्ठी समास निषेध होने का उदाहरण कौन सा है?

39. सदन्त से षष्ठी समास निषेध होने का क्या उदाहरण है?

39. अव्यय से षष्ठी समास निषेध होने का कौन सा उदाहरण है?

40. स्वकर्त्तव्यम् यहाँ समास क्यों हुआ?

(2.13) ''क्तेन च पूजायाम्''

सूत्रार्थ–''मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च'' इससे विहित जो क्त प्रत्यय है, उसस से षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास का निषेध होता है। यह सूत्र तीन पदवाला है। सूत्र में ''क्तेन'' यह तृतीया एकवचनान्त पद है। और अव्यय पद है। 'पूजायाम्'' यह पद सप्तम्येकवचनान्त है। यहाँ पर ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी पद ''न निर्धारणे'' इससे पद की अनुवृत्ति नहीं आती है। यहाँ पूजा अर्थ में क्तप्रत्यय होने पर षष्ठी समास नहीं होता है। पूजाग्रहण मतिबुद्धिपूजार्थश्च यह सूत्र का उपलक्षण है। सूत्रार्थ होता है– ''मतिबुद्धिपूजार्थो से विहित जो क्त प्रत्यय, उससे षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है राज्ञां यतः। यतः यहाँ ''मतिबुद्धिपूजार्थेव्यश्च इससे वर्तमान में क्त प्रत्यय होता है। अतः वर्तमान अर्थक क्त प्रत्यय के योग में ''क्तस्य च वर्तमाने'' इससे राजन् शब्द से षष्ठी विभक्ति में राज्ञाम् रूप बना। यहाँ षष्ठयन्त रूप राज्ञाम् का सुबन्त के मतः सुबन्त के साथ प्राप्त षष्ठी समास प्रकृतसूत्र से निषेध होता है। राताम् इष्यमाण यही अर्थ होता है। इसी प्रकार राज्ञां बुद्धः, राज्ञां पूजितः इत्यादि में समास नहीं होता है।

प्रश्न–राजमतः, राजबुद्धः, राजपूजितः, इत्यादि में समास क्यों होता है। राजाभिः पूजितः इस विग्रह में भूत क्तान्त प्रत्ययान्त के साथ तृतीयान्त का समास होता है। तृतीयासमास होने से यहाँ यह सूत्र बाँधा गया है।

(2.14) ''अधिकरणवाचिना च'' (2.2.13)

सूत्रार्थ–अधिकरणवाची जो क्त प्रत्यय है, उससे षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुषसमास निषेध कहा गया है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। यहाँ अधिकरणवाची से तृतीयावचनान्त पद है। और यह अव्यय पद है। यहाँ पर ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीनों सूत्र अधिकृत हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी इस पद को ''न निर्धारणे'' की अनुवृत्ति होती है (निषेध) ''क्तेन च पूजायाम्'' इससे क्तेन पद की अनुवृत्ति हो आती है। और सूत्र का अर्थ होता है ''अधिकरणवाची जो क्त प्रत्यय, उससे षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है- ''इदमेषामासितम्'' इत्यादि है। ''आसितम्'' यहाँ पर ''क्तोऽचिकरणे च ध्रौव्यगति प्रत्यवसानार्थेभ्य:'' इससे अधिकरण में क्त प्रत्यय होता है। यहाँ ''अधिकरणवाचिनश्च'' इससे अधिकरणवाची क्तप्रत्यय के योग में ''एषाम्'' में षष्ठी विभक्ति हुई। यहाँ एषाम् षष्ठपद का आसितम् इस क्तप्रत्ययान्तपद के योग होने पर षष्ठीसमास प्रस्तुत सूत्र से निषेध किया गया है।

(2.15) ''कर्माणि च'' (2.2.18)

सूत्रार्थ–''उभयप्राप्तोंकर्मणि'' उससे विहित जो षष्ठी उसके सुबन्त का सुबन्त के साथ मास नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से षष्ठी तत्पुरुष समास का निषेध हुआ है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ पर **'कर्मणि'** सप्तम्येकवचनान्त पद है। और अव्यय पद है। यहाँ पर ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीनों सूत्र अधिकृत सूत्र है। ''षष्ठी'' इस षष्ठी पद को ''न निर्धारणे'' इससे 'न' इस पद की अनुवृत्ति होती है। और इसका यही पर्याय है। अत: कर्मणि इस पद में सप्तमी एकवचन का उच्चारण करके जो षष्ठी उसका सुबन्त के साथ समास नहीं होता है। यही सूत्रार्थ प्रतीत होता है। और सूत्रार्थ होता है ''उभयप्राप्तौ कर्मणि'' इससे निहित जो षष्ठी तदन्त सुबन्त का सुबन्त के साथ समास नहीं होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावत् आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन इत्यादि गवाम् इस पद पर कर्त्ता और कर्म में षष्ठी प्राप्त होने पर ''उभय प्राप्तौकर्मणि'' इससे कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। अत: गवाम् इस षष्ठन्त दोह: शब्द को सुबन्त के साथ प्राप्त षष्ठी समास का प्रस्तुत सूत्र से निषेध होता है।

पाठगत प्रश्न-7

41. ''क्तेन च पूजायाम्'' इस सूत्र क्या अर्थ है?

42. सूत्र में पूजाग्रहण का क्या अर्थ है?

टिप्पणियाँ

43. ''क्तेन च पूजायाम्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये।

44. ''अधिकरणवाचिनाच'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

45. ''अधिकरणवाचिना'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये।

46. ''कर्मणि च'' इस सूत्र का क्या अर्थ हैं।

47. ''कर्मणि च'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये।

(2.16) ''तृजकाभ्यांकर्तरि'' (2.2.15)

सूत्रार्थ–कर्तृ अर्थक दो तृजक प्रत्यय तदन्त सुबन्त के साथ षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास का निषेध होता है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ तृजकाभ्याम् इस तृतीयाद्विवचनान्त कर्न्तरि सप्तमी एकवचनान्त पद है। यहाँ कर्तरि इस नृजक प्रव्ययों में ही विशेषण है, तथा अनुवृत्ती षष्ठी में नहीं होती है। तृच् प्रत्ययान्त और ण्वुल् प्रत्ययान्त तृजक अंश से स्वीकार किया गया है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी इस पद को ''न निर्धारणे'' इससे ''न'' पद की अनुवृत्ति हुई है। और सूत्र का अर्थ है कर्त्रर्थक जो दो तृजक प्रत्यय को तदन्त सुबन्त के साथ षष्ठयन्त्र सुबन्त का समास नहीं होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का तृजक से निषेध होने पर ''तावत् अपां स्रष्टा'' इत्यादि उदाहरण बना। सृज् धातु ये ''वुल्तृचौ'' इससे तृच् स्रष्टा रूप बना स्रष्टा इसके योग से षष्ठयन्त अयाम् का प्राप्त षष्ठीसमास प्रस्तुत सूत्र से निषेध होता है।

और ण्वुल् प्रत्ययान्त का निषेध होने पर ओदनस्थ पाचकः इत्यादि उदाहरण है। यहाँ पच् धातु का ''ण्वुल्वृचौ'' इससे कर्ता में ण्वुल् प्रत्यये होने पर अकादेश होने पर पाचकः रूप बना पाचकः इससे योग होने पर ओदन का षष्ठयन्त को प्राप्त होने पर षष्ठी समास प्रस्तुत सूत्र से निषेध होता है।

(2.17) ''कर्त्तरि च''

सूत्रार्थ–कर्ता में जो षष्ठी तदन्त का ण्वुल्प्रत्यय के साथ प्रत्यय नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास का निषेध होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। यहाँ कर्तरि पद सप्तम्यन्त वचनात है। और यही अव्ययीपद है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समासः'', 'सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी इस पद को ''न निर्धारणे'' इससे ''न'' पद की अनुवृत्ति होती है। ''नृजकम्भ्यां कर्तरि'' इससे अकेन इस अंश की अनुवृत्ति होती है। उसका ण्वुल्प्रत्यान्त से यही अर्थ है। यहाँ पर कर्त्तरि इस

पद को षष्ठी इस अनुवृन्त पद के साथ अन्वय होता है। एवं सूत्रार्थ होता है–''कर्ता में जो षष्ठी तदन्त का सुबन्न के ण्वुल् प्रत्ययान्त के साथ समास नहीं होता है।''

उदाहरण–भवत: शायिका इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। सी धातु से ण्वुल्, अनादेश में टाप् प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में शायिका रूप बना। उससे योग में ''कर्तृकर्मणो: कृति'' इस सूत्र से भवत: इस पद में कर्ता में षष्ठी विभक्ति होती है। यहाँ अक का कर्त्रर्थकत्व के अभाव से ''तृजकाम्यां कर्तरि'' यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है। इसके के अवत: पद से षष्ठयन्त से शायिका इस ण्वुल्प्रत्ययान्त का षष्ठी तत्पुरुष समास होने पर प्रस्तुत सूत्र से भवत: यहाँ षष्ठी का कर्तरि पद के विधान से षष्ठी समास का निषेध होता है।

(2.17) ''पूर्वापरधरोत्तरमेकदेशनेकाधिकरणे'' (2.2.9)

सूत्रार्थ– जब अव्ययी एकत्व विशिष्ट हो तब अव्यय के साथ पूर्व आदि सुबन्त का विकल्प से तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। ''षष्ठी'' इससे प्राप्त समास का अपवादभूत है। यह सूत्र त्रिपदात्मक है। यहाँ पूर्वापरधरोत्तरम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। एकदेशिना इस तृतीया एकवचनान्त और एक अधिकरण में सप्तमी एकवचनान्त पद है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'', ''विभाषा'' ये अधिकृत हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् की अनुवृत्ति होती है। पूर्वापरधरोत्तर इस विशेषण से सुप् का तदन्तविधि में पूर्वापराधरोत्तर को सुबन्त होता है। पूर्वञ्च परञ्च अधरञ्च उत्तरञ्च इस विग्रह में समाहार द्वन्द में पूर्वापराधरोत्तरम्'' यह पद है। एकेदेशिना नाम अवयविना हैं। एकं च तदधि करणं च एकाधिकरणम्, उस एकाधिकरणे पद में कर्मधारय समास होता है। एकं नाम एकत्वसंख्याविशिष्ट से है। अधिकरण शब्द द्रव्य परक है। एकाधिकरण में इसका सम्बन्ध एकदेश पद के साथ है। और सूत्रार्थ है: ''जब अवयवी एकत्वविशिष्ट पर हो तब अवयव के साथ पूर्व आदि सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है यथापूर्वकाय:। पूर्वं कायस्य इति लौकिक विग्रह में पूर्व सु काय ङस् इस अलौकिक विग्रह में ''षष्ठी'' से षष्ठीतत्पुरुषसमास होने पर उसको बाँधकर प्रकृतसूत्र से काय ङस् एकत्वसंख्याविशिष्ट से अवयव वाची सुबन्त के साथ पूर्व+सु इस सुबन्त प्रोक्त सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होता है। इसके बाद सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने पर पूर्व+सु इश सुबन्त का उपसर्जन संज्ञा होने पर पूर्व नियात होने पर पूर्व सु काय ङस् होता है। इसके बाद सुष्ट का लोप होने पर निष्पन्न होने पर पूर्वकायशब्द से सुप्रत्यय होने पर पूर्वकाम: रूप होता है। अपरकाय:, अधरकाय: इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-8

48. ''तृजकाभ्यांकर्त्तरि'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

टिप्पणियाँ

49. ''तृजकाभ्यांकर्त्तरि'' इस सूत्र का तृचा निषेध होने का उदाहरण है।

51. ''कर्त्तरि च'' यह सूत्र का क्या अर्थ है?

52. ''कर्त्तरि च'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

53. ''पूर्वापराधरोत्तरमेकडोरीबैकाधिकरणे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

54. ''पूर्वापरापरोन्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

(2.19) ''अर्धं नपुंसकम्''

सूत्रार्थ–समांशवाची नित्य नपुंसकलिङ्ग में विद्यमान अर्थशब्द अवयव के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है, एकत्व संख्या विशिष्ट अवयवीपद है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। ''षष्ठी'' इससे प्राप्त समास का अपवादभूत यह सूत्र है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। यहाँ ''अर्घ नपुंसकम्'' यह द्विपदात्मक है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष'', ''विभाषा'' ये तीनों अधिकृत सूत्र है। ''युवामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् इस ''पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'' इससे एकदेशिना एकाधिकरणे इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। समांशवाची नित्यनपुंसकलिङ्गे विद्यमान का ही यहाँ अर्घशब्द का ग्रहण है। और सूत्रार्थ होता है–''सम् अंशवाची नित्यनपुंसकलिङ्ग में विद्यमान अर्घशब्द एकत्व संख्या-विशिष्ट-द्रव्यवाची का अवयव के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।''

उदाहरण–जैसे सूत्र का उदाहरण है अर्धपिप्पली। अर्धपिप्पल्याः इस लौकिक विग्रह में अर्धं सु पिप्पल्लीङस् इस अलौकिक विग्रह में ''षष्ठी'' इससे षष्ठीतत्पुरुष समास प्राप्त होने पर उसको बांधकर प्रकृत सूत्र से पिप्पलीङस् इस एकत्व संख्या विशिष्ट से अवयववाची सुबन्त के साथ अर्धसु इस सम् अंशवाची नित्य नपुंसकलिङ्ग होने पर विद्यमान तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद अर्ध सु इसका प्रथमानिर्दिष्टत्व उपसर्जन संज्ञा का पूर्व निपात होने पर सुप् लोप होने पर निष्पन्न अर्धपिप्पली इससे सु प्रत्यये अर्धपिप्पली रूप होता है।

(2.20) ''सप्तमी शौण्डैः''

सूत्रार्थ–सप्तम्यन्त सुबन्त को शौण्ड आदि प्रकृतिक को सुबन्त के साथ तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। यह द्विपदात्मक सूत्र हैं। यहाँ सप्तमी प्रथमैकवचनान्तं और शौण्डैः तृतीया बहुतचनान्त है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'', ''विभाषा'' ये तीनों सूत्र अधिकृत है। ''सुथामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः इस परिभाषा से यहाँ सप्तमी तदन्तविधि में सप्तभ्यन्त सुबन्त प्राप्त

होता है। शौण्डशब्द में बहुवचन निर्देश और गदपाठ से शौण्डशब्द शौण्डादिगण में विद्यमान शौण्डादि बोधक है। शौण्डादि में उसका तत्प्रकृतिक में लक्षणा है। और सूत्र का अर्थ है–सप्तम्यन्त सुबन्त को शौण्डादि प्रकृतिक को सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

यहाँ सप्तम्यन्त समर्थ सुबन्त को समास होता है। और वह तत्पुरुष समास है। अतः यह समास सप्तमी तत्पुरुष समास कहा जाता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अक्षशौण्डः। अक्षेषु शौण्डः इस लौकिकविग्रह में अक्ष सुप शौण्ड सु इस अलौकिक विग्रह में अक्षसुप् इस सप्तम्यन्त सुबन्त को शौण्ड यु इससे शौण्डप्रकृतिक को सुबन्त के साथ प्रकृतसूत्र से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। इसके बाद समास विधायकशास्त्र में सप्तमी इसका प्रथमानिर्दित्व से उस बोध का अक्ष सुप् इसकी उपसर्जन संज्ञा होने पर पूर्वनिपात में अक्षसुप् शौण्ड सु इस प्रथमाएकवचन में सु प्रत्यय होने पर **अक्षशौण्डः** रूप बना।

पाठगत प्रश्न-9

55. ''अर्धं नपुंसकम्'' यह सूत्र का अर्थ है?

56. ''अर्धं नपुंसकम्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

57. ''सप्तमी शौण्डैः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

58. ''सप्तमी शौण्डैः'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

पाठसार : समास भेदों में तृतीयतत्पुरुष समास इस पाठ में प्रतिपादित है। ''तत्पुरुषः'' यह अधिकृत करके यह समास प्रवृत होता है। यह समास प्राय उत्तरपदार्थप्रधान है। और इस समास को तत्पुरुषसमास समानाधिकरण और व्याधिकरण दो प्रकार से कह सकते हैं। यहाँ व्यधिरणतत्पुरुष विधायक सूत्रों को इस पाठ में सन्निवेश किया गया। व्याधिकरणे पदे इसका अर्थ असमानविभक्तिक पदे हैं। व्याधिकरणे अस्त स्तः (व्यधिकरण में है दोनों) व्याधिकरण इस अर्श आदित्व अच् प्रत्यय है। और जिसमें तत्पुरुष समस्यमान पद समानविभक्ति नहीं है वह है व्यधिकरण तत्पुरुषः। विशेष प्रयोजन साधन के लिए द्विगुसमास का ''द्विगुःच'' इससे तत्पुरुषसंज्ञा यहां वर्णित है। व्यधिकरणतत्पुरुष पुनः द्वितीयातत्पुरुष, तृतीयातत्पुरुष, चतुर्थीतत्पुरुष, पञ्चमीतत्पुरुष, षष्ठीतत्पुरुष और सप्तमीतत्पुरुष षङ प्रकार होता है। ''द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः'', ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' और ''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' इसका तृतीयातत्पुरुष का ''चतुर्थीतदर्थार्थबलि हित सुखरक्षितैः'' इस चतुर्थी तत्पुरुष का ''पञ्चमीभंयेन'' इस और 'स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन'' इससे पञ्चमी तत्पुरुष का ''षष्ठी'' इस षष्ठी तत्पुरुष ''सप्तमीशौण्डैः'' सप्तमीतत्पुरुष विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई है। पञ्चमी समास के अवसर पर ''पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः'' इस पञ्चमी से अलुक् विधायक सूत्र की व्याख्या की गई है। ''पूर्वापशधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'', ''अर्धनपुंसकम्'' इस षष्ठी समास का अपवादभूत

समास विधायक दो सूत्रों की व्याख्या की गई है। और वहाँ ''अर्थेन नित्यसमासो विशेल्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्'' इस वार्तिक की व्याख्या की गई। षष्ठी समास निषेधक ''न निर्धारणे'' ''पूरणगुणसुहितार्थसदग्ययलव्यसमानाधिकरणेन'', ''क्तेन च पूजायाम्'' ''अधिकरणवाचिना च'', ''कर्मणि च'', ''तृजकाभ्यांकर्त्तरि'', ''कर्त्तरिच'' इन सात सूत्रों ''प्रतिपदविधान से षष्ठी समास नहीं होता है ''प्रतिपदविधाना षष्ठी न समस्यते'' वार्तिक की व्याख्या की गई है। और व्यधिकरण तत्पुरुष समास इस पाठ में प्रतिपादित है।

पाठांत प्रश्न

1. ''द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' इस सूत्र की व्याख्या करा हैं?
2. ''चतुर्थीतदर्थार्थ बलिहित सुखरक्षितै:'' इस सूत्र की व्याख्या करा है?
3. ''पूरागुणसुहितार्थसदव्ययतव्य समानाधिकरणेन।'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
4. ''पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'' सूत्र की व्याख्या की गई है?
5. ''सप्तमी शौण्डै:'' सूत्र की व्याख्या करो?
6. कृष्णश्रित: रूप को सिद्ध करो?
7. सूपदारु रूप को सिद्ध करो?
8. अर्धपिप्पली रूप को सिद्ध करो?
9. अक्षशौण्ड: रूपं को सिद्ध करो?
10. षष्ठी समास निषेध सूत्र कौन से हैं? अर्थ और उदाहरण के साथ उनकी व्याख्या कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. ''शेषो बहुव्रीहि:'' इस सूत्र तक।
2. द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।
3. समासान्त प्रत्यय विधान।
4. द्वितीया तत्पुरुष।
5. द्वितीयान्त सुबन्त को श्रितारिप्रकृतिकों द्वारा सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

6. इतरेतरयोगद्वन्द समास/श्रिरश्च अतीतश्च पतिश्च गतश्च अत्यस्तश्च प्राप्तश्च आपन्नश्च–श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नाः, तैः श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः यह विग्रह है।

7. श्रित आदि शब्दों के तत्प्रकृति क्या लक्षण है।

8. कृष्णं श्रितः इस विग्रह में कृष्णश्रितः उदाहरण है।

उत्तर-2

9. तृतीयान्त सुबन्त को तृतीयान्तार्थकृतगुणवचन और अर्थशब्द के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

10. तृतीयान्तार्थाकृत यही अर्थ है।

11. जो शब्द पूर्व गुणवाचक थे अब जो द्रव्यवाचक हैं वे ही गुणवाची शब्दों से ग्रहण किये जाते हैं।

12. शकुंलया खण्डः इति विग्रह में शङ्कुलाखण्डः।

13. कर्त्ता में और करण में विद्यमान तृतीयान्त सुबन्त को कृदन्त के साथ बहुल तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

14. दात्रेण लूनवान् इत्यादि में समास नहीं होता है।

15. कृदन्त के ग्रहण में गतिपूर्व कारक का भी कृदन्त का ग्रहण होता है। यही परिभाषा अर्थ है।

16. हरिणा त्रातः इति हरिजातः (हरि से त्रस्त)

उत्तर-3

17. चतुर्थी अन्त वाले अर्थ के लिए जो उसवाची अर्थबलिहितसुखरक्षितों के साथ चतुर्थ्यन्त सुबन्त को विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

18. प्रकृति विकृति का भाव का ग्रहण।

20. ''अर्थशब्द से चतुर्थ्यन्त नित्यसमास और समास में विशेष्यलिङ्गता होती है। यही वातिक का अर्थ है।

21. पञ्चम्यन्त सुबन्त को त्रयप्रकृतिक को सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ है।

उत्तर-4

22. चोराद् भयम् इस विग्रह में चोरभयम् यह एक उदाहरण है।

टिप्पणियाँ

23. स्तोकान्तिकदूर अर्थ वाचि और कृच्छ्र प्रकृतिक पञ्चम्यत्त को क्तान्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

24. स्तोकात् मुक्तः इस विग्रह में समास में स्तोकान्मुक्तः एक उदाहरण है।

25. ''पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः'' इस सूत्र से।

26. स्तोक, अन्तिक, दूर अर्थवाची से कृच्छ्र शब्द से विहित पञ्चमी के उत्तरपद परे लोप नहीं होता है यही सूत्रार्थ है।

27. षष्ठयन्त सुबन्त को समर्थ से सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

28. राज्ञः पुरुषः इस विग्रह में राजपुरुषः है।

उत्तर-5

29. निर्धारण में षष्ठयन्त सुबन्त को समास नहीं होता है।

30. ''न निर्वारणे'' इस सूत्र निषेध से यहाँ षष्ठी समास नहीं होता है।

31. प्रातिगुणक्रियासंज्ञाओं से समुदाय से एकदेश का पृथक्करण निर्धारण होता है।

32. प्रतिपदविधान षष्ठी तदन्त सुबन्त को समास नहीं होता है।

33. ''षष्ठीशेषे'' शेषलक्षणा षष्ठी को छोड़कर सभी षष्ठी प्रतिपदविधान। महाभाष्य में आद्याकर ग्रंथ से ज्ञात होता है।

34. प्रतिपदविधान षष्ठी का समास नहीं होता है षष्ठी समास निषेध से यहाँ से षष्ठी समास होता है।

उत्तर-6

35. पूरण आदि अर्थों से और सदादि से षष्ठयन्त सुबन्त को समास संज्ञा नहीं होती है (समास नहीं होती है)

36. ''तदशिष्यं संज्ञा प्रमाणत्वात्'' इस सूत्र में संज्ञा के गुणभूतप्रमाणत्व शब्द के साथ समास दर्शन से।

37. षष्णां पूरणः ऐसा।

38. द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा।

39. ब्राह्मणस्य कृत्वा

40. तव्यत् प्रत्यय के योग से समास होता है।

उत्तर-7

41. ''मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च'' इससे विहित जो क्त प्रत्यय है उसके अन्त से षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

42. पूजाग्रहणं मतिबुद्धिपूजार्थेभ्य: च यह सूत्र का उपलक्षण है।

43. राज्ञां मत:।

44. अधिकरणवाची जो क्त प्रत्यय, उस तदन्त षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

45. इदम् एषाम् आसीतम् इति।

46. ''उभयप्राप्तौ कर्मणि'' इससे विहित षष्ठी तदन्त सुबन्त का सुबन्त के साथ समास नहीं होता है।

47. आश्धर्यों गवां दोहो अगोपेन इति।

उत्तर-8

48. कर्तृ अर्थक जो तृजक दो प्रत्ययों को उस तदन्त सुबन्त के साथ षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

49. अपां स्रष्टा।

50. ओदनस्य पाचक: (ओदन का पाचक)

51. कर्त्ता में या षष्ठी तदन्त ण्वुल् प्रत्ययान्त के साथ समास नहीं होता है।

52. भवत: शायिका।

53. जब अवयवी एकत्वविशिष्ट तब अवयव के साथ पूर्वादि सुबन्तों को विकल्प से तत्पुरुष समास होता है।

54. पूर्वकाय:।

उत्तर-9

55. सम अंशवाची नित्य नपुंसक लिङ्ग में विद्यमान अर्धशब्द को अवयवन के साथ विकल्प से तत्पुरुष संज्ञा होती है, एकत्व संख्या विशिष्ट अवयवी पद है।

56. अर्ध पिप्पली।

57. सप्तम्यन्त सुबन्त शौण्डादिप्रकृति को सुबन्तों के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ है।

58. अक्षशौण्ड:

द्वितीय पाठ समाप्त

3

''तत्पुरुष समास''

तद्धितार्थादि तत्पुरुष समास

व्यधिकरण तत्पुरुष का लोचन से पर इस पाठ में आदि द्विगु समास का वर्णन किया जाता है। द्विगुसमास से आनुषङ्गिकता से ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'', ''तद्धितार्थोन्तरपदसमाहारे च'' ये दो सूत्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यहाँ समानाधिकरण तत्पुरुष का वर्णन किया जा रहा है। जिस तत्पुरुष में समस्यमान पदों की समान विभक्तियाँ होती हैं वह समानाधिकरण तत्पुरुष है। समानाधिकरण तत्पुरुष की ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' इससे कर्मधारय संज्ञा होती है। इसके बाद नञ् समास का वर्णन इस पाठ में है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- दिकपूर्वपद और संख्यापूर्वपद समास को जान पाने में;
- समानाधिकरण तत्पुरुषविधायक सूत्रों को जान पाने में;
- उपमित समास को जान पाने में;
- नञ-समास को जान पाने में;
- सूत्र सहित समासों को जानकर स्वयं समास कर पाने में;
- साहित्य आद्य अध्ययन काल में पाठ में स्थित समस्त पदों का समास जान और निर्णय कर पाने में।

(3.1) ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' (2.9.50)

सूत्रार्थ–दिशावाचक और संख्यावाचक को सुबन्त समानाधिकरण को सुबन्त के साथ संज्ञा में गम्यमान होने पर ही तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह नियम सूत्र है। इस सूत्र से संज्ञा में ही दिशासंख्या वाचकों को सुबन्त के साथ समानाधिकरणतत्पुरुष समास होने का नियम है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ दिक्संख्ये प्रथमा द्विवचनान्त और संज्ञायाम् सप्तम्येकवचनान्त पद है। दिक् च संख्या च दिक्संख्ये इसमें इतरेतरयोग द्वन्द समास है। ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराण नवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस पूर्व सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। समानाधिकरणेन इस पद के द्वितीय अध्याय के प्रथमपादसभाति तक अधिकार है। समान एक अधिकरण कहा जाता है उसका वह समानाधिकरण है और उससे बहुव्रीहि समास होता है। एकार्थवृत्तित्वम् इति फलितम् (एकार्थवृत्तित्व ही फलित है)। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत है। ''सुषामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। समानाधिकरणेन इसका विशेषण होने से सुपा यहां पर तदन्त विधि से सुबन्ते अधिकरणेन होता है। और सूत्र का अर्थ होता है। ''दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त को समानाधिकरण से सुबन्त के साथ संज्ञा में गम्यमान होने पर तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र से ही समास सिद्धि होने पर इस सूत्र का आरम्भ क्यों होता है और कहा गया है ''इस सूत्र को संज्ञा में ही समास किसलिए होता है'' इस नियम से। और दीक्षित के द्वारा कहा गया है'' अथवा संज्ञा में ही नियमार्थ सूत्र हैं।''

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है पूर्वेषुकामशयी। पूर्वा च असौ इषुकामशयी च लौकिक विग्रह में पूर्वा सु इषु कामी सु इस अलौकिक विग्रह में पूर्वा सु इस दिग्वाचक सुबन्त को इषुकामशमी सु इस सुबन्त के साथ प्रस्तुत सूत्र से देश विशेष संज्ञा गम्यमान होने पर तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद ''प्रथमानिर्दिष्ट समास उपसर्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में दिक् इसका प्रथमानिर्दित्व से और उसके बोध्य का पूर्वा सु इस दिशावाचक का उपसर्जन संज्ञा में ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे इसका पूर्व निपात होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से पूर्वा सु इषु कामशमी सु इय समास का प्रातिपडिकत्व होने से ''सुपो धातु प्रतिप्रातिपदिकयो:'' इस सूत्र से सुप् के दो सूत्रों का लोप होने पर पूर्वा इषु कामशमी होता है। इसके बाद पूर्व इषुकामशमी होता है। इसके बाद ''आद्गुण:'' इस सूत्र से पूर्व शब्द के वकार के उत्तर के अकार का इषुकामशमी इसका अकार और इकार का गुण एकादेश होने पर एकार के सर्व संयोग होने पर पूर्वेषुकामशमी रूप निष्पन्न होता है। पूर्वेषुकामशमी इसके प्रातिपडिकत्व अहाति से इसके बाद सु प्रत्यय की प्रक्रिया होने पर पूर्वेषुकामशमी रूप निष्पन्न होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये और यह सूत्र कितने प्रकार का होता है।

टिप्पणियाँ

2. ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

3. ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र के दिशावाचक का समासे उदाहरण दीजिये?

4. ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र का संख्या वाचक से समास में क्या उदाहरण है?

(3.2) ''तद्धितार्थोत्तर पद समाहारे च'' (2.1.51)

सूत्रार्थ–तद्धितार्थ विषय में और उत्तरपद में (चारों और) परितः और समाहार में वाच्य में दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त को समाधिकरण सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से तत्पुरुष समास होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। और यही अव्ययीपर है। तद्धितार्थश्च उत्तरपदञ्च समाहारश्च इति तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारं जिसमें समाहारद्वन्द है। तद्वितार्थ उत्तरपद में और समाहार में यही अर्थ है। एका भी सप्तमी यहाँ विषयमेड से है। तद्वितार्थ में यहाँ वैषयिक अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। अतः तद्धित अर्थ विषय में अर्थ है **पर्यवस्यति।** तद्धित अर्थ में भविष्यत्तद्धित जन्य ज्ञान विषय होने पर यह होता है। उत्तर पद में यहाँ परसप्तमी, उससे उत्तरपद में **परतः** यह अर्थ ग्रहण किया जाता है। यहाँ पर और समाहार में वाक्याधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। उससे समाहार में वाच्य होने पर यह अर्थ प्राप्त होता है।

''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'', ''विभाषा'' ये चारों सूत्र अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामश्रितेपराङ्गवत्स्वरे'' इस पद की अनुवृत्ति होती है। ''पूर्वकालैसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरण से ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र से दिक्संख्ये की अनुवृत्ति होती है। और सूत्रार्थ होता है ''तद्धितप्रत्ययार्थ विषय में और उत्तरपद में परे और समाहार में वाच्य में दिशावाची और संख्यावाची सुबन्त को समानाधिकरण से सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है, वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

और इस समासविधायक सूत्र की पाँच प्रकार से समास विधायक सम्भव होता है।

(क) तद्धितार्थ विषय में दिशावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त से

(ख) तद्वितार्थ विषय में संख्यावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त से

(ग) और उत्तरपद में चारों ओर दिशावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त से

(घ) और उत्तरपद में चारों ओर संख्यावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त से।

(ङ) और समाहार में वाच्य होने पर संख्यावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है। और वह तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं। उनमें तद्वितार्थ विषयें दिक्समास का उदाहरण है यथा पौर्वशाल। उसी प्रकार पूर्वस्यांशालायां भव इस लौकिक विग्रह में पूर्वा ङि

शाला दि इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से पूर्वा ङि इस दिशावाचक सुबन्त को प्रस्तुत सूत्र से ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ज:'' इस भव अर्थ में तद्धित अर्थ में विषय में शाला ङि इस समानाधिकरण का सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में अनुवृत्ति में दिक्संख्ये यहाँ पर दिक्पद की प्रथमानिर्दिष्ट रिक् बोध का पूर्वा ङि पद की उपसर्जन संज्ञा होती है। इसके बाद उसका पूर्व निपात होने पर पूर्वा ङि शाला ङि इस स्थिति होने पर समुदाय का समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् के ङि का लोप होने पर पूर्वाशाला होता है। तब पूर्वा शब्द के ''सर्वनाश्तो वृत्तिमात्रेपुंवद्भाव:'' इस वार्तिक से पुंबददभाव होने पर निष्पन्न पूर्वशाला शब्द से ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायांञ:'' इस सूत्र से अप्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर पूर्वशाला अ होता है। इसके बाद ''तद्धितेत्वाचामादे:'' इससे पूर्वशालाशब्द के आदि अच् का ऊकार की वृद्धि होने पर औकार होने पर पौर्वशाला इसके असंज्ञा होने पर पौर्वशालशब्द के प्रतिपादिकत्व होने से सु विभक्ति कार्य होने पर पौर्वशाल: रूप सिद्ध होता है।

तद्धित अर्थ में विषय में संख्यातत्पुरुषसमास का उदाहरण है जैसे–षाण्मातुर। उत्तरपद में पर का दिक् समास का उदाहरण है पञ्चगवधन:। उत्तर पद में पर दिशावाचक के साथ समास का उदाहरण है पूर्वशालप्रिय: समाहार वाच्य होने पर संख्यातत्पुरुष का उदाहरण है पञ्चगवम्।

पाठगत प्रश्न-2

5. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' यह किस प्रकार का सूत्र है?

6. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

7. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र का तद्वितार्थ विषय में क्या उदाहरण है?

8. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र के उत्तरपद में पर होने का कौन सा उदाहरण है?

9. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' सूत्र के समाहार होने पर वाच्य का क्या उदाहरण है?

(3.3) ''द्विक्पूर्वपदादसंज्ञायांञ:''

सूत्रार्थ–दिशावाचक पूर्वपद जिसके उस प्रातिपदिक से शौषिक में भव अर्थ में असंज्ञा में गम्यमान तद्धित को ञ प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से असंज्ञा होने पर गम्यमान होने पर तद्धित ञप्रत्यय होता है। यहाँ पूर्वशाला होने पर भव अर्थ में ञप्रत्यय विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। यह सूत्र प्रयात्मक है। यहाँ दिक्पूर्वपदाद् असंज्ञायां ञ: पदच्छेद है। दिक्पूर्वपदाद् इस पञ्चम्येकवचनात्तम् असंज्ञायाम् यह सप्तम्येकवचनान्तं ञ: यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। कि् दिग्वाचकं पूर्वपदं यस्य (दिशावाचक पूर्वपद है जिसका) यही बहुव्रीहिसमास है। ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''ङ्याप्प्रातितेपदिकात्'', ''तद्धिता:'' ये चारों अधिकृत सूत्र हैं। ''शेषे'' इस सूत्र से शेषे पद

टिप्पणियाँ

की अनुवृत्ति होती है। और सूत्रार्थ है:–''दिशावाचक पूर्वपद है जिसका उस प्रातिपदिक से शौषिक भव अर्थ में असंज्ञा का गम्यमान होने पर तद्वित से ञप्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है पौर्वशाल:। पूर्वस्यां शालायां भव इस विग्रह में प्रक्रियाकार्य में पूर्वशाला में पूर्वशब्द का दिशावाचक पूर्वशाला का दिशावाचक पूर्वपद से भव अर्थ में प्रकृत सूत्र से ञप्रत्यय होता है। ञ प्रत्यय का ञकार का ''चुटू'' इससे संज्ञा होने पर ''तस्यलोपऽ'' इससे लोप होने पर पूर्वशाला अ होता है। तब तद्धित पर में होने पर आदिवृद्धि में सूत्र प्रवृत्त होता है।

(3.4) ''तद्धितेष्वचामादे:'' (7.2.116)

सूत्रार्थ–ञित् (ञ की इत्संज्ञा) और (णकार की इत्संज्ञा) होने पर तद्धित पर में अचों में आदि अच् की वृद्धि होती है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से असंज्ञा होने पर गम्यमान तद्वित से ञ प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से असंज्ञा होने पर गम्यमान तद्धित से ञ प्रत्यय होता है। यह सूत्र त्रिपदात्मक है। यहाँ तद्धितंपु में अचाम् आदे: पदच्छेद है। ''अचोञ्णिति'' इस सूत्र से अच: ञ्णिति इन दो पदों की अनुवृत्ति होती है। मृजेर्वृद्धि:'' इस सूत्र से वृद्धि पद की अनुवृत्ति होती है। ''अङ्गस्य'' यह अधिकृत सूत्र है। ञ् च ण् च ञ्णौ, ञ्णौ इतौ यस्य स ञ्णित तस्मिन् इतरेतरद्धन्दगर्भ बहुव्रीहिसमास है। (ञ और ण् की इत्संज्ञा हुई है जिसमें वही ञ्णित है। उसमें इतरेतरद्धन्दगर्भ बहुव्रीहि समास है) ञ्णित इससे तद्धितों में इसके अन्वय से उसका एकवचनात्व है। अनाम् इस निर्धारण में षष्ठी होती है। (अचाम् निर्धारणे षष्ठी) औरा सूत्र है ञित् और गित् तद्धित पर में अचों में आदि अच की वृद्धि होती है।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है जैसे–पौर्वशाल: पूर्वस्यां शालायां भव: इस विग्रह में प्रक्रिया अर्थ में निष्पन्न दिशावाची पूर्व पद से पूर्वशाला इस प्रातिपदिक से ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायांञ:'' इससे ञ प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर पूर्वशाला अ होता है। तब प्रकृत सूत्र से तद्धित में ञित् ञ प्रत्यय होने पर पूर्वशालाशब्द के आदि अच के ऊकार का वृद्धि होने पर औकार में पौर्वशाला अ रूप होता है। इसके बाद पौर्वशाला इसका ''यचिभम्'' इसमें भ संज्ञा होने पर ''यस्थेति च'' इस सूत्र से ञसंज्ञक आकार का लोप होने पर पौर्वशाल् अ होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न पौर्वशालशब्द के प्रातिपदिकत्व से इसके बाद सु विभक्ति कार्य होने पर पौर्वशाल: रूप सिद्ध होता है।

पञ्च गाव: धनं मस्य इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् जस् गोजस् धन सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे बहुव्रीहि समास होने पर समुदाय का समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर पञ्चन् जो धन रूप बना। यहाँ धनशब्द में उत्तर पद पर से ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र से बहुव्रीहि गर्भ में संख्या वाचि पञ्चन शब्द का समानाधिकरण गो पद से साक (साथ) विकल्प के साथ अवात्तर तत्पुरुषसमास में प्राप्त होने

पर ''द्वन्दतत्पुरुषयोरुणरपदे नित्यसमासवचनम्'' इससे नित्य समास होने पर पञ्चन् का उपसर्जन से पूर्व निपात होने पर ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इससे लोप होने पर पञ्च गो धन इस (दशा) स्थिति में समासान्त विधायक सूत्र प्रवृत्त होता है।

(3.5) ''गोरतद्धितलुकि''

सूत्रार्थ–गो शब्द से तत्पुरुष से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। तद्धित लोप होने पर नहीं।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। अत्र गोः पञ्चमी एकवचनान्त पद और तद्धित का लोप नहीं होने पर सप्तमी एकवचनान्त पद है। न तद्धित लुकि अतद्धितलुकि यहाँ नञ्तत्पुरुषसमास है। ''तत्पुरुषस्याङ्गलेः संख्याव्ययादेः'' इस सूत्र से तत्पुरुषस्य पद की अनुवृत्ति होती है। और उस पद को पञ्चमी में विपरिणत गोः से विशेषण है। इसके बाद तदन्तविधि से गो अन्त से आता है। ''राजाहः सखिभ्यश्च'' इस सूत्र से टच् प्रत्यय की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्तः'' यह अधिकृत सूत्र हैं। यही अर्थ है'' गो शब्द से तत्पुरुष से समासान्त टच् प्रत्यय होता है लेकिन तद्धित लोप होने पर नहीं।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है ''पञ्चगवधनः''। ''तद्वितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' इससे समास प्रक्रिया कार्य में पञ्च गो धन इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से गो शब्द से पञ्च गो इस समासान्त को टच् प्रत्यय होता है। टच् का टकार का ''चुटू'' इससे चकार का और ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप होने पर पञ्च गो अ धन इस स्थिति में ''एचोऽयवायावः'' इस गो शब्द अवयव के ओकार का अवादेश होने पर सर्वसंयोग से निष्पन्न पञ्चगबधन शब्द से प्रक्रिया कार्य में सु प्रत्यय होने पर पञ्चबधनः रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-3

10. ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायांजः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
11. पौर्बशालः यहाँ किस अर्थ में क तद्धित प्रत्यय होता है?
12. ''तद्धिलेब्वचामादेः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
13. ''पौर्वशालः'' यहाँ किस सूत्र से और वृद्धि कैसे होती है?
14. ''गोरतद्वितलुकि'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
15. पञ्चगवधनः यहाँ पर टच् प्रतयय किस सूत्र से और कैसे होता है?

समाहार वाच्य होने पर इस प्रकरण के उपकारक सूत्रों का वर्णन किया जाता है–

टिप्पणियाँ

(3.6) ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारय'' (9.2.42)

सूत्रार्थ–समानाधिकरण तत्पुरुषसमास कर्मधारय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से समानाधिकरण के तत्पुरुष के कर्मधारय संज्ञा होती है। यह सूत्र त्रि पदात्मक है। यहाँ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ये तीनों पद प्रथमा एकवचनान्त हैं। समानम् एकम् अधिकरणं वाच्यं ययोः समानाधिकरणे पद में बहुब्रीहि समास है। समानाधिकरण नाम समान विभक्ति का है। समानाधिकरणे पदे स्तः अस्य इति विग्रहे (समान अधिकरण पद में है इसके विग्रह में ''अर्श आदिभ्योऽच्'' इस सूत्र से मतुप् अर्थ में अर्श आदित्व से अच् होने पर समानाधिकरणः निष्पन्न होता है। समानाधिकरण नाम समानाधि करण परक है। एव इस सूत्र का अर्थ है–समानाधिकरण पदक तत्पुरुष समास कर्मधारय संज्ञक होता है।

कर्मधारय संज्ञा होने पर सत्यांकृष्णा चतुर्दशी इस विग्रह में ''पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु'' इस सूत्र से पूर्वकृष्णापद के कर्मधारय समास होने पर 'पुवद्भाव प्रक्रिया में कृष्ण चतुर्दशी रूप सिद्ध होता है।

कर्मधारयसंज्ञक की तत्पुरुष संज्ञा भी अभीष्ट है। अत एव ''आकडारादेका संज्ञा'' इस सूत्र के अधिकार में इस सूत्र का पाठ विहित नहीं होता है।

(3.7) ''पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु'' (6.3.42)

सूत्रार्थ–भाषित पुंसकत्व पर (नपुंसक) ऊङ के अभाव जिस तथा भूत की स्त्रीलिङ्ग के पूर्वपद का कर्मधारय होने पर जातीय में और देशीय के आगे पुंवाचक का ही (नपुंसक का) रूप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से पुंवद्भाव का अतिदेश होता है। इस सूत्र में दो पद पुंवत् और कर्मधारयजातीयदेशीयेषु हैं। पुंवत् यह वतिप्रत्यान्त अव्यय पद हैं और कर्मध ारयजातीय देशीयेषु सप्तमी बहुवचनात्त पद है। कर्मधारयश्च जातीयश्च देशीयश्च कर्मधारय जातीयाः तेषु कर्मधारयजातीय देशीयेषु यहां इतरेत्तरद्वन्दसमास है। (कर्मधारय और कर्मधारय और जातीय और देशीय कर्मधारय जातीयाः उनमें कर्मधारय जातीय देशों में इत्तरेतर द्वन्द समास है। यहाँ विषय भेद से सप्तमी से भी भेद है। कर्मधारये यहाँ अधिकरण सप्तमी है और जातीयदेशीय में यहाँ पर सप्तमी है। यहाँ ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र से स्त्रियाः और भाषितपुंस्कादनूङ दो पदों की अनुवृत्ति होती है। यहाँ भाषितपुंस्कादनूङ् इस लुप्त षष्ठयेकवचनात्त समस्त पद को स्त्रियाः शब्द का विशेषण हैं। यहाँ निपातन से पञ्चमी का अलुक् और षष्ठी का लुक होता है। भाषितः पुमान् यस्मिन् सः भाषितपुंस्कः यही बहुव्रीहिसमास है। उस भाषितपुंसक से। ऊङोदुभावः अनूङ् यह अव्ययीभावः पद है। भाषितपुंस्काद् अनूङ् यस्यां सा भाषितपुंस्कादनूङ् तस्याः भाषितपुंस्कादनूङ्। अतः सूत्र का अर्थ है ''भाषित पुंसक से ऊङ अभाव है जिसमें तथाभूत स्त्रीलिङ्क पूर्व पद का कर्मधारय में जाति और देश के पर में होने पर पुंसकवाचक का ही रूप होता है।

उदाहरण–यहाँ उदाहरण है तावत् कृष्ण चतुर्दशी। कृष्णा चासौ चतुर्दशी च इस लौकिक विग्रह में कृष्ण सु चतुर्दशी सु इस अलौकिक विग्रह में ''विशेषणं विशेषणं बहुलम्'' इससे तत्पुरुष समास होने पर, कृष्णा सु इसका पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सुब्लुकि कृष्णा चतुर्दशी शब्द स्वरूप का एकदेशविकृतन्याय से समासतव की अक्षता से होने पर इसके बाद सु विभक्ति का विभक्ति कार्य होने पर कृष्ण चतुर्दशी रूप बना। जातीयर् प्रत्यय पर में पाचक जातीय और देशीभर प्रत्यय पर में पुंवद्भाव का पाचकदेशीया यही उदाहरण है।

3.8 ''संख्यापूर्वोद्विगुः'' (2.1.12)

सूत्रार्थः–तद्धितार्थ और उत्तरपद समहार में इस सूत्र में उक्त तीनों प्रकार से संख्या पूर्व समास द्विगु समास (संज्ञा) होती है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से संख्यापूर्व तत्पुरुष की द्विगु संज्ञा होती है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ संख्या पूर्वः द्विगुः ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त पद है। संख्या पूर्वः पूर्वावयवः यस्य स संख्यापूर्व बहुव्रीहि समास है। (संख्या पूर्व में है जिसके वह संख्या पूर्व बहुव्रीहि समास है। ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' यहाँ उक्त तीन प्रकार संख्यापूर्वपदः समासः यहाँ संख्या पूर्व शब्द से ग्रहण किया गया। इस सूत्र का अर्थ होता है ''तद्धितार्थोत्तर पद समाहारे च'' इस तद्धित अर्थ विषय में, उत्तरपद पर में और समाहार में वाच्य होने पर जो संख्या पूर्वपद का समास होता है वह द्विगु संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का तद्वित अर्थ विषय में पञ्चकलापः उत्तरपद परे पञ्चगवधनः, और समाहार में वाच्य होने पर पञ्चगवम् उदाहरण बना। तथाहि पञ्चानां गवां समाहारः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् आम् गो आम् इस अलौकिक विग्रह में ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इससे समास प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न होने से गो शब्दान्त से पञ्च गो शब्द से ''गोरवद्धितलुकि'' इस सूत्र से टच् प्रत्यय होने पर पञ्च गो अ होता है। इसके बाद ''एचोडयवायावः'' इस सूत्र से गकार के उकार का ओकार के अब आदेश होने पर पञ्चगव होता है। ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' इससे कर्मधारय संज्ञा होने पर प्रकृतसूत्र से पञ्चन् संख्यापूर्वपद से पञ्चगण शब्द से द्विगु समास होता है। इसके बाद द्विगुसमास में विशेषकार्य बोध के लिए यह सूत्र प्रवृत्त है।

(3.9) ''द्विगुरेकवचनम्'' (2.4.1)

सूत्रार्थ–द्विगु अर्थ समाहार एकवत् होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से एकवद् भाव होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। यहाँ द्विगुः एकवचनम् ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त है। ''समाहार ग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वार्तिक बल से सूत्र में समाहारः पद आता है। बक्ति इति विग्रह में ''कृत्यल्युटोबहुलम्'' इससे बहुलक से कर्त्ता में ल्युट् प्रत्यय होने पर नपुंसकत्व में वचनम् निष्पन्न होता है। एकस्य वचनम् (एक का वचन) एकवचनम् यही षष्ठीतत्पुरुषसमास है। एकस्य अर्थस्य प्रतिपादकः यही अर्थ है। (एक

टिप्पणियाँ

अर्थ का प्रतिपादक है)। समाहार अर्थ में जो द्विगु होता है वह एकवचन होता है यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–तथाहि पञ्चानां गवां समाहारः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् आम् गो आम् इस अलौकिक विग्रह में ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इससे समास में प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न के पञ्चगव शब्द का ''संख्यापूर्वो द्विगुः'' द्विगु समास में प्रस्तुत सूत्र से एकवद् भाव होता है। इसके बाद सूत्र प्रवृत्त हुआ है–

(3.10) ''स नपुंसकम्''

सूत्रार्थ–समाहार में द्विगु और द्वन्द नपुंसक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से नपुंसकत्व होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। यहाँ स नपुंसकम् दो पद प्रथमा एकवचनान्तपद है। यहाँ वह इस पद से समाहार अर्थ में द्विगु का और समाहारद्वन्द का ग्रहण किया गया है। और समाहार में द्विगु और द्वन्द को नपुंसक होता है यही सूत्रार्थ है।

द्विगु समास का तत्पुरुष भेद से ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इससे प्राप्त द्विगु का और द्वन्द का परवलियङ्गता से अपवाद यही सूत्र हैं।

उदाहरण–पञ्चगवम् यह उदाहरण है। तथाहि पञ्चानां गवां समाहारः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् आम् गो आम् इस अलौकिक विग्रह में ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' इससे समास प्रक्रिया होने से निष्पन्न पञ्चगवशब्द का ''संख्यापूर्वोद्विगुः'' इससे द्विगु समास होता है। इसके बाद एकवद्भाव होने पर प्रकृत सूत्र से उसका नपुंसकलिंग होता है। उससे पञ्चगवशब्द से नपुंसक में सु प्रत्यय का अम् होने पर प्रक्रियाकार्य में पञ्चगवम् रूप निष्पन्न होता है। समाहार द्वन्द में इस सूत्र का उदाहरण है पाणिपादम्।

पाठगत प्रश्न–4

16. ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

17. ''पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

18. ''पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

19. ''संख्यापूर्वोद्विगुः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

20. ''द्विगुरेकवचनम्'' सूत्र का अर्थ क्या है?

21. ''स नपुंसकम्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

22. द्विगु में एकवद्भाव का एक उदाहरण दीजिये?

(3.11) ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्''

सूत्रार्थ–भेदक भेद से समानाधिकरण के साथ बहुल को समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विशेषण विशेष्य समास होता है। तीन पदात्मक इस सूत्र में विशेषणम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। विशेष्येण यह तृतीया एकवचनान्त पद है। बहुलम् प्रथमा एकवचनात्त पद है। ''प्राक्कडारासमास:'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन अधिकृत सूत्र है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। ''पूर्वकालैसर्वजरत् पुराण नव केवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। विशिष्यते अनेन इति विशेषणम् (विशेषता बताई जाती है जिससे वह विशेषण है) अन्य से व्यावर्तक भेद है। जिससे त्रेदा जाता है वह व्यावर्त्यम् भेद्यं विशेव्यम् अत: इस सूत्र का अर्थ है ''भेदक समानाधिकरण भेद से बहुल को समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञा होती है।

''तत्पुरुष: समानाधिकरण: कर्मधारय:'' इस सूत्र बल से यह समास कर्मधारयसंज्ञक भी होती है। वा ग्रहण से ही सिद्ध सूत्र होने पर बहुल ग्रहण से सर्व उपव्यभिचार या अभिव्यभिचार है। तेन कृष्णासर्प: इत्यादि में नित्यसमास है। रामो जाम दग्न्य: इत्यादि में समास नहीं होता है।

उदाहरण–लीलोत्पलम् यहाँ इत्यादि उदाहरण है। नीलं च तदुत्पलम् इस लौकिक विग्रह में नील सु उत्पल सु इस अलौकिक विग्रह में विशेषण वाचक नील सु इस सुबन्त को समानाधिकरण से विशेष्य से उत्पल सु इससे सुबन्त से प्रस्तुत सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञं होता है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में विशेषणम् पद प्रथमानिर्देश से उनके बोध्य का नील सु इस पद की उपसर्जन से पूर्व निपात में नील सु उत्पलसु होता है। इसके बाद समुदाय का समास होने पर प्रातिपदिकत्व होने पर ''सुपोधातुप्रातिपतिकयो:'' इससे सुप् के सु द्वय का लोप होने पर नील उत्पल होता है। इसके बाद ''आद्गुण:'' सूत्र से अकार का और उकार के स्थान पर एकार एकादेश होने पर निष्पन्न नीलोत्पलशब्द का एकदेशविकृत न्याय से प्रातिपदिकत्व होने पर ''परवाल्लिंङ्ग द्वन्दतत्पुरुषयो:'' इस सूत्र से नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान से इसके बाद सु प्रत्यय होने पर सु का अम् होने पर विभक्ति कार्य होने पर नीलोत्पलम् रूप सिद्ध होता है।

नील पद का (अनीलात् उत्पलाद्) अनील उत्पल से उत्पल शब्द का व्यावर्तकत्व से विशेषणत्व है। उसी प्रकार उत्पल पद अनुत्पला से नील को व्यावर्त उत्पल पद भी विशेषणत्व है। अत: उत्पल शब्द का पूर्वनिपात होना चाहिए यहाँ शङ्का (प्रश्न) उत्पन्न होता है। यहाँ समाधान है–जब तक जातिगुणक्रियावाची शब्दों के समभिव्यवहार में जातिवाचक ही विशेष्य है, अन्पद विशेषण स्वभाव से। यहां उत्पल शब्द का जातिवाचक से विशेषणत्व के अभाव से पूर्व निपात नहीं होता है। गुणशब्दों के गुण क्रिया शब्दों के समभिव्याहार में विशेषणविशेष्य का भाव नहीं होता है। यही नियम है। अत: गुणवाचकों का विशेषणविशेष्यभाव में खञ्जकुब्ज: कुब्जखञ्ज: ये दो रूप होते हैं। उसी प्रकार क्रियाशब्दों के भी समभिव्याहार में पाचकपाठक: पाठकपाचक: ये दो रूप हैं। तथा गुणक्रियाशब्दों के समभिव्याहार में खञ्चपाचक:, पाचकखञ्ज: ये दो रूप

हैं। सामान्य जाति विशेष जाति शब्दों के समभिव्याहार में तो विशेष जाति ही विशेषण होता है। जैसे–शिंशपावृक्ष: इत्यादि में है।

(3.12) ''कुत्सितानि कुत्सनै:''

सूत्रार्थ–कुत्स्यमान सुबन्तों को कुत्सन सामानाधिकरण सुबन्त के साथ समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह निधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ कुत्सितानि यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है और कुत्सन्नै: यह तृतीयाबहुवचनान्त पद है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। और उसको ''विभक्तिविपरिणामेन कुत्सनै:'' इस विशेषण से समानाधिकरणों के द्वारा होता है। ''प्राक्कडाराल्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत (अधिकार) सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् की अनुवृत्ति होती है। सुप् का तदन्तविधि में सुबन्तम् प्राप्त होता है। व्याख्यान से कुत्सितशब्द वर्तमान में क्त प्रत्यय होता है। कुत्सित का अर्थ कुत्स्यमान है। अत: इस सूत्र का यह अर्थ होता है ''फुल्स्यमान सुबन्त कुत्सन से समान अधिकरण (समानाधिकरण) से सुबन्त के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है वैयाकरणखसूचि:। वैयाकरण च असौखसूचि: च इति इस लौकिक विग्रह में वैयाकरण सु खसूचि सु इस अलौकिक विग्रह में कुत्स्यमानवाचक वैयाकरण सु सुबन्त को समानाधिकरण से खसूचि सु इससे सुबन्त के साथ तत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद कुत्सित अर्थ का वैयाकरण सु का पूर्वनिपात में सु का लोप होने पर निष्पन्न वैयाकरण खसूचि शब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में वैयाकरण खसूचि: रूप निष्पन्न होता है। इसी प्रकार मीमांसकदुर्दुरुट: इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न–5

23. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

24. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र में बहुलग्रहण का क्या फल है?

25. नीलोत्पलम् यहाँ नील शब्द का विशेष्य कैसे नहीं हुआ?

26. गुणक्रियावाचक समभिव्यहार में विशेषण विशेष्य भाव का उदाहरण दीजिये?

27. ''कुत्सितानि कुत्सजै:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

28. ''कुत्सितानि कुत्सनै:'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

(3.13) ''पापाणकेकुत्सितैः''

सूत्रार्थ–पाप शब्द और अणक शब्द को कुत्स्यमान (कुत्सित) समान अधिकरण सुबन्त के साथ समास होता है, और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद है। यहाँ ''पापाणके'' यह प्रथमाद्विवचनान्त और ''कुत्सितैः'' तृतीया बहुवचनान्त पद है। यहाँ पर ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन से पद की अनुवृत्ति होती है। या हो रही है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीनों सूत्र अधिकृत हैं। ''सुबामश्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति हो रही है। सुप् का तदन्त विधि में कुत्सितैः विशेषण से सुबन्तैः प्राप्त हो रहा है। कुत्सितैः का अर्थ है कुत्स्यमानों से। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है–''पापशब्द और अणकशब्द को कुत्स्थमान समानाधिकरण सुबन्त के साथ समास होता है, और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस से ही सूत्रकार्य में सिद्ध होने पर इस सूत्र से किसलिए (किमर्थम्) प्रश्न आता है। यहाँ इसका उत्तर है यह सूत्र पूर्व का अपवादभूत सूत्र है। यहाँ पापाणके यहाँ पर प्रथमान्त होने से पठित समास में उन दोनों शब्दों का ही पूर्व निपात होने से ऐसा हुआ।

उदाहरण–यहाँ उदाहरण है तावत् पापनापितः। पापः च असौ नापितः च इस लौकिक विग्रह में पाप सु नापित सु इस अलौकिक विग्रह में पाप सु इस सुबन्त को समानाधिकरण से कुत्स्यमान होने से नापित सु इस सुबन्त के साथ प्रा उक्त सूत्र से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। उसके बाद पाप शब्द का पूर्वनिपात होने पर सु प्रत्यय का लोप होने पर पापनापित शब्द से सु प्रत्ययप्रक्रिया कार्य में पानामितः रूप निष्पन्न होता है। इसी तरह अणककुलालः इसका उदाहरण है।

(3.18) ''उपमानानि सामान्यवचनैः''

सूत्रार्थ–उपमानवाची सुबन्तों को सामान्यवचन समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ पर ''उपमानानि'' यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है और सामान्यवचनैः यह तृतीयाबहुवचनान्त पद है। यहाँ पर ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला समानाधिकरणेन'' इस मूत्र से समानाधि करणेन पद की अनुवृत्ति होती है। और उसके विभक्ति विपरिणामेन सामान्य वचनैः का विशेषण होने से समानाधिकरण ही होता है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन सूत्र अधिकृत (अधिकार) हैं। ''सुवाममित्रे पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् का तदन्तविधि में समानाधिकरणैः अन्वय से सुबन्तैः पद प्राप्त होता है। उप पूर्वक भी धातु के करण में ल्युट् उपमान शब्द निष्पन्न होता है। उपमीयतें सदृशतया परिच्छिद्यते यैः

टिप्पणियाँ

तानि उपमानानि (उपमा दी जाती है समानता से चारों तरफ से जिससे वे हैं उपमान) सामान्य का भाव है सामान्यम्। ''साधारणो धर्म: यही अर्थ है। सामान्य उक्तियाँ ही सामान्य वचन हैं। उनसे द्वारा सामान्य वचनों द्वारा। (सामान्यम् उक्तवन्त: इति सामान्य वचना: तै: सामान्यवचनै:। उपमान और उपमेय में जो साधारण धर्म है उसका विशिष्ट वचन ही उसका अर्थ है। जो शब्द पूर्व साधारण धर्म से मुक्त मनुप् अर्थी याच् प्रत्यय बल से तद्धित दृश्य में होते है वे ही सामान्य वचन है यही वैयाकरणों का सिद्धान्त है। अत: इस सूत्र का अर्थ है ''उपमानवाचक सुबन्त सामान्य वाचकों समानाधिकरण सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र से ही समास में उपमानवाचक के पूर्व निपात होने पर सिद्धि में यह सूत्र व्यर्थ ही कहा जाता है उपमानवाचकपद का ही पूर्व निपात हो जैसा इस सूत्र का अर्थ है। अन्यथा इन दोनों गुणवाचकत्त से विशेषण विशेष्य भाव में कामचर से खञ्जकुब्ज:, कुब्जखञ्ज: ऐसा इस नियम से आपत्ति होनी चाहिए।

उदाहरण–यहाँ इस सूत्र का उदाहरण है घनश्याम:। घन इव श्याम: (बादल के समान काला) इस लौकिक विग्रह में घन सु श्याम सु इस अलौकिक विग्रह में उपमानवाचक घन सु सुबन्त को समान अधिकरण से श्याम सु इस सामान्य वचन के साथ विकल्प से प्रकृतसूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसका समास विधायक शास्त्र में उपमान के प्रथमा के निर्दित्व से उसके बोध्य का घन सु इसका उपसर्जन संज्ञा में पूर्व निपात होने पर, समुदाय के समास से सुप् का लोप होने पर निष्पन्न घनश्याम शब्द से सुप्रत्यय प्रक्रिया कार्य में घनश्याम रूप निष्पन्न होता है।

घनशब्द के जलघरवाचक और श्याम शब्द के रामार्थवाचकता से समानाधिकरण नहीं है यह शंका है। इसका समाधान है घन पद घनसदृश में राम में हैं, श्यामशब्द भी श्याम गुण विशिष्ट में राम में समानाधिकरण्य है।

पाठगत प्रश्न-6

29. ''पापाण के कुत्सितै:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

30. ''पापाणके कुत्सितै:'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

31. ''विशेषणं विशेष्येन बहुलम्'' इससे ही सिद्ध होने पर ''पाषण के कुत्सितै:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

32. ''उपमानानि सामान्यवचनै:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

33. ''उपमानानि सामान्य वचनै:'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

34. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे ही सिद्ध होने पर ''उपमानानि सामान्यवचनै:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

(3.15) ''उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्य प्रयोगे'' (2.1.15)

सूत्रार्थ–उपमेय सुबन्त को उपमान व्याघ्रादि से समानाधिकरण सुबन्त के साथ साधारण धर्म का प्रयोग होने पर विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यहाँ उपमितम् पद प्रथमा एकवचनात्त पद है। व्याघ्रादिभिः यह तृतीया बहुवचनात्त पद है। सामान्य प्रयोग होने होने पर सप्तम्येकवचनान्त पद है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। और उसका विभक्ति विपरिणाम से व्याघ्र आदि विशेषण से समानाधिकरणैः होता है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीनों अधिकार (अधिकृत) सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् का तदन्त विधि में उपमितम् इस अन्वय से सुबन्तम् पद प्राप्त होता है। सुपा का तदन्तविधि में व्याघ्र आदि अन्वय से सुबन्तैः पद प्राप्त होता है। उपमित नाम ही उपमेय है। भूतकाल यहाँ दिखाई नहीं देता है। और उस सम्बन्धिशब्द से उपमान आक्षेपित होता है। आक्षिप्त उपमान के समान अधिकरण से और इसका व्याघ्र आदि शब्दों के साथ अन्वय होता है। और इस प्रकार समानाधिकरणैः-समानाधिकरणों द्वारा, उपमानैः=उपमानों द्वारा, व्याघ्रादिभिः=व्याघ्र आदि द्वारा, सुबन्तैः=सुबन्तों द्वारा। समान का भाव सामान्यम् होता है। साधारण धर्मः यही अर्थ है। सामान्य का अप्रयोगः सामान्याप्रयोगः, उसमें सामान्याप्रयोग में षष्ठी तत्पुरुष समास है। अतः इस सूत्र का अर्थ है–उपमेय सुबन्त को उपमान व्याघ्रादि समानाधि करण सुबन्तों के द्वारा विकल्प से साधारण धर्म का अप्रयोग होने पर समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञकः होता है।

यहाँ उपमान और उपमेय में उपमान का ही पूर्व निपात होने पर उपमित का पूर्व निपात के विध ान के लिए यह सूत्र बना है।

उदाहरण–पुरुषव्याघ्रः इत्यादि सूत्र का उदाहरण है। पुरुष व्याघ्र इव इस लौकिक विग्रह में पुरुष सु व्याघ्र सु इस अलौकिक विग्रह में उपमेयवाचक पुरुष सु इस सुबन्त को समानाधि करणेन व्याघ्र सु इस उपमान वाचक सुबन्त के साथ विकल्प से प्रकृतसूत्र से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। इसके बाद पुरुष सु इस उपमेय के उपसर्जनत्व से पूर्व निपात होने पर सुप् लोप निष्पन्न होने पर पुरुषव्याघ्रशब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में पुरुष व्याघ्रः रूपं सिद्ध होता है। यहाँ सादृश्यबोधक शौपत्मिक साधारण धर्म के अप्रयोग से प्रस्तुत सूत्र से समास होता है।

सामान्य अप्रयोग में (सामान्याप्रयोगे) वचन से पुरुष व्याघ्र इन शूर इस विग्रह में उपमान उपमेय साधारण धर्म के शौर्य के प्रयोग से प्रस्तुतसूत्र से समास नहीं होता है। व्याघ्र आदि के आकृतिगणत्व से मुखपद्यम्, मुखकमलम्, करकिसलयम् इत्यादि भी सिद्ध होते हैं।

(3.15.1) ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्'' (वार्तिकम्)

वात्तिकार्थ–शाकपार्थिव (शाक और पृथु) आदि शब्दों के सिद्ध होने पर पूर्वपद में स्थित

टिप्पणियाँ

उत्तरपदलोप का उपसंख्यान करना चाहिए।

वार्तिक व्याख्या:–''वर्णो वर्णेन'' सूत्रस्थ महाभाष्य में ''समानाधिकरणाधिकारे शाकपार्थिवादीनामुपसंख्यानमुन्तरपदलोपश्च'' वार्तिक विहित है। उसी वार्तिक का ही सज्जीकरण से पूर्व उक्त वार्तिक आया है। शाकपार्थिवादीनां सिद्धि में दो बार समास होता है। प्रथम दो पद के समास से एक पद का निर्माण होता है। इसके बाद समस्त पद का अन्य समानाधिकरण पद के साथ कर्मधारय समास होता है। यहाँ कर्मधारय समास में पूर्ववद का उत्तरपद के इस पद से लोप नहीं होता है।

उदाहरण:–वार्तिक का उदाहरण है–शाकपार्थिव:। शाक: प्रिय: यस्य इति विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे समास होने पर शाकप्रिय: रूप होता है। शाकप्रिय: पार्थिव: इस लौकिक विग्रह में शाकप्रिय सु पार्थिव सु इस अलौकिक विग्रह में ''विशेषेण विशेष्येणबहुलम्'' इस सूत्र से समास होने पर प्रक्रियाकार्य में शाकप्रिय पार्थिव शब्द निष्पन्न होता है। तत इस वार्तिक से पूर्वपद का शाकप्रिय इस उत्तरपढ़ के प्रियशब्द का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में शाक पार्थिव: रूप निष्पन्न होता है। इसका अन्य उदाहरण होता है। देवब्राह्मण:। देवानां पूजक: देवपूजक: (देवताओं के पूजक) देवपूजक, देवपूजक: ब्राह्मण: देवब्राह्मण:।

पाठगत प्रश्न-7

35. ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
36. ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?
37. ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'' इस सूत्र का क्या प्रयोजन है?
38. ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'' इस सूत्र में सामान्य प्रयोग में पद किसलिए कहा गया है?
39. ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानाम्'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
40. ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानाम्'' इस वार्तिक का उदाहरण दीजिये?

(3.16) ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'' (2.1.61)

सूत्रार्थ–सत्, महत्, परम, उत्तम, उत्कृष्ट समान अधिकरण पूज्यमान सुबन्तों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ सम्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: यह इतरेतर द्वन्दसमासनिष्पन्न प्रथमाबहुवचनान्त पद है तथा पूज्यमानै: यह तृतीया बहुवचनान्त पद है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति आती है। और उसका पूज्यमानै: इस अन्वय से विभक्ति विपरिणामेन समानाधिकरणै: होता है ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:''

ये तीन अधिकृत हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप का तदन्तविधि में सन्यहत्परमोन्तमोत्कृष्टा: इस अन्वय से सुबन्ता: (सुप् प्रव्ययान्तपद) प्राप्त होते हैं। सुपा इसकी तदन्त विधि में पूज्यमानै: इस अन्वय से सुबन्तै: पद प्राप्त होता है। अत: इस सूत्र का अर्थ है–(सन्यहत्परमोन्तमोत्कृष्टा:) सत्, महत्, परम, उत्तम, उत्कृष्ट आदि सुबन्त समान अधिकरण से सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है और तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे ही समास सिद्ध होने पर (सन्यहत्परमोत्तमोत्कृष्टानां) सन् (सत), महत्, परम्, उत्तम्, उत्कृष्ट आदि शब्दों को पूर्वनिपात नियमों के लिए यह सूत्र बना है।

उदाहरण–सद्वैद्य: इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। सन् वैद्य: इस लौकिक विग्रह में सत् सु वैद्य सु इस अलौकिक विग्रह में सत् सु इसका समानाधिकरण से वैद्य सु इससे पूज्यमानवाचकों का सुबन्तों के साथ विकल्प से प्रकृतसूत्र से प्रक्रिया कार्य में सद्वैद्य: रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार महावैयाकरण: इत्यादि इसका उदाहरण है।

(3.16) ''वृन्दारकनागकुञ्जरै: पूज्यमानम्''

सूत्रार्थ–पूज्यमान सुबन्त को वृन्दारक, नाग, कुञ्चर आदि से समान अधिकरणों से सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ वृन्दारकनागकुञ्जरै: इस इतरेतरद्वन्दसमासनिष्पन्न तृतीया बहुवचनान्त पद है और पूज्यमानम् प्रथमैकवचनान्त पद है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति आती है। और उसका वृन्दारक नागकुञ्जर आदि अन्वय से विभक्ति विपरिणाम से ''समानाधिकरणै:'' होता है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुष:'8 ये तीन अधिकृत सूत्र है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् इस तदन्तविधि में पूज्यमानम् इस अन्वय से सुबन्त प्राप्त होता है। सुपा का तदन्तविधि में (वृन्दारकनागकुञ्जरै:) वृन्दारक, नाग, कुञ्जर आदि से अन्तय से सुबन्तै: पद प्राप्त होता है। अत: इस सूत्र का अर्थ होता है–''पूज्यमान सुबन्त को वृन्दारकनागकुञ्जर समानाधिकरणों से सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–गो वृन्दारक इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। गौ: वृन्दारक इव इस लौकिक विग्रह में गो सु वृन्दारक सु इस अलौकिक विग्रह में गो सु इस पूज्यमान सुबन्त को समानाधिकरण से वृन्दारक सु इससे सुबन्त के साथ विकल्प से प्रकृत सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न से गोवृन्दारक शब्द से सु प्रत्यय होने पर गोवृन्दारक: रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार गोनाग: इत्यादि इसका उदाहरण है।

(3.18) ''किं क्षेपे'' (2.1.6.4)

सूत्रार्थ–निन्दा में गम्यमान किम् अव्यय को समानाधिकरण सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समास होता है। इस सूत्र में दो पद है। यहाँ किम् अव्यय पद है। ''क्षेपे'' यह सप्तम्येक वचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीनों अधिकृत सूत्र हैं। युवामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधि करणेन पद की अनुवृत्ति आती है। और उसका सुपा यहाँ पर तदन्त विधि में सुबन्त से इससे अन्वय होता है। क्षेप: निन्दा को कहते है। अत: सूत्र का अर्थ होता है–निन्दा में गम्यमान किम् अव्यय को समानाधिकरण से सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–यहाँ उदाहरण है तावत् किंराजा। कुत्सितो राजा इस लौकिक विग्रह में किम् राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में किम् इस अव्यय को निन्दार्थक समानाधिकरण से राजन् मु इस सुबन्त के साथ तत्पुरुष समास संज्ञा होती हैं इसके बाद प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न किंराजन् इससे सु प्रत्यय होने पर किंराजा रूप बनता है।

पाठगत प्रश्न-8

41. ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
42. ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?
43. ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'' इस सूत्र का प्रयोजन क्या है?
44. ''वृन्दारक नाग कुञ्जरै: पूज्यमानम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
45. ''वृन्दारकनागकुञ्जरै: पूज्यमानमृ'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?
46. ''किं क्षेपे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
47. ''किं क्षेपे'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

(3.11) ''प्रशंसावचनैश्च'' (2.1.66)

सूत्रार्थ–रूढ़ी से प्रशंसावाचक समानाधिकरण सुबन्तों से जातिवाचक सुबन्त को समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ प्रशंसावचनै: यह तृतीया बहुवचनात्त पद है और वह अव्ययपद है। प्रशंसां वचत्ति इति प्रशंसावचना: तै: प्रशंसावचनै: (प्रशंसा में वे बोलते है प्रशंसा वचन) रूढ़ी द्वारा प्रशंसा वाचकों

द्वारा यही अर्थ है। प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीनों अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रितेपराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरूपुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। और उसका ''प्रशंसावचनैः'' इस अन्वय से विभक्ति विपरिणाम से ''सपानाधि करणैः'' होता है। सुपा यहाँ तदन्त विधि में प्रशंसावचनों द्वारा अन्वय से युवन्तैः रूप होता है। ''पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशाबेहद्बब्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रिया ध्यापकधूर्तैर्जातिः'' इस सूत्र से जाति की अनुवृत्ति होती है। जाति नाम जातिवाचक की है। उसका विशेषण से सुप् की तदन्तनिधि में सुबन्तम् रूप होता है। अतः सूत्र का अर्थ होता है- ''रूढ़ी से प्रशंसावाचक समानाधिकरण सुबन्तों से जातिवाचक सुबन्त को समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

उदाहरण–यहाँ उदाहरण है तावत् गोतल्लजः तल्लजः च असौ गौः च इस लौकिक विग्रह में तल्लज सु गो सु इस अलौकिक विग्रह में प्रशंसावाचक तल्लज सु सुबन्त के साथ जातिवाचक गो.सु. सुबन्त को प्रस्तुत सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न, ''गोतल्लजशब्द से सु प्रत्यय होने पर गोतल्लजः रूप निष्पन्न होता है। उसी प्रकार से गोमतल्लिका, गोमचर्चिका, इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है।

(3.20) ''नञ्''

सूत्रार्थ–नञ् सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से नञ्तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में एक पद है। यहाँ नञ् प्रथमा एकवचनात्त पद है। और ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'', ''विभाषा'' ये चार सूत्र अधिकृत सूत्र है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ ''प्रत्ययग्रहणेतदन्तग्रहणम्'' इस परिभाषा सुपा की प्रदत्त विधि में सुबन्तम् होता है। यहाँ नञ् इससे प्रसिद्ध अव्यय का ही ग्रहण होता है न कि ''स्त्रीपुंसाभ्यांनञ्स्जजौ भवनात्'' इस सूत्र से विहित नञ् प्रत्यय का। और सूत्र का अर्थ होता है–नञ् सुबन्त के साथ समास होता है, और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।''

उदाहरण–अब्राह्मणः इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण हैं। न ब्राह्मणः इस लौकिक विग्रह में न ब्राह्मण सु अलौकिक विग्रह में न अव्ययपद है। और ब्राह्मण सु इस सुबन्त के साथ प्रकृत सूत्र से तत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद सूत्र में नञ् का प्रथमानिर्दित्व से उसके बोध्य का ''प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इससे उपसर्जन संज्ञा होने पर ''उपसर्जनंपूर्वम्'' इससे पूर्वनिपाल में न ब्राह्मण सु होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् का लोप होने पर न ब्राह्मण होता है। तब नञः नलोप विधायक सूत्र प्रवर्त्तत होता है।

टिप्पणियाँ

(3.21) ''न लोपो नञः''

सूत्रार्थ–नञ् के नकार का लोप होता है उत्तरपद परे।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से नञ् के न लोप होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यहाँ ''न'' लुप्तषष्ठी एकवचनात्त पद हैं। नकार का यही अर्थ है। **लोपः** यह प्रथमा एकवचनात्त और निञ् षष्ठयत्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपद में अनुवृत्ति होती है। और सूत्र का अर्थ होता है ''नञन् के नकार का लोप होता है उत्तरपद पर में रहने पर।''

उदाहरण–अब्राह्मणः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। न ब्राह्मणः इस लौकिक विग्रह में न ब्राह्मण सु इस अलौकिक विग्रह में नञ्तत्पुरुष समास में न ब्राह्मण इस स्थित में प्रस्तुत सूत्र से उत्तरपद ब्राह्मण शब्द में नञ् के नकार का लोप होता है। इसके बाद अ ब्राह्मण सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न से अब्राह्मण शब्द से सु प्रक्रिया कार्य में अब्राह्मणः रूप होता है।

न अश्व। इस विग्रह में ''नञ्'' से समास में नकार का लोप होने पर अ अश्व इस स्थिति में अज आदि में उत्तरपद पर रहने पर नञ् समास में नुडागम विधायक यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है–

(3.22) ''तस्मान्नुडचि''

सूत्रार्थ–लुप्त नकार से नञ् के उत्तर पद के अच् आदि का नुडागम होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से नुडागम होता है। इस सूत्र में तीन पद होते हैं। यहाँ इससे नुट् अचि यह पदच्छेद है। तस्मात् पञ्चमी एकवचनात्त है, नुट यह प्रथमा एकवचनात्त पद है और अचि सप्तम्येक वचनात्त पद है। ''न लोपो नञः'' इस सूत्र से नञ पद की अनुवृत्ति होती है और तत् पञ्चमी विपरिणाम में होती है। ''अनुगुत्तरपदे'' इस सूज से उत्तरपद की अनुवृत्ति होती है। ''यस्मिन् विधिः तदाहावल्ग्रहणे'' इस परिभाषा से अचि का तदत्तविधि में उत्तरपद में इससे अन्वय होने पर अजादौ उत्तरपद में यही अर्थ होता है। उससे इससे नञ के अन्वय से लुप्तनकार से नञः तात्पर्य होता है। अय निर्देश होने पर पञ्चमी निर्देश के बलीय से अजादि उत्तर पद में इसके पष्ठयत्त से विपरिणाम होता है। सूत्र का अर्थ होता है–''लुप्त नकारसे नञ् के उत्तरपद का अजादि से नुडागम होता है।''

उदाहरण–अनश्वः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। न अश्वः इस लौकिक विग्रह में न अश्व सु इस अलौकिक विग्रह में ''नञ्'' इस सूत्र से नञ् समास होने पर प्रक्रियाकार्य में न अश्व इस स्थिति में नञ् के नकार का लोप होने पर अ अश्व रूप होता है। इसके बाद अच् आदि के उत्तरपद का अश्व का लुप्त नकार से नञ् के नुट् होने पर नुट नुट् अश्व यह होने पर उकार का ''उपदेशेऽजनुनासिकश्त्'' इससे टकार का ओट ''चुटू'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप होने पर अ न् अश्वः इस स्थिति में सर्वसंयोग होने निष्पन्न अनश्व शब्द से सु प्रक्रियाकार्य में अनश्वः रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-9

48. ''प्रशंसावचनैश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

49. ''प्रशंसावचनैश्च'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

50. ''नञ्'' सूत्र का क्या अर्थ है?

51. अब्राह्मण: यहाँ नञ् के नकार का लोप किस सूत्र से होता है?

52. अनश्व: यहाँ नुडागमविधायक सूत्र क्या है?

पाठ सार

इस पाठ में ''दिक्संख्येसंज्ञायाम्'', ''तद्धिताथोत्तरपदसमाहारे च'' तत्पुरुषसमासविधायक दो सूत्रों की व्याख्या की गई है। यहाँ संख्यापूर्व का तत्पुरुष का द्विगुविधायक ''संख्यापूर्वोद्विगु:'' सूत्र, द्विगुसंख्या होने पर एक वह भाव विधायक का ''द्विगुरेकवचनम् सूत्र, ''स नपुंसकम्'' यह द्विगु का और नपुंसकत्वविधायक सूत्र की व्याख्या की गई है। यहाँ प्रसङ्ग ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञ:'' यह तद्धित ञ प्रत्यय विधायक सूत्र ''तद्धितेष्वचायादे:'' आदि अच की वृद्धिविधायक सूत्र प्रस्तुत किया गया है। पञ्चगवधन: इत्यादि में टच् प्रत्यय विधायक ''गोरतद्धितलुकि'' सूत्र की व्याख्या की गई है।

इसके बाद समानाधिकरण तत्पुरुष विधायक व विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'', ''कुत्सितानि कुत्सनै:'', ''पापाणके कुत्सितै:'', ''उपमानानि सामान्यवचनै:'', ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'', ''सन्महत्परमोत्तमो कृष्टा: पूज्यमानै:'', ''वृदारक नाग कुञ्जरै: पूज्यमानम्'', ''किं क्षेपे'', ''प्रशंसावचनैश्च'' इन सूत्रों की व्याख्या की गई है। इस अवसर पर ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपद लोपस्योपसंख्यानम्'' यह उत्तरपद लोप विधायक वार्तिक भी प्रस्तुत की गई है। समानाधिकरण तत्पुरुष का ''तत्पुरुष: समानाधिकरण: कर्मधारय: इससे कर्म संज्ञा प्रस्तुत की गई है। इसके बाद नञ् समास विधायक सूत्र ''नञ्'' की व्याख्या की गई है। इसके बाद नञ् के न लोप विधायक ''न लोपो नञ:'' सूत्र की व्याख्या की गई है। इसके बाद ''तस्मान्नुडचि'' नुडागम विधायक सूत्र प्रस्तुत किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''दिक्संख्येसंज्ञायाम्'' सूत्र की व्याख्या की गई है?

2. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' सूत्र की व्याख्या की गई है?

3. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' सूत्र की व्याख्या की गई है?

4. ''उपमानानि सामान्यवचनै:'' सूत्र की व्याख्या की गई है?

5. ''प्रशंसावचनैश्च'' सूत्र की व्याख्या की गई है?
6. ''नञ्'' सूत्र की व्याख्या की गई है?
8. ''समानाधिकरण: तत्पुरुष:'' विषय आश्रित टिप्पणी लिखो?
9. पौर्वशाल: रूप को सिद्ध कीजिये?
10. पञ्चगवधन: रूप को सिद्ध कीजिये?
11. घनश्याम: रूप को सिद्ध कीजिये?
12. अब्राह्मण: रूप को सिद्ध कीजिये?

''पाठगत प्रश्नों उत्तर''

उत्तर-1

1. पूर्वेषुकामशमी। नियमसूत्र।
2. दिशावाचक और संख्या वाचक सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त के साथ संज्ञा में गम्यमान होने पर तत्पुरुषसमास संज्ञा होता है।
3. पूर्वेषुकामशमी।
4. सप्तर्षय:।

उत्तर-2

5. विधिसूत्र
6. तद्धित अर्थ विषय में और उत्तरपद में **परत:** और समाहार में वाच्य दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त को समानाधिकरण को सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।
7. पौर्वशाल:।
8. पञ्चगवधन:।
9. पञ्चगवम्

उत्तर-3

10. दिशावाचक पूर्वपद जिसका जिससे प्रातिपदिक शैषिक भवादि अर्थ में असंज्ञायां गम्यमान तद्धित ञप्रत्यय होता है।

11. पूर्वशब्द का दिशावाचक पूर्वशाला का दिव-पूर्वपद से इसके बाद भव अर्थ में प्रकृतसूत्र से ञप्रत्यय होता है।

12. ञित् और णित् तद्धित पर में अचों में आदि अच् की वृद्धि होती है।

13. ञित तद्धित पर होने पर अचों में आदि अच की ''तद्धितेष्वचामपदे:'' सूत्र से वृद्धि होती है।

14. गो शब्दान्त तत्पुरुष से समासान्त टच् प्रत्यय होता है तद्धित लोप होने पर नहीं होता है।

15. पञ्चगो गोशब्दान्त तत्पुरुष अत: इस गोरतद्धिबलुकि सूत्र से टच् प्रत्यय होता है।

उत्तर-4

16. समानाधिकरण तत्पुरुषसमास कर्मधारय संज्ञक होता है।

17. भाषितपुंस्कात्पर होने पर अङ अभाव जिसमें तथाभूत स्त्रीलिङ्ग का पूर्वपद का कर्मधारय में जातीय और देशीय परत: (आगे से) पुंवाचक का ही रूप होता है।

18. कृष्णचतुर्दशी

19. तद्धित अर्थ और उत्तरपद के समाहार में उक्त त्रिविध संख्यापूर्व: समास द्विगुसंज्ञा होता है।

20. दिग्वर्थ: समाहार एक समान होता है।

21. समाहार में द्विगु और द्वन्द नपुंसक होता है।

22. पञ्चगवम्।

उत्तर-5

23. भेदक भेद से समान अधिकरण के साथ बहुल का समास होता है। और तत्पुरुष संक्षक होता है।

24. कृष्णसर्प: इत्यादि में नित्य समास और रामो जामदग्न्य: समास का अभाव होता है।

25. जातिगुण क्रियावाची शब्दों के समभिव्यवहार में जातिवाचक विशेष्य अत्यन्त् विशेषण को स्वभाव से नियम से नील शब्द का विशेष्यत्व नहीं होता है।

26. शिंशपावृक्ष:।

27. कुत्स्यमान सुबन्तों को कुत्सन समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

28. वैयाकरणखसूचि:।

टिप्पणियाँ

उत्तर-6

27. पाप शब्द और अणकशब्द कुत्स्यमान समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

30. पापनापितः।

31. यह सूत्र पूर्वसूत्र का अपवादभूत सूत्र है।

32. उपमानबाचक सुबन्तों के सामान्यवचनों से समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास होता है, और तत्पुरुष संज्ञक होता है।

33. घनश्यामः।

34. उपमानवाचक का ही पूर्व निपात है जैसेः स्थात तदर्थमिदं सूत्रम्।

उत्तर-7

35. उपमेय सुबन्त को उपमान व्याघ्रादि समानाधिकरण सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है, साधारण धर्म का अप्रयोग होने पर और तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

36. पुरुषव्याघ्रः।

37. उपमान और उपमेय में उपमान का ही पूर्व निपात प्राप्त होने पर उपमित का पूर्वनिपात के विधान के लिए यह सूत्र है।

38. सामान्य व अप्रयोग होने पर वचन से पुरुष व्याघ्र इव शुर इस विग्रह में उपमान उपमेय साधारण धर्म का शौर्य प्रयोग से प्रस्तुत सूत्र से समास नहीं होता है।

39. शाकपार्थिवादीनां शब्दानां शाक, पृथु आदि शब्दों की सिद्धि होने पर पूर्व पद में स्थित उत्तरपदलोप का उपसंख्या न करना चाहिए।

40. शाकपार्थिवः।

उत्तर-8

41. सन् (सत्), महत्, परम्, उत्तम, उत्कृष्ट समानाधिकरण पूज्यमान सुबन्तों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

42. सद्वैद्यः।

43. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे ही समास सिद्ध होने पर सत्, यहत्, परम्, उत्तम, उत्कृष्ट शब्दों के पूर्वनिपात नियम के लिए यह सूत्र प्रवृत्त है।

44. पूज्यमान सुबन्त बृन्दारक, नाग, कुञ्जर समानाधिकरण सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

47. किं राजा।

उत्तर-9

48. रूढ़ी से प्रशंसावाचक समानाधिकरण सुबन्तों से जातिवाचक सुबन्त को समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

49. गोतल्लजः।

50. नञ् सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

51. ''नञः'' सूत्र से नकार का लोप होता है।

52. ''तस्मान्नुडचि''।

तृतीय पाठ समाप्त

4

तत्पुरुष समास
कुगतिप्रादि समास और उपपद समास

इस पाठ में कु समास का, गति समास का, प्रादि समास का, और उपपद समास का वर्णन किया गया है। इसके आदि तीन समासों के वर्णन के लिए ''कुगतिप्रादय:'' सूत्र की व्याख्या की गई है। प्रादि समास विधायक सूत्रों और वार्तिकों की व्याख्या की गई है। इसके बाद उपपद समास ''उपपदमतिङ्ग'' से किया गया है। इसके पश्चात् समासान्त कार्यों का विधायक सूत्रों का वर्णन किया गया है। यहाँ प्रसङ्ग से तत्पुरुषसमास निष्पन्न शब्दों के लिङ्ग निर्णायक सूत्रों को समास में विशिष्ट आदेश और विधायक सूत्रों का वर्णन किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- कुगति प्रादि समासों के सूत्रों और वार्तिकों को जान पाने में;
- उपपद समास सम्बन्धी सूत्रों को जान पाने में;
- तत्पुरुषसमासान्त प्रत्ययों के विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- लिङ्ग निर्णय सूत्रों को जान पाने में;
- विशिष्ट आदेश विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- सूत्र सहित समास को जानकर उनके अन्य समस्त पदों के निर्माण कर पाने में।

(4.1) ''कुगतिप्रादयः''

सूत्रार्थ–समर्थ कुगति प्रादि को समर्थ से सुबन्त के साथ नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होती है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से कुगति प्रादि समास होते हैं। इस सूत्र में एक पद है। ''कुगति प्रादयः'' यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है। कुश्च गतिश्च प्रादिश्च कुगतिप्रादयः कु. गति और प्र आदि कुगतिप्रादय इसमें इतरेतरद्वन्दसमास है। ''सुबामन्तिते पगङ्ग वत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् की और ''नित्य फ्रीडाजीविकयोः'' सूत्र से नित्यम् की अनुवृत्ति होती है। ''समर्थः पदविधिः'' सूत्र से समर्थः पद की अनुवृत्ति होती है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। यद्यपि कु पृथिवीवाची स्त्रीलिङ्ग शब्द है तथापि गति प्रातिसाहचर्य से कुत्सित अर्थ में विद्यमान कु इस अव्यय की यहाँ ग्रहण किया गया है अधि कार अनुवृत्तिलब्द पदों संयोग कर ''समर्थ कु, गति, प्र आदि समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष समास होता है।''

उदाहरण–कु समास का उदाहरण है कुपुरुषः। कुत्सितः पुरुषः (बुरा पुरुष) इस लौकिक विग्रह में कु पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह में कु पुरुष सुबन्त के साथ प्रकृत सूत्र से तत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद ''कु'' का समास शास्त्र में प्रथमानिर्दिष्ट की उपसर्जन संज्ञा होने पर ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व निपात होने पर कु पुरुष सु स्थिति होती है समुदाय की समास संज्ञक के प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' इससे प्रातिपदिक अवयव के सुप् के सु प्रत्यय का लोप होने पर निष्पन्न कुपुरुष इस प्रातिपदिक से सु प्रत्यय का प्रक्रिया कार्य में कुपुरुषः रूप होता है।

गति समास का ऊरीकृत्य, शुक्लीकृत्य, पटपटाकृत्य इत्यादि यहाँ उदाहरण हैं। ''प्रादयः'' इस सूत्र से प्र आदि बाईस की निपात संज्ञा होती है। प्र आदि समास में (शोभनः पुरुषः सुपुरुषः) शोभन पुरुष ये सुपुरुष इत्यादि उदाहरण है। नित्य समास से अस्वपद विग्रह सभी जगह प्रदर्शन किया जाता है।

(4.2) ''ऊर्यादिच्विडाचश्च''

सूत्रार्थ–ऊरी आदि च्वि प्रत्ययान्त (अन्तवाले) और डाच् प्रत्ययान्त के क्रिया के योग में गतिसंज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से गतिसंज्ञा होती है। ऊरीकृत्य इत्यादि में गतिसंज्ञा विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। ''ऊर्यादिच्विडाचः'' यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। और यह अव्यय पद है। ऊरी आदि में है जिसके के हैं ऊर्यादयः। यह तद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहि है। ऊर्यादयः च च्विश्च डाच् च ऊर्यादिच्विडाचः। ऊरी आदि, च्वि और डाच् प्रत्यय ऊर्यादिच्विडाचः इसमें इतरेतरद्वन्दसमास है। ''उपसर्गाः क्रियायोगे'' इस सूत्र से क्रिया योग में अनुवृत्ति होती है। ''गतिश्च'' इससे अनुवृत्ति का गति पद के वचन विपरिणाम से गतयः होता है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्'' इस च्वि प्रत्यय से च्वि प्रत्ययान्त का

टिप्पणियाँ

और डाच् प्रत्यय से डाजन्त का बोध होता है। और सूत्र का अर्थ होता है ''ऊरी आदि च्वि प्रत्ययान्त और डाच् प्रत्ययान्त क्रिया योग में गति संज्ञक होते हैं।

''प्रागीश्वरान्निपाता:'' इस सूत्र में ऊर्यादि च्विप्रत्ययान्त और डाच्प्रत्ययान्त की निपात संज्ञा होने पर ''स्वरादिनिपातमव्ययम्'' इस सूत्र से उनकी अव्यय संज्ञा होती है। च्विडाच् प्रत्ययों के कृञ्, वस् के योग में ही विधान से उसके साहचर्य से ऊर्यादि की भी कृञ्, वस् से ही विधान किया गया है।

उदाहरण–ऊर्यादि का उदाहरण है ऊरीकृत्य। ऊरी का कृत्वा से योग होने पर प्रकृत सूत्र गतिसंज्ञा में ''कुगतिप्रादय:'' इससे गति समास में प्रक्रिया कार्य में ऊरी कृत्वा होती है। ऊरी कृत्वा इस अव्यय से सु प्रत्यय का लोप होने पर ''समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वोल्यप्'' इस सूत्र से क्त्वा प्रत्यय के ल्यप् का लोप होने पर तुक का आगम होने पर ऊरी कृत्य रूप बना। च्वि प्रत्ययान्त की गति संज्ञा में शुक्लीकृत्य और डाच् प्रत्ययान्त की गति संज्ञा होने पर पटपटाकृत्थ उदाहरण बना।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''कुगतिप्रादय:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. कुतत्पुरुष समास का एक उदाहरण दीजिये?
3. गति तत्पुरुष समास का एक उदाहरण दीजिये?
4. प्रातितत्पुरुष समास का एक उदाहरण दीजिये?
5. ''ऊर्यादिच्विडाचश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
6. ''ऊर्यादिच्विडाचश्च'' सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

प्रातिसमास विधायक वार्तिकों को नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(4.2.1) ''प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया (वार्तिकम्)

वातिक कार्य:–गति आदि अर्थ में वर्तमान प्रआदि प्रथमान्त समर्थ से सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादय:'' सूत्र में महाभाष्य में पढ़ा गया है। इस सूत्र का नित्य समास विधान से यह वार्तिक भी नित्यसमास का बोध कराती है। वार्तिक में प्रादय: प्रथमा बहुवचनान्त है, गताद्यर्थे सप्तम्येकवचनान्त प्रथमया तृतीयान्त पद है। ''समर्थ: पदविधि:'' इस सूत्र से समर्थ: यह अधिकृत किया गया है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत हैं। ''सुबायन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुपू पद की अनुवृत्ति होती है। प्रथमया का और सुपा का तदन्त विधि में समर्थ पद से सह अन्वय से प्रथमान्त से समर्थ सुबन्त

से आता है। गति आदि अर्थ में प्र आदि शिष्टसम्मत प्रयोग होते हैं। और वार्तिक का अर्थ आता है गति आदि अर्थ में वर्तमान प्र आदि प्रथमान्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का प्राचार्यः उदाहरण है। प्रगतः आचार्यः इस लौकिक विग्रह में आचार्य सु इस अलौकिक विग्रह में उक्त वार्तिक (प्रादयोगताद्यर्थेप्रथमया) में विद्यमान प्र नियात का आचार्य सु को प्रथमान्त सुबन्त के साथ प्रादितत्पुरुषसंज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में प्राचार्यः रूप होता है। इसी प्रकार विरुद्ध पक्ष और विपक्ष इत्यादि इस वार्तिक के उदाहरण है।

(4.2.2) ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' (वार्तिकम्)

वार्तिक कार्य–क्रान्ति आदि अर्थ में विद्यमान अति आदि द्वितीयान्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादयः'' सूत्र महाभाक्य में पढ़ा गया है। इस सूत्र का नित्य समास विधानात् से यह वार्तिक भी नित्य समास का बोध होता है। वार्तिक में अत्यादयः प्रथमा बहुवचनान्त है। क्रान्त आदि अर्थ में सप्तम्येकवचनान्त, द्वितीया और तृतीयान्त पद है। ''समर्थः पदविधिः'' इस सूत्र से समर्थः पद का ग्रहण किया गया है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। ''सुषामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति आती है। द्वितीयया का और सुपा का तदन्तविधि में समर्थ पद से सह अन्वय से द्वितीयान्त समर्थ सुबन्त के साथ आता है। क्रान्त आदि अर्थ में अति आदि का शिष्ट सम्मत प्रयोग हैं। और वार्तिक का अर्थ हैं'' क्रान्त आदि अर्थ में वर्तमान अति आदि द्वितीयान्त समर्थ से सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है अतिमालः। अतिक्रान्तः मालाम् इस लौकिक विग्रह में अतिमाला अम् इस अलौकिक विग्रह में प्रोक्त वार्तिक से क्रान्तायर्थ में विद्यमान अति नियात का माला अम् इस द्वितीयान्त को सुबन्त के साथ प्रादितत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में सु प्रत्यय का लोप होने पर अतिमाला इस स्थिति में ह्रस्व विधान के लिए उपसर्जन संज्ञा विधायक सूत्र प्रवृत्त है।

(4.3) ''एक विभक्ति चापूर्व नियाते''

सूत्रार्थ–विग्रह में नियत विभक्ति को उसकी उपसर्जन संज्ञा होती है किन्तु उसका पूर्व निपात नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है। इस सूत्र में तीन पद हैं (एक विभक्ति, च, अपूर्व निपाते)। एकविभक्ति च अपूर्वनिपाते पदच्छेद है। यहाँ एकविभक्ति यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''च'' अव्यय पद है। अपूर्वनिपाते सप्तमी एकवचनात्त पद है। ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपजर्सनम्'' इस सूत्र से समासे उपसर्जनम् दो पदों की अनुवृत्ति की जा रही है। एका विभक्तिः यस्य तद् एकविभक्ति (एक विभक्ति है जिसकी एकविभक्ति इसमें

टिप्पणियाँ

बहुव्रीहि समास है। नियत का अर्थ विभक्ति हैं। पूर्वश्चासौ निपातः पूर्वनिपातः (पूर्व में है जिसके निपात) इसमें कर्मधारय समास है। न पूर्वनिपातः अपूर्वनिपात तस्मिन् अपूर्व निपाते इति नञसमास नहीं है पूर्व नियात जिसमें अपूर्वनिपाते इसमें नञ्समास है। यहाँ पर (नञः) नञ् का पर्युदासप्रतिवेद्यार्थ है। पूर्व निपात भिन्न कार्य में कर्त्तव्यः यही अर्थ है। समास पद से समास उन्मुख विग्रहवाक्य का ग्रहण किया गया है। और समास में नाम समासोन्मुखविग्रह वाक्य है। पूर्व निपात भिन्न कार्य में कत्तव्य समास में समासोन्मुखविग्रहवाक्य में जिस नियत विभक्तिक को उपसर्जन होता है यही सूत्रता का तात्पर्य है और सूत्रार्थ होता है विग्रह में जो नियत विभक्तिक है उसकी उपसर्जन संज्ञा होती है, किन्तु उसका पूर्वनिपात नहीं होता है।

उदाहरणः–इस सूत्र का उदाहरण है अतिमालः मालाम् इस लौकिक विग्रह में ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इससे प्रादि समास में प्रक्रियाकार्य में सुप् का लोप होने पर अतिमाल स्थिति में प्रस्तुतसूत्र से विग्रह वाक्य में मालाय् का नियतविभक्तिकत्व से माला शब्द की उपसर्जन संज्ञा होती है अतिमाला यहाँ उपसर्जन का ह्रस्व विधाायक सूत्र प्रवृत्त हुआ है।

(4.4.) ''गोस्त्रियोरूपसर्जनस्य''

सूत्रार्थ–उपसर्जन जो गो शब्द की और स्त्री प्रत्ययान्त तदन्त प्रातिपदिक का ह्रस्व होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से ह्रस्व होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। गोस्त्रियोः उपसर्जनस्य यह सूत्र का प्रतिच्छेद है। यहाँ गोस्त्रियोः यह षष्ठीद्विवचनान्त पद है। उपसर्जनस्य यह षष्ठयेकवचनान्त पद है। ''ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य'' इस सूत्र से ह्रस्वः प्रातिपदिकस्य इन दोनों पदों की अनुवृत्ति आती है। गौश्च स्त्रीच गोस्त्रियों (गाय और स्त्री) तयोः गोस्त्रियोः इस पद में इतरेतर द्वन्द है। यहाँ गोप पद से गो शब्द का ग्रहण किया गया है। स्त्री पद से यहाँ ''स्त्रियाम्'' इस अधिकार में विहित टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन् ये प्रत्यय ग्रहण किये गये हैं स्त्री शब्द का नहीं। स्त्री पद से तदन्त विधि में स्त्री प्रत्ययों का ही ग्रहण किया गया है। ''उपसर्जनस्य'' यह गो और स्त्री पद का विशेषण है। गोस्त्रियोंः प्रातिपदिक का विशेषण है। और उपसर्जन का गोस्त्रियोः प्रातिपदिक का तात्पर्य होता है उपसर्जन का गो और स्त्री प्रातिपदिक का तात्पर्य होता है उपसर्जन गो प्रातिपदिक के उपसर्जन के और स्त्री प्रत्ययान्त प्रातिपदिक का। उपसर्जन के गो प्रातिपदिक के और स्त्रीप्रत्ययान्त प्रातिपदिक का ह्रस्व होता है। ''अलोऽन्त्यस्य'' और ''अचश्च'' इन दो परिभाषाओं के बल से प्रातिपदिक अन्त्य अच् के स्थान पर ही ह्रस्व आदेश होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अतिमालः। अतिक्रान्तः मालाम् इस लौकिक विग्रह में ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयमा'' इससे प्रादि समास में प्रक्रियाकार्य में सुप् का लोप होने पर अतिमाला इस स्थिति में विग्रह वाक्य में माला का नियतविभक्तित्व से मालाशब्द की उपजर्सन संज्ञा होती है। इसके बाद प्रकृत सूत्र से माला शब्द के अन्त्य के अच् के आकार के स्थान पर ह्रस्व में अकार होने पर अतिमाल शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सु प्रत्यय का विसर्ग होने पर अतिमालः रूप बना। गौ शब्द के ह्रस्व में उदाहरण चित्रगुः होता है।

पाठगत प्रश्न-2

7. ''प्रादयो गताद्यर्थेप्रथमया'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
8. ''प्रादयो गहाद्यर्थेप्रथमया'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?
9. ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
10. ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?
11. ''एक विभक्ति चापूर्व निपाते'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
12. ''गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

(4.4.1) ''अवादयः कुष्टाद्यर्थे तृतीयया'' (वार्तिकम्)

वार्तिक कार्य–कुष्ट अर्थ में वर्तमान अब आदि का तृतीयान्त सुबन्त के साथ नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्याः–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादयः'' सूत्र में महाभाष्य में पढ़ा गया है। इस सूत्र के नित्य समास के विधान से यह वार्तिक भी नित्य समास का बोध कराती है। वार्तिक मं ''अवादयः'' प्रथमात्त पद है। ''कुष्टाद्यर्थे'' यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। ''तृतीयया'' यह तृतीया वचनान्त पद है। ''समर्थः पदविधिः'' इसस्वे सूत्र से समर्थः पद को अधिकृत किया गया है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। ''तृतीयया'' इसके और सुपा का तदन्तविधि में समर्थपद से सह अन्वय से तृतीयान्त समर्थ से सुबन्त से आता है। कुष्ट आदि अर्थ में अब आदि का शिष्ट सम्मत् प्रयोग है। और वार्तिक का अर्थ आता है–''कुष्ट आदि अर्थ में वर्तमान अवादि तृतीयान्त समर्थ से सुबन्त से नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है अवकोकिलः। अवकुष्टः कोकिलया इस लौकिक विग्रह में अब कोकिला टा इस अलौकिक निग्रह में प्रोक्त वार्तिक से कुष्ट आदि अर्थ में विद्यमान अब इस निपात कोकिजा टा इस सुबन्त के साथ तत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में सुप् का लोप होने पर अवकोकिला इस स्थिति में कोकिला का ''एक विभक्ति चा पूर्व निपाते'' इससे उपसर्जन संज्ञा होने पर ''गोस्त्रियोरुप सर्जनस्य'' इससे ह्रस्व होने पर प्रक्रियाकार्य में अवकोकिलः रूप होता है। सङ्गत अर्थ से समान अर्थ इत्यादि वार्तिक का उदाहरण है।

(4.4.2) ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'' (वार्तिक)

वार्तिक अर्थः–ग्लानि आदि अर्थ में वर्तमान परि आदि-चतुर्थ्यन्त समर्थ से सुबन्त को नित्य

समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादय:'' इस सूत्र में महाभाज्य में पढ़ी गयी है। इस सूत्र के नित्य समास विधान से यह वार्तिक भी नित्य समास को बोध कराती है। वार्तिक में पर्यादय: यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है, ग्लानि आदि अर्थ में ग्लानाद्यर्थे सप्तम्येकवचनान्त पद है। चतुर्थ्या यह तृतीयान्त पद है। ''समर्थ: पदविधि:'' इस सूत्र से समर्थ: पद को अधिकृत किया गया है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत हैं। ''सुबायजिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप पद की अनुवृत्ति होती है। ''चतुर्थ्या'' इसका और सुपा का तदन्तविधि में समर्थ पद के साथ अन्वय से चतुर्थ्यन्त समर्थ से सुबन्त द्वारा आता है। ग्लानि आदि अर्थ में पर्यादि शिष्ट सम्मत प्रयोग हैं। यही वार्तिक का अर्थ आता है। ''ग्लानि अर्थ में वर्तमान परि आदि चतुर्थ्यन्त से समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।''

उदाहरण–इस वार्तिक का पर्यध्ययन: इसका उदाहरण है। अध्ययनाय परिग्लान: इस लौकिक विग्रह में परि अध्ययन ङे इस अलौकिक विग्रह में प्रोक्त वार्तिक से ग्लानि आदि अर्थ में विद्यमान परि इस अध्ययन ङे इससे चतुर्थ्यन्त सुबन्त के साथ तत्पुरुषसंज्ञा होता है। इसके बाद समास में सुप् का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में पर्यध्ययन: रूप बना। उद्युक्त: संग्रामाय उत्संग्राम: इत्यादि यहाँ उदाहरण है।

(4.4.3.) ''निरादय: क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या:'' (वार्तिकम्)

वार्तिक कार्य–क्रान्त आदि अर्थ में वर्तमान निर् आदि पञ्चम्यत्त समर्थ से सुबन्त को नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक ''कुगतिप्रादय:'' सूत्र को महाभाष्य में पढ़ा गया है। इस सूत्र के नित्यसमास विधान से इस वार्तिक से नित्य समास का बोध होता है। वार्तिक में निरादय: पद प्रथमा बहुवचनान्त पद है। क्रान्ताद्यर्थे सप्तम्येकवचनान्त पद है। और पञ्चम्या तृतीया एकवचनान्त पद है। ''समर्थ: पदविधि:'' इस सूत्र में समर्थ: पद को अधिकृत किया जाता है। ''प्राक्कडारात्समास:'' ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत (अधिकार) सूत्र है। ''सुषामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। ''पञ्चम्या'' का और सुपा का तदन्त विधि में समर्थ पद के साथ अन्वय से पञ्चम्यन्त समर्थ से सुबन्त से आता है। क्रान्त आदि अर्थ में निर् आदि का शिष्ट सम्मत प्रयोग होता है। और वार्तिक आता है–''क्रान्त आदि अर्थ में वर्तमान निर आदि पञ्चम्यन्त समर्थ से सुबन्त से नित्य समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है निष्कौशाम्बि:। निष्क्रान्त: कौशाम्ब्या इस लौकिक विग्रह में निर् कौशाम्बी ङसि इस अलौकिक विग्रह में प्रोक्त वार्तिक से क्रान्ताद्यर्थ में विद्यमान निर् कौशाम्बी ङस् इस समर्थ सुबन्त से तत्पुरुषसमास संज्ञक होता है। इसके बाद निर् का पूर्वनिपात होते प्रातिपदिकत्व से और सु का लोप होने से प्रक्रिया कार्य में निर् कौशाम्बी होता है। तब ''एक विभक्ति-चापूर्व निपाते'' उससे कौशाम्बी का उपसर्जन संज्ञा में ह्रस्व होने पर

निष्कौशाम्बी शब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य होने पर निष्कौशाम्बिः रूप बना। निष्क्रान्तः वाशणस्थाः निर्वाणसिः इत्यादि उदाहरण है।

''उपपदमतिङ्'' इससे वक्ष्यमात्र सूत्र से उपपद समास से प्राग् उपपद किम् वर्णन करने के लिए सूत्र आरम्भ हुआ है।

(4.5) ''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्''

सूत्रार्थ–सप्तम्यन्त पद में ''कर्मव्यण्'' इत्यादि में वाच्यन्त द्वारा स्थित जो कुञ्ज आदि तथा उसके वाचक पद को उपपद संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से उपपद संज्ञा होती है। इस सूत्र में तीन पद हैं। तत्र उपपदं सप्तमीस्यम् पदच्छेद है। यह अव्ययपद है। उपपदं सप्तमीस्थम् ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त पद हैं। सप्तम्यां तिष्ठति इति सप्तमीस्थम्। इस सूत्र से पूर्व ''धातोः'' अधिकार प्रवृत्त होता है। और वह अधिकार तृतीयाध्याय समाप्ति तक है। और तृतीय अध्याय समाप्ति तक जो सूत्रों से जो प्रत्यय विहित हैं उनमें धातु ही परम होते हैं। प्रस्तुत सूत्र से धातु अधिकार के अन्तर्गत सूत्रों द्वारा जहाँ-जहाँ सप्तम्यन्त पद प्रयुक्त हैं वहाँ उस बोध्य को जो वाचक पद की उपपद संज्ञा होती है। अत एव सूत्र का अर्थ होता है–सप्तम्यन्त में पद में कर्मण्यण् इत्यादि में वाच्यत्व से स्थित कुञ्ज आदि उस वाचक को उपपद संज्ञा होती है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है कुञ्जकारः। (कुम्भ बनाता है) कुम्भं करोति इय अर्थ में ''कर्मण्यण्'' से अण् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में कर्मणि यह सप्तम्यन्त पद है। ''कर्मणि'' इससे बोध्य का कर्मीभूत का कुम्भवाचक जो कुम्भपद है उसकी ही उपपद संज्ञा प्रस्तुत सूत्र से होती है।

पाठगत प्रश्न-3

13. ''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

14. ''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?

15. ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

16. ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?

17. ''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

18. ''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'' इस वार्तिक का एक उदाहरण दीजिये?

19. ''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

20. ''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' इस का एक उदाहरण दीजिये?

टिप्पणियाँ

(4.6) ''उपपदमतिङ्''

सूत्रार्थ–उपपद सुबन्त को समर्थ के साथ नित्य समास होता है, और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है और यह समास अतिङन्त है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से उपपद तत्पुरुष समास होता है। पद द्वयात्मक इस सूत्र में उपपदम् अतिङ् ये दो पद प्रथमा एकवचनात हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् की अनुवृत्ति होती है। प्रथमान्त समर्थग्रहण से तृतीयान्त से विपरिणाम होता है। उससे समर्थ होता है। अविद्यमान है तिङ् जिसमें वह है अतिङ् यह बहुव्रीहि समास है। अतिङन्तम् यह तात्पर्य है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''तत्पुरुष'' ये दो सूत्र अधिकृत सूत्र हैं। ''समर्थ: पदविधि :'' इससे समर्थ पद अधिकृत किया जाता है। ''नित्यं क्रीडाजीविकयो:'' इस सूत्र से नित्य की अनुवृत्ति होती है। सुप् की उपपद के विशेषण से तदत्तविधि में सुबन्त उपपद प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ आता है–उपपद सुबन्त को समर्थ से समर्थ के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है। और यह समास अतिङन्त: है।

सूत्र में अतिङ् पद के ग्रहण के भाव में माभवान् भूत इस प्रयोग उपलब्ध नहीं होता है। तथाहि ''माङिलुङ्'' इससे माङ्योग में भू धातु से लुङ् रूप होता है। सूत्र में मादि इससे उपपद समास लेना चाहिए। तदा मध्ये भवान् इस प्रयोग स्वीकार से समास के बीच में प्रयोग उपलब्ध नहीं होता है और इस सूत्र का प्रयोजन सूत्र में विद्यमान है।

उदाहरण–इस सूत्र का एक उदाहरण है कुम्भकार:। कुम्भं करोति इति कुम्भकार:। (जो कुम्भ बनाने वाले है कुम्हार)। यहाँ कुम्भ करोति इस न विग्रह वाक्य को किन्तु कुम्भकार शब्द की ही अर्थ है। धातु प्रत्यय प्रकरण में ''कर्मण्यष्'' यहाँ कर्म में सप्तम्यन्त पद से कुम्भबोध से कुम्भम् यहाँ उपपद है। इसके बाद कुम्भ उपपद को ''गतिकारक उपपदों को कृत् आदि के साथ समास वचन प्राक् सुबन्त की उत्पत्ति होती है। इस परिभाषा परिवकृत कारशब्द से कृदन्त समर्थ के साथ प्रकृक सूत्रेण से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद कुम्भशब्द के कर्मत्व से कारशब्द से कृदन्त योग में ''कर्तृकर्मणो: कृति'' इससे ङस् प्रत्यय होता है। इसके बाद कुम्भङस् कार इस स्थिति में समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर निष्पन्न कुम्भकारशब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में कुम्भकार: रूप होता है। यहाँ प्रातिपदिक कारशब्द के साथ समास होने पर लौकिक विग्रह वाक्य असम्भव है।

(4.6.1) ''गतिकारकोपपदानां कहभि: सह समासवचनं प्राक् सुबुन्पत्ते:'' (परिभाषा)

परिभाषार्थ–गति संज्ञक के कारक संज्ञक के और उपपद संबक के कृदन्त के साथ समास कृदन्त से सुबुपत्ति पहले (प्राक्) होती है।

परिभाषा व्याख्या–''उपपरमतिङ्'' इस सूत्र में सहसुपा इस सूत्र से सुपा की अनुवृत्ति नहीं की जाती है। तब तिङ्गत्त से उपपद के साथ समास का प्रसङ्ग है, उसके निवारण के लिए सूत्र

में अत्तिङ् यह प्रदत्त है। और सूत्र में सुप् की उत्पत्ति का पहले ही कृदन्त के साथ उपपद का समास विहित है। सुप पद का सूत्र में अनुवृत्ति यदि होती है तो तिङन्त प्रतिषेध के लिए अतिङ् पद नहीं देना चाहिए। तथापि सुपा की अनुवृत्ति कैसे। किस प्रकार नहीं होती है प्रश्न होने पर सुप् उत्पत्ति का पूर्व समास में प्रमाणं दिखाता है'' (गतिकारकोपपदानां कृदभिः सह समासवचने प्राक् सुबुन्पत्तेः'') गति कारक उपपदों की कृदन्त के साथ समास वचन को पहले सुप् की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण–इस परिभाषा का उदाहरण है व्याघ्री। विशेषण से आ समन्त से जिघ्रति विग्रह में आङ् उपपद में घ्रा धातु के ''आतश्चोपसर्गे'' इससे क प्रत्यय होने पर ''आतोलोप प्रति च'' इससे धातु के आकार का लोप होने पर अ ध् अ स्थिति में सर्वसंयोग होने पर आ घ्र होता है। तब घ्र इससे कृदन्त के साथ आ उपपद की सुप् की उत्पत्ति के पूर्व ''उपपदमतिङ्'' इससे उपपद समास में आघ्र पद निष्पन्न होता है। इसके बाद ''गतिश्च'' सूत्र से गति संज्ञक वि के उपसर्ग के आंघ्र के साथ ''कुगतिप्रादयः'' इससे नित्य प्राति तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद वि आघ्र इस स्थिति में ''इको यणचि'' इससे वि के इकार की अच् होने पर आकार पर यण यकार होने पर सर्वसंयोग होने पर व्याघ्र शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सुप् की उत्पत्ति के पूर्व में ही ङीष् प्रत्यय होने पर व्याघ्री रूप बना।

कारक का उदाहरण है अश्वक्रीती। अश्वेन क्रीता इस लौकिक विग्रह में अश्व टा क्रीत इस अलौकिक विग्रह में ''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' इस सूत्र से क्रीत इस कृदन्त के साथ करणकारक के अश्व टा का समास होने पर प्रक्रियाकार्य निष्पन्न होने पर अश्वक्रीत शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में ''क्रीतात्करणपूर्वात्'' इस ङीष् प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में अश्वक्रीती रूप बना है।

(4.7) ''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याऽव्ययादेः''

सूत्रार्थ–संख्या अव्यय आदि का अङ्गुल्यन्त तत्पुरुष के समासान्त तद्धित संज्ञक को अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। त्रयात्मक इस सूत्र में तत्पुरुषस्य, अङ्गुलेः, संख्याव्ययादेः, ये तीनों पद षष्ठयेकवचनान्त हैं। ''अच्प्रत्यन्नवपूर्वात् समालोम्नः'' इससे अच् प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ताः'', ''तद्धिताः'', ''प्रत्ययः'', ''परश्च'' ये सूत्र अधिकृत (अधिकार) सूत्र हैं। ''अङगुलेः'' यह ''तत्पुरुष का विशेषण है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' इस सूत्र से तदन्त विधि में अङ्गुल्यन्तस्य तत्पुरुषस्य पद होता है। ''संख्याऽव्ययादेः'' इसका भी तत्पुरुष के अन्यत्र अन्तय होता है। (संख्या च अव्ययं च संख्या व्ययम्) (संख्या और अव्यय)। संख्या और अव्यय आदि है जिसके वह पद है संख्याव्ययादिः उसका भी द्वन्दगर्भबहुव्रीहि समास होता है। और सूत्रार्थ आता है, ''संख्याऽव्ययादि अङ्गुलि अन्त के तत्पुरुष के समासान्त को तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–संख्यापूर्व अङ्गुलि अन्त के समासान्त तत्पुरुष के अच् का उदाहरण है द्व्यङ्गुल

दार्वादिकम्। द्वे अङ्गु ली प्रमाणस्य इस लौकिक विग्रह में द्वि औ अङ्गुलि औ इस अलौकिक विग्रह में तद्धित अर्थ में मात्र अचि की विवक्षा में ''तद्वितार्थोन्तरपद समाहारे च'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद संख्यावाचक द्वि औ का उपसर्जन से पूर्वनिपात होता है। इस समास के ''तत्पुरुष:'' इससे तत्पुरुषत्व ''संख्यापूर्वोद्विगु:'' इस सूत्र से द्विगुत्वम् होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिक से सुप् का लोप होने पर द्वि अङ्गुलि स्थिति में यण् होने पर द्व्यङ्गुलि: स्थिति होने पर प्रस्तुत सूत्र से संख्यापूर्वस्य तत्पुरुष के समासान्त का अच् प्रत्यय होता है। अच् के चकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संग होने पर ''तस्यलोप:'' इससे लोप होने पर द्व्यङ्गुलि अ होने पर ''यचिञम्'' इससे द्व्यङ्गुलि पद की ञ संज्ञा होने पर ''यस्थेति च'' इससे इकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न द्व्यङ्गुल शब्द से सु प्रत्यय होने पर द्व्यङ्गुलम् रूप निष्पन्न होता है। अव्ययपूर्व अङ्गुल्यन्त के समासान्त का उदाहरण है निर्गतम् अङ्गुलिभ्य: निरङ्गुलम्।

पाठगत प्रश्न-4

21. ''उपपदमतिङ्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
22. ''उपपदमतिङ्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?
23. ''गतिकारकोपपदानां कृञ्दि: सह समासवचनं प्राक् सुबुन्पत्ते:'' इस परिभाषा का अर्थ क्या है।
24. सुप् की उत्पत्ति का प्राक् कृदन्त के साथ गति समास में क्या उदाहरण है?
25. ''तत्पुरुषस्याङ्गुले: संख्याऽव्ययादे:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
26. ''संख्यापूर्वस्य तत्पुरुषस्य का समासान्त विधाने उदाहरण क्या है?
27. ''अव्ययपूर्वपद का तत्पुरुष का समासान्त विधान में उदाहरण क्या है?

(4.8) ''अह: सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रे:''

सूत्रार्थ–अहन्, सर्व, एकदेश, संख्याओं, पुण्य शब्दों से और संख्या अव्यय आदि से परे जो रात्रिशब्द के अन्त के तत्पुरुष समासान्त तद्धितसंज्ञक का अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में ''अह: सर्वैकदेशसंख्यातपुण्यात'' यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। और यह अव्ययपद है। ''रात्रे:'' यह षष्ठयेकवचनान्त पद है। ''तत्पुरुषस्याङ्गुले: संख्याऽव्ययादे:'' इस सूत्र से तत्पुरुषपद की अनुवृत्ति होती है। ''अच्प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोभ्न:'' इससे अच् पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ता:'', ''तद्धिता:'', ''प्रव्यय:'', ''परश्च'' ये अधिकृत सूत्र हैं। चकार पूर्व सूत्र से ''संख्याव्ययादे:'' से यह पद ग्रहण किया जाता है। अदृश्च, सर्वश्च, एकदेशश्च, संख्यातश्च, पुण्यश्च, अह:सर्वैकदेशसंख्यातपुण्यम् इससे समाहार द्वन्द होता है। एकदेश शब्द से अवयववाचक

पूर्व, पर, अधर, उत्तर आदि शब्दों का ग्रहण होता है। और सूत्र का अर्थ आता है–''अहन्, सर्व, एकदेश, संरथात, पुण्य शब्दों से और संख्या अन्ययादि परे जो राजिशब्द का तत्पुरुष समासान्त का तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

इस सूत्र का व्याख्यान अवसर पर ''अहर्ग्रहणंद्वन्द्वार्थम्'' यह वार्तिक पढ़ा गया है। अहन् पूर्व रात्रि अन्त द्वन्द के समासान्त अच् प्रत्यय उससे होता है।

उदाहरण–अहन् पूर्व रात्रि अन्त समासान्त अच् प्रत्यय का उदाहरण है–अहोरात्रः। अहश्च, रात्रिश्च, अनयोः समाहारः इस लौकिक विग्रह में अहन् सु रात्रि सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद ''अल्पाध्तरम्'' इस सूत्र से अल्प अच् से सहित अहन् सु इसका पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकत्व से सु का लोप होने पर अहन् रात्रि स्थिति होने पर ''अहग्रर्हणं द्वन्दार्थम्'' इस वार्तिक परिष्कृत प्रकृत सूत्र से अहन् पूर्वपद का रात्रि अन्त द्वन्द के समासान्त अच् प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप होने पर अहो रात्रि अ यह होने पर ''यचियम्'' इस सूत्र से अहोरात्रि की असंज्ञा होने पर ''यस्येति च'' इस सूत्र से इकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर अहोरात्र शब्द से सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में अहोरात्रः शब्द निष्पन्न होता है।

सर्व पूर्वपद का रात्रि अन्त तत्पुरुष का समासान्त का उदाहरण है सर्वरात्रः। सर्वाचासौ रात्रिश्च इस लौकिक विग्रह में सर्वा सु रात्रि सु इस अलौकिक विग्रह में तत्पुरुष समास होने पर सु प्रत्यय का लोप होने पर प्रक्रियाकार्य में **सर्वरात्रि** इस स्थिति में सूत्र से सर्वपूर्व पद का सर्वरात्रः शब्द निष्पन्न होता है।

एक देश पूर्वपद का समासान्त उदाहरण–पूर्वं रात्रेः पूर्वरात्रः। संख्यात पूर्वपद के समासान्त का उदाहरण है संख्यातरात्रः। पुण्यपूर्वपद का समासान्त का उदाहरण है पुण्यरात्रः।

(4.7) ''रात्राछाऽहाः पुंसि'' (2.4.27)

सूत्रार्थ–रात्रि, अहन्, अन्त वाले द्वन्दतत्पुरुषों में पुल्लिंग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पुल्लिंग होता है। अहो रात्र शब्द के ''परवल्लिङ्गंद्वन्दतत्पुरुषयोः'' रात्रि शब्द के स्त्रीलिङ्ग से स्त्रीलिङ्गता प्राप्त होती है, उसको बाधकर ''स नपुंसकम्'' इस सूत्र से नपुंसकत्व की आपत्ति है। और सर्वरात्रशब्द की स्त्रीलिङ्गतापत्ति है। अहोरात्र और सर्वरात्र शब्दों के क्या लिङ्ग होना चाहिए, इसके वर्णन के लिए यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है।

द्विपदात्मक इस सूत्र में **रात्राछाहाः** यह प्रथमा बहुवचनान्त पा है और **पुंसि** यह सप्तम्येकवचनान्त यह है। ''परवाल्लिङ्ग द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र से ''द्वन्दतत्पुरुषयोः'' पद की अनुवृत्ति होती है। और उसका विभक्तिविपरिणाम से **द्वन्दतत्पुरुषौ** रूप होता है। रात्रश्च, अह्नश्च, अदृश्य **रात्राह्नाहाः** यहाँ इतरेतरद्वन्द समास है। द्वन्दतत्पुरुषौ इसका विशेषण से **रात्राह्नाहाः** का तदन्तविधि में रात्र, अहन् अन्त में **द्वन्दतत्पुरुष** अर्थ है और ''रात्र, अहन् में अन्त वाले शब्दों को द्वन्दतत्पुरुष में पुल्लिंग होता है।

टिप्पणियाँ

इस सूत्र व्याख्यान में ''संख्यापूर्वा रात्रिः'' लिङ्गानुशासन के नपुंसक अधिकार में यह सूत्र अवलम्ब होकर एक वचन प्राप्त होता है ''संख्यापूर्वं रात्रं क्लीवम्''। इस का अर्थ है संख्या पूर्वपद का और रात्रि अन्त वाले समास का नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग होता है।

उदाहरण–अदृश्य रात्रिश्च इस समास में निष्पन्न अहोरात्र शब्द का ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसकत्व को बांधकर प्रकृतसूत्र से पुल्लिग विधान से सु प्रत्यय के प्रक्रिया कार्य में अहोरात्रः रूप होता है। इसी प्रकार सर्वरात्र शब्द के सु प्रत्यय होने पर सर्वरात्रः रूप होता है।

''संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्'' इस वचन के अनुसार द्वयोः रात्र्योः समाहारः (दो रातों का समाहार) इस विग्रह में निष्पन्न द्विरात्रशब्द का नपुंसक में प्रयोग होता है।

उसी प्रकार त्रिरात्रम्, नवरात्रम् इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

(4.10) ''राजाहः सखिभ्यष्टच्''

सूत्रार्थ–राजा, अहन्, सखि शब्दान्त तत्पुरुष से समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक सूत्र में राजाहः सखिभ्यः टच् यह पदच्छेद है। राजाहः सखिभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त यह है। और टच् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। राजा च अदृश्च सखा च राजाहः सखायः, तेभ्य इतरेतरद्वन्द। राजा और अहन् (दिन) और सखा इसमें इतरेतरद्वन्द समास है। ''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः'' इस सूत्र से तत्पुरुष पद की अनुवृत्ति होती है। उसके विभक्ति विपरिणाम से पञ्चमी एकवचन में तत्पुरुषात् पद होता है। उसके विशेषण से ''राजाहः सखिभ्यः'' की तदन्तविधि में राजाहःसखिशब्दान्तात् तत्पुरुषाद् होता है। ''समासान्ताः'', ''तद्धिताः'', ये हो सूत्र अधिकृत हैं। और सूत्र का अर्थ होता है ''राजा, अहन्, सखि, शब्दान्त तत्पुरुष से समासान्त तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है परमराजः। परमश्चासौ राजा च इस लौकिक विग्रह में परम सु राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे तत्पुरुष समास होने पर प्रक्रिया कार्य में परमराजन् शब्द निष्पन्न होता है। इससे प्रकृत सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय होने पर परमराजन् टच् स्थिति में टकार का ''चुटू'' इस सूत्र से चकार का और ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर परमराजन् अ होता है। इसके बाद परमराजन् की असंज्ञा होने पर ''नस्तहिते'' सूत्र से टि का अन् का लोप होने पर परमराज् अ स्थिति में सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न परमराज शब्द के परवल्लिङ्गत्व से पुल्लिंग में सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में परमराजः रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-5

28. ''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याश्च रात्रेः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

29. ''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याश्च रात्रेः'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

30. ''रात्राह्नाहाः पुंसि'' इस सूत्र का क्या अर्थ है।

31. ''रात्राह्नाहाः पुंसि'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

32. ''संख्यापूर्वं रात्रं क्लीवम्'' इस वचन का क्या अर्थ है? और उदाहरण क्या है?

33. ''राजाहसखिञ्यष्टच्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

34. ''राजाहसखिञ्यष्टच्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

(4.11) ''आन्यहतः समानाधिकरण जातीययोः''

सूत्रार्थ–समान अधिकरण में उत्तरपद में और जातीय परे महत् के अकारे को आकर आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से महत् के ञकार को आकारादेश होता है। त्रि पदात्मक इस सूत्र में आत् महतः समानाधिकरण जातीययोः पदच्छेद है। इस सूत्र में आत् प्रथमा एकवचनान्त पद है। महतः पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''समानाधिकरणजातीययोः'' यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। समानाधिकरणं च जातीयश्च समानाधिकरणजातीयौ तयोः समानाधि करणजातीययोः यहाँ इतरेतर द्वन्द है। ''अनुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपद में पद की अनुवृत्ति होती है। ''उत्तरपदे'' का अन्वय का समानाधिकरण इस अंश से ही सम्भव होता है ''प्रकारवचनेञ्जातीयर्'' इससे विहित जातीय के प्रत्ययत्व से उत्तर पदत्व के अभाव से। और सूत्रार्थ है–''समानाधिकरण में उत्तर पद में और जातीय परे महत् के आकार आदेश होता है।''

''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से महत् के अन्त्य तकार के स्थान पर ही आकार आदेश होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है महाराजः। महान् च असौ राजा च इति लौकिक विग्रह में महत् सु राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास में प्रक्रिया कार्य होने पर महत् राजन् सिद्ध होता है। इसके बाद ''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से परिष्कृत प्रकृतसूत्र से उत्तरपद पर महत् के तकार का आकारादेश होने पर यह आ राजन् होने पर सवर्णदीर्घ होने पर महाराजन् निष्पन्न होता है। इसके बाद समासान्त में टच् प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य सम्पन्न होने पर महाराजः रूप सिद्ध होता है।

जाति इय पर में उदाहरण है महाजातीयः। महत्त्व विशिष्ट इस अर्थ में महत् से ''प्रकारवचने जातीयर्'' इससे जातीयर् प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप में महत् जातीय होने पर प्रकृत सूत्र से जातीयरि पर होने पर तकार का आकर में सवर्ण दीर्घ होने पर प्रक्रिया कार्य में महाजातीयः रूप होता है।

(4.12) ''द्रव्यष्टनः संख्यायाम बहुव्रीह्यशीत्योः''

सूत्रार्थ–द्वि अण्टन् इन दो शब्दों के संख्यावाचक उत्तर पद में आकार को अन्तादेश होता है,

टिप्पणियाँ

किन्तु बहुव्रीही समास में और अशीति उत्तरयद पर में होने पर नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आकर को अन्तादेश होता है। त्रयपदात्मक इस सूत्र में द्व्यष्टज: संज्ञायाम् अवहुव्रीह्यशीत्यो:'' यह पदच्छेद है। इस सूत्र में दृष्यष्टन: यह षष्ठी एकवचन अत्त वाला पद है। संख्यायाम् यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। और अबहुब्रीह्यशीत्यो: यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। द्वि च अष्ट च द्व्यष्ट, तस्य द्रव्यष्टन: यहाँ समाहार द्वन्द है। बहुव्रीहि अशीतिश्च बहुवीह्यशीती, तयो: बहुव्रीह्यशीत्यो: यह इतरेतरद्वन्द। न बहुव्रीह्यशीत्यो अबहुव्रीह्यशीत्यो: यहाँ नञ्तत्पुरुष समास है। ''आन्महत: समानाधिकरण जातीययो:'' इस सूत्र से आत् की अनुवृत्ति होती है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपद में पदर की अनुवृत्ति होती है। उत्तरपद में इसका अन्वय संख्याम् इससे और अशीत्याम् से सम्भव होती है। बहुव्रीहौ इस पद के साथ उसकी अन्वय नहीं होती है। और सूत्र का अर्थ आता है–''द्वि अष्टन् इन दोनों शब्दों के संख्यावाचक उत्तरपद पर में होने पर आकार को अन्तादेश होता है। किन्तु बहुव्रीही समास में और अशीति उत्तरपद में पर रहने पर नहीं होता है। ''अलोडन्त्यस्य'' इस परिभाषा से अन्त्य के स्थान पर ही आकार आदेश होता है।

उदाहरण–इस सूत्र के द्विशब्द का उदाहरण है तावत् द्वादश। द्वौ च दश च इस लौकिक विग्रह में द्वि औ दशन् जस् इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से द्वन्द समास में प्रक्रियाकार्य में सुप् का लोप होने पर द्वि दशन् स्थित प्रकृतसूत्र से संख्यावाचक दशन् उत्तरपद में पर में होने पर द्वि शब्द को आकार को अत्तादेश होने पर द्वादशन् निष्पन्न होता है। इसके बाद जस् प्रत्यय प्रक्रिया कार्य होने पर द्वादश रूप होता है। उसी प्रकार द्वि शब्द का द्वाविंशति: और **द्वात्रिंशत्** इत्यादि उदाहरण है। उसी प्रकार अष्टन् शब्द का अष्टादश उदाहरण होता है।

(4.13) ''त्रेस्त्रय:''

सूत्रार्थ–त्रिशब्द का संख्यावाचक उत्तरपद परे जयस् आदेश होता है किन्तु बहुव्रीहिसमास में और अशीति उत्तर पद परे नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से त्रिशब्द का जयस् आदेश होता है। द्वि पदात्मक इस सूत्र में त्रि शब्द का यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। ''द्व्यष्टन: संज्ञायामबहुव्रीह्यशीत्यो:'' इस सूत्र से संख्यायाम् पद को और अबहुव्रीह्यशीत्यो: पर की अनुवृत्ति होती है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपद में अनुवृत्ति होती है। उत्तरपद में अन्वय संख्यायाम् से और अशीत्याम् से सम्भव होता है। बहुव्रीहौ'' के साथ उसका अन्वय नहीं होता है।

सूत्रार्थ आता है कि ''त्रिशब्द का संख्यावाचक उत्तरपद पर में होने पर त्रयस् आदेश होता है किन्तु बहुव्रीहि समास में और अशीति उत्तरपद पर में होने पर नहीं होता है। ''अनेकाल्शित्सर्वस्य'' इस परिभाषा से त्रिशब्द के सम्पूर्ण स्थान पर ही त्रयस् आदेश होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र के द्विशब्द का उदाहरण है तावत् त्रयोदय। त्रय: च दश च इस लौकिक विग्रह में त्रि जस् दशन् जस् इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से द्वन्द समास में प्रक्रिया कार्य में सुप् का लोप होने पर त्रिदशन् स्थित प्रकृत सूत्र से संख्यावाचक दशन् उत्तरपद

होने पर त्रिशब्द के सर्वके स्थान पर त्रयस् आदेश होने पर त्रयस् दशन् निष्पन्न होता है। इसके बाद सकार का रुत्व होने पर ''हशि च'' इससे रकार का उकार में गुण होने पर सर्व संयोग से त्रियोदशन् निष्पन्न होता है। इसके बाद जस् प्रक्रियाकार्य में त्रयोदश रूप बना। इसी प्रकार त्रिशब्द का त्रियोविंशतिः, त्रयस्त्रिंशत् उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-6

35. ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः इस सूत्र क्या अर्थ है?

36. महाराजः यहाँ महत के आकार को अन्तादेश किस सूत्र से होता है?

37. जातीपरि पर होने पर महत के आकार को अन्तादेश का उदाहरण क्या है?

38. ''द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

39. द्वादश यहाँ पर द्विशब्द के आकार को अन्तादेश कैसे (क्यों) हुआ?

40. ''त्रेस्त्रयः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

41. जयस् यह आदेश सम्पूर्ण त्रिशब्द के स्थान पर कैसे होता है?

(4.14) ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः''

सूत्रार्थ–द्वन्द और तत्पुरुष के परपद का ही लिङ्ग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से द्वन्द में और तत्पुरुष में परवत् (पहले वाले के समान) लिङ्ग होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में परवत् यह अव्यय पद है। लिङ्गम् यह प्रथमा एकवचनात पद है। द्वन्दतत्पुरुषोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद है। पर शब्द षष्ठयन्त से ''तत्र तस्यैव'' इससे वति प्रत्यय होने पर परवत् रूप बना है। पर का तात्पर्य पहले वाले पद के समान ही है। द्वन्दः च तत्पुरुषः च द्वन्दतत्पुरुषौ तयोः द्वन्दतत्पुरुषयोः यहाँ इतरेतरद्वन्दसमास है। और सूत्रार्थ आता है–''द्वन्द और तत्पुरुष में परपद (पूर्वपद) का ही लिङ्ग होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का द्वन्द समास में उदाहरण है–तावत् कुक्कुटमयूर्यौ। कुक्कुटः च मयूरी च इस लौकिक विग्रह में कुक्कुट सु मयूरी सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होने पर प्रक्रिया कार्य में कुक्कुटमयूरी शब्द निष्पन्न होता है। कुक्कुटमयूरी यहाँ मयूरी का स्त्रीलिङ्गत्व से प्रकृतसूत्र से निष्पन्न द्वन्द्व समास के कुक्कुटमयूरी शब्द का स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा द्विवचन में कुकुटमयूर्यौ रूप निष्पन्न होता है।

और तत्पुरुष में उदाहरण है अर्धपिप्पली। अर्धं पिप्पल्याः इस लौकिक विग्रह में अर्ध सु पिप्पली ङस् इस अलौकिक विग्रह में 'अर्धं नपुंसकम्'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास में प्रक्रिया कार्य में अर्धपिप्पली शब्द निष्पन्न होता है।

टिप्पणियाँ

अर्धपिप्पली यहाँ पर पिप्पली का स्त्रीलिङ्गत्व प्रकृत सूत्र से अर्धपिप्पली का सम्पूर्ण स्त्रीलिङगत्व के विधान से तथा इसके बाद प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय होने पर अर्धपिप्पली रूप बना।

(4.14.1) ''द्विगुप्राप्तापन्नालम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्थ–द्विगु समास में प्राप्त, आपन्न, अलम् पद में तत्पुरुष समास होने पर और गतिसमास होने पर परवत् लिङ्गता (पहलेपद के अनुरूप लिङ्ग का प्रतिषेध होता है।)

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक को ''परवल्लिङगं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र के वर्णन अवसर पर महाभाष्य में पढ़ा गया है। अतः यह सम्प्रात सूत्र का परवत् लिङ्गत्व का ही निषेधात्मक वार्तिक है। तीन (त्रि) स्थानों पर परवत् लिङ्गता का निषेध है। यह वार्तिक।

(क) द्विगु समास में परवल्लिङक्ता का निषेध होता है।

(ख) प्राप्तपन्न (प्राप्त और आपत्र) पूर्वपद की तत्पुरुष के परवत् लिङ्गता निषेध होती है।

(ग) गति समास में परवत लिङ्गता निषेध होती है।

अलम् पूर्व पद का तत्पुरुष समास का विधायक सूत्र का कोई भी सूत्र प्राप्त नहीं होता है। तथापि इस वार्तिक में उसके उल्लेख से ही अलम् पूर्वक तत्पुरुष होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का द्विगु समास में उदाहरण है पञ्चकपालः पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् सुप् कपाल सुप् इस अलौकिक विग्रह में ''संस्कृतंभक्षाः'' इससे तद्धित विवक्षा में ''तद्धितार्थोन्तरपद समाहारे च'' इस सूत्र से द्विगु समास में संख्यावाचक का पूर्वनिपात होने पर, सुप् का लोप होने पर पञ्चन् के नकार का लोप होने पर पञ्चकपाल सिद्ध होता है।

उससे सप्तमी बहुवचन में सुप् का लोप होने पर पञ्चकपाल सुप् इस सप्तम्यन्त से ''संस्कृतं भक्षाः'' इससे तद्धित में अण् प्रत्यय होने पर ''द्विगोर्लुगनपत्ये'' इस सूत्र से अण् प्रत्यय का लोप होने ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् का लोप होने पर पञ्चकपाल तद्धितान्त शब्द निष्पन्न होता है। उसके प्रातिपदिकत्व होने पर इसके बाद विभक्ति उपत्ति से पहले लिङ्गनिर्णय करना चाहिए। जब ''परवल्लिङ्कग द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र से कपाल शब्द का ही नपुंसकत्व प्राप्त होने पर प्रस्तुत वार्तिक से द्विगुसमास में परवत् लिङ्गता का निषेध होने पर पुरोडाशः इस विशेष्य के अनुसार पुंसत्व होने पर सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में पञ्चकपालः रूप सिद्ध होता है।

प्राप्त, आपन्न, पूर्वकों के उदाहरण हैं–प्राप्तजीविकः, जनः, आपन्नजीविकः जनः, अलङ्कुमारिः आदि और गतिसमास में उदाहरण है निष्कौशाम्बिः।

(4.15) ''प्राप्तापन्नैः च द्वितीयया''

सूत्रार्थ–प्राप्त, आपन्न इन दोनों शब्दों का द्वितीया के साथ समास होता है और इन दोनों के अकार को अन्तादेश होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास और अकार को अन्तादेश होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुषसमास और अकार को अन्तादेश होता है। प्रसङ्गतः प्राप्तापन्नशब्द के योग में यह समासविधायक सूत्र प्रवृत्त है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में **प्राप्तान्ने** प्रथमाद्विवचनान्त पद है। **'च'** अव्यय पद है। **द्वितीयया** यह तृतीया एकवचनान्त पद है। द्वितीयया अ प्रश्लेष है। प्राप्तं च आपन्नं च प्राप्तापन्ने यह इतरेतरद्वन्द है। समासः सुप्, सहसुपा, तत्पुरुषः यह सब अधिकृत सूत्र हैं। सूत्र में चकार का ग्रहण दो विधियों का समुच्चयार्थक है। द्वितीयया यहाँ तदन्तविधि में द्वितीयान्त सुबन्त के द्वारा यह अर्थ आता है।

''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से प्राप्तापन्नशब्दों के अन्त्य के स्थान पर ही अकार आदेश होता है। यह सूत्र ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' यह द्वितीयातत्पुरुष समास का अपवाद भूत है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–प्राप्तजीविकः। प्राप्तः जीविकाम् इस लौकिक विग्रह में प्राप्त सु जीविका सु अम् इस अलौकिक विग्रह में प्रोक्त सूत्र से प्राप्त सु सुबन्त को जीविका अम् इससे द्वितीयान्त के साथ तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में प्राप्तजीविका स्थिति में इस सूत्र के प्रश्लेषबल से प्रापत आकार के स्थान पर अकार होने पर प्राप्तजीविका होने पर जीविका के उत्सर्जन संज्ञा होने पर ह्रस्तत्व निष्पन्न होने पर प्राप्तजीविका शब्द से पूर्वोक्त वार्तिक से विशेष्य अनुसार पुंसत्व होने पर सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में प्राप्तजीविकः रूप सिद्ध होता है। उसी प्रकार से ही प्राप्तजीविकः, आपन्न जीविकः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है।

(4.16) ''अर्द्यर्चाःपुंसि च''

सूत्रार्थ–अर्ध अर्च आदि गण में पठित शब्दों के पुंसत्व और नपुंसक लिङ्ग होते है।

सूत्र व्याख्या–अर्धर्चादि तत्पुरुषसमास निष्पन्न शब्दों का विशेषतया पुल्लिंग और नपुंसक में प्रयोगविधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में अर्धर्चाः यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है। पुंसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। च अव्यय पद है। ''अपथं नपुंसकम्'' इस सूत्र से चकार से नपुंसक स्वीकृत किया जाता है। और उसके विभक्ति विपरिणाम से सप्तमी में नपुंसक होता है। अर्धर्चाः यहाँ बहुवचन से अर्धर्चादिगण में पठित अर्धर्चादि शब्द ग्रहण किये जाते हैं और सूत्र का अर्थ आता है–''अर्धर्चादि गण में पठित शब्द को पुल्लिंग और नुपंसकलिंग होते हैं।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अर्धर्चम्, अर्धर्चः। ऋचः अर्धम् इस लौकिक विग्रह में ऋच् ङ्स अर्ध सु इस अलौकिक विग्रह में ''अर्धं नपुंसकम्'' इससे विकल्प से तत्पुरुष समास में सुप् का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में अर्धर्च् निष्पन्न किया जाता है। इसके बाद ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र से अर्धर्च् के समासान्त में अप्रत्यय होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न अर्धर्च शब्द के तत्पुरुष संज्ञकत्व से ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस परपद के ऋच् के अनुसार स्त्रीलिङ्गत्व प्राप्त होने पर उसको बांधकर प्रोक्त सूत्र से अर्धर्चादिगण में पठित शब्द का पुल्लिंग होने और नपुंसक प्रयोग होता है। उससे अर्धर्चः, अर्धर्चम् दो रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-7

42. ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
43. द्वन्द में परवल्लिङ्ग का क्या उदाहरण है?
44. तत्पुरुष में परवल्लिङ्ग का उदाहरण क्या है?
45. ''द्विगुप्राप्तापन्नालम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
46. द्विगु में परवत् लिङ्गता निषेध का उदाहरण क्या है?
47. प्राप्तापन्नालम्पूर्वक तत्पुरुषों के परवत् लिङ्गता के निषेध के उदाहरण कौन-कौन से हैं?
48. गतिसमास में परवत् लिङ्गता का उदाहरण क्या है?
49. ''प्राप्तापन्ने च द्वितीयया'' सूत्र का उदाहरण क्या है?
50. ''प्राप्तापन्ने च द्वितीयया'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
51. ''अधर्चाः पुंसि च'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
52. ''अधर्चाः पुंसि च'' इस सूत्र का उदाहरण कौन सा है?

''पाठ का सार''

इस पाठ में कु.गति.प्र आदि समास विधायक सूत्र ''कुगतिप्रादयः'' की व्याख्या की गई है। ''ऊर्यादिच्विडाचश्च'' यहाँ पर गतिसंज्ञाविधायक सूत्र की व्याख्या की गई। प्रातिसमास विधायक ''प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया'', ''अत्यादयःक्रान्ताद्यर्थे द्वितीया'', ''अवादय क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'', ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'', ''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'' इन पाँचों वार्तिकों की यहाँ व्याख्या की गई है। यहाँ प्रसङ्ग से ''एक विभक्ति चापूर्व निपाते'' इस उपसर्जनसंज्ञा विधायक'' गोस्त्रियोंरूपसर्जनस्य'' इस उपसर्जन ह्रस्व विधायक सूत्र की व्याख्या की गई है।

''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' इस उपपद संज्ञा विधायक सूत्र ''उपपदमतिङ्'' इस उपपद समास विधायक सूत्र की वर्णन से पूर्व प्रस्तुत किया गया है। ''गतिकारकोपपदानांकृद्भिः सह

समासवचनं प्राक् सुवुत्पन्तेः'' इसकी उत्पत्ति के पूर्व समास प्रतिपदिका परिभाषा की व्याख्या की गई है।

इसके बाद इस पाठ में ''तत्पुरुषस्थाङ्गुलेः संख्याऽव्ययादेः'' इस ''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः'' समासान्त अच् प्रत्यय का ''राजाहः सखिञ्यष्टच्'' इस समासान्त का टच् प्रत्यय विधायक सूत्र की व्याख्या की गई है। इसके बाद रात्र, अहन्, अहन्त शब्द के लिङ्ग निर्णायक ''राजाह्नाऽहाः पुंसि'' सूत्र की व्याख्या की गई है। महाराजः इत्यादि में महत आकार को अन्तादेश विधायक ''आत्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' सूत्र प्रतिपादित हुआ है। इसके बाद समासकार्य विधायक सूत्रों ''द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः', ''त्रेस्त्रयः'' ये दो सूत्र प्रस्तुत किये गये हैं। इसके बाद द्वन्छ और तत्पुरुष के परवत् लिङ्गता विधायक सूत्र ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र और निषेधक ''द्विगुप्राप्तापन्नालम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषधो वाच्यः'' वार्तिक प्रस्तुत किया गया है। इसके बाद प्राप्तापन्नशब्दयोग में तत्पुरुषसमास विधायक सूत्र ''प्राप्तापन्ने च द्वितीयया'' सूत्र है। अर्धर्चा दि पुल्लिंग और नपुंसक लिङ्ग विधायक ''अर्धर्चाः पुंसि च'' सूत्र की व्याख्या की गई। और तत्पुरुषसमास इस पाठ में प्रतिपादित किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''कुगतिप्रादयः'' सूत्र की व्याख्या की गई है।
2. प्रातिसमास विधायक वार्त्तिकों को आश्रित करके एक टिप्पणी लिखो?
3. ''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' सूत्र की व्याख्या की गई है?
4. ''उपपदमतिङ्'' सूत्र की व्याख्या करो?
5. ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' सूत्र की व्याख्या करो?
6. ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषोः'' सूत्र की व्याख्या करो?
7. सूत्रों सहित सभी पदों को सिद्ध करो–अतिमालः, निष्कौशाम्बिः, कुम्भकार, महाराजः, अहोरात्रः, प्राप्तजीविकः,

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. समान अर्थ वाले कु, गति, प्र, र, आदि का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता हैं। और वह तत्र पुरुष होता है।

टिप्पणियाँ

2. कुपुरुशः

3. ऊरी कृत्य

4. सुपुरुषः

5. ऊरी आदि च्वि प्रत्ययान्त और डाच् अन्त वाले प्रत्यय के क्रियायोग में गति संज्ञा होती है।

6. पटपटाकृत्य

उत्तर-2

7. गति आदि अर्थ में वर्तमान प्रआदि प्रथमान्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

8. प्राचार्यः।

9. उपसर्जनसंज्ञक गोशण्ड और स्त्रीप्रत्ययान्त तदन्त का प्रातिपदिक का ह्रस्व होता है।

10. अतिमालः।

11. विग्रह में नियत विभक्ति की उपसर्जन संज्ञा होती है किन्तु उसका पूर्व निपात नहीं होता है।

12. उपसर्जन गोशब्द और स्त्रीप्रत्ययान्त तदन्त प्रातिपदिक का ह्रस्व (लघु) होता है।

उत्तर-3

13. क्रुष्ट आदि अर्थ में वर्तमान अब आदि तृतीयान्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

14. अवकोकिलः।

15. ग्लानि अर्थ में वर्तमान परि आदि चतुर्थ्यन्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है। और तत्पुरुष संज्ञक होता है।

16. पर्यध्ययनः।

17. क्रान्त आदि अर्थ में वर्तमान निर् आदि पञ्चम्यन्त समर्थ सुबन्त से नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

18. निष्कौशाम्बिः।

19. सप्तम्यन्त पद में ''कर्मण्यण्'' इत्यादि में वाच्यत्व स्थित कुम्भादि वाचक पद को उपपदसंज्ञा होती है।

20. कुम्भकारः।

उत्तर-4

21. उपपद सुबन्त को समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है। और यह समास अतिङ्ग अन्त वाला है।

22. कुम्भकारः।

23. गतिसंज्ञक, कारकसंज्ञक और उपपद संज्ञक का कृदन्त के साथ समास कृदन्त से सुबन्त की उत्पत्ति के पहले होता है।

24. आध्रः।

25. संख्या और अव्यय आदि का अङ्गुल्यन्त के तत्पुरुष समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

26. दव्यङ्गुलम्।

27. निरङ्गुलम्।

उत्तर-5

28. अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्य शब्दों से और संख्या अव्यय आदि परे जो रात्रि शब्द तदन्त तत्पुरुष का समासान्त तद्धितसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

29. अहोरात्रः

30. रात्रि अहनन्त अहन् शब्द को द्वन्द तत्पुरुष में पुल्लिंग होता है।

31. अहोरात्रः

32. संख्यावाची पूर्वपद का और रात्रि अन्त पूर्वपद का समास के नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग होता है यही वचन का अर्थ है। त्रिरात्रम्, नवरात्रम् ये उदाहरण हैं।

33. राजाहः सखि शब्दान्त (राजा, अहन्, सखि) शब्दान्त तत्पुरुष से समासान्त को तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

34. परमराजः यह उदाहरण है।

उत्तर-6

35. समानाधिकरण उत्तरपद और जातीय में परे महत् का आकार आदेश होता है।

36. राजन् समानाधिकरण में उत्तरपद और जातीय परे महत् को आकार आदेश होता है ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' सूत्र से।

37. महाजातीयः।

38. द्वि और अष्टन् शब्दों के संख्यावाचक उत्तरपद परे आकार को अन्तादेश होता है किन्तु बहुव्रीहि समास में अशीति (अस्सी) उत्तरपद परे रहने पर।

टिप्पणियाँ

37. ''द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीहाशीत्योः'' सूत्र से संख्यावाचक दशन् उत्तरपद परे द्विशब्द का आकार को अन्तादेश होने पर द्वादशन् निष्पन्न होता है इसके बाद अस् प्रत्यय होने पर द्वादश रूप बना है।

40. त्रिशब्द को संख्यावाचक उत्तरपद परे त्रयस् आदेश होता है, किन्तु बहुव्रीहिसमास में और अशीति उत्तरपद परे नहीं होता है।

41. ''अनेकाल्शित्सर्वस्य'' इस परिभाषा से त्रिशब्द के सम्पूर्ण स्थान पर ही त्रयस् आदेश होता है।

उत्तर-7

42. द्वन्द और तत्पुरुष समास में परपद (बाद वाला पद) का ही लिङ्ग होता है।

43. कुक्कुटमयूर्यौ।

44. अर्धपिप्पली।

45. द्विगु समास में प्राप्त, आपन्न, अलम् पूर्वपद होने पर तत्पुरुषसमास में और गतिसमास में परवत् लिङ्गता का प्रतिषेध होता है।

46. पञ्चकपालः।

47. प्राप्त, आपन्न, अलम् पूर्वक उदाहरण है यथाक्रम से प्राप्तजीविकः जनः, आपन्नजीविकः जनः, अलङ्कुमारिः।

48. निष्कौशाम्बिः।

49. प्राप्त आपन्न इन दोनों शब्दों को द्वितीया के साथ समास होता है। इन दोनों के अकार को अन्तादेश होता है।

50. प्राप्तजीविकः।

51. अर्धर्चादिगण में पठित शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होते है।

52. अर्धर्चम् अर्धर्चः ये दो उदाहरण है।

चतुर्थ पाठ समाप्त

5

बहुव्रीहि समास
व्यधिकरण बहुव्रीहि और समासान्त प्रत्यय

इस पाठ में बहुव्रीहि समास का आलोचन हो रहा है। प्राय अन्य पदार्थप्रधान अर्थात् पूर्वपद और उत्तरपद को छोड़कर कोई अन्य अर्थ ही प्रधान हो बहुव्रीहिसमास कहलाता है, उसका यह सामान्य लक्षण है। अन्य पद का अर्थ ही अन्यपदार्थ है। अन्य पदार्थ प्रधान हो जिसमें वह अन्य पदार्थ प्रधान है। अर्थात् जिस समास में सामासिक पद के अलावा अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है वह बहुव्रीहि समास होता है। जैसे:– पीताम्बरः। पीतम् अम्बरं यस्य स (पीला है वस्त्र जिसका) वह पीताम्बर। यहाँ बहुव्रीहि में समस्यमान पद में पीतम् और अम्बरम्। इन दो समस्यमान पदों से अतिरिक्त अन्यत्पद है जिसका अर्थ है विष्णु। निष्पन्न पीताम्बर पद से विष्णु के बोधन से अन्य पदार्थ प्रधानात्व से यह बहुव्रीहि समास होता है। और यह बहुव्रीहिः ''शेषो बहुव्रीहिः'' यह अधिकार सूत्र बल से प्रवृत्त होता है। इस पाठ में पाँच बहुव्रीहिसमास विधायक **विराजमान** है। वार्तिकों के भी संग्रहण है जो बहुव्रीहि समास, पूर्वपद का और उत्तरपद के लोप होता है। इसके बाद समास विधायक सूत्र के वर्णन अवसर पर उसके उदाहरणों में समासान्त कार्य विधान के लिए जो सूत्र अपेक्षित उनका भी यहां संग्रहित किया गया है।

समास विधायक सूत्र के अर्थ लेखन अवसर पर बहुत जगह पर समास होता है। यही पद का प्रयोग होता है। समस्यते इस पद का अर्थ होता है समास संज्ञा होती है। जैसे–''अनेकमन्यपदार्थे'' सूत्र का अनेक प्रथमान्त अन्य पदार्थ में वर्तमान विकल्प से समास होता है। और वह बहुव्रीहिसंज्ञक होता है। इसका तात्पर्य होता है ''अनेक प्रथमान्त्र अन्य पदार्थ में वर्तमान विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होती है। इसका तात्पर्य होता है ''अनेक प्रथमान्त अन्यपद के अर्थ में वर्तमान विकल्प से बहुव्रीहिसमास संज्ञा होती है। यही दूसरी जगह अवधेय है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र जान पाने में;
- बहुव्रीहि में पूर्वपद का उत्तरपदलोप विधायक वार्तिकों को जान पाने में;
- विधायक सूत्र उपयोगिता से पुंवत्कार्य-तिलोप-सादेश विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- समासान्त प्रत्यय विधायक सूत्र जान पाने में।

(5.1) ''शेषो बहुव्रीहिः''

सूत्रार्थ–''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से पूर्व तक बहुव्रीहि का अधिकार है।

सूत्र व्याख्या–यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास का अधिकार होता है। इस सूत्र में ये दो पद है। शेषः बहुव्रीहिः ''प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'' यह अधिकृत सूत्र है। यह अधिकार ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से पहले तक है। अर्थात् ''शेषो बहुव्रीहिः'' इस सूत्र से ''चार्थेद्वन्दः'' इससे पहले तक सूत्रों द्वारा जो समास होता है वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है। इसके अधिकार में पाँच सूत्र आते हैं–''अनेकमन्यपदार्थे'', ''संख्ययाव्यया सन्नदूराधिकसंख्यासंख्येये'', ''दिङ् नामान्यन्तराले'', ''तत्र तेनेदमिति सरुपे'' और ''तेन सहेति तुल्ययोगे''।

सूत्र में शेष नाम अन्य उक्ति से। ''द्वितीया श्रितातीतपतित गतस्थस्तप्राप्तापन्नैः'' इससे द्वितीयान्त का ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' इससे तृतीयान्त का ''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः'' इससे चतुर्थ्यन्त का ''पञ्चमी मथेन'' इससे पञ्चम्यन्त का, ''षष्ठी'' इससे षष्ठयन्त का और सप्तमी शौण्डैः'' सूत्र से सप्तम्यन्त का समास निहित होता है। अतः द्वितीयादि सप्तमी विभक्तियों को कहा गया है। इससे अन्यः शेषः प्रथमान्त है और प्रथमान्त समास का ही बहुव्रीहिसंज्ञक फलित होता है।

(5.2) ''अनेकमन्यपदार्थे'' (2.224)

सूत्रार्थ–अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पद को विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में अनेकम् प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''अन्यपदार्थे'' सप्तम्येकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''विभाषा'', ''शेषो बहुव्रीहिः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। न एकम् अनेकम् इति नञ्तत्पुरुषसमासः (नहीं है एक अनेक यह नञ्तत्पुरुष)। और अन्य और उसका पद–यहाँ कर्मधारय समास है

(अन्यत् च तत्पदम् अन्यपदम् इसमें कर्मधारय समास है) अन्यपदस्य अर्थः अन्यपदार्थ तस्मिन् अन्यपदार्थे इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। अन्य पद का अर्थ है अन्य पदार्थः उसमें अन्य पदार्थ में षष्ठी तत्पुरुष समास। वर्तमान शेष ग्रहण सामर्थ्य से प्रथमान्त पद प्राप्त होता है। प्रथमान्त का विशेषण है अनेकम्। अन्यपद का अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पद विकल्प से समास प्राप्त होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है। यह सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–सूत्र में प्रथमान्त पदों के समस्यमान होने से द्वितीयान्त आदि के ही अन्यपदार्थत्व सम्भव होता है। द्वितीयान्त अन्य पदार्थ में उदाहरण-प्राप्तम् उदकं यं सः प्राप्तोदको ग्रामः। तृतीयान्त अन्य पदार्थ में उदाहरण है–ऊढ़ो रथो येन स ऊढरथः अनड़्वान्। चतुर्थ्यन्त में अन्य पदार्थ में उदाहरण होता है उपहृतः पशु यस्मै स उपहृतपशुः। पञ्चम्यन्त अन्य पदार्थ में उदाहरण है–उद्धृतः ओदनः यस्था सा उद्धतौरना। षष्ठयन्त अन्य पदार्थ में उदाहरण है–पीतमम्बरं यस्थ सः पीताम्बरः। सप्तम्यन्त अन्य पदार्थ में उदाहरण है–वीराः पुरुषा यस्मिन् स वीर पुरुषक ग्रामः।

तथाहि पीतम् अम्बरं यस्थ सः इस लौकिक विग्रह में पीत सु अम्बर सु इस अलौकिक विग्रह में अन्य पद के अर्थ में विष्णु अर्थ में विद्यमान पीत सु और अम्बर सु इस प्रथमान्त प्रस्तुत सूत्र से बहुव्रीहि संज्ञक होता है। इसके बाद पीत सु अम्बर सु इस समुदाय के ''कृत्तद्धित्तसमासाश्च'' इस सूत्र से प्रातिपदिक, संज्ञा होने पर ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् के दो सुप् का लोप होने पर पीत अम्बर होता है। तब ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में प्रथमान्त के प्रथमा निर्दिष्टत्व से पीत सु अम्बर सु इन दोनों का ही उसके बोध्यत्व से उपसर्जनत्व होता है। परन्तु उपसर्जनं पूर्वम् इससे किसका पूर्व निपात हो? इस शंङ्का में पूर्वनिपात विधायक सूत्र प्रवत्त हुआ है।

(5.3) ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में और सप्तम्यन्त विशेषण को पूर्व में पूर्व प्रयुज्य होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधायक सूत्र हैं। इस सूत्र से पूर्वनिपात होता है। द्वि पदात्मक इस सूत्र में ''सप्तमी विशेषणे'' यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है और बहुव्रीहौ यह सप्तम्येक वचनान्त पद है। सप्तमी च विशेषणं च सप्तमीविशेषणे यह इतरेतरद्वन्द समास है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्माः'' नियम से सप्तमी का तदत्तविधि में सप्तम्यन्त पद प्राप्त होता है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व क्रियाविशेषण द्वितीया एकवचनान्त की अनुवृत्ति होती है। प्रयुज्यते इस क्रियापद को अध्याहार्य करना चाहिए। बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त पद को और विशेष्ण का पूर्व प्रयोग होता है।

उदाहरण–विशेषण का पूर्व निपात होने पर पीताम्बरः इसका उदाहरण है। पीतम् अम्बरं यस्य स (पीला है वस्त्र जिसका) इस लौकिक विग्रह में पीत सु अम्बर सु इस अलौकिक विग्रह में अन्य पद के अर्थ में विष्णु अर्थ में ''अनेकमन्य पदार्थे'' इससे बहुव्रीहि में सुप् का लोप होने पर पीत अम्बर होता है। तब इन दोनों समास विधायक सूत्रों में अनेकम् को प्रथमा निर्दिष्टत्व से बोध्यत्व से इन दोनों के उपसर्जनत्व से किसका पूर्व निपात हो? इस प्रश्न में प्रस्तुत

सूत्र से विशेषणभूत पीत शब्द का पूर्व निपात होता है। इसके बाद पीत अम्बर इस स्थिति में सवर्ण-दीर्घ होने पर निष्पन्न पीताम्बर से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में पीताम्बरः रूप बना।

सप्तम्यन्त का पूर्व निपात होने पर उदाहरण है कण्ठेकालः। कण्ठे कालः यस्य सः (कण्ठ में काल है जिसके वह) इस लौकिक विग्रह में कण्ठ ङि काल सु इस अलौकिक विग्रह में सप्तमी ग्रहण सामर्थ्य से व्यधिकरण बहुव्रीहि समास होता है। इसके प्रकृत सूत्र से सप्तम्यन्त का पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातु प्रातिपतिकयोः'' इससे सुप् का और सु का लोप प्राप्त होने पर ङे लोप के निषेध के लिए यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है-

(5.4) ''हलन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्'' (6.3.7)

सूत्रार्थ-हलन्त और अदन्त से सप्तमी का उत्तरपद परे संज्ञा में गम्यमान होने पर लोप नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या-यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से लोप का निषेध होता है। त्रि पदात्मक इस सूत्र में **हलन्तात्** पञ्चम्येकवचनात्त पद है और **सप्तम्याः** यह षष्ठी एकवचनान्त पद है और **संज्ञायाम्** यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' यह अधिकृत सूत्र है। हन् च अत् च हलत्, हलत् अन्ते यस्थ स हलदन्तः तस्मात् हलन्तात् इसमें द्वन्दगर्भ बहुव्रीहि समास है। संज्ञायाम् इसके साथ अन्वय के लिए गम्यमान होने पर लिया गया है (इत्यध्याहार्यम्)। हलन्त और अदन्त से सप्तमी के उत्तरपद परे संज्ञा में गम्यमान लोप नहीं होता है यही सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण-हलन्त से पर सप्तमी के अतुक उदाहरण होता है-त्वचिसारः। अदत्त पर सप्तमी का अलोप होने पर कण्ठेकालः उदाहरण है। कण्ठे कालः यस्य सः (कण्ठ में काल है जिसके) इस लौकिक विग्रह में कण्ठ ङि काल सु इस अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि में सप्तम्यन्त का पूर्व निपात होने पर, सुप् के ङि और सु प्रत्यय का लोप होने पर अदत्त कण्ठशब्द से सप्तमी के ङि के विधान से उसका लोप इस सूत्र से होता है। इसके बाद सु का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में **कण्ठेकालः** रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''शेषो बहुव्रीहिः'' इस सूत्र में शेषशब्द से किसका ग्रहण किया गया है?
2. ''शेषो बहुव्रीहिः'' इस सूत्र का अधिकार कहाँ तक है?
3. ''बहुव्रीहि पदार्थे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
5. ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
6. ''हलन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

7. अनेकम् इससे किसका ग्रहण किया गया है?

8. सप्तम्यन्त और विशेषण का पूर्वनिपांत में उदाहरण कौन सा है?

9. कण्ठेकालः यहाँ सप्तमी का लोप क्यों नहीं हुआ?

(5.4.1) ''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्य–प्र आदि से परे जो धातुज कृदन्त शब्द तदन्त का प्रथमान्त का प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है और बहुव्रीहि में पूर्वपदस्थ धातुज उत्तरपद का विकल्प से लोप होता है।

वार्तिक व्याख्या–यहाँ वार्तिक में चकार से बहुव्रीहि समास विधान स्वीकार किया गया है। वस्तुतः तो ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे बहुव्रीहि समास सिद्ध होता है। यह वार्तिक पूर्वपदस्थ धातुज का उत्तरपद का वैकल्पिक लोप होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण हैं प्रपर्णः, प्रपतिपर्णो। प्रकृष्टानि पतितानि इस विग्रह में प्र का पतित जस् से ''प्रादयो शताद्यर्थे प्रथमया'' इस वार्तिक से नित्य तत्पुरुष समास होने पर प्रक्रिया कार्य में प्रपतितानि रूप निष्पन्न होता है। प्रतितानि पर्णानि यस्य सः इस लौकिक विग्रह में प्रपतित जस् पर्ण जस् इस अलौकिक विग्रह में अन्य पदार्थ में वृक्ष रूप अर्थ में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इससे विशेषण के प्रपतित जस् का पूर्ण निपात होने पर समास के प्रातिपदिकत्व से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इसे सुप् के सुप् के दोनों जए प्रव्ययों का लोप होने पर प्रपतितपर्ण होता है। तब प्रोक्त वार्तिक से बहुव्रीहि में पूर्वपद के प्रपतित का धातु ज उत्तरपद का पतित का विकल्प से लोप होने पर सु प्रत्यय के प्रक्रिया कार्य में **प्रपर्णः** रूप होता है। लोप के वैकल्पिक से उसके अभाव पक्ष में प्रपतितपर्णः रूप बना। इस वार्तिक का उदाहरण है–प्रपतितानि पलाशानि यस्य प्रपलाशः पादपः।

(5.4.2) ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्य–नञ् के परे अस्त्यर्थक शब्दान्त का प्रथमान्त का प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है और बहुव्रीहि में पूर्वपदस्थ अस्त्यर्थक का उत्तरपद का विकल्प से लोप होता है।

वार्तिक व्याख्या–यहाँ वार्तिक में चकार से बहुव्रीहि समास विधान स्वीकार हुआ है। वस्तुतः तो ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे ही बहुव्रीहि समास सिद्ध होता है। इस वार्तिक को पूर्वपदस्थ अस्त्यर्थक उत्तर पद का वैकल्पिक लोप विधायक सूत्र है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है अपुत्रः अथवा अविद्यमानपुत्रः न विद्यमानः इस विग्रह में ''न'' का विद्यमान सु से ''नञ्'' सूत्र से तत्पुरुष समास में प्रक्रिया कार्य में अविद्यमानः रूप निष्पन्न होता है। अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः इस लौकिक विग्रह में अविद्यमान मु पुत्र सु इस

अलौकिक विग्रह में अन्य पद के अर्थ में जन रूप अर्थ में ''अनेकमन्य पदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इससे विशेषण का अविद्यमान सु का पूर्वनिपात होने पर समास के प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर अविद्यमान पुत्र होने पर प्रोक्त वार्तिक से बहुव्रीहि में पूर्व पद का अविद्यमान का अस्त्यर्थक उत्तर पद का विद्यमान का विकल्प से लोप होने पर सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में अपुत्र: रूप होता है। लोप के वैकल्पिकत्व से उसके अभाव पक्ष में अविद्यमान पुत्र: रूप होता है।

(5.4.3) ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्थ–सप्तम्यन्त सहित और उपमान सहित पूर्वपद का पदान्त से पूर्वपद को समास होता है और उत्तरपद का लोप होता है।

वार्तिक व्याख्या–यहाँ वार्तिक से चकार से बहुव्रीहिसमास विधान स्वीकृत किया जाता है। वस्तुत: तो अनेकमन्यपदार्थे'' इससे ही बहुव्रीहिसमास सिद्ध होता है। यह वार्तिक पूर्वपदस्थ उत्तरपद लोप का विधायक है।

उदाहरण–इस वार्तिक का सप्तम्यन्तसहित पूर्वपद पक्ष में उदाहरण है तावत् कण्ठेकाल:। कण्ठे तिब्बति इस विग्रह में ''सुपिस्च:'' इससे कण्ठ उपपद में स्था धातु से क प्रत्यय होता है। कण्ठेस्थ: पद निष्पन्न होता है। कण्ठेस्थ: काल: यस्य (कण्ठ में बैठा है काल जिसके) इस लौकिक विग्रह में कण्ठेस्थ सु काल सु इस अलौकिक विग्रह में अन्य पद के अर्थ में शिव रूप अर्थ में ''अनेकअन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ'' इस विशेषण का कण्ठेस्थ सु का निपात होने पर समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इस सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर कण्ठेस्थकाल बना। इसके बाद प्रोक्त वार्तिक से पूर्वपद का कण्ठेस्थ के उत्तरपद स्थ का लोप होने पर सु प्रत्यय का प्रक्रिया कार्य में कण्ठेकाल: रूप बना।

उपमानसहित पूर्वपद में समास का उदाहरण है उष्ट्रमुख:। उष्ट्रमुखमिव मुखं यस्य (ऊँट जैसा मुख है जिसका) इसके उत्तरपद का लोप होने पर प्रक्रियाकार्य में उष्ट्रमुख: रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-2

10. ''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोप:'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

11. प्रपर्ण: यहाँ कौन सा विग्रह है?

12. ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोप:'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

13. अपुत्र: यहाँ कौन-सा विग्रह है?

14. ''सप्तम्युपमान पूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

15. ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' इस वार्तिक का सप्तम्यन्त सहित पूर्वपद पक्ष में उदाहरण क्या है?

16. ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' वार्तिक के उपमान सहित पूर्वपद पक्ष में उदाहरण क्या है?

(5.5) ''स्त्रियाः पुंवद् माषित पुस्करादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियायपूरणी प्रियादिषु'' (6.3.34)

सूत्रार्थ–तुल्य प्रवृत्तिनिमिन्त

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पुंवद् होता है। इस सूत्र में स्त्रियाः पुंवत् भाषित पुस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियाम् अपूरणीप्रियादिषु'' यह पदच्छेद है। यहाँ स्त्रियाम् पञ्चमी एकवचनान्त पद है। पुंवत् यह अव्ययपद है। भाषितपुंस्कादनूङ् प्रथमा एकवचनात्त पद हैं। समानाधिकरणे और स्त्रियाम् इन दोनों सप्तम्येक वचनान्त पद हैं। अपूरणीप्रियादिषु यह सप्तमी बहुवचनान्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपदे इसकी अनुवृत्ति होती है। भाषित पुस्कादनूङ स्त्रियाः पुंवत् अपूरणीप्रियादिषु समानाधिकरणे स्त्रियाम् उत्तरपदे यह अन्वयः है।

भाषित पुस्कादनूङ् यह लुप्त षष्ठी एकवचनात्त पद है। उसको **स्त्रियाः** इसका विशेषण है। ऊङः अभावः अनूङ् (ऊङ् का अभाव) यह अव्ययीभाव समास है। भाषितः पुमान् मेन तद् भाषित पुंस्कम् यहाँ बहुव्रीहि समास है। तदस्य अस्ति इति विग्रह में अर्श आद्यचा त्राषितपुंस्कशब्दः निष्पन्न होता है। जो शब्द प्रवृत्ति निमित्त को आश्रित मानकर पुल्लिङ्ग में प्रवृत्त होता है उसी से ही प्रवृत्त मिमित्त को आश्रित मानकर यदि अन्य जिस मिङ्ग में प्रवृत्त होता है तब वह भाषितपुंस्क होता है। भाषितपुंस्काद् अनूङ् यस्यां सा भाषितपुंस्कादनूङ् तस्थाः (भाषितपुंस्तक से अनूङ् होता है जिसमें) बहुव्रीहि समास है। यहाँ नियातम से समास में पञ्चमी से अलुक और षष्ठी से लुक प्राप्त होता है। स्त्रियाः का स्त्रीवाचक शब्द का ही अर्थ होता है। भाषितपुंस्कादनूङ् स्त्रियाः इसका अर्थ है–जिससे परे ऊङ प्रत्यय विहित नहीं होता है। उसके समान पुंवद्भापित का और स्त्रीवाचक शब्द का पुंवद् भाव नहीं होता है।

प्रिया आदिर्येवन ते प्रियादयः (प्रिया आदि में है जिसके) तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि महै। पूरणी च प्रियादयश्च पूरणीप्रियादयः तेषु पूरणीप्रियादिषु यहाँ इतरेतरद्वन्द है। न पूरणीप्रियादिषु अपूरणीप्रियादिषु यहाँ नञ्तत्पुरुष समास है। पूरणी शब्द से यहाँ पूरणार्थ प्रत्ययों का स्त्रीलिङ्गशब्दों का द्वितीया आदि का ग्रहण किया गया है। प्रियादयः प्रियादिगण में पठित शब्दों को कहा गया है। उत्तरपदे इस अन्वय में अपूरणीप्रियादिषु इसका अर्थ होता है। पूरण अर्थ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्गशब्दों में प्रियादिषु और उत्तरपद में आगे से नहीं होता है।

स्त्रियाम् उत्तरपद में विशेषण से स्त्रीलिङ्गवाचक उत्तरपद पर में होता है। एवं सूत्रार्थ आता है. .. तुल्य में प्रवृत्तिनिमित्त में उक्त पुंस्क जिससे ऊङ अभाव में जहाँ तथाभूत स्त्रीवाचक शब्द का पुंवाचक का ही रूप समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग में उत्तरपद में नहीं होती है किन्तु पूरणी

टिप्पणियाँ

और प्रियादि के परे नहीं होता है।

सूत्र में अनूङ् पद का क्या प्रयोजन होता है वाजोकमार्यः। वामोरु शब्द स्त्रीत्व विवक्षा में ''सहितशफलक्षणवामादेश्च'' इस सूत्र से ऊङ प्रत्यय होने पर वामोरुः निष्पन्न होता है। वामोरुः भार्या यस्य सः इस लौकिक विग्रह में वामोरु सु आर्या सु इस अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि समास में प्रक्रिया कार्य होने पर वागोरु भार्या रूप होता है। इस सूत्र में अनूङ पद के अभाव में वामोक शब्द का भाषितपुंरकत्व से स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद में भार्याशब्द परे उसके पुंवद्भाव पर आपत्ति होनी चाहिए। उससे वामोकभार्यः यह अनिष्ट रूप होता है। इसके निराकरण के लिए ही अनूऊ पद होता है। अनूङ् पद के सत्व से वामोरु शब्द का अङ् प्रत्यया-तत्व से पुंवद्भाव नहीं होता है।

सूत्र में अपूरणीप्रियादिषु इस पद के सत्व से कल्थाली पञ्चमी थासां रात्रीणां ताः कल्याणी पञ्चमारात्रयः यहां पञ्चमी पूरणार्थ प्रत्ययान्त में स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद में कल्याणी प्रिया यस्य स कल्याणी प्रियः यहाँ स्त्रीलिङ्ग में प्रियाशब्द उत्तरपद परे पुंवद्भाव नहीं होती है।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है–चित्र गुः। चित्रा गावः यस्य सः इस लौकिक विग्रह में चित्रा जस् भो जस् इस अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि में पूर्वनिपात होने पर, प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर चित्रा गो होता है। नित्रा शब्द का पुल्लिङ्ग में भी समान अर्थ प्रयोग से भी भाषितपुंस्कत्व होता है। चित्रा शब्द से पर समानाधिकरण स्त्रीलिङ्गक गो शब्द है तथा चित्रा शब्द से ऊंङ भी नहीं है। अतः प्रोक्त सूत्र से चित्रा शो स्थित समानाधिकरण स्त्रिलिङ्ग गोशब्द से परे भाषितपुंस्क का चित्राशब्द का पुंवद्भाव में चित्र गो होता है। इसके वाक उपसर्जन संज्ञक गोशब्द का अन्त्य ओकार का ''गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य'' दूसरे ह्रस्व उकार होने पर प्रक्रियाकार्य में निष्पन्न होने पर चित्रगुशब्द से विशेष्य के अनुसार पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय होने पर चित्रगुः रूप निष्पन्न होता है। इसी प्रकार रूपवती भार्या यस्य स रूपवत् भार्यः (रूपवती स्त्री है जिसके) इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है।

(4.6) ''अप्पूरणी प्रमाण्योः''

सूत्रार्थ–पूरणार्थप्रत्ययान्त जो स्त्रीलिङ्ग तदन्त से और प्रमाण्यन्त से बहुव्रीहि के समासान्त का तद्धितसंज्ञक अप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अप् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में अप् प्रथमा एकवचनान्त पद है। पूरणीप्रमाव्योः यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। ''बहुव्रीहौसक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच्'' इस सूत्र से बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति हो रही है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये चार अधिकृत (अधिकार) हैं। पूरणी च प्रमांणी च पूरणीप्रमाण्यौ नयोः पूरणीप्रमाण्योः यहाँ इतरेतरद्वन्द समास है। ''परश्च'' इस अधिकार बल से पूरणीप्रमाण्योः का और बहुव्रीहौ का पञ्चम्यन्तता से विपरिणाम होता है। इससे पूरणीप्रमाणीभ्याम् और बहुव्रीहेः पद प्राप्त होता है। पूरणी प्रमाणीभ्याम् यहाँ तदन्तविधि में बहुव्रीहि का अन्वय से पुख्यान्त प्रमाणिकता से बहुव्रीहेः होता है। पूरण्यन्तत्व से ''तस्य पूरणेडट्'' इत्यादि सूत्रों से

विहित जो हैं वे प्रत्यय तदन्त के ग्रहण किये जा रहे है। प्रमाणी शब्द प्रमीयते अनेन इस विग्रह में प्र पूर्वक या धातु के ल्युट् प्रत्यय होने पर निष्पन्न प्रमाणशब्द का स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् निष्पन्न होता है। एवं सूत्रार्थ होता है।–''पूरण्यन्त से और प्रमाण्यन्त से बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक अप् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र के पूरण्यन्त में बहुव्रीहि में उदाहरण होता है कल्याणी पञ्चमाः पूरणी इस अर्थ में षष्ठयन्त से पञ्चन् शब्द से मट् प्रत्यय होने पर स्त्रित्व विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होने पर पञ्चमी शब्द निष्पन्न होता है। और सूत्रार्थ आता है–पूरण्यन्त से और प्रमाण्यन्त से बहुव्रीहि के समासान्त तद्धित संज्ञक अप् प्रत्यय होता है।

कल्याणी पञ्चमी मासां राजीणां ताः इति लौकिक विग्रह में कल्याणी सु पञ्चमी सु इस अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि के विशेषण का पूर्व निपात होने पर सुप् का लोप होने पर कल्याणी पञ्चमी होता है। तब कल्याणीपञ्चमी बहुव्रीहि के पूख्यन्त से प्रकृत सूत्र से अप् प्रत्यय होता है। अप् के वकार का ''हलन्त्यम्'' इससे द्वत्संज्ञा होने पर ''तस्थ लोपः'' इससे लोप होने पर कल्याणी पञ्चमी अ होता है। तब कल्याणी पञ्चमी की ञ संज्ञा होने पर ''यस्येति च'' इससे इकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न कल्याणीपञ्चम् शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में टाप् प्रत्यय होने पर जस् प्रत्यय की प्रक्रिया कार्य में कल्याणी पञ्चमाः रूप सिद्ध होता है।

प्रयाणीशब्दान्त में बहुव्रीहि में उदाहरण है–स्त्री प्रमाणं यस्य सः स्त्रीप्रमाणः पुरुषः (स्त्री प्रमाण है जिसका वह स्त्रीप्रमाण पुरुष)

पाठगत प्रश्न-3

17. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र से क्या होता है?
18. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी प्रियादिषु'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
19. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र में अनूङ् पद का क्या प्रयोजन है?
20. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र में अपूरणीप्रियादिषु इस पद का क्या प्रयोजन है?
21. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
22. ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'' इस सूत्र से क्या होता है?
23. ''अप्पूरीप्रमाण्योः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

24. "अप्पूरणीप्रमाण्यो:" इस सूत्र के पूरयन्त में और प्रमाण्यन्त में बहुव्रीहि में उदाहरण में कौन सा उदाहरण है।

(5.6) "संख्ययाद्रव्ययासवादूराधिकसंख्याः संख्येये" (22.25)

सूत्रार्थ–संख्यावाचक एकादिसंख्या से अव्यय आदि को विकल्प से समास होता है और बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में संख्यया, अव्ययासन्नदूराधिकसंख्याः संख्यये पदच्छेद है। संख्यया यह तृतीया एक वचनात्त पद है। 'अन्ययासन्न इराधिक संख्या यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। संख्येये यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। "प्राक्कडारात्समास:", "परिभाषा", "शेषोबहुव्रीहि' ये अधिकृत सूत्र हैं। अव्ययं च आसन्नं च अदूरञ्च अधिकं च संख्या च अव्ययासन्नादूराधिकसंख्या यहाँ इतरेतरद्वन्दसमास है। अव्ययासन्नादूराधिकसंख्या का अर्थ सुबन्त से है। यहाँ संख्या शब्द स्वरूप पर नहीं है वह निश्चित रूप से एकादिशब्दपरक है। विंश (बीस) हैं पहले एक आदिशब्द संख्याओं में हैं वे विशेष्य लिङ्ग होते हैं। विंश (बीस) आदि से नवति (नब्बे) तक शब्द तो नित्य एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग में विद्यमान संख्या में संख्या से से च अर्थ में होते हैं। यहाँ अमरवचन प्रमाण है।

'बीस से पहले सदा एकत्व होने संस्था में

और संख्यावाचक जो शब्द होते हैं वे ही संख्येय अर्थ संख्या होती है। यहाँ सूत्रार्थ होता है–

संख्येय वाचक एकदिसंख्या शब्द से अव्ययादि का विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

उदाहरण–सूत्र में अव्यय के साथ बहुव्रीहि में उदाहरण है–उपदशाः यहाँ उप इस समीप अर्थ में वर्तमान अव्यय है। दशानां समीपे ये लौकिक विग्रह में दशन् आम् उप इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से संख्येय वाचक संख्या शब्द से दशन् आम् इससे उप यह अव्यय को बहुव्रीहि समास होती है। इसके बाद अव्यय का पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर उपदशन् रूप निष्पन्न होता है। इसके बाद समासान्त डच् प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में उपदशाः रूप होता है।

आसन्नशब्द के साथ समास में उदाहरण है विंशतेः आसन्नाः आसन्नविंशाः (बीस के आसन है जो) अदूर शब्द के साथ समास में उदाहरण–त्रिंशतः अदूराः अदूरत्रिंशाः। (तीस के समीप है जो) अधिक शब्द के साथ समास में उदाहरण है चत्वाारिंशतः अधिकाः अधिकचत्वारिंशाः। इस संख्या से समास में उदाहरण है–द्वौ च त्रयश्च द्वित्राः।

यहाँ उपदशन् इस स्थिति में समासान्त डच् प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है–

(5;8) ''बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात्''

सूत्रार्थ–संख्येय में जो बहुव्रीहि समास है उससे समासान्त तद्धित संज्ञक ङ्च प्रत्यय होता है। किन्तु बहुगण शब्द के अन्त से बहुव्रीहि का नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त को ङच् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में बहुव्रीहौ संख्येये डच् अबहुगणात् यह पदच्छेद है। बहुव्रीहि और संख्या में सप्तम्येकवचनान्त पद है। डच् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है और अबहुगणात् पञ्चम्येक वचनान्त पद है। ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र है। ''परश्च'' इस अधिकार बल से बहुव्रीहि में पञ्चम्यन्तता से विपरिणाम होता है। और उसके संख्येये इससे अन्वय से संख्येये जो बहुव्रीहि तस्मात् यही अर्थ है। न बहुगण: अबहुगण: इस अबहुगण से नञ् समास होता है। बहुगण शब्दान्त से बहुव्रीहि का नहीं होता है यही तात्पर्य है। किन्तु सूत्र का अर्थ आता है–संख्येय से जो बहुव्रीहि समास है उससे समासान्त तद्धितसंज्ञक डच् प्रत्यय होता है। किन्तु बहुगणशब्दान्त से बहुव्रीहि नहीं होता है।

सूत्र में अबहुगणात् इस पद के सत्व से बहूना समीप जो होता (सत्वाद् बहूनां समीपे में सन्ति), गण के समीप हैं इस विग्रह में निष्पन्न होते है जैसे:–उपबहुशब्द से और उपगणशब्द से डच् प्रत्यय नहीं होता है।

उदाहरण–दशानां समीपे ये इस लौकिक विग्रह में (दशाओं के समीप) दशन् आम् उप इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से संख्येयवाचक संख्या शब्द से दशन् आम् इससे उप अव्यय को बहुव्रीहि समास संज्ञा होती है। इसके बाद अव्यय का पूर्वनिपात होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर उपदशन् इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से समासान्त में डच् प्रत्यय होने पर, डचों में यथाक्रम ''चुटू'' इससे ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोप:'' इससे इन दोनों का लोप होने पर उपदशन् अ इस स्थिति में पूर्वसंज्ञा होने पर पूर्व की भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे टि का अन् लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर उपदशशब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद जस् प्रत्यय होने पर उपदशा: रूप सिद्ध होता है।

आसन्न शब्द के साथ समास में उदाहरण है आसन्नविंशा: यहाँ विंशते: आसन्ना: इस विग्रह में समास में आसन्न विंशति इस स्थिति में पूर्व सूत्र से डच् होने पर आसन्न विंशति अ होने पर ति शब्द के लोप के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है–

(5.10) ''ति विंशतेर्डिति'' (6.4.14.2)

सूत्रार्थ–डित् (ड् की इत्संज्ञा होने पर) विंशन्ति के भ संज्ञक ति शब्द का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से ति का लोप होता है। इस सूत्र में ति विंशते: डिति पदच्छेद है। ति लुप्त षष्ठी एकवचान्त पद है। विंशते: यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। डिति सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''भस्य'' यह अधिकार सूज है। ''अल्लोपडन:'' इस सूत्र से लोप: की अनुवृत्ति होती है। विंशते: इससे विंशत्ति का ग्रहण किया गया है। डिति विंशते: भस्य ति

लोपः यह अन्वय है। और सूत्र का अर्थ होता है–डिति (ड की इत्संज्ञा) परे विंशति् के ञ संज्ञक ति शब्द का लोप होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है असान्नविंशाः। यहाँ विंशति का आसन्न विग्रह में ''संख्यायाऽब्ययासचाद्राविक संख्या संख्येये'' सूत्र से समास में आसन्न विंशति इस पूर्वसूत्र से डच् प्रत्यय होने पर आसन्न विंशति अ इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से डित् और डच् परे भसंज्ञक आसन्नविंशतिशब्द के ति का लोप होता है। इसके बाद लोप होने पर आसन्न विंश अ होने पर ''यस्येतिच'' इसके अकार का लोप होने पर सर्वसंयोग कहोने पर निष्पन्न आयत्रविंश शब्द से जस् प्रव्यय होने पर प्रखिया कार्य में आसन्नविंशाः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-4

25. ''संख्ययाव्यायासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

26.''बहुव्रीहौ संख्येयेडजबहुगणात्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

27. ''बहुव्रीहौ संख्येयेडजबहुगणात्'' इस सूत्र में अबहुगणात् पद का क्या प्रयोजन है?

28. ''ति विंशतेर्डिति'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

29. ''संख्ययाव्ययासवादूराधिकसंख्याः संख्येये'' इसका विग्रह सहित उदाहरण दीजिये?

30. उपदशाः यहाँ पर डच् प्रत्यय क्यों और किस सूत्र से होता है?

39. आसन्नविंशाः यहाँ विंशति के ति का लोप किस सूत्र से होता है?

(4.90) ''दिङ्नामान्यन्तराले'' (2.2.26)

सूत्रार्थ–दिशाओं के नामचावी अन्तराल वाचक का वाक्य में विकल्प से समास होता है, वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–षड्विधि पाणीनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में दिङ्नामानि अन्तराले पदच्छेद है। दिङ्नामानि यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। अन्तराले सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''विभाषा'', ''शेषो बहुव्रीहि'' ये अधिकृत सूत्र हैं। दिशः नामानि दिङ्नामानि यहाँ षष्ठीतत्पुरुष समास है। दिङ्नामानि पद दिशावाचक दिशार्थ में कड़ीवादी सुबन्त है। अन्तराले पद यहाँ वाच्य लाने के लिए लिया गया है। अतः सूत्र का अर्थ होता है-''दिशावाची सुबन्तों के अन्तराल वाच्य में समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है-तावत् दक्षिणपूर्वा। दक्षिणस्थाश्च पूर्वस्याश्च दिशः अन्तरालम् इस लौकिक विग्रह में दक्षिणा ङ्स पूर्वा ङस् इस अलौकिक विगब्रह में प्रकृतसूत्र से दिशावाचक दक्षिणा ङस् पूर्वा ङस् बहुव्रीहि समास संज्ञक होता है। इसके बाद प्रक्रियाकार्य में

दक्षिणापूर्वा होने पर ''सर्वनाम्नोवृत्तिमात्रेपुंवद्भाव:'' इस वार्तिक से दक्षिणशब्द का पुंवद भाव होने पर दक्षिणपूर्वा शब्द निष्पन्न होता है। निष्पन्न दक्षिणपूर्वा शब्द से दिग् विशेष्य के अनुसार स्त्रीत्व विवक्षा में सुप्रत्यय होने पर दक्षिणपूर्वा रूप निष्पन्न होता है।

(4.11) ''तत्र तेनेदमितिसकपे'' (2.2.27)

सूत्रार्थ–सप्तम्यन्त ग्रहण विषय में सरूप पद में और तृतीयान्त में प्रहरण विषय में इदं युद्धं प्रवृत्तम् ( ) इस अर्थ में कर्मव्यतिहार में द्योत्य होने पर विकल्प से समास होता है, और बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में तत्र तेन इदम् इति सकपे पदच्छेद है। ''तत्र'' सप्तम्यन्त अव्यय पद है। तेन तृतीया एकवचनान्त पद है। इति यह अव्ययपद है। रू सकये सप्तम्येकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''विभाषा'', ''शेषोबहुव्रीहि:'' ये अधिकृत सूत्र हैं।

तेन इससे सप्तम्यन्त में पद में विवक्षा में। ग्रहण विषये यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है। उसका विशेषण अध्याहार्यम्। प्रह्रियते अनेन इस विग्रह में करण में ल्युटा प्रहरणम् पद निष्पन्न होता है। प्रहरण नाम दण्डादि है। तद् विषय: वाच्यं यमो: ते प्रहरणविषये बहुव्रीहि समास है। ग्रहण वाचक यह अर्थ है।

तेन इस तृतीयान्त पद में विवक्षा में है। प्रहरण विषय में प्रथमा द्विवचनान्त का विशेषण लिया गया है। प्रह्रियते अनेन इस विग्रह में करण में ल्युटा प्रहरण शब्द निष्पन्न होता है। प्रहरणं नाम दण्डादिक का है। तद्: विषय: वाच्यं ययो: ते ग्रहण विषये यहाँ बहुव्रीहि समास है। इसका अर्थ प्रहरण वाचक है।

सरुपे यह प्रथमाद्विवचनात्त पद विशेषण है। ग्रहणविषये इस सप्तम्यन्त के साथ प्रहरण विषय में और तृतीयान्त के साथ अन्वय होता है। इदम् का अर्थ है निर्देश:। यहाँ युद्धं प्रवृत्तम् (युद्ध को प्रवृन्त) विशेष्य को लिया गया है। कर्मव्यतिहार द्योत्य होने पर यह अध्याहार्य (लिया गया) है। कर्मव्यतिहार नाम परस्परग्रहण और परस्परप्रहरण का है।

इति शब्द लौकिकप्रसिद्ध प्रकार वाचक है। अर्थात् केशाकेशी इत्यादि लौकिक प्रयोग में-यावान् अर्थ: प्रसिद्ध: तावत्यर्थे एव अयं बहुव्रीहि: भवति। (यावान् अर्थ प्रसिद्ध तावत् इस अर्थ में बहुव्रीहि समास होता है।

और यहाँ सूत्रार्थ होता है–सप्तम्यन्त ग्रहण विषय में सकपपद में और तृतीयान्त में प्रहरण विषय में ''इदं युद्धं प्रवृत्तम्'' (युद्ध को प्रवृत्त) इस अर्थ में कर्मव्यतिहार में द्योत्य होने पर विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का सप्तम्यन्त समास में उदाहरण है केशाकेशि। केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्ध प्रवृत्तम् (केशों को पकड़कर प्रवृत्त युद्ध) इस लौकिक विग्रह में केश सुप् केश सुप् इस अलौकिक विग्रह में प्रकृतसूत्र से सप्तम्यन्त का बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद समास का

टिप्पणियाँ

प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् का लोप होने पर केश केश होता है। इसके बाद ''अन्येषामारी दृश्यते'' इस सूत्र से पूर्वपद आकार के बहुव्रीहि में कर्मव्यतिहर में द्योत्य दीर्घ होने पर दीर्घ होने पर केशाकेश होता है। इसके बाद कर्मव्यतिहार में समासान्त में इच् प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर केशाकेश श होता है। इसके बाद केशाकेश शब्द की भसंज्ञा होने पर अकार लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर इसके बाद केशाकेश शब्द का भसंज्ञा होने अकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न केशाकेशि शब्द से सु प्रत्यय में प्रक्रिया कार्य में केशाकेशि रूप बना।

इसी प्रकार ही तृतीयान्त समास में दण्डैश्च दण्डैश्च गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं दण्डादण्डि यह उदाहरण है। केशोकेशि दण्डादण्डि इत्यादि में समासान्त इच विधायक सूत्र प्रवृत्त है।

(4.12) ''इच्कर्मव्यतिहारे'' (5.4.126)

सूत्रार्थ–कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहि उस समासान्त तद्धित संज्ञक इच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–षड् विधियों में पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त इच् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में इच् प्रथमा एकचनान्त पद है। कर्मव्यतिहारे यह सप्तम्थेकवचनान्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच्'' इस सूत्र से बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''परश्च'' इस अधि कारसूत्र के बल से बहुव्रीहौ इसका पञ्चम्यन्तता से विपरिणाम होता है। और उसके कर्मव्यतिहार में इस अन्वय से कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहिः होता है यही अर्थ है। और सूत्र का अर्थ आता है–''कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहि उससे समासान्त तद्धित संज्ञक इच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र के सप्तम्यन्त समास में केशाकेशि यह उदाहरण है। केशेषु केशेषु गृहीत्वा वदं युद्धं प्रवृत्तम् इस लौकिक विग्रह में प्रक्रिया कार्य में केशाकेश इस स्थित प्रकृतसूत्र से कर्मव्यतिहार में बहुव्रीहि के केशाकेश इससे समासान्त इच् प्रत्यय होता है। इसके बाढ् इच के चकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर केशाकेश र इस स्थित, पूर्व के ''यचिभम्'' इससे भसंज्ञा होने पर ''यस्येति च'' इससे भसंज्ञक अन्त्य अकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर केशाकेशि निरूपन्न होता है।

इसके बाद निष्पन्न केशाकेशि इससे नपुंसक होने पर प्रक्रिया कार्य में सुप्रत्यय होने पर केशाकेशि रूप बना।

पाठगत प्रश्न-4

32. ''दिङ्नामान्यत्तराले'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

33. ''दिङ्नामान्यन्तराले'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

34. ''तत्र तेनेदमिति सरूपे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

35. ''इच्कर्मव्यतिहारे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

36. ''केशाकेशि यहाँ विग्रह क्या है?

(4.13) ''तेन सहेति तुल्ययोगे''

सूत्रार्थ–तुल्ययोग होने पर वर्तमान सह अव्यय को तृतीयान्त के साथ विकल्प से समास होता है। और वह समास बहुव्रीहिसंज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–षड्विधि पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में लेन सह इति तुल्ययोगे यह पदच्छेद है। तेन पद सप्तम्यन्त अव्यय पद है। सह इस साहित्यबोधक अव्ययपद है। तुल्ययोगे यह सप्तम्यन्तवचनान्त पद है। युगपत्कालिक क्रिया योगे यही अर्थ है। (एक साथ होने वाली क्रियाओं का योग)। तेन पद से तृतीयान्त पद प्राप्त होता है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''विभाषा'', ''शेषोबहुव्रीहि:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। और सूत्र का अर्थ होता है–तुल्य योग में वर्तमान के साथ अव्यय को तृतीयान्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह समास बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है-सहपुत्र: अथवा सपुत्र: पुत्रेण सह इस लौकिक विग्रह में पुत्र टा सह इस अलौकिक विग्रह में प्रकृतसूत्र से तृतीयान्त से पुत्र टा इससे तुल्ययोग में वर्तमान को सह अव्यय बहुव्रीहिसमास संज्ञक होता है। इसके बाद प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर प्रक्रियाकार्य में सहपुत्र शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सह का विकल्प से स आदेश होता है। उसके बाद निष्पन्न शब्द सुपुत्र से सुप्रत्यय होने पर सपुत्र: रूप बना। और सह के स आदेश के अभाव में सु प्रत्यय होने पर सहपुत्र: रूप बना। और सह के स आदेश के अभाव में सु प्रत्यय होने पर सहपुत्र: रूप बना।

सहपुत्र: सपुत्र: इत्यादि में विकल्प से स आदेश विधायक यह सूत्र प्रवृत्त है।

(5.14) ''वोपसर्जनस्य''

सूत्रार्थ–उपसर्जनसर्वावयवक का बहुव्रीहि में अवयव के सह का विकल्प से स आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों की षङ विधियों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सह का विकल्प से स आदेश होता है। इस सूत्र में वा उपसर्जनस्य पदच्छेद है। ''वा'' यह विकल्पार्थक अव्यय पद है। उपसर्जनस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। ''अलुसुत्तरपदें इससे उपपदे यह यह अधिकृत सूत्र है। ''सहस्य स: संज्ञायाम्'' इस सूत्र से सहस्य स: इन दोनों पदों की अनुवृत्ति आती है। उपसर्जनम् अस्य अस्ति उपसर्जन: (उपसर्जन इसका है उपसर्जन) मतुप् अर्थ में अर्श और आद्यच्। उत्तरपद से आक्षिप्त समास ही विशेष्य है। उपसर्जन का तात्पर्य उपसर्जन के समान समास का है। उपसर्जन स: वा अवयक का ही तात्पर्य है। उपसर्जन का इससे लब्ध बहुव्रीहि

का अन्वय होता है। बहुव्रीहि का षष्ठी अवयव है। और सूत्र का अर्थ होता है–उपसर्जन सः वा अवयवक का बहुव्रीहि के अवयव सह का विकल्प से स आदेश होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है सहपुत्रः सुपत्रः। पुत्रेण सह इस लौकिक विग्रह में पुत्र टा सह इस अलौकिक विग्रह में ''तेन सहेति तुल्योगे'' इससे बहुव्रीहि समास होने पर सहपुत्र निष्पन्न होता है। इसके बाद प्रकृत सूत्र से सह का विकल्प से स आदेश होने पर निष्पन्न सपुत्र शब्द से सु प्रत्यय होने पर सपुत्रः रूप बना। और उसके अभाव पक्ष में सहपुत्रः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-6

37. ''तेन सहेति तुल्ययोगे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

38. ''वोपसर्जनस्य'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

39. ''तुल्ययोगे'' इस पद का क्या अर्थ है?

40. सहपुत्रः, सपुत्रः यहाँ सह का विकल्प से स आदेश किस सूत्र से और कैसे होता है?

पाठ सार

इस पाठ में बहुव्रीहिसमास प्रतिपादित हुआ है। प्राय अन्य पद का अर्थ प्रधान हो जिसमें बहुव्रीहि समास कहलाता है। यह बहुव्रीहि समास का सामान्य लक्षण है। और यह बहुव्रीहि समास ''शेषो बहुव्रीहिः'' इस अधिकार बल से ''चार्थे द्वन्द्वः'' इस सूत्र से पहले तक प्रवृत्त होता है। यहाँ बहुव्रीहि समास विधायक ''अनेकमन्य पदार्थे'', ''संख्ययाव्ययासथादूराधिकसंख्याः संख्येये'', ''दिङ्नामान्यन्तराक्षे'', ''तत्र तेनेदमिति सरुपे'', ''तेन सहेति तुल्ययोगे'' इन पाँच सूत्रों की व्याख्या की गई है। बहुव्रीहि में पूर्वनिपात विधायक ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' सूत्र प्रस्तुत किया गया है। सप्तमी विशेषणे यहाँ सप्तमी पदसत्व से व्यधिकरणपदी बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद सप्तम्यन्त का अलुग्विधान के लिए हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्'' सूत्र की व्याख्या की गई है।

''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरवदलोपः'', ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'', ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्थरेत्तरपदलोपश्च'' इससे वार्तिकों का संग्रहण है उनसे बहुव्रीहि समास के पूर्व पद का उत्तरपद का लोप होता है।

इसके बाद बहुव्रीहि में पुंबद्भाव विधायक सूत्र ''स्त्रियाः पुंबद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' यह सूत्र प्रस्तुत किया गया है। ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'' इस समासान्त का अप् प्रत्यय का ''बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात्'' डच् प्रव्यय के ''इच्कर्मव्यतिहारे'' इच् प्रव्यय विधायक तीन सूत्रों की व्याख्या की गई है। आसन्नविंशा इत्यादि में ति शब्द के लोप विधायक

''ति विंशतेर्डिति'' यह सूत्र सहपुत्रः, सपुत्रः इत्यादि में विकल्प से स आदेश विधायक ''वोपसर्जनस्य'' सूत्र की व्याख्या की गई है। और समास से बहुव्रीहि समास इस पाठ में प्रस्तुत किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''अनेकमन्थपदार्थे'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
2. ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
3. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी प्रियादिषु'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
4. ''बहुव्रीहौ संख्येये डज बहुगणात्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
5. ''दिङ्नामान्यन्तराले'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
6. ''तत्र तेनेदमिति सरुपे'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
7. ''तेन सहेति तुल्ययोगे'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
8. ''संख्ययाव्ययासन्नदूराधिकसंख्याः संख्येये'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
9. ''पीताम्बरः'' रूप को सिद्ध करो?
10. ''कण्ठेकालः'' रूप को सिद्ध कीजिये?
11. ''चित्रगुः रूप को सिद्ध कीजिये?
12. दक्षिणपूर्वा रूप को सिद्ध कीजिये?
13. केशाकेशि रूप को सिद्ध कीजिये?
14. सपुत्रः रूप को सिद्ध कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. सूत्र में शेषः नाम उक्तादन्यः का है।
2. ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से पहले तक है।
3. ''अनेकमन्यपदार्थे'', ''संख्ययाव्ययासन्नदूराधिकसंख्यासंख्येये'', ''दिङ्नामान्यन्तराले'', ''तत्र तेनेदमिति सरूपे'' और ''तेन सहेति तुल्ययोगेच''।

टिप्पणियाँ

4. अन्यपद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पद को विकल्प से समास होता है। और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

5. ''बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त को और विशेषण को पूर्व प्रयोग होता है।

6. हलन्त से और अदन्त से सप्तमी के उत्तरपद परे संज्ञा में गम्यमान नहीं होने पर लोप नहीं होता है।

7. अनेकम् यह प्रथमान्त का विशेषण है।

8. कण्ठे कालः।

9. अदत्तशब्द कण्ठशब्द से सप्तमी के ङि के विधान से उसका लोप (लुक्) होता है।

उत्तर-2

10. प्र आदि से पर जो धातुजकृदत्तशब्द तदत्त प्रथमान्त का प्रथमात्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है और बहुव्रीहि में पूर्वपदस्थ धातुज के उत्तरपद का विकल्प से लोप होता है।

11. प्रकृष्टानि पतितानि इति विग्रहः।

12. नञ् के पर अस्त्यर्थक शब्दान्त का प्रथमान्त का प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है। और बहुव्रीहि में पूर्वपदस्थ का अस्त्यर्थक का उत्तरपद का विकल्प से लोप होता है।

13. अविद्यमानः पुत्रः यस्थ सः इति विग्रहः।

14. सप्तम्यन्त सहित और उपमान सहित पूर्वपद के पदात्तर से समास पूर्वपद का और उत्तरपद लोप होता है।

15. कण्ठेकालः।

16. उष्ट्रमुखः।

उत्तर-3

17. पुंवद्भावः।

18. तुल्य प्रवृत्ति निमित्त होने पर जो पुल्लिंग वाचक है उससे पर ऊङअभाव जहाँ तथाभूत स्त्रीवाचक शब्द का पुल्लिंगवाचक रूप समानाधिकरण में स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद होता है किन्तु पूरणी और प्रियादि शब्दों के परे नहीं होता है।

19. अनूङ् पद का सत्व से वामोकशब्द का ऊङ प्रत्ययातत्त्व से पुंवद्भावः नहीं होता है।

20. सूत्र में अपूरणीप्रियादिषु पद के सत्व होने पर कल्याणी पञ्चमी यासां राजीणां ताः कल्याणीपञ्चमाः रात्रयः यहाँ पर पञ्चमी पूरण अर्थ प्रत्ययान्त में स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद परे,

कल्याणी प्रिया यस्य स कल्याणीप्रियः यहाँ स्त्रीलिङ्ग में प्रियाशब्द में उत्तरपद में पुंवद्भाव नहीं होता है।

21. चित्रगुः।

22. सामासान्त अप् प्रत्यय।

23. पूरणार्थ प्रत्ययान्त जो स्त्रीलिङ्ग तदन्त प्रमाव्यत्त बहुव्रीहि के समासान्त तद्धित संज्ञक अप् प्रत्यय होता है।

24. कल्याणी पञ्चमाः, स्त्री प्रमाणः पुरुषः।

उत्तर-4

25. संख्येयवाचक एकादिसंख्याशब्द से अव्यया आदि से विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

26. संख्येय जो बहुव्रीहि उससे समासान्त तद्धितसंज्ञक डच् प्रत्यय होता है किन्तु बहुगणशब्दान्त से बहुव्रीहि समाज नहीं होता है।

27. सूत्र में अबहुगणात् पद के सत्व होने से समीप में जो है, गणस्थ समीपे ये सन्ति इस विग्रह में यथाक्रम-निष्पन्न उपबहुशब्द से और उपगणशब्द से डच् प्रत्यय होता है।

28. डित् (ड की इत्संज्ञा) परे विंशति के भसंज्ञक के ति का लोप होता है।

27. दशानां समीपे ये इस विग्रह में उपदशाः।

30. संख्येय जो बहुव्रीहिः उससे ''बहुव्रीहौसंख्येयेडजबहुगणात्'' सूत्र से होता है।

31. ति विंशतेर्डिति इस सूत्र से।

उत्तर-5

32. दिशा नाम वाची अन्तरालवाच्य में विकल्प से समास होता है, वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

33. दक्षिणपूर्वा

34. सप्तम्यन्त ग्रहण विषय में सरूपपद में और तृतीयान्त में प्रहरण विषय में इदं युद्धं प्रवृत्तम् इस अर्थ में कर्मव्यतिहार में द्योत्य होने पर विकल्प से समास होता है, वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

35. कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहि समास है उससे समासान्त तद्धित संज्ञक इच् प्रत्यय होता है।

36. केशेषु केशेषु ग्रहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् इति विग्रहः।

उत्तर-6

37. तुल्ययोग में वर्तमान के साथ अव्यय तृतीयान्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह समास बहुव्रीहि (संज्ञक) होता है।

38. उपसर्जनसर्वावयवक का बहुव्रीहि अवयव का सह के साथ विकल्प से स आदेश होता है।

39. युगपत् कालिक क्रिया योगे इति अर्थः।

40. सहपुत्रः, सपुत्रः यहाँ उपसर्जनसर्वावयवक का बहुव्रीहि के अवयव सह का विकल्प से स आदेश होता है और वह ''वोपसर्जनस्य'' सूत्र से होता है।

पाचवां पाठ समाप्त

6

बहुव्रीहि समास
समासान्त प्रत्यय निपात व्यवस्थादि

इस पाठ में बहुव्रीहि समास के अवशिष्ट अंश का आलोचन होता है। बहुव्रीहि समास में समासान्त प्रत्यय विधायक सूत्र और समासान्त आदेश विधायक सूत्र हैं उनकी यहाँ आलोचना की जा रही है। इसके बाद कभी बहुव्रीहि समास में निपातन होता है उसका वर्णन किया जा रहा है। बहुव्रीहि में पूर्वनिपात विषय में यहाँ आलोचना हो रही है। इसके बाद समास विधायक सूत्रवर्णनावसर पर उसके उदाहरणों में विसर्ग के आदेश विधान के लिए जो सूत्र अपेक्षित हैं उनका भी यहाँ संग्रहण किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- बहुव्रीहि में समासान्त प्रत्यय विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- बहुव्रीहि में समासान्त आदेश विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- बहुव्रीहि में निपातन को जान पाने में;
- बहुव्रीहि पूर्वनिपात विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- बहुव्रीहि की उपयोगिता से विसर्ग के आदेश विधायक सूत्रों को जान पाने में।

टिप्पणियाँ

(6.1) ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' (5.4.113)

सूत्रार्थ–स्वाङ्गवाची सक्थ्यन्त बहुव्रीहि में समासान्त तद्धितसंज्ञक षच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त षच् प्रत्यय होता है। चतुष्टयपदी इस सूत्र में बहुव्रीहौ यहाँ पञ्चमी अर्थ में सप्तमी है। सक्थ्यक्ष्णोः यहाँ पञ्चम्यर्थ में षष्ठी है। ''व्यत्ययो बहुलम्'' छन्दसि वचन से? स्वाङ्गात् पञ्चमी एकवचनान्त पद है और षच् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''सक्थ्यक्ष्णोः'' यहाँ पर तदत्तविधि में सक्थ्यक्ष्यन्ताद्'' प्राप्त होता है।

''स्वाङ्गात् सक्थ्यक्ष्णोः बहुव्रीहौ'' इसका अर्थ हे स्वाङ्गवाची सक्थ्यक्ष्यन्त से बहुव्रीहि समास होता है। और सूत्रार्थ आता है–स्वाङ्गवाची सक्थ्यक्ष्यत्त बहुव्रीहि का समासान्त तद्धित संज्ञक षच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–स्वाङ्गवाचीसक्थ्यन्त बहुव्रीहि का उदाहरण है तावत् दीर्घसक्थः। दीर्घे सक्थिनी यस्य स इस लौकिक विग्रह में दीर्घ औ सक्थि औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्य पदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहो'' इससे विशेषण का दीर्घ औ का पूर्व निपात होने पद दीर्घ औ सक्थि औ होने पर समास के ''कृन्तद्धितसमासाश्च'' इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातु प्रातिपदिकयोः'' इससे प्रातिपदिक अवयव का सुप् के औ प्रत्यय का (दोनों) लोप होने पर दीर्घसक्थि होता है। तब स्वाङ्गवाची दीर्घसक्थि से बहव्रीहि के प्रकृत सूत्र से समासान्त षच् प्रत्यय होता है। षचयोः (दोनों प्रत्ययों) क्रमानुसार ''षः प्रत्ययस्थ'' इससे ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे इन दोनों का लोप होने पर दीर्घसक्थि अ होता है। इसके बाद ''यचि भम्'' इससे पूर्व की दीर्घसक्थि शब्द की भसंज्ञा होने पर ''यस्थेति'' इससे भसंज्ञक दीर्घसक्थि अकार के अन्त्य इकार का लोप होने पर सर्व संयोग होने पर दीर्घसक्थशब्दः निष्पन्न होता है। इसके बाद सु प्रत्यय दीर्घसक्थः रूप होता है।

(6.2) ''द्वि त्रिभ्यां ष मूर्ध्नः'' (5.4.115)

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में द्वि, त्रि, परे मूर्ध्न समासान्त तद्धितसंज्ञक ष प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त ष प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में ''द्वित्रिभ्याम्'' यह पञ्चमी द्विवचनान्त पद है। ''ष'' यह लुप्त प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''मूर्ध्नः'' यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है।'' बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। द्विश्च त्रिश्च द्वित्री, ताभ्यां द्वित्रिभ्याम् यहाँ इतरेतर द्वन्द समास है। और सूत्रार्थ आता है कि ''बहुव्रीहि समास में द्वि त्रि शब्दों से परे मूर्ध्न समासान्त तद्धितसंज्ञक ष प्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावत् द्विमूर्घः। दौ मूर्धानौ यस्य स इस लौकिक विग्रह में द्वि औ मूर्घन औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इससे विशेषण के द्वि औ का पूर्व निपात होने पर द्वि औ मूर्घन औ होने पर समास की ''कृतद्धित्तसमासाश्च'' इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इससे प्रातिपदिक अवयव के सुप् के प्रत्यय (दोनों) का लोप होने पर द्विमूर्घन होता है। द्विमूर्घन बहुव्रीहि संज्ञक प्रकृत सूत्र से समासान्त ष प्रत्यय होने पर बकार के ''षः प्रत्ययस्य'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर द्विमूर्धन अ होता है। इसके बाद पूर्वपद का द्विमूर्घन शब्द के ''यचिभम्'' इससे भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे भसंज्ञक द्विमूर्घन के टि के अन् का लोप होने पर सर्वसंयोग से द्विमूर्घ। शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सु प्रत्यय होने पर द्विमूर्घः रूप बना। इसी प्रकार त्रिमूर्घः इस सूत्र का उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. दीर्घसक्थः यहाँ विग्रह क्या है?
3. ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात षच्'' इस सूत्र के स्वाङ्गवाची अक्ष्यत्त का उदाहरण क्या है?
4. ''द्वित्रिभ्यां ष मूर्घ्नः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
5. ''द्वित्रिभ्यां ष मूर्घ्नः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

(6.3) ''अन्तर्बहिभ्यां च लोम्नः'' (5.4.117)

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में अन्तः (अन्दर), बहि (बाहर) शब्दों के परे लोम्न समासान्त तद्धित संज्ञक शब्द को अप् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अप् प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में अन्तर्बहिभ्याम् यह पञ्चमी द्विवचनान्त पद है। ''च'' अव्यय पद है। चकार से ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'' इस सूत्र से अप् की अनुवृत्ति होती है। लोम्नः यह पञ्चमी एकवचनान्त है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासाक्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। और सूत्रार्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में (अन्तर्बहिर्भ्या) अन्तः और बहिः शब्दों से परे लोमन् समासात्त तद्धितसंज्ञक अप् प्रव्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावद् अन्तर्लोगः। अन्तः लोमानि यस्य स इस लौकिक विग्रह में अन्तर लोमन् औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि

समास होता है। इसके बाद प्रक्रियाकार्य में समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर अन्तर्लोमन् होता है। अन्तर्लोमन् शब्द का ''यचिभम्'' इससे भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे भसंज्ञक अन्तर्लोमन् के टि (अन्) का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर अन्तर्लोम शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सु प्रत्यय होने पर अन्तर्लोमः रूप बना। उसी प्रकार की बहिर्लोमः सूत्र का उदाहरण है।

(6.4) ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में हस्ति आदि से वर्जित उपमान से पर पाद शब्द का समासान्त लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्तलोप होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में पादस्य लोपः अहस्त्यादिभ्यः पदच्छेद है। पादस्य षष्ठी एकवचनान्त पद है। लोपः प्रथमा एकवचनान्त पद है। अहस्त्यादिभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति आती है। ''उपमानाच्च'' इस सूत्र से उपमानात् की अनुवृत्ति आती है। ''समासान्ताः'' यह अधिकृत है। न हस्त्यादयः अहस्त्यादयः तेभ्यः अहस्त्यादिभ्यः यहाँ नञ्तत्पुरुष समास है। अहस्त्यादिभ्यः उपमानात् पादस्य समासान्तः लोपः बहुव्रीहौ यह अन्वय है। और सूत्रार्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में हस्त्यादि वर्जित उपमान से परे पादशब्द का समासान्त का लोप होता है।

''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से यह समासान्त लोप पादशब्द के अन्त्य अकार का होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–तावत् व्याघ्रपात्। व्याघ्रपादौ इव पादौ यस्य स इस लौकिक विग्रह में व्याघ्रपाद् औ पाद औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् का लोप होने पर व्याघ्रपाद पाद इस स्थिति में ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्थोत्तरपदलोपश्च'' इस वार्तिक से बहुव्रीहि समास में पूर्वपद का व्याघ्रपादशब्द के उत्तरपद के पादशब्द का लोप होने पर व्याघ्रपादशब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद बहुव्रीहि समास में अहस्त्यादि वाचक उपमान व्याघ्रशब्द के विद्यमानत्व से इसके पर पादशब्द के ''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से परिष्कृत प्रकृत सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर व्याघ्रपाद् शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग में सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में ''वाडवसाने'' इससे वैकल्पिक चर्त्व होने पर व्याघ्रपात् होता है। चर्त्व अभाव पक्ष में व्याघ्रपाद् रूप बना है।

पाठगत प्रश्न-2

6. ''अन्तबर्हिर्भ्यां च लोम्नः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

7. ''अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

8. ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र से क्या होता है।

9. ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

10. ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

(6.5) ''संख्यासुपूर्वस्य'' (5.4.140)

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में संख्यावाचक पूर्वशब्द का और सु अव्यय पूर्व का पादशब्द के समासान्त का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त का लोप होता है। एकपदात्मक इस सूत्र में संख्यासुपूर्वस्य षष्ठी एकवनात्त पद है। ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र से पादशब्द की अनुवृत्ति होती है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ताः'' यह अधिकृत सूत्र है। संख्या च सु श्च संख्यासू इतरेतरद्वन्द समास है। संख्यासू पूर्वौ यस्य संख्यासुपूर्वः, तस्यसंख्यायु पूर्वस्य बहुव्रीहि समास है। और सूत्रार्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में संख्या वाचकपूर्व का सु अव्ययपूर्व का पादशब्द का समासान्त लोप होता है।

''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से यह समासान्त लोप पाद शब्द का अन्त्य के अकार का होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–तावत् द्विपात्। द्वौ पादौ यस्य स (दो पैर हैं जिसके वह) लौकिक विग्रह में द्वि औ पाद औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से विशेषण के द्वि औ का पूर्व निपात होने पर समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' इससे प्रातिपदिक अवयव के सुबन्त दोनों औ प्रत्ययों का लोप होने पर द्विपाद शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद परिभाषा से परिष्कृत प्रकृत सूत्र से लोप होने पर द्विपात् निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग में सु प्रत्यय प्रक्रियाकार्य में ''वाडवसाने'' इससे वैकल्पिक चर्त्व होने पर तकार होने पर द्विपात् रूप होता है, और चर्त्व अभाव पक्ष में द्विपात् रूप होता है इसी प्रकार सुपात्, सुपाद् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-3

11. ''संख्यासुपूर्वस्थ'' इस सूत्र से क्या होता है?

12. ''संख्यासुपूर्वस्य'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

13. ''संख्यासुपूर्वस्य'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

14. ''संख्यासु पूर्वस्थ'' इस सूत्र से विहित लोप अन्त्य का कैसे होता है?

टिप्पणियाँ

(6.6) ''उद्विभ्यां काकुदस्य''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहिसमास उत्, द्वि से परे काकुदशब्द का समासान्त लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त लोप होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में उद्विभ्याम् यह पञ्चमीद्विवचनान्त पद है। काकुदस्य यह षष्ठीएकवचनान्त पद है। ''ककुदस्यावस्थायां लोपः'' इस सूत्र से लोप की अनुवृत्ति होती है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ताः'' यह अधिकृत सूत्र है। उच्च विश्व उद्वी, ताभ्याम् उद्विभ्याम् इतरेतशब्द समास है। उद् वि इन दो निपातों से तात्पर्य है। और सूत्रार्थ होता है–''बहुव्रीहि समास में उद्, वि आदि परे काकुद शब्द के समासान्त का लोप होता है।''

''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से यह समासान्त लोप काकुदशब्द के अन्त्य अकार का होता है।

उदाहरण–

इस सूत्र का उदाहरण है तावत् उत्काकुत् उद्गतं काकुदं यस्य स इस लौकिक विग्रह में उद्गत सु काकुद सु इस अलौकिक विग्रह में ''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'' इस वार्तिक से बहुव्रीहि समास में, विशेषण का पूर्व निपात होने पर सुप् लोप होने और वार्तिक से पूर्वपद के उद्गत के उत्तरपद का गति का लोप होने पर उद् काकुद् होता है। इसके बाद ''खरि च'' इससे दकार के चर्त्व होने पर तकार में उत्काकुदशब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद बहुव्रीहि समास में उत् का पर काकुदशब्द के सत्व होने पर काकुद शब्द के अन्त्य अकार का ''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से परिष्कृत प्रोक्त सूत्र से लोप होने पर उत्काकुद् निष्पन्न होता है। इसके बाद पुंसत्व होने पर सु प्रत्यय का प्रक्रिया कार्य में ''वाडवसाने'' इससे वैकल्पिक चत्व होने पर तकार में उत्काकुत् रूप बना। चर्त्व की वैकल्पितता से और उसके अभाव में उत्काकुद् बना। इसी प्रकार विकाकुत्, विकाकुद हो रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-4

15. ''उद्विभ्यां काकुदस्थ'' इस सूत्र से क्या होता है।
16. ''उद्विभ्यां काकुदस्य'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
17. ''उद्विभ्यां काकुदस्य'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
18. ''उद्विभ्यां काकुदस्य'' इस सूत्र से विहित अन्त्य का लोप क्यों/कैसे होता है?

(6.7) ''पूर्णाद्विभाषा''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में पूर्णशब्द से पर काकुदशब्द के विकल्प से समासान्त लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासात्त का लोप होता है। द्विपदात्यक इस सूत्र में पूर्णात् पञ्चमी एकवचनात्त पद है और ''विभाषा'' यह विकल्प बोधक अव्यय पद है। ''ककुदस्या वस्थायां लोपः'' इस सूत्र से लोप की अनुवृत्ति होती है। ''बहुव्रीहों सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ताः'' यह अधिकृत सूत्र है। और सूत्रार्थ आता है–बहुव्रीहि समास में पूर्णशब्द से पर काकुदशब्द का विकल्प से समासात्त लोप होता है।''

''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से यह समासान्त लोप काकुद शब्द के अन्त्य अकार का लोप होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावत् पूर्ण काकुत्। पूर्णं काकुदं यस्य स लौकिक विग्रह में पूर्ण सु काकुद सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। यहाँ विशेषण के पूर्ण सु इसका पूर्णनिपात होने पर सुप् का लोप होने पर पूर्णकाकुदशब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद बहुव्रीहि समास में पूर्णशब्द से पर काकुदशब्द के सत्व से ''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से परिष्कृत प्रोक्त सूत्र से काकुटशब्द का विकल्प से अन्त्य अकार का लोप होने पर पूर्णकाकुद् निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में ''वाडवसाने'' इससे वैकल्पिक चर्त्व तकार होने पर पूर्णकाकुत् रूप बना। चर्त्व के वैकल्पिकता के अभाव में पूर्णकाकुद रूप बना। समासान्त लोप के वैकल्पिकत्व से उसके अभाव में सु प्रत्यय की प्रक्रिया कार्य में पूर्णकाकुद्ः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-5

19. ''पूर्णाद्विभाषा'' इस सूत्र से क्या कार्य होता है।

20. ''पूर्णाद्विभाषा'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

21. ''पूर्ण काकुदं यस्य इति विग्रह में कितने रूप होते हैं?

22. ''पूर्णाद्विभाषा'' इस सूत्र से विहित अन्त्य का लोप कैसे होता है?

(6.7) ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में (सुदुर्भ्यां) सु, दुर् परे हृदय शब्द के समासान्त हृद् भाव का निपात होता है क्रमशः मित्र, अमित्र अर्थों में।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासात्त हृद्भाव का निपातन होता है। द्वि पदात्मक सूत्र में सुहृद्-दुर्हृदौ प्रथमा द्विवचनान्त पद है। मित्रामित्रयोः यह सप्तमी द्विवचनात्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासात्ताः'' यह अधिकार सूत्र है। सहृत, च दुर्हृत् च सुहृद्-दुर्हृदौ यह इतरेतर द्वन्द समास है। मित्रं च अमित्रः च मित्रामित्रौ, तयोः मित्रामित्रयोः यहाँ इतरेतरद्वन्द समास है। वस्तुतः निपातन मित्र अर्थ

टिप्पणियाँ

में सुहृत् शब्द और अमित्र अर्थ में दुर्हृत् शब्द:। यह हृदय का हृद भाव ही निपात प्राप्त होता है। यह सूत्र का अर्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में सु, दुर् परे हृदयशब्द के समासान्त कह भाव का निपात होने पर प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में सु, दूर् से परे हृदयशब्द के समासात्त हद् भाव का निपात होने पर क्रमश: मित्र, अमित्र अर्थों में।

उदाहरण–

इस सूत्र का उदाहरण है सुहृत्। शोभनं हृदयं यस्य स (शोभन हृदय है जिसका) सु हृदय सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्थपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होने पर और सुप् का लोप होने पर सुहृदय शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद बहुव्रीहि समास में सु निपात से परे हृदयशब्द का सत्व होने से हृदय शब्द के स्थान पर मित्र अर्थ में उक्त सूत्र से समासान्त हृद् आदेश होने पर सु हृद् निष्पन्न होता है इसके बाद पुल्लिंग में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में ''वाडवसाने'' इसे वैकल्पिक चर्त्व होने पर तकार में सुहृत्' रूप बना। चर्त्व के वैकल्पिकता से उसके अभाव पक्ष में सुहृद् रूप बना। इसी प्रकार अमित्र अर्थ में तो दुर्हत्, दुर्हृद् ये दो रूप बने।

(6.7) ''उर: प्रभृतिभ्स: कन्''

सूत्रार्थ–उर: आदि तक बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक कप् प्रव्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त कप् प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में उर:प्रभृतिभ्य: यह पञ्चमी बहुवचनात्त पद है। रूप् यह प्रथमा एकवचनात्त पद है।'' बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो: स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति आती है। और विभक्ति विपरिणाम से बहुव्रीहि होती है। उरस् आदि शब्द आदि में है जिसके ते उर:प्रभृतय: तेभ्य उर:प्रभृतिभ्य: इस पद में तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास होता है। उर: प्रभृतिभ्य: पद बहुव्रीहि का विशेषण है। उससे तदत्तविधि में उर:प्रभृत्यत्त से बहुव्रीहि प्राप्त होता है। ''प्रत्यय:'', ''परच'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकार सूत्र हैं। और सूत्रार्थ आता है उरस् आदि से बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक कप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–तावद् व्यूटोरस्क:। व्यूढम् उर: यस्य स इस लौकिक विग्रह में व्यूढ़ सु उरस सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से विशेषण के व्यूढ सु का पूर्व निपात होने पर व्यूढ सु उरस् सु होने पर समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुबन्त के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर और गुण होने पर व्यूढोरस् होता है। व्यूटोरस बहुव्रीहिसंज्ञक उरस् शब्द से प्रकृत सूत्र से समासात्त में रूप् प्रत्यय होने पर पकार के तहलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोप:'' इससे लोप होने पर व्यूढोरस् क इस स्थिति में प्रक्रिया कार्य में सर्वसंयोग होने पर व्यूढोरस्क शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय होने पर व्यूढोरस्क: रूप बना। इसी प्रकार प्रियं सर्पि: यस्य स इस विग्रह में प्रियसर्पिष्क: इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है।

समासात्त कप् प्रत्यय के आलोचन प्रसङ्ग में क्वचिद् व्यूढोरस्कः इत्यादि में विसर्ग का सकार आदेश और क्वचित् प्रियसर्पिष्कः इत्यादि में षकार आदेश होता है। सकार आदेश विधायक सूत्र अवतरित हो रहा है।

(6.10) ''सोडपदादौ''

सूत्रार्थ–पाश-कल्प-क-काम्यच् आदि प्रत्यय परे विसर्ग को संहिता की विवक्षा में सकार आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग का सकार आदेश होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में सः अपदादौ यह पदच्छेद है। सः प्रथमा एकवचनान्त पद है। अपदादौ यह सप्तमी एकवचनात्त पद है। सः यहाँ अकार उच्चारणार्थक है। ''विसर्जनीयस्य सः'' इस सूत्र से विसर्जनीयस्य पद की अनुवृत्ति होती है। ''कुप्वो क पौ च'' इस सूत्र से कुप्वोः पद की अनुवृत्ति आती है। ''तयोर्बाषचि संहितायाम्'' इस सूत्र से संहितायाम् पद की अनुवृत्ति आती हैं। न पदादिः अपदादिः, इस अपदादि में न-समास होता है। अपदादौ का कुप् व इस अन्वय से अपद आदि का कुप् वु अर्थ होता है। और अपपदादि में क वर्ग में और पवर्ग में परे विसर्ग के स्थान पर स् आदेश होता है। संहिता की विवक्षा में'' यही सूत्रार्थ आता है। अपदादि कवर्ग पवर्ग को पाश-कल्प-क-कामी आदि चार प्रत्ययों का ही संभव होता है। और ''पाश-कल्प-क-कामी आदि प्रत्यया परे विसर्ग का सकार आदेश संहिता की विवक्षा में होता है।''

उदाहरण–उस सूत्र के पाश पर उदाहरण पयस्याशम्। कल्पपि भरे उदाहरण है पयस्कल्पम्। काम्यच् होने पर उदाहरण है पयस्काम्यम् प्रकृते च व्यूढम् उरः यस्थ स इस लौकिक विग्रह में व्यूढ़ सु उरस् सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्प पदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से विशेषण का पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकत्व और सुप् का लोप होने पर गुण होने पर व्यूढोरस होने पर इसके बाद ''उरः प्रभृतिभ्यः रूप्'' इससे समासात्त में रूप् प्रत्यय होने पर व्यूढोरस् क होता है। तब ''खरवसानयोर्बिसर्जनीयः'' इससे सकार का खर प्रत्याहार परे विसर्ग आदेश होने पर व्यूढोरः क होने पर प्रकृतसूत्र से अपदादि प्रत्ययपरक विसर्ग का स आदेश होने पर पुल्लिंग में सु प्रत्यय में व्यूढोरस्कः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-6

23. ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः'' इस सूत्र से क्या होता है?

24. ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः'' इस सूत्र क्या अर्थ है?

25. ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

26. ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

टिप्पणियाँ

27. ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

28. ''सोऽपदादौ'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

29. ''सोडपदादौ'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

(6.11) ''इणः षः'' (1.3.37)

सूत्रार्थ–पाश-कल्प-क-कामच् आदि प्रव्ययों में परे इण के उत्तरपद के विसर्ग का षकार आदेश संहिता की विवक्षा में होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग का षकार आदेश होता है। ''सोऽपदादौ'' इससे प्राप्त सत्त्व के बाधकता से यह सूत्र अपवाद सूत्र है। द्विपदात्मक इस सूत्र में इणः यह पञ्चमी एकवचनात्त पद है। षः प्रथमा एकवचनात्त पद है। षः यहाँ अकार उच्चारणार्थक है। ''सोडपदादौ'' इस सूत्र से अपदादौ पद की अनुवृत्ति होती है। ''विसर्जनीयस्य सः'' इस सूत्र से विसर्जननीयस्य पद की अनुवृत्ति आती है। ''कुप्वो क पौच'' इस सूत्र से कुप्वोः पद की अनुवृत्ति होती है। ''तयोर्थ्वावचि संहिताथाम्'' इस सूत्र से संहितायाम् पद की अनुवृत्ति होती है। न पदारिः अपदादिः, तस्मिन् अपदादौ यहाँ नञ् समास है। अपदादौ का कुप्वोः के साथ अन्वय से अपदादि में कुप्वोः यह अर्थ होता है। और अपदादि में कवर्ग में और पवर्ग परे होने पर इण के परे विसर्ग के स्थान पर स् आदेश संहिता की विवक्षा में होता है। यही सूत्र का अर्थ आता है। अपदादि कवर्ग पवर्गत्व पाश-कल्प-क-काम्यं आदि चार प्रत्ययों में ही सम्भव होता है। और ''पाश-कल्प-क-कामी आदि प्रत्ययों में परे इण परे विसर्ग के संहिता के विवक्षा में विसर्ग के स्थान- पर षकार आदेश होता है।'' यही सूत्र का अर्थ आता है।

उदाहरण–इस सूत्र पा शप् परे उदाहरण है–सर्पिष्पाशम्। कल्प्अप्परे उदाहरण है–यजुष्कल्पम्। कामी अच् परे उदाहरण है–सर्पिष्काम्यम्। और प्रकृत में प्रियं सर्पिः यस्य स इस लौकिक विग्रह में प्रिय सु सर्पिस सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होने पर विशेषण का पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकत्व होने से और सुप् का लोप होने पर गुण होने पर प्रिय सर्पिस् होने पर इसके बाद ''उरः प्रभृतिम्यः कप्'' इस प्रकृत सूत्र से समासात्त में कप् प्रत्यय होने पर प्रियसर्पिस् क होता है।

तब ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' इससे सकार को विसर्ग आदेश होने पर प्राप्त सादेश को बांध कर इणः के परे ष आदेश होने पर पुल्लिंग होने पर प्रियसर्पिष्कः रूप बना।

प्रकरण उपयोगिता से विसर्ग के स्थान पर षत्व-सत्व विधायक सूत्र प्रवृत्त होता है।

(6.12) ''कस्कादिषु च'' (1.3.41)

सूत्रार्थ–कस्कादि में इण के उत्तर विसर्ग का षकार आदेश होता है। अन्यत्र तो सकार आदेश ही होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग का षकार आदेश और सकार आदेश होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में कस्कादिशु यह सप्तमी बहुवचनात्त पद है। और ''च'' अव्यय पद है। इवः षः सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति आ रही है। ''सोऽपदादौ'' इस सूत्र से सः पद की अनुवृत्ति आती है। ''विसर्जनीयस्य सः'' इस सूत्र से विसर्जनीयस्य पद की अनुवृत्ति आ रही है। ''कुत्वो क पौच'' इस सूत्र से कुप्नोः पद की अनुवृत्ति आ रही है। ''तयोर्थ्वावचि संहितायाम्'' इस सूत्र से संहितायाम् पद की अनुवृत्ति होती है। कास्कशब्द आदि येषां (कास्क शब्द है आदि में जिसके) कस्कादयः तेषु कस्कादिषु यहाँ तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिः समास होता है। और कस्कादि शब्दों में इण् प्रव्याहार से परे विसर्जनीयस्य के स्थान पर सकार आदेश होता है। कस्कादि में अन्यत्र विसर्जनीय के स्थान पर सकार आदेश होता है यहीं सूत्र का अर्थ आता है।

उदाहरणः–इस इण् परकत्व सूत्र का उदाहरण है–सपिष्कुण्डिका। सर्पिः कुण्डिका इस स्थिति में कस्कादिगण में पठित सर्पिः के इण के इकार से परे विसर्ग के प्रकृत सूत्र से षकार आदेश होने पर सर्विष्कुण्डिका रूप होता है। इष्परकत्व अभाव में कस्कः उदाहरण है। ''नित्यवीप्सयोः'' इस सूत्र से वीप्सा अर्थ में कः इस पद के द्वित्व होने पर कः क इस स्थिति में विसर्ग के इण् परकत्व अभाव से प्रकृत सूत्र से यकार आदेश होने पर कस्कः रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-7

30. ''इणः षः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
31. ''इणः षः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
32. ''प्रियसर्पिष्कः यहाँ षत्व आदेश किस सूत्र से होता है?
33. ''कस्कादिषु च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है।
34. ''कस्कादिषु च'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
35. ''सर्पिष्कुण्डिका यहाँ षत्व आदेश किस सूत्र से होता है?
36. कस्कः यहाँ सत्व आदेश किस सूत्र से होता है।

(6.13) ''इनः स्त्रियाम्'' (5.4.142)

सूत्रार्थ–इन्नन्त बहुव्रीहि के समासात्तद्धितसंज्ञक रूप् प्रत्यय होता है। स्त्रीत्व विवक्षा में।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासात्त रूप् प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में इनः पञ्चमी एक वचनान्त पद है। स्त्रियाम् सप्तमी एकवचनात्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति आती है। और विभक्तिविपरिणाम से बहुव्रीहेः होता है। ''उरःप्रभृतिभ्यः रूप्'' इससे रूप् की अनुवृत्ति होती है। इमः यह पद

टिप्पणियाँ

बहुव्रीहि का विशेषण है। उससे तङतविधि में इन्नन्त बहुव्रीहे पद प्राप्त होता है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकार सूत्र हैं। और सूत्रार्थ आता है। इन्नन्त बहुव्रीहि का समासात्त तद्धितसंज्ञक रूप् प्रव्यय होता है स्तीत्व विवक्षा में।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावत् बहुदण्डिका नगरी। दण्डः अस्था अस्ति इस विग्रह में ''अतइनिठनौ'' इस सूत्र से इनि प्रत्यय होने पर दण्डी शब्द निष्पन्न होता है। वहवः दण्डिनों यस्यां सा इस बहु जस् दण्डिन जस् इस अलौकिक विग्रह में अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से विशेषण का बहु जस् का पूर्व निपात होने पर बहु जस् दण्डिन् जस् होने पर समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इस सुप् दो जस् प्रत्ययों का लोप होने पर बहुदण्डिन् होता है। बहुदण्डिन इस बहुव्रीहि संज्ञक इवन्तत्व की स्त्रीत्व विवक्षा में प्रकृतसूत्र से समासान्त में कप् प्रत्यय होता है। पकार का ''हलन्त्यम्'' से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप होने पर बहुदण्डिन स्थिति होने पर नकार का लोप होने पर सर्वसंयोग से निष्पव बहुदण्डिन क स्थिति होने पर नकार का लोप होने पर सर्वसंयोग से निष्पव बहुदण्डिक शब्द से ''अजाद्यतष्टाप्'' इस सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में सर्वसंयोग होने पर बहुदण्डिक शब्द निष्पन्न होता है। इसके वाद सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में बहुदण्डिका रूप बना।

(6.14) ''शेषाद्विभाषा''

सूत्रार्थ–अनुक्त समासान्त से बहुव्रीहि का समासान्त तद्धिकसंज्ञक् कप् प्रत्यय विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासात्त कप् प्रत्यय विकल्प से होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में शेषात् यह पञ्चमी एकवचनात्त पद है तथा विभाषा यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् वच्'' इससे बहुव्रीहि में अनुवृत्ति आती है। और उसको विभक्ति विपरिणाम से ''बहुव्रीहेः'' होता है। ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' इस सूत्र से कप् की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''ग्तद्धिताः'' ''समासान्ताः'' में अधिकृत सूत्र हैं। जिससे समासान्त प्रत्यय विहित नहीं है वह ही शेष शब्द से ग्रहण किया जाता है। शेषात् नाम अनुक्त समासान्तात् (बिना कहा हुआ समासान्त का है)। और सूत्र का अर्थ आता है कि ''अनुक्त समासान्त से बहुव्रीहि का समासान्त तद्धित संज्ञक कप् प्रत्यय का विकल्प से होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है महायशक्कः। महद् यशोयस्थ स इस लौकिक विग्रह में महत् सु यशस् सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस विशेषण के महत् सु का पूर्वनिपात होने पर महत् सु यशस् सु इस स्थिति में ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपोधतुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से सुबन्त के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर महत् यशस् होने पर ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' इस सूत्र से महत् के तकार का आकार आदेश होने पर ''अकः सवर्णे दीर्घः'' इस सवर्ण हीर्घ होने पर महायशस् शब्द निष्पन्न होता है।

महायशस् इस बहुव्रीहि संज्ञक अनुक्त समासान्तत्व से प्रकृतसूत्र से विकल्प से समासान्त में कप् प्रत्यय होने पर पकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर महायशस् क इस स्थिति में ''खखसानयोर्विसर्जनीयः'' इससे खर् प्रत्यय परे सकार का विसर्ग आदेश होने पर महायशः क होने पर ''सोऽपदादौ'' इस सूत्र से विसर्ग का सकार आदेश होने पर सर्वसंयोग होने पर महायशस्क शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय होने पर महायशस्कः रूप बना। कप् के विकल्पता के अभाव में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में महायशाः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-8

37. ''इनः स्त्रियाम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

38. ''इन स्त्रियाम्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

39. ''शेषाद्विभाषा'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

40. ''शेषाद्विभाषा'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

41. महत् यशः यस्य स इस विग्रह में बहुव्रीहि कौन सा में कितने रूप हैं?

(6.15) ''निष्ठा''

सूत्रार्थ–निष्ठान्त का बहुव्रीहि में पूर्व प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पूर्व निपात होने का विधान है। एकपदात्मक इस सूत्र में निष्ठा प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति होती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व क्रियाविशेषण द्वितीया एकवचनान्त की अनुवृत्ति आती है। प्रयुज्यते यह क्रिया पद लिया गया है।'' क्त क्तवतु निष्ठा'' इस सूत्र से विहित स्तक्तवतु प्रत्ययों में निष्ठा संज्ञा होती है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्'' इस नियम से निष्ठा की तदत्त विधि में निष्ठान्त प्राप्त होता है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्'' इस नियम से निष्ठा का तदन्तविधि में निष्ठान्त पद प्राप्त होता है। बहुव्रीहि समास में निष्ठाप्रत्ययान्त पद पूर्व में प्रयोग होता है यही सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–निष्ठान्त का पूर्वनिपात होने पर युक्तयोगः इसका उदाहरण है। युक्तो योगो येन सः इस लौकिक विग्रह में युक्त सु योग सु इस अलौकिक विग्रह में अन्यपद के अर्थ में विद्यमान युक्त सु का योग सु प्रथमान्त का ''अनेकमन्य पदार्थे'' से बहुव्रीहि समास होने पर समास का ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर युक्त योग होता है। तब प्रोक्त सूत्र से निष्ठान्त मुक्त का पूर्णनिपात होने पर निष्पन्न युक्तयोग से विशेष्य के अनुसार पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में युक्तयोगः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-9

42. ''निष्ठा'' इस सूत्र से क्या होता है?

43. ''निष्ठा'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

44. ''निष्ठा'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

45. निष्ठा संज्ञा किसमें होती है?

(6.16) ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' (2.2.37)

सूत्रार्थ–आहितानि (आहित, अग्नि) आदि में बहुव्रीहि समास में निष्ठा प्रत्ययान्त पद को विकल्प से पूर्व प्रयोग होता है यही सूत्र का अर्थ है।

सूत्रव्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से पूर्व निपात होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में वा यह विकल्प बोधक अत्यय है। आहिताग्न्यादिषु यह सप्तमी बहुवचनान्त पद है। ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति आती है। और उसका आहिताग्न्यादिषु इस अन्वय से आहिताग्न्यादिषु बहुव्रीहिषु प्राप्त होता है। आहिताग्निः आदि येषां ते आहिताग्न्यादयः, तेषु आहिताग्न्यादिषु इसमें तद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहि समास होता है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् कियाविशेषण द्वितीया एकवचनान्त की अनुवृत्ति होती है। प्रयुज्यते यह क्रियापद लिया गया है। ''निष्ठा'' इस सूत्र से निष्ठा की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्यय ग्रहणे तदन्तग्रहणम्'' इस नियम से निष्ठा का तदन्तविधि में निष्ठान्तम् पद प्राप्त होता है। आहिताग्नि आदि बहुव्रीहि समास में निष्ठाप्रत्ययान्त पद को विकल्प से पूर्व प्रयोग होता है। यह सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–निष्ठान्त का विकल्प से पूर्वनियात होने पर आहिताग्निः अग्न्याहितः उदाहरण है। आहिता अग्न्यः येन सः इस लौकिक विग्रह में आहित जस् अग्नि जस् इस अलौकिक विग्रह में अन्यपदार्थ में विद्यमान आहित जस् का अग्नि जस् का और प्रथमा का ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे बहुव्रीहि में सुप् का लोप होने पर आहित अग्नि होता है। तब आहिताग्निगण में पाठ से प्रोक्त सूत्र से बहुव्रीहि में विकल्प से निष्ठान्त आहित का पूर्वनिपात होने पर सवर्णदीर्घ निष्पन्न आहिताग्नि विशेष्य के अनुसार पुल्लिंग होने पर सुप्रत्यय के प्रक्रिया कार्य में आहिताग्निः रूप बना। पूर्व निपात के वैकल्पिकता के अभाव में अग्नि आहित होने पर यण् निष्पन्न होने पर अग्न्याधित शब्द से पुल्लिंग में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में अग्न्याहितः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-10

46. ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' इस सूत्र से क्या होता है?

47. ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

48. ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

49. अग्न्यादितः आहिताग्निः ये दो रूप कैसे होते हैं?

पाठ सार

इस पाठ में बहुव्रीहि समास का अवशिष्ट अंश प्रस्तुत किया जा रहा है। बहुव्रीहि में समासान्त षच् प्रत्यय विधायक ''बहुव्रीहौ साक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् पच्'' सूत्र है। ''द्वित्रिभ्यांष मूर्ध्नः'' यह ष प्रत्यय विधायक सूत्र है। ''द्वित्रिभ्यांष मूर्ध्नः'' यह अप् प्रत्यय विधायक सूत्र है। ''अन्तर्बहिभ्यांच लोम्नः'' विधायक सूत्र है। इन चारों सूत्रों व्याख्या इस पाठ में की गई है। यहाँ पर ''पादस्यलोपोऽहस्त्यादिभ्यः'', ''संख्यासुपूर्वस्य'', ''उद्विभ्यांकाकुदस्य'', ''पूर्णाद्विभाषा'' इन समासान्त लोप विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई है। प्रसंग से ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः'' हृदयशब्द के छह आदेश निपात विधायक सूत्र की भी व्याख्या की गई है। निपातनं भवति इसका वर्णन किया जा रहा है। बहुव्रीहि में निपात विषय में यहाँ आलोचन होता है। इसके बाद धमास विधायक सूत्र वर्णन अवसर पर उसके उदाहरणों में विसर्ग के आदेश विधान के लिए जो सूत्र अपेक्षित हैं उनका भी यहाँ संग्रहण किया गया है। समासान्त के कप् प्रत्यय के विज्ञायक सूत्र है यहाँ ''उरः प्रमृतिभ्यः कप्'' ''इनःस्त्रियाम्'', ''शेषाद्विभाष'' इन तीनों सूत्रों की व्याख्या की गई है।

समासान्तपरि आलोचन अवसर पर ''सोडपदादौ'' यह सकार विधायक सूत्र, ''इणःषः'', ''कस्कादिषु च'' इस षकार आदेश विधायक सूत्रों की व्याख्या भी की गई है। इसके बाद बहुव्रीहि में पूर्वनिपात विधायक सूत्र ''निष्ठा'' और ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' प्रस्तुत किये गये हैं। इस पाठ में बहुव्रीहि समास का अपशिष्ट अंश प्रस्तुत किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इस सूत्र की व्याख्या की गई है?
2. ''द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
3. ''अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
4. ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
5. ''संख्यासुपूर्वस्य'' सूत्र की व्याख्या करो?
6. ''उद्विभ्यांकाकुदस्य'' सूत्र की व्याख्या करो?
7. ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' सूत्र की व्याख्या करो?
8. ''दीर्घसक्थः'' रूप को (साधो) सिद्ध कीजिये?
9. अन्तर्लोमः रूप को सिद्ध कीजिये?

10. द्विमूर्धः रूप को सिद्ध कीजिये?
11. व्याघ्रपात् रूप को सिद्ध कीजिये?
12. द्विपात रूप को सिद्ध कीजिये?
13. उत्काकुद् रूप को सिद्ध कीजिये?
14. ''पूर्णकाकुदः रूप को सिद्ध कीजिये?
15. व्यूढ़ोरस्कः रूप को सिद्ध कीजिये?
16. महायशस्कः रूप को सिद्ध कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. स्वाङ्गवाची सक्थ्यक्ष्यन्त बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक को षच प्रत्यय होता है।
2. दीर्घे सक्थिनी यस्य सः इस विग्रह में।
3. जलजाक्षी।
4. बहुव्रीहि समास में द्वि, त्रि शब्दों से परे मूर्ध्न समासान्त तद्धित संज्ञक को ष प्रत्यय होता है।
5. द्विमूर्धः।

उत्तर-2

6. बहुव्रीहि समास में अन्तः और बहि शब्द के परे लोमन् समासान्त तद्धित संज्ञक को अप् प्रत्यय होता है।
7. अन्तर्लोमः।
8. समासान्त लोप होता है।
9. बहुव्रीहि समास में हस्ति आदि से वर्जित उपमान से परे पाद शब्द के समासान्त का लोप होता है।
10. व्याघ्रपात्।

उत्तर-3

11. समासान्त लोप होता है।

12. बहुव्रीहि समास में संख्यावाचक पूर्व सु अव्ययपूर्व का पादशब्द के समासान्त लोप होता है?

13. द्विपात्।

14. अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से।

उत्तर-4

15. समासान्त लोप होता है।

16. बहुव्रीहि समास में उद्, वि परे काकुदशब्द के समासान्त लोप होता है?

17. उत्काकुत्।

18. अलोऽन्त्यस्थ परिभाषा से।

उत्तर-5

17. समासान्त लोप।

20. बहुव्रीहि समास में पूर्णशब्द से परे काकुदशब्द का विकल्प से समासान्त का लोप होता है।

21. तीन रूप।

22. अलोऽन्त्यस्य परिभाषा से।

उत्तर-6

23. समासान्त हृद् भाव निपात।

24. बहुव्रीहि समास में सु, दुर् से परे हृदय शब्द के समासान्त हृद् भाव का निपात होने पर क्रमशः, मित्र, अमित्र अर्थों में।

25. सुहृत्।

26. उरस् आदि तब से बहुव्रीहि समासान्त तद्धित संज्ञक कप् प्रत्यय होता है।

27. व्यूढोरस्कः।

28. संहिता की शिक्षा में पाश-कल्प-क-काम्य (कामी) प्रत्यय परे विसर्ग का सकार आदेश होता है।

29. पयस्पाशम्।

उत्तर-7

30. पाश्-कल्प-कामी आदि प्रत्ययों से परे इण के उत्तर पद के विसर्ग को षकार आदेश होता है।

टिप्पणियाँ

31. सर्पिष्पाशम्।

32. इणः षः इस सूत्र से।

33. कस्कादि गण में पठित इण प्रत्यय के उत्तर का विसर्ग का षकार होता है अन्य जगह तो सकार आदेश होता है।

34. सर्पिष्कुण्डिका।

35. ''कस्कादिषु च'' सूत्र से।

36. ''कस्कादिषु च'' सूत्र से।

उत्तर-8

37. स्त्रीत्व विवक्षा में इन्नन्त बहुव्रीहि का समासान्त को तद्धितसंज्ञक कप् प्रत्यय होता है।

38. बहुदण्डिका नगरी।

39. अनुक्त समासान्त बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक कप् प्रत्यय विकल्प से होता है।

40. महायशस्कः।

41. दो रूप।

उत्तर-9

42. पूर्वनिपात।

43. बहुव्रीहि में निष्ठान्त पूर्व में होता है।

44. युक्त योगः।

45. क्तबतु प्रत्ययों में निष्ठा संज्ञा होती है।

उत्तर-10

46. पूर्वनिपात।

47. आहिताग्नि आदि बहुव्रीहि में निष्ठान्त का पूर्व विकल्प से होता है।

48. आहिताग्निः, अग्नाहितः ये दो उदाहरण है।

49. विकल्प से निष्ठान्त आहित का पूर्वनिपात प्रक्रिया में आहिताग्निः रूप बनता है। पूर्व निपात के विकल्प के अभाव में अग्न्याहितः रूप बना।

षष्ठ पाठ समाप्त

7

द्वन्द समास-पूर्वपरनिपात विशेष कार्य और एकशेष

बहुव्रीहि समास से पर समास का भेद है द्वन्द। ''चार्थेद्वन्द:'' यह समास विधायक सूत्र है। यह समास पदार्थ प्रधान है। उभयपदयो: अर्थ: उभयपदार्थ (दोनों पदों का अर्थ)। उभय (दोनों) पदों के अर्थ प्रधान है जिसमें वह उभय पदार्थ प्रधान है। जैसे:- राम: च कृष्ण: च (राम और कृष्ण) इस विग्रह में रामकृष्णौ। यहाँ समस्यमान इन दोनों पदों में दोनों का ही प्राधान्य है। अत: रामकृष्णौ गच्छत: ऐसा कहने पर राम और कृष्ण दोनों का ही गमनक्रिया में ही प्राधान्य से अन्वय है। द्वन्द में पूर्व और पद निपात विधायक सूत्रों का यहाँ आलोचना की जा रही है।

और यह द्वन्द समास इतरेतरद्वन्द और समाहारद्वन्द दो भागों में विभक्त है। और समाहारद्वन्द में एकवद्भाव विधायक कुछ सूत्र हैं। उनकी यहाँ आलोचना की जा रही है। छन्द परि आलोचन अवसर पर उसके अपवाद से एकशेषविधान भी यहाँ आलोचना की जा रही है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- द्वन्दसमास विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- पूर्वपर निपातविधायक सूत्रों को जान पाने में;
- द्वन्द के अपवाद एकशेष को जान पाने में;
- द्वन्द में विशेषकार्य विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- द्वन्द अपवाद भूत एक शेष सूत्रों को जान पाने में।

टिप्पणियाँ

(7.1) ''चार्थेद्वन्दः'' (2.2.29)

सूत्रार्थ–अनेक सुबन्त को च अर्थ में वर्तमान विकल्प से समास होता है, और वह छन्द संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से द्वन्द समास होता है। इस सूत्र में चार्थे पद सप्तमी एकवचनान्त है। ''द्वन्दः'' यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''विभाषा'', ये दो अधिकृत सूत्र है। ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे अनेकम् और ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' उससे सुप् की अनुवृत्ति हो रही है। चस्थ अर्थः चार्थः (चका अर्थ) तस्मिन् चार्थे इसमें षष्ठी तत्पुरुषसमास है। सुप् यहां पर तदन्तविधि में अनेकम् इस अव्यय से अनेकं सुबन्तम् प्राप्त होता है। अनेक सुबन्त को च अर्थ में वर्तमान को विकल्प से समास होता है और वह समास द्वन्द संज्ञक होता है यही सूत्र का अर्थ है।

च अर्थो को भट्टोनिदीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी में कहा है-समुदाय, अन्वयय, इतरेतरयोग और समाहार। ये चार प्रकार होते है। परस्पर निरपेक्ष अनेक का एक में अन्वय समुच्चय कहलाता है। अन्यतर का आनुषङ्गिक में अन्वय होने पर अन्वायच कहलाता है। मिलितों का अन्वयः इतरेतर योग कहलाता है। समूह को समाहार कहा जाता है।

परस्पर निरपेक्षों का अनेक पदों में जहाँ एक क्रियावद में अन्वय होता है वहाँ समुच्चय चार्थः है। जैसे–इश्वरं गुरुं च भजस्व (ईश्वर और गुरु को भजो)। ईश्वर को भजो गुरु को भजो यही तात्पर्य है।

अन्यतर एकपद का जहाँ अप्रधानात्व से क्रियान्वय हो और अन्य का प्रधानत्व से चार्थ हो अन्वाचयः होता है। जैसे–भिक्षामट गां चानय (भिक्षाभट, गौः सङ्गता चेत् तामपि आनय इति तात्पर्यम्। भिक्षामट गायों के साथ उसको भी लाओ यही तात्पर्य है)

परस्पर आक्षेपित समुदित एक क्रियावह में अन्वय हो जहाँ वहाँ चार्थ इतरेतरयोग होता है। इततरेतरयोग नाम परस्पर साहित्य का है। जैसेः–घवश्च खदिरश्च धवरवदिरौ इति। यहाँ इतरेतर योग बोधन के लिए चकार द्वय का प्रयोग हुआ है।

एकीभूय (एकीकरण) क्रिया में अन्वयः जहाँ-जहाँ हो चार्थ समाहार है। यथा संज्ञा च परिभाषा च इति संज्ञा परिभाषम्। (संज्ञा और परिभाषा) समुच्चय में और अन्वाचय में असामर्थ्य से समास नहीं होता है। यथा ईश्वरं गुरुं च भजस्व (गुरु और ईश्वर को भजो) यहाँ ईश्वर और गुरु शब्दों में परस्पर निरपेक्षता में आवृत्त होने पर भजस्व क्रिया पद में क्रम से अन्वय से परस्पर अन्वय के अीााव से सामर्थ्य नहीं है। इसी प्रकार भिक्षामट गां च आनय यहाँ पर भिक्षा और गो पद में परस्पर निरपेक्ष में क्रमशः अटन में और आनयन शब्द से अन्वय से परस्पर अन्वय अभाव से सामथ्र्यर्ध नहीं है। किन्त इतरेतरयोग का और सभाहार के चार्थ के सामर्थ्यसत्व से समास होता है।

एवं इस सूत्र में चार्थशब्द से इतरेतरयोग का और समाहार का ग्रहण हुआ है। एवं सूत्र का अर्थ है–अनेक सुबन्तों को चार्थ में इतरेतरयोग में और समाहार में वर्तमान विकल्प से समास प्राप्त होता है और वह समास द्वन्द संज्ञक होता है।

उदाहरण–इतरेतर योग का चार्थ में उदाहरण है धवखदिरों तथाहि-धवश्च खदिरश्च इस लौकिक विग्रह में धव सुखदिर सु इस अलौकिक विग्रह में इतरेतर योग अर्थ में विद्यमान ध व सु का और खदिर सु का सुबन्त का प्रस्तुत सूत्र (चार्थे द्वन्दः) से द्वन्द समास होता है। इसके बाद समुदाय के प्रातिपदिकत्व से सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर धवरवदिर शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र से उत्तरपद के पुल्लिंग में विद्यमान होने से धवरवदिरशब्द का पुल्लिंग में विद्यमान होने से इसक बाद प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में धवरवदिरौ रूप बनता है।

समाहार के चार्थत्व में उदाहरण है–संज्ञा परिभाषम्। क्योंकि संज्ञा च परिभाषा च इस लौकिक विग्रह में संज्ञा सु परिभाषा सु इस अलौकिक विग्रह में समाहार अर्थ में विद्यमान संज्ञा सु का और परिभाषा सु सुबन्त का प्रस्तुत सूत्र से द्वन्द समास होता है। इसके बाद समुदाय की प्रातिपदिकत्व से सुप् के दोनों सु प्रत्ययों का लोप होने पर संज्ञा परिभाषा शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद ''स नपुंसकम्'' इस सूत्र से संज्ञा परिभाषा शब्द के नपुंसकत्व होने से ह्रस्वत्व निष्पन्न होने से संज्ञापरिभाषा शब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में संज्ञा परिभाषम् रूप बना।

(7.2) ''राजदन्तादिषु परम्'' (2.2.31)

सूत्रार्थ–राजदन्तादि में पूर्व प्रयोग अर्हं आर्हं परे होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पर निपात होता है। इस सूत्र में राजदन्तादिषु पद सप्तमीबहुवचनान्त है। परम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् पद की अनुवृत्ति आती है। प्रभुज्यते यह क्रियापद लिया गया है। राजदन्त शब्द आदिः येषां (राजदत्त शब्द हैं आदि में जिसके) ते राजदन्तादयः, तेषु राजदत्तादिषु इस तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास होता है। राजदन्तादय (राजदत्तादि) राजदन्तगण में पठित शब्द हैं।

और सूत्र का अर्थ है–राजदत्तादि में गण पठित शब्दों में समास होने पर पूर्वप्रयोग अर्हं पदं पर का पर (बाद में) प्रयोग होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–राजदन्तः। दन्तानां राजा इस लौकिक विग्रह में दन्त आम् राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''षष्ठी'' इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुष समास होता है। इसके बाद ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में षष्ठी के प्रथमानिर्दित्व से उसके बोध्य का दन्त आम की उपसर्जन संज्ञा होने पर ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वनिपात प्राप्त होता है। तब राजदन्तादिगणपठित प्रोक्त सूत्र से दत्त आम का पर निपात होने पर राजन् सु दन्त आम् होता है। इसके बाद ''कृतद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से राजन् सु दन्त आम् समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से सुप् के सु प्रत्यय के और आम प्रत्यय का समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से सुप् के सु प्रत्यय का और आम् प्रत्यय का लोप होने पर राजन् दन्त होता है। तब ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इससे राजन् के नकार का लोप होने पर निष्पन्न राजदत्त से प्रातिपदिक से प्रथमा के एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में राजदन्तः रूप बना।

टिप्पणियाँ

(7.2.1) 'धर्मादिष्वनियमः'' (वार्तिकम्)

वार्त्तिकार्थ–धर्मादि में समस्थमान का अन्यतर का पूर्वनिपात अथवा पर निपात विकल्प से होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक धर्माहिगण में पठित शब्दों के समास में अन्यतर का पूर्वनिपात बताता है। वस्तुत तो यह गणसूत्र है। इस वार्तिक का अर्थ होता है–धर्मादिगण में पठित शब्दों का समास में पूर्वनिपात में और निपात में नियम नहीं है।

उदाहरण–अर्थ धर्मौ धर्माथौं इत्यादि इस वार्तिक का उदाहरण है। धर्मश्च अर्थश्च इस लौकिकविग्रह में धर्म सु अर्थ सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद ''कृत्तद्वितसमासाश्च'' इससे समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् के सु प्रत्ययों का लोप होने पर धर्म अर्थ होता है। इसके बाद ''अजाद्यन्तम्'' इस सूत्र से अजादि अर्थशब्द का पूर्वनिपात होने पर प्रोक्त वार्तिक से ध र्मशब्द के पाक्षिक में पूर्वनिपात होने पर सवर्णदीर्घ में निष्पन्न धर्मार्थशब्द से प्रथमाद्विवचन में और प्रत्यय होने पर धर्माथौं रूप होता है। अन्य पक्ष में अर्थ शब्द का पूर्व निपात होने पर अर्थध र्मौ रूप बना।

(7.3) ''द्वन्द्वे घि''

सूत्रार्थ–द्वन्द में घिसंज्ञक का पूर्व प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पूर्व निपात होता है। इस सूत्र में द्वन्दे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। घि लुप्त प्रथमा एकवचनान्त परद है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् इस द्वितीया एकवचनान्त क्रिया विशेषण पद की अनुवृत्ति आती है। प्रभुज्यते यह क्रिया पद किया गया है। ''शैषोध्थसखि'' इस सूत्र से विहित सखिशब्द को छोड़कर ह्रस्व इकार का और ह्रस्व उकार के घि संज्ञक का ही घि पद से ग्रहण किया गया है। और सूत्र का अर्थ है–(द्वन्दे घिसंज्ञक पूर्व प्रयुज्यते) द्वन्द समास में घिसंज्ञक पूर्व पद का प्रयोग किया गया है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–हरिहरौ। हरिश्च हरश्च इस लौकिक विग्रह में हरि सु हर सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होने पर प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर हरि हर इस स्थिति में प्रोक्त सूत्र से इकारान्तत्व से घि संज्ञक हरिशब्द का पूर्वनिपात में निष्पन्न हरिहर शब्द से प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय होने पर हरिहरौ रूप बना।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
2. ''चार्थाः'' इस भवन्ति?

3. समुच्चय: नाम किसका और उदाहरण क्या है?
4. अन्वाचय: नाम किसका और उसका उदाहरण कौन सा है?
5. इतरेतर योग नाम किसका है और उसका उदाहरण क्या है?
6. समाहार नाम क्या है? और उदाहरण क्या है?
7. समुच्चय अन्वाचयार्थ में समास कहा नहीं होता है?
8. राजदन्तादिषु परम्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
9. ''राजदत्तादिषु परम्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
10. ''धर्मादिष्वनियम:'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
11. ''धर्मादिष्वनियम:'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
12. ''द्वन्दे घि'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
13. हरिहरौ यहाँ हरिशब्द का पूर्वनिपात कैसे हुआ है?

(7.3.1) ''अनेकप्राप्तावेकत्र नियमोऽनियम: शेषे'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्थ:–अनेक घिसंज्ञक पदों का द्वन्दप्राप्त: होने पर एक घि संज्ञक का पूर्व निपात होता है, इस घिसंज्ञक विषय में पूर्व का निपात का विकल्प होता है।

वार्तिक व्याख्या:–इस वार्तिक को ''अल्पाच्तरम्'' सूत्र का महाभाष्य में पठित है। इस वार्तिक से अनेक घिसंज्ञक समास होने से पूर्वनिपात का नियम है।

इस वार्तिक में अनेकप्राप्तौ एकत्र नियम: अनियम: शेषे पदच्छेद:। अनेक प्राप्तौ यह सप्तम्यन्त पद है। एकत्र यह सप्तम्यर्थ बोधक अव्यय है। नियम: अनियम: ये दोनों पर प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् द्वितीया एकवचनान्त का क्रियाविशेषण पद की अनुवृत्ति आती है। ''द्वन्दे घि'' सूत्र की अनुवृत्ति आती है। और वार्तिक का अर्थ है–अनेक घिसंज्ञक द्वन्द प्राप्त होने पर एक घिसंज्ञक पद में पूर्वनिपात का नियम है अन्यत्र घिसंज्ञक में पूर्वनिपात का नियम नहीं है।''

उदाहरण:–इस वार्तिक का उदाहरण है–हरिगुरुहरा:, हरिहरमुख:। हरिश्च हरश्च गुरुश्च इस लौकिक विग्रह में हरि सु हर सु गुरु सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतर द्वन्द समास होता है। ''कृत्तद्धितसामासाश्च'' सूत्र से समास का प्रातिपदित्व होने से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् की तीन सु प्रत्ययों का लोप होने पर हरि हर गुरु होता है। इसके बाद प्रोक्त वार्तिक सहाय से ''द्वन्दे घि'' इस सूत्र से इकारान्तत्व घिसंज्ञक हरिशब्द का पूर्वनिपात होने पर द्वितीय घिसंज्ञक गुरुशब्द का विकल्प से पूर्वनिपात के अभाव से सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न हरिहरगुरु शब्द से प्रथमा बहुवचन में जम् प्रत्यय होने पर हरिहर

टिप्पणियाँ

गुरुव: रूप हुआ। द्वितीय घिसंज्ञक का पूर्व निपात की विकल्पता से उसके पक्ष में निष्पन्न हरि गुरु शब्द से जस् प्रत्यय होने पर हरिगुरुहरा: रूप बना।

(7.4) ''अजाद्यदन्तम्'' (2.2.33)

सूत्रार्थ–द्वन्द में जो अजादि और अदत्त हो उसका पूर्व प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पूर्वनिपात होता है। एकपदात्मक इस सूत्र में ''अजाद्यदन्तम्'' प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इस सूत्र से द्वन्दे पद की अनुवृत्ति होती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व द्वितीया एकवचात्त क्रिया विशेषण पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रयुज्यते'' यह क्रियापद लिया गया है। अच् आदि: यस्य तह (अच् है आदि में जिसके) अजादि में बहुव्रीहि समास होता है। अत: अन्त: यस्थ तद् अदन्तम् यह बहुव्रीहि समास है। और सूत्र का अर्थ है–''द्वन्द में अजादि और अदत्त का पूर्व प्रयोग होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–ईशकृष्णौ। ईशश्च कृष्णश्च इस लौकिक विग्रह में ईश सु कृष्ण सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर ईश कृष्ण होता है। इसके बाद ईश शब्द के आदि में ईकार है अत: वह अजादि है। इसी प्रकार अन्त में अकार है। अत: ईशब्द अदत्त है। एवं प्रोक्त सूत्र से अजादि अदत्त क ईशशब्द का पूर्व निपात होने पर निष्पन्न ईशकृष्णशब्द से प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय होने पर ईशकृष्णौ रूप बना।

(7.5) ''अल्पाच्तरम्''

सूत्रार्थ–द्वन्द में अल्पाच्तरं (अल्प अच् वाला) पद का पूर्व प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से पूर्व निपात होता है। एकपदात्मक इस सूत्र में अल्पाच्तरम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इससे द्वन्दे पद की अनुवृत्ति आती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व द्वितीया एकवचनान्त क्रियाविशेषण पद की अनुवृत्ति होती है। प्रयुज्यते क्रियापद लिया गया है। अल्प: अच् यस्थ तद् अल्पाच् यहाँ बहुव्रीहि समास है। अल्पाच् एवं अल्पाच्तरम् यहाँ स्वार्थ में तरप् प्रत्यय होता है। अत एव निपातन से कुत्व का अभाव होता है। और सूत्र का अर्थ है–द्वन्द समास में अल्पाच् विशिष्ट पद का पूर्व प्रयोग होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–शिवकेशवौ। शिवश्च केशवश्च इस लौकिकविग्रह में शिव सु केशव सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद ''कृन्तद्धित समासाश्च'' इससे समास का प्रातिपदित्व होने से ''सुबोध ातुप्रातिपदिकयो:'' इससे दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर शिव केशव रूप होता है। यहाँ शिव के दो अचों का और केशव के तीन अचों का एकत्व होता है। प्रोक्त सूत्र (अल्पाच्तरम्) से

शिव के अल्पअच् का पूर्व निपात होने पर निष्पन्न शिवकेशव शब्द से प्रथमाद्विवचन में औ प्रत्यय होने पर शिवकेशवौ रूप बना।

(7.5.1) ''ऋतु नक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येण'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्य–समानसंख्या अचों के ऋतुओं के और नक्षत्रों का द्वन्द समास में आनुपूर्व्ये से कम से निपात होता है।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से क्रम से निपात होता है इस वार्तिक में ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणाम् आनुपूर्व्येण यह पदच्छेद है।

ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणाम् ये दो पद षष्ठी बहुवचनान्त पद है। आनुपूर्व्येण यह तृतीया एकवचनात्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इससे ''द्वन्दे'' पद की अनुवृत्ति आती है। यहाँ अक्षरशब्द से अच् का ग्रहण होता है। समानि अक्षराणि येषां तानि समाक्षराणि तेषाम् बहुव्रीहि। समसंख्यांकाच्कानाम् यह तात्पर्य है। इस वार्तिक का अर्थ होता है-समानसंख्या अचों वाले ऋतु और नक्षत्रों का द्वन्द में आनुपूर्व्येव से क्रम से निपात कहना चाहिए (होना चाहिए)।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है हेमन्तशिशिखसत्ता: हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च इस लौकिक विग्रह में हेमन्त सु शिशिर सु वसन्त सु इस अलौकिक विग्रह में हेमन्त सु शिशिर सु वसन्त सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द सामस में प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर हेमन्त शिशिर बसन्त स्थिति में प्रोक्त वार्तिक से हेमन्त शिशिर बसन्तों के समानअच् होने से उनमें आनुपूर्व्य का लोकप्रसिद्धत्व से हेमन्त शब्द का पूर्व निपात होने पर इसके बाद शिशिर शब्द का पूर्व निपात होता है। इसके बाद सर्वसंयोग होने पर इसके बाद संर्वसंयोग होने पर निष्पन्न हेमन्त शिशिर वसन्त शब्द से प्रथम बहुवचन में जस् प्रत्यय होने पर हेमन्त शिशिरसत्ता: रूप होता है। उसी प्रकार नक्षत्र वाचक होने से निपात का उदाहरण है।–कृत्तिकारोहिण्ये।

(7.5.2) ''लघ्वहारं पूर्वम्'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्य–लघु अक्षर पद का द्वन्द में पूर्व प्रयोग होता है।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में लघ्वक्षरम् पूर्वम् ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इससे द्वन्दे पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ अक्षर शब्द से अच् का ग्रहण किया गया है। लघु अक्षरम् अच् यस्य तत् (लघु अक्षर है जिसका) लघ्वक्षरम् यहाँ बहुव्रीहि समास होता है। ह्रस्व से अच् वर्ण विशिष्ट पद तपत्पर्य है। और वार्तिक का अर्थ है–लघु अक्षर पद द्वन्द समास में पूर्व प्रयोग होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है–कुशकाशम्। कुशश्च काशश्च इस लौकिक विग्रह में कुश सु काश सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से समाहार द्वन्द समास होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमाश्च'' इससे समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर कुश काश स्थिति में प्रोक्त वार्तिक से कुशशब्द

के लघु अच् से उसका पूर्व निपात होता है। इसके बाद सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न कुशकाश शब्द का एकवत् भाव होने पर नपुंसकत्व होने पर इसके बाद सु प्रत्यय होने पर कुशकाशम् रूप बना।

पाठगत प्रश्न-2

14. ''अनेकप्राप्तावेकत्र नियमोऽनियम: शेषे'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
15. ''अनेकप्राप्तावेकत्र नियमोऽनियम: शेषे'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
16. ''अजाद्यदन्तम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
17. ''अजाद्यदन्तम्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
18. ''अल्पाच्तरम्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
19. ''अल्पाच्तरम्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
20. ''ऋतुनक्षत्राणां समासराणामानुपूर्व्येण'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
21. ''ऋतुनक्षत्राणां समासराणामानुपूर्व्येण'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
22. ''लघ्वक्षरं पूर्वम्'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
23. ''लघ्वक्षरं पूर्वम्'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?

(6.5.3) ''अभ्यर्हितं च''

वार्तिकार्य–अभ्यहित (अभि:अर्हित) पद को द्वन्द समास में पूर्व प्रयोग होता है।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में अभ्यर्हितम् पद प्रथमा एकवचनान्त पद है। 'च' अव्यय पद है। ''द्वन्देधि'' इससे द्वन्दे पद की अनुवृत्ति होती है। अभ्यहितम् नाम पूज्य। च पद से पूर्व का ग्रहण किया गया है। और वार्तिक का अर्थ होता है–''अभ्यर्हित पद को द्वन्द समास में पूर्व प्रयोग होता है।''

उदाहरण–''वासुदेवार्जुनौ'' यह इस वार्तिक का उदाहरण है। वासुदेवश्च अर्जुनश्च। लौकिक विग्रह में वासुदेव सु अर्जुन सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेशब्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होने पर प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर वासुदेव अर्जुन होता है। इसके बाद ''अल्पाच्तरम्'' इस अल्पाक्षर विशिष्ट अर्जुन शब्द का पूर्व निपात होने पर उसको बांधकर प्रोक्त वार्तिक से अभ्यर्हित का वासुदेव शब्द का पूर्वनिपात होता है। इसके बाद सवर्णदीर्घ होने पर निष्पन्न वासुदेवार्जुन शब्द से पुल्लिंग होने पर प्रथमाद्विवचन में औ प्रत्यय होने पर वासुदेवार्जुनौ रूप बना।

(7.5.4) ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' (वार्तिक)

वार्तिकार्य–द्वन्द में वर्णों का आनुपूर्व्य से पूर्व निपात कहना चाहिए।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में वर्णानाम् षष्ठी बहुवचनान्त पद है। आनुपूर्व्येण यह तृतीया एकवचनान्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इससे ''द्वन्दे'' पद की अनुवृत्ति आती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् की अनुवृत्ति होती है। वर्णशब्द से प्रसिद्ध ब्राह्मण आदि चार ग्रहण किये गये हैं। और वार्तिक का अर्थ है–''द्वन्दे समास में वर्णों के आनुपूर्व्य से पूर्वनिपात होना चाहिए।''

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है–ब्राह्मणक्षत्रियविट्शुद्राः। ब्राह्मश्च क्षत्रियश्च विट् च शुद्रश्च इस लौकिक विग्रह में श्रामण सु क्षत्रिय सु विश सु शुद्र सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्दसमास होता है। इसके बाद समास का ''कृत्तद्धित्तसमासाश्च'' इससे प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः इससे प्रातिपदिक अवयव के तीनों सु प्रत्ययों का लोप होने पर ब्राह्मण विश शुद्र होता है। तब प्रोक्त वार्तिक से वर्णों के आनुपूर्व्ये से पूर्व निपात होने पर प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न ब्राह्मणक्षत्रिय विट शुद्र शब्द से पुल्लिंग प्रथमाविभक्ति बहुवचन में जस् प्रत्यय होने पर ब्राह्मणक्षत्रियबिट्शुद्राः रूप बनता है।

(7.5.5) ''भ्रातुर्ज्यायिसः'' (वार्तिक)

वार्तिकार्य–द्वन्द में ज्येष्ठभ्रातृवाचक पद का पूर्वनिपात कहना चाहिए।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में भ्रातुः और ज्यायसः ये पद षष्ठी एक वचनान्त पद हैं।

''द्वन्दे घि'' इससे ''द्वन्दे'' पद की अनुवृत्ति आती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् की अनुवृत्ति आती है। और इस वार्तिक का अर्थ आता है–''द्वन्द समास में ज्येष्ठ भातृवाचक पद का पूर्वनिपात कहना चाहिए।''

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है युधिष्ठरार्जुनौ। युधिष्ठरश्च अर्जुनश्च इस लौकिक विग्रह में युधिष्ठर सु अर्जुन सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व होने से सुप् का लोप होने पर युधिष्ठर अर्जुन होने पर ''अल्पाच्तरम्'' इससे अल्पाक्षर विशिष्ट अर्जुनशब्द का पूर्वनिपात होने उसको बांधकर प्रोक्त वार्तिक से ज्येष्ठभ्रातृवाचक युधिष्ठर शब्द का पूर्व निपात होता है। इसके बाद सवर्णदीर्घ होने पर निष्पन्न युधिष्ठरार्जुन शब्द से पुल्लिंग में प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय होने पर युधिष्ठिरार्जुनौ रूप बना।

(7.5.6) ''संख्याया अल्पीयस्थाः'' (वार्तिक)

वार्तिकार्य–समास में अल्पसंख्यावाचक का पूर्व निपात कहना चाहिए।

टिप्पणियाँ

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में संख्याया: और अल्पीयस्था: ये दो पद षष्ठी एकवचनान्त है। संख्याया: अल्पीयस्या: का अल्पसंख्यावाचक अर्थ है। ''उपसर्जनम् पूर्वम्'' यहाँ इस सूत्र से पूर्वम् पद की अनुवृत्ति आती है। एवं वार्तिक का अर्थ होता है–''समास में अल्पसंख्यावाचक पद का पूर्वनिपात कहना चाहिए।''

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है–द्वादश। द्वौ च दश च इस लौकिक विग्रह में द्वि जस् दशन् जस् इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर द्विदशन् स्थिति में प्रोक्त वार्तिक से अल्पसंख्या वाची द्विशब्द का पूर्व निपात होने पर द्विदशन् स्थिति में द्विशब्द के इकार का ''द्रव्यष्टन: संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्यो:'' इस सूत्र से आकारान्तादेश होने पर द्वादशन् होता है न लोप प्रक्रियाकार्य में निष्पन्न द्वादश शब्द से जस् प्रत्यय होने पर द्वादश रूप बना।

पाठगत प्रश्न-3

24. ''अभ्यहितं च'' इस वार्तिक का क्या अर्थ होता है?
25. ''अभ्यहिंत च'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
26. ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' वार्तिक का उदाहरण क्या है?
28. ''भ्रातुर्ज्यायस:'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
30. ''संख्याया अल्पीयस्या:'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
31. ''संख्याया अल्पीयस्या:'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?

(7.3) ''द्वन्दश्च प्राणिधूर्यसेनाङ्गानाम्'' (2.4.2)

सूत्रार्थ–प्राणी अंगों का, तूर्याङ्गों का और सेनाङ्गों का द्वन्द में एकवत् (एक समान) भाव होता है।

सूत्र व्याख्या–यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से एकवद् भाव दिखाई देता है। एकवत् (एकसमान) नाम एक में ही होना। अर्थात् एकवचनात्तता से प्रयोग होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में द्वन्द प्रथमा एकवचनात्त पद हैं। ''च'' अव्यय पद है। प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् यह षष्ठीबहुवचनान्त पद है। ''द्विगुरेकवचनम्'' इससे एकवचन पद की अनुवृत्ति होती है। प्राणी च तूर्यं च सेना च प्राणिततूर्यसेना: यह इतरेतर योगद्वन्द समास है। तासाम् अङ्गानि प्राणितूर्यसेनाङ्गानि, तेषां प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् यह षष्ठी तत्पुरुष समास है। ''द्वन्दात्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकमनिसम्बध्यते'' इस न्याय से प्राणियों के अंग, तूर्य अंग, सेना के अंग प्राप्त होते है। एकं वक्ति इति (एक वचन) एकवचम् कर्ता में ल्युट् प्रत्यय प्राप्त होता है। ''समाहारग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वार्तिक वन से समाहाररूप अर्थ के प्रातिपादित हो जिसमें द्वन्द समास प्राप्त होता है। एवं सूत्र अर्थ होता

है–''प्राणी अंगों के, तूर्य अङ्गों के, और सेना के अंगों का एकवत् भाव होता है।

उदाहरण–प्राणी अंग का उदाहरण है पाणिपादम्। पाणी च पादौ एषां समाहार: इस लौकिक विग्रह में प्राणि औ पाद औ इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर पाणिपाद इस स्थिति में प्रोक्त सूत्र से प्राणीअंगद्वन्दत्व से पाणिपाद् द्वन्द का एकवत् भाव होता है। इसके बाद पाणिपाद शब्द से प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय होने पर ''स नपुंसकम्'' इससे समाहारद्वन्द का पाणिपादशब्द का नपुंसकत्व होता है। इसके बाद सु प्रत्यय का अम् होने पर ''अमिपूर्व:'' इससे दकार के अकार के अम् और अकार के स्थान पर पूर्वरूप होने पर अकार होने पर पाणिपदम् रूप होता है।

तूर्य अङ्गों का उदाहरण है–मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च इस समाहार इस विग्रह में मार्दङ्गिक वैणविकम्। सेनाङ्गानाम् उदाहरण है रधिकाश्च अश्वारिहाश्च एषां समाहार: इस विग्रह में रधि काश्वारोहम्।

(7.4) ''जातिरप्राणिनाम्'' (2.4.6)

सूत्रार्थ–प्राणिवर्जित जातिवाचकों का द्वन्द एकवत् भाव होता है।

सूत्र व्याख्या–षड्विधि पाणिनीयसूत्रों में यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से एकवद्भाव का अतिदेश हो रहा है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में जाति: प्रथमा एकवचनान्त है और अप्राणिनाम् षष्ठी बहुवचनान्त पद है। जाति: यहाँ पर षष्ठी बहुवचन स्थान पर व्यति प्रथमा विभक्ति है। जातिवाचिनाम् यही अर्थ है। अप्राणिनाम् का प्राणिवाचकवर्जितों का है। ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से द्वन्द पद की अनुवृत्ति होती है। ''समाहारग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वार्तिक बल से समाहार रुपार्थ का प्रातिपदिक एषां द्वन्द समास प्राप्त होता है। एवं सूत्रार्थ होता है ''प्राणिवर्जित जातिवाचक का द्वन्द एकवत् होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–धानाशष्कुलि। धानाश्च शष्कुलयश्च तासां समाहार: इस लौकिक विग्रह में धाना जम् शष्कुलि जस् इस अलौकिक विग्रहे ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से ''सुपोधातुप्रातिपदिकपो:'' इस सूत्र से सुप् के दोनों जस् प्रत्ययों का लोप होने पर धानाशष्कुलि होता है। तत प्रोक्त सूत्र से प्राणिनिन्नशस्यजातिवाचक द्वन्द के धानाशब्कुलि का एकवत् भाव होता है। इसके बाद ध ानाशष्कुलि शब्द से सु प्रत्यय होने पर ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसकत्व होने से प्रक्रिया कार्य में धानाशब्कुलि रूप होता है।

(7.8) ''तेषां च विरोध: शाश्वतिक:'' (2.4.9)

सूत्रार्थ–जिनमें विरोध शाश्वतिक है उनमें एक द्वन्द एकवत् भाव होता है।

सूत्र व्याख्या–यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से एकवत् भाव का अतिदेश किया जाता है।

टिप्पणियाँ

त्रियदात्मक इस सूत्र में येषाम् षष्ठी बहुवचनान्त पद है। ''च'' अव्ययपद है। विरोधः शाश्वतिकः ये दोनों पद प्रथमा एकवचनान्त पद हैं। विवाधः बैर को कहते हैं। शाश्वतिक नाम सदा (हमेशा) का है। ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से द्वन्द पद की अनुवृत्ति होती है। ''द्विगुरेकवचनम्'' इससे एकवचन पद की अनुवृत्ति आती है। ''समाहारग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वातिकबल से इनमें द्वन्द समास प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ है–''येषां विरोधः शाश्वतिकः तेषां द्वन्द एकवत् भाव होता है।''

उदाहरण–इसका उदाहरण है अहिनकुलम्। अध्यश्च नकुलाश्च इस लौकिक विग्रह में अहि जस् नकुल जस् इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दे:'' इस सूत्र से समाहार द्वन्द होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व होने में सु का लोप होने से प्रक्रिया कार्य में अहिनकुल होता है। अहिनकुलयोः विरोधयोः सुप्रसिद्धत्व से प्रोक्त सूत्र से दोनों का द्वन्द के एकवद् भाव होता है। इसके बाद अहिनकुलशब्द से सु प्रत्यय होने पर ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसकत्व प्राप्त होने पर सु का अम् होने पर प्रक्रिया कार्य में अहिन कुलम् रूप बना।

(7.9) ''विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि'' (2.4.13)

सूत्रार्थ–विरुद्वार्थों का अद्रव्यवाची द्वन्द एकवत् विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या–यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से एकवत् भाव का अतिदेश होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में विप्रतिषिद्धम् अनधिकरणवाचि ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त रूप है। ''च'' अव्यय पद है। ''विभाषा'' इसकी अनुवृत्ति होती है। विप्रतिषेधो विरोधः के साथ अवस्थान लक्षण है। अधिकरण द्रव्य है। न अधिकरण अनधिकरण नाम अद्रव्य है। ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से द्वन्द पद की अनुवृत्ति होती है। ''द्विगुरेकवचनम्'' इससे एकवचन पद की अनुवृत्ति होती है। ''समाहार ग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वार्तिक बल से इनका द्वन्द समास प्राप्त होता है। एवं सूत्रार्थ होता है–''विरुद्ध अर्थवाची अद्रव्यवाची शब्दों का द्वन्द एकवत् विकल्प से होता है।''

उदाहरण–इसका उदाहरण है शीतोष्ण। शीतं च उष्णं च इस लौकिक विग्रह में शीत सु उष्ण सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होता है। शीत उष्ण इस स्थिति में गुण होने पर शीतोष्ण शब्द होता है। शीतोष्ण यहाँ अद्रव्यवाची विरुद्ध दोनों अर्थों में द्वन्द से उन दोनों में द्वन्द का प्रोक्त सूत्र (विप्रतिषिद्धंचानधि करणवाचि) से विकल्प से एकवत् भाव होता है। इसके बाद शीतोष्ण शब्द से सु प्रत्यय होने पर ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसकत्व प्राप्त होने पर प्रक्रिया कार्य में शीतोष्ण रूप बना। एकवत् भाव का विकल्पता के अभाव पक्ष में औ प्रत्यय होने पर शीतोष्णे रूप बना।

पाठगत प्रश्न-4

32. ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

33. ''द्वन्दश्च प्राणिसूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से प्राणी अङ्गों का एकवत् भाव का उदाहरण दीजिये?

34. ''द्वन्दश्च प्राणिसूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से तूर्यअङ्गों के एकवत् भाव होने का उदाहरण क्या है?

35. ''द्वन्दश्च प्राणिसूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से सेनाङ्ग के नामों के एकवत् भाव होने का उदाहरण दीजिये?

36. ''जातिरप्राणिनाम्'' सूत्र का क्या अर्थ है?

37. ''जातिरप्राणिनाम्'' सूत्र का उदाहरण क्या है?

38. ''येषां च विरोधः शाश्वतिकः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

39. ''येषां च विरोध शाश्वतिकः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

40. ''विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

41. ''वि प्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

(7.10) ''आनङ्ऋतो द्वन्दे'' (6.3.25)

सूत्रार्थ–द्वन्द में विद्यायोनिसम्बन्धवाची ऋदन्त उत्तरपद परे आनङ् होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आनङ् होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में आनङ् प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''ऋतः'' षष्ठी एकवचनान्त् पद है। ''द्वन्दे'' यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' इससे उत्तरपदे की अनुवृत्ति होती है।

''ऋतो विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यः'' इस सूत्र से विद्यायोनिसम्बन्धेम्यः पद की अनुवृत्ति होती है। और च पद षष्ठयन्तता विपरिणाम होने पर है। ऋतः यहाँ तदन्तविधि में ऋदन्तानाम् पद प्राप्त होता है। एवं सूत्रार्थ होता है–''द्वन्द समास में विद्यायोनिसम्बन्धवाची ऋदन्तों के उत्तरपद परे आनङ् होता है।''

और यह आनङ् आदेश ङित्व होने से ''ङिच्च'' की परिभाषा से अन्त्य के अल के ही स्थान पर ही होता है।

उदाहरण–विद्यासम्बन्धवाची होने का उदाहरण है होतापोतारौ।। होता च पोता च इस लौकिक विग्रह में होतृ सु पोतृ सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व होने से सुप् का लोप होने पर होतृ पोतृ होता है। विद्यासम्बन्धवाची ऋदन्त होतृ शब्द का पोतृ के उत्तरपद परे ''ङिच्च'' इस परिभाषा से परिष्कृत प्रोक्तसूत्र से ऋकार के आनङ् **होत् आनङ् पोत्** होता है। आनङ् के ङकार के ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप होने पर नकार और अकार के उच्चारर्थकत्व से होतान् पोतृ रूप होता है। तब ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इससे होतान् यहाँ

टिप्पणियाँ

अन्त्य के नकार का लोप होने पर होता पोतृ शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय होने पर होतापोतारौ रूप बना।

इसी प्रकार योनिसम्बन्धवाची उदाहरण है। ''मातापितरौ। माता च पिता च इस लौकिक विग्रह में मातृ सु पितृ सु इस स्थिति में नकार अकार के उच्चारणर्थकत्वता से होतान् पोतृ होता है। तब ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इसमें होतान् यहाँ अन्त्य के नकार का लोप होने पर होता पोतृ शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद प्रथमाद्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय होने पर होता पोतारौ रूप बना।

इसी प्रकार योनि सम्बन्धवाची उदाहरण है। माता पितरौ माता च पिता च इस लौकिक विग्रह में मातृ सु पितृ सु इस अलौकिक विग्रह में इतरेतरद्वन्द समास होने पर प्रक्रिया कार्य में मातृ पितृ स्थिति में प्रोक्त सूत्र से मातृशब्द के ऋकार का आनङ् प्रक्रिया कार्य में मातापितरौ रूप बना।

इसी प्रकार योनिसम्बन्धवाची का उदाहरण है–मातापितरौ। माता च पिता च इस लौकिक विग्रह में मातृ सु पितृ मु इस अलौकिक विग्रह में इतरेतरद्वन्द समास में प्रक्रिया कार्य में मातृ पितृ इस स्थिति में प्रोक्तसूत्र से मातृशब्द के ऋकार का आनड़् होने पर प्रक्रिया कार्य में माता पितरौ रूप बना।

माता पितरौ यहाँ इतरेतरद्वन्द समास है। और उस समास का अपवाद है एकशेषः। उस एकशेष के विधान के लिए प्रवृत्त है।

(7.11) ''पिता मात्रा'' (1.2.70)

सूत्रार्थ–मातृशब्द से सह उक्त पितृशब्द विकल्प से अवशेष होता है। (मातृशब्द के साथ पितृशब्द द्वन्द में पितृशब्द ही विकल्प से शेष रहता है)

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से द्वन्द समास के अपवाद एकशेष का विधान का विधान है। द्वि पदात्मक इस सूत्र में पिता प्रथमा एकवचनान्त पद है। माता तृतीया एकवचनान्त पद है। ''सकपाणामेक शेष एक विभक्तौ'' इस सूत्र से शेषः पद की अनुवृत्ति होती है। ''नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम्'' इस सूत्र से अन्यतरस्याम् पद की अनुवृत्ति होती है। और सूत्रार्थ है–''मातृशब्द से सह उक्त पितृशब्द विकल्प से अवशेष रहता है।''

(7.12) ''देवताद्वन्दे च''

सूत्रार्थ–देवतावाची द्वन्द समास में उत्तरपद परे आनङ् होता है।

सूत्र व्याख्या–षड्विधि पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आनङ् होता है। द्विपदात्मक सूत्र में ''देवताद्वन्दे'' यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''च'' अव्ययपद है। चकार से ''आनङ्ऋतो द्वन्दे'' इस सूत्र से आनङ् का ग्रहण होता है। ''अनुगुत्तरपदे'' इससे उत्तरपदे

की अनुवृत्ति आती है। देवतानां द्वन्दं देवताद्वन्दं तस्मिन् षष्ठीतत्पुरुष समास है। देवता शब्द से देवतावाची शब्दों का ग्रहण किया गया है।

और सूत्रार्थ होता है–''देवतावाची द्वन्द समास में उत्तरपद परे आनङ् होता है। और यह आनङ् आदेश ङित्व होने से ''ङिच्च'' परिभाषा से अन्त्य के अल ही स्थान पर होता है।

उदाहरण–मित्रावरुणौ इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। मित्रश्च वरुणश्च इस लौकिक विग्रह में मित्र सु वरुण सु इस लौकिक विग्रह में मित्र सु वरुण सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतर द्वन्द समास होता है इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व होने से सु का लोप होने पर मित्रवरुण होता है। देवतावाची द्वन्दत्व से उत्तरपद वरुणशब्द परे ''ङिच्च'' परिभाषा से परिष्कृत प्रौक्त सूत्र से मित्र यहाँ पर र के अकार का आनङ् होने पर मित र् आनङ वरुण होता है। इसके बाद ङकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संग होने पर ''तस्य लोप:'' इससे लोप होने पर नकार के अकार के उच्चारण के लिए और कत्व होने से मित्रान् वरुण होता है। तब ''न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य'' इससे भिञान् के नकार का लोप होने पर निष्पन्न मित्रावरुण शब्द से प्रथमाद्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यये होने पर मित्रावरुणौ रूप हुआ।

(7.13) ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे''

सूत्रार्थ–चवर्गान्त और दषहान्त से द्वन्द समास समाहार में समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में द्वन्दात् चुदषहान्तात् समाहारे'' यह पदच्छेद है। द्वन्दात् चुदषहान्तात् ये दो पद पञ्चमी एक वचनान्त पद हैं। समाहारे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। चुश्च दश्च षश्च हश्च एषां समाहार: चुदषहम् यह समाहार द्वन्द है। चुदषहम् अन्ते यस्थ स चुदषहान्त, तस्मात् चुदषहान्तात् यहाँ बहुव्रीहि समास है। ''राजाह: सखिभ्यष्टच्'' इस सूत्र से टच् की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'' ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। चु शब्द से च वर्ग का ग्रहण है। दषहति इत्यत्र अकार उच्चारणार्थक है। एवं सूत्रार्थ होता है–चर्वर्गान्त और दषहान्त से द्वन्द समाहार में समासान्त तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–च वर्गान्त से टच् का उदाहरण है। वाक्त्वचम्। वाक् च त्वक् च अनथो: समाहार: इस लौकिक विग्रह में वाच् सु त्वच् सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर वाच् त्वच् होता है। इसके बाद अन्तर्वर्तिनी विभक्ति को आश्रित करके ''चो: कु:'' इससे वाच् का चकार का कुन्त्व होने पर ककार होने पर वाक् त्वच् होता है। चवर्गान्तत्वाद् वाक्त्वच् समाहार द्वन्द के प्रोक्त सूत्र से टच् प्रत्यय होने पर वाक्वच् टच् होता है। टच् के टकार का ''चुटू'' सूत्र से और चकार का ''हलन्त्यम्'' से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोप:'' इससे लोप होने पर वाक्त्वच् अ होता है। तब सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न वाक्त्वच् शब्द से ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसक के विद्यमान होने से सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में वाक्त्वचम् रूप बना।

दकारान्त से टच् प्रत्यय का उदाहरण है शमी च दृषत् चानयोः समाहारः समीदृषदम्। षकारान्त से टच् प्रत्यय का उदाहरण है वाक् च त्विट् च आनयोः समाहार वाक्त्विषम्। हकारान्त टच् प्रत्यय का उदाहरण है छात्रं च उपानत् चानयोः समाहारः **छात्रोपानहम्।**

पाठगत प्रश्न-5

42. ''आनङृतोद्वन्दे'' यह किस प्रकार का सूत्र है।

43. ''आनङ्ऋतोद्वन्दे'' इस सूत्र का अर्थ है?

44. ''आनङ्ऋतोद्वन्दे'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

45. ''पिता मात्रा'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

46. ''पिता मात्रा'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

47. ''पिता मात्रा'' इस सूत्र का उदाहरण कौन सा है?

48. ''देवता द्वन्दे च'' इस सूत्र से क्या विधान है?

49. ''देवताद्वन्दे च'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

50. ''देवताद्वन्दे च'' इस का क्या उदाहरण है?

51. ''द्वन्दाच्चुषद बहान्तात्समाहारे'' इस से क्या विधान होता है?

52. ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

54. ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

पाठ सार

इस पाठ में द्वन्दसमास प्रस्तुत किया गया है। बहुव्रीहि समास से पर समास का भेद होता है। द्वन्द। ''चार्थेद्वन्दः'' इस द्वन्द समास विधायक सूत्र है। प्राय उभयपदार्थ प्रधान यह समास है। द्वन्द समास इतरेतरद्वन्द समाहार द्वन्द समास दो भेद है। यहाँ ''चार्थेद्वन्दः'' इस के व्याख्यानवसर पर (चार्थाः) च के अर्थ प्रतिपादित किया गया है। समुच्चयः, अन्वाचयः, इतरेतरयोग और समाहारः ये ''च'' के अर्थ हैं। परस्पर निरपेक्ष अनेकपदों का यहाँ एक क्रियापद में अन्वय होता है वहाँ समुच्चय च का अर्थ है। अन्यतर एक पद का जहाँ अद्यानत्व से किया का अन्वय होता है और अन्य के प्रधानत्व से वहाँ च का अर्थ होता है। परस्पर आक्षेपित समुदित एक क्रियापद में अन्वय है यत्र तत्र च का अर्थ इतरेतरयोग है। एकीमूय (एक होकर) क्रिया में अन्वय जहाँ तहाँ च का अर्थ हो वह समाहार है। समुच्चय में और अन्वाचय में सामर्थ्य के अभाव से समास नहीं होता है। किन्तु इतरेतर योग का और समाहार का च का अर्थ का सामर्थ्यसत्त्व से समास होता है। एवं ''चार्थेद्वन्द'' इस सूत्र से इतरेतर योग में और समाहार में द्वन्द समास होता है।

इसके बाद ''राजदन्तादिषु परम्'' यह पूर्व निपात विधायक सूत्र प्रस्तुत किया गया है। तत् विषयकता से ''धर्यादिष्वनियमः'' इस वार्तिक की व्याख्या की गई है। इसके बाद द्वन्द में द्विसंज्ञक पूर्व प्रयोग विधायक ''द्वन्दे धि'' सूत्र की व्याख्या की गई है। इसके बाद ''अनेकप्राप्तावकेत्र नियमोऽनियमः शेषे'', ''ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येणं, ''लघ्वक्षरं पूर्वम्'', ''अभ्यर्हित च'', ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' ''भ्रातुर्ज्यायसः'', ''संख्याया अल्पीयस्थाः'' इस पूर्वनिपात विधायक वार्तिक की व्याख्या की गई है।

इसके बाद द्वन्द में एकवत् भाव विधायक सूत्र ''द्वन्दश्चप्राणितूर्य सेनाङ्गानाम्'', ''जातिरप्राणिनाम्'', ''येषां च विरोधः शोश्वतिकः'' इन सूत्रों की व्याख्या की गई है।

द्वन्दसमासप्रसङ्ग में मातापितरौ यहाँ उत्तरपद परे आनङ् विधायक ''आनङ्ऋतो द्वन्दे'' इस सूत्र की भी व्याख्या की गई है। और यहाँ द्वन्द के अपवाद एक शेष का विधायक ''माता-पिता'' सूत्र की भी व्याख्या की गई है। मित्रावरुणौ इत्यादि आनङ् आदेश विधायक ''देवताद्वन्दे च'' सूत्र को प्रातिपादित किया गया है। इसके बाद समासान्त ट्च प्रत्यय का विधायक सूत्र ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' सूत्र को प्रतिपादित किया गया। और द्वन्दसमास इस पाठ में प्रतिपादित है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''चार्थे द्वन्दः'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
2. ''द्वन्दे धि'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
3. ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
4. ''विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
5. ''येषां च विरोधः शाश्वतिकः'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
6. ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
7. चार्थ कौन-कौन से है? उनका विवरण दीजिये?
8. ''द्वन्दे पूर्व निपातः'' इस विषय को आश्रित करके टिप्पणी लिखो।
9. समाहारद्वन्द में एकवद्भाव विषय को आश्रित करके टिप्पणी लिखो?
10. धवखदिरौ रूप को सिद्ध कीजिये।
11. पाणिपादम् रूप को सिद्ध कीजिये।
12. शीतोष्णम् रूप को सिद्ध कीजिये?
13. अहिनकुलम् रूप को सिद्ध कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. अनेक सुबन्त को चार्थ में अथवा वर्तमान को समास होता है।
2. समुच्चय, अन्वाचय, इतरेतरयोग और समाहार च अर्थ हैं।
3. परस्परनिरपेक्ष अनेकपदों का जहाँ एक क्रिया पद में अन्वय होता है वहाँ समुच्चय चार्थ है। उदाहरण:–ईश्वरं गुरुं च भजस्व।
4. अन्थतर एकपद का जहाँ अप्रधानत्व से क्रिया में अन्वय और अन्य का प्रधानत्व से चार्थ अन्वाचय:। पिक्षाम् अट् गां च आनय।
5. परस्पर आक्षेपित समुदित एकक्रिया पद में अन्वय होता है जहाँ-वहाँ चार्थ इतरेतरयोग है। धवखदिरौ यह उदाहरण है।
6. एक होकर (एकीकृत) क्रिया में अन्वय यहाँ वहाँ चार्थ समाहार है उदाहरण–पाणिपादम्।
7. परस्पर अन्वय अभाव से।
8. राजदत्तादिषु पूर्वप्रयोगार्हं को पर हाता है।
9. राजदन्त:।
10. धर्मादिषु समस्यमानों का अभ्यतर का पूर्वनिपात अथवा परनिपात होता है।
11. अर्द्य धर्मौ, धर्मार्थौ उदाहरण है।
12. द्वन्द में धि संज्ञक का पूर्व प्रयोग होता है।
13. हरि शब्द धि संज्ञक है अत: उसका पूर्वनिपात होता है।

उत्तर-2

14. अनेक घिसंज्ञक पदों को द्वन्द प्राप्त होने पर एक घिसंज्ञक का पूर्वनिपात नियम है, अन्य घिसंज्ञक विषय में पूर्व निपात का विकल्प होता है।
15. इस वार्तिक का उदाहरण है हरिगुकहरा:, हरिहरमुख:।
16. द्वन्द में जो अजादि और अदत्त है उसको पूर्वयोग होता है।
17. ईशकृष्णौ।
18. द्वन्द में अल्प अचक्का पद पूर्व प्रयोग होता है।

19. शिवकेशवौ।

20. समानसंख्यावाची ऋतुओं का और नक्षत्रों का द्वन्द में आनुपूर्ल्य से क्रम से निपात कहना चाहिए।

21. हेमन्तशिशिरवसन्ताः।

22. लघु अक्षर पद को द्वन्द समास में पूर्व प्रयोग होना चाहिए।

23. कुशकाशम्।

उत्तर-3

24. अभ्यहित पद को द्वन्द में पूर्व प्रयोग करना चाहिए।

25. वासुदेवार्जुनौ।

26. द्वन्द में वर्णों के आनुपूर्व्य से पूर्वनिपात कहना चाहिए।

27. ब्राह्मणक्षत्रियविट्शुद्राः।

28. द्वन्द में ज्येष्ठभातृवाचक पद का पूर्वनिपात कहना चाहिए।

29. सुधिष्ठिरार्जुनौ।

30. समास में अल्पसंख्यावाचक का पूर्व निपात कहना चाहिए।

31. द्वादश।

उत्तर-4

32. प्राणि अंगों का, तूर्य अंगों का और सेना के अंगों का एकवद् भाव होता है।

33. पाणिपादम्।

34. मार्दङ्गिकपाणविकम्।

35. रथिकाश्वहरोम्।

36. प्राणिवर्जित जातिवाचक द्वन्द का भाव होता है।

37. धानाशष्कुलि।

38. येषां विरोधः शाश्वतिकः तेषां द्वन्द एक वद्भाव भवति। (जिनमें विरोध शाश्वत हो उनका द्वन्द में एकवत् भाव होता है।)

39. अहिनकुलम्।

टिप्पणियाँ

40. विरुद्धवाची अद्रव्यवाची द्वन्द का एकवत् भाव विकल्प से होता है।

41. शीतोष्णम्।

उत्तर-4

42. विधिसूत्र।

43. विद्या, योनि, सम्बन्धवाची ऋदन्त उत्तरपद परे आनङ् होता है।

44. होतापोतारौ।

45. द्वन्द समास का अपवाद है एकशेष।

46. मातृशब्द के साथ उक्त में पितृशब्द विकल्प से अवशिष्ट होता है।

47. पितरौ।

48. आनङ्।

49. देवतावाची द्वन्द समास में उत्तरपद परे आनङ् होता है।

50. मित्रावरुणौ।

51. समासान्त टच् प्रत्यय का विधान होता है।

52. चवगन्ति और दषहान्त से द्वन्द से समाहार में तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

53. शमीदृषम्।

सप्तम पाठ समाप्त

8

प्रकीर्ण समास प्रकरण

पूर्व शुरू के पाठों में केवलसमास, अव्ययीभावसमास, तत्पुरुष समास और द्वन्द समास वर्णित है। वहाँ समासपर्थालोचनाक सरपर पर ही समासान्त कार्यों विधायक सूत्रों और निषेधो सूत्रों का उल्लेख किया गया है। इस पाठ में सर्वसमास उपकारक जो समासान्त कार्यविधायक सूत्रों में उल्लेख किया गया है। और समासान्त कार्य निषेध सूत्रों का भी यहाँ संगृहित किया गया है।

इसके बाद पदविधित्व वृत्ति हो अतः वृत्ति क्या है यह जिज्ञासा होती है। इसके बाद वृत्तिस्वरूप उसके भेद और विग्रहस्वरूप उसके भेद का इस पाठ में वर्णन किया गया है। इसके बाद वृत्तियों में अन्यतम समास का संक्षेप स्वरूप को प्रतिपादन करके उसके भेदों का वर्णन किया गया है। इस पाठ में समासों का और समासान्त कार्यों का किस प्रकार महत्त्व भी इस पाठ में प्रतिपादित किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- सर्वसमासान्त विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- सर्वसमासान्त निषेध सूत्रों को जान पाने में;
- वृत्तिस्वरूप को जान पाने में;
- विग्रह स्वरूप को जान पाने में;
- वृत्ति भेदों और विग्रह भेदों को जान पाने में।

टिप्पणियाँ

- समास भेदों और उसके लक्षणों को जानिये?

अथ सर्वसमासों में उपकारक समासान्तकार्यविधायक सूत्रों की आलोचना की जानी चाहिए।

(8.1) ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''

सूत्रार्थ–प्रक्षगाद्यन्त समास का अप्रत्यय अन्तावयव होता है (अक्षे या धूः) अक्ष में जो धू उसको नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अप्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में ऋक्पूरब्धूः पथाम् अ अनक्षे पदच्छेद है। यहाँ ऋक्पूरब्धूः पथाम् इस षष्ठी बहुवचनान्त पद है। अ लुप्त प्रथमा एकवचनान्त पद है। अनक्षे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ऋक् च पूश्च आपश्च पूश्च पन्याश्च ऋक्पूरवधूः पन्थानः, तेषाम् ऋक्पूरवधूः पथाम् यह इतरेतरद्वन्दसमास है। न अक्षः अनक्षः, तस्मिन् अनक्षे इति नञ्तत्पुरुष समास है। यहाँ विवक्षा में सम्बन्ध अधिकरण में सप्तमी विभक्ति है। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। समास का अन्त समासान्त। ऋक्पूरवधूः पथाम् का विशेष्य से समास का यहाँ वचनविपरिणाम से समासानाम् पद होता है। इसके बाद ऋकपूरब्धूः पथाम् यहाँ तदन्तविधि में ऋगाद्यन्त समासों का अन्वय होता है। अनक्षे यह निषेध यद्यपि युक्त तथापि अन्यों के साथ निषेध असम्भव से धुर् से सम्बन्ध स्वीकृत किया जाता है। एवं सूत्र का अर्थ होता है–''ऋगाद्यत्त समास का अप्रत्यय अन्तावय होता है किन्तु अक्षशब्द विषय में धुरन्त धू अन्त वाले जो उससे नहीं होता है।

सूत्र में अनक्षे इस प्रतिषेध से अक्षशब्द से धुर का समास में समासान्त नहीं होता है। अक्षस्य धूः इस विग्रह में प्रक्रिया कार्य में अक्षधुर् होने पर अनक्षे इससे अप्रत्यय नहीं होता है। इसके बाद सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में अक्षधूः रूप बना।

उदाहरण–ऋक् शब्दान्त समास का समासान्त में उदाहरण है– अर्धर्चः। ऋचः अर्धम् इस लौकिक विग्रह में ऋच् ङस् अर्ध सु इस अलौकिक विग्रह में ''अर्धनपुंसकम्'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व होने से सु का लोप होने पर अध र्शब्द का पूर्वनिपात होने पर ''आद्गुणः'' सूत्र से अकार के स्थान पर और ऋकार के स्थान पर गुण होने पर रपत्व होने पर अर्धर्च होता है। इसके बाद प्रोक्त सूत्र से ऋगन्त के अर्धर्च शब्द का समासान्त अप्रत्यय होता है। इसके बाद अर्धर्च् अ होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न अध र्च शब्द का ''परवल्लिंङ्गद्वन्दतत्पुरुषोः'' इससे पर लिङ्गत्व प्राप्त होने पर ''अर्धर्चाः पुंसि च'' इस विकल्प से पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय होने पर अर्धर्यः रूप होता है। नपुंसक लिङ्ग में सु प्रत्यय होने पर अर्धर्चम् रूप बना।

पुर् शब्दान्त समास के समासान्त में उदाहरण है–विष्णोः पूः इस विग्रह में विष्णुपरम्। अप् शब्दान्त समास का समासान्त में उदाहरण है विमला आपो यस्थ वद् विमलापं सरः। धुरशब्दान्त समास का समासान्त में उदाहरण है राज्ञः घूः राजधुरा। पथिन् शब्दान्त समास का समासान्त में उदाहरण है–सख्युः पन्थाः सखिपथः।

(8.3) ''अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः''

सूत्रार्थ–प्रति, अनु, अन पूर्वक सामलोभान्त से समास से समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में अच् प्रथमा एकवचनान्त पद है। प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः ये दो पद पञ्चमी एकवचनान्त पद है। प्रति अनु अव पूर्व से तात्पर्य प्रति, अनु, अव ये पूर्वपद है जिससे। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। समासात् का विशेषणत्व से तदन्तविधि में सामलोम्नः का सामलोमान्तात् यह अर्थ होता है। और सूत्र का अर्थ होता है–''प्रति, अनु, अव, पूर्वक सोमलोमन् समास से समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–सामासान्त का समास के समासान्त में उदाहरण है–प्रतिसामम् प्रतिगमं साम इस लौकिक विग्रह में प्रति सामन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''कुगतिप्रादयः'' इस सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर प्रतिसामन् होता है। इसके बाद प्रोक्त सूत्र से प्रति पूर्वक सामान्त से प्रतिसामन् इस समास से अच् प्रत्यय होता है। अच् के चकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर प्रतिसामन् अ होता है। इसके बाद ''यचिभम्'' इससे पूर्व प्रतिसामन् की भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे टि का अन् लोप होने पर प्रति साम् अ होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न प्रतिसाय शब्द का ''परवल्लिङ्ग द्वन्द तत्पुरुषोः'' इससे पर लिङ्गत्व होने पर नपुंसक में सु प्रत्यय होने पर प्रतिसामम् रूप बना।

लोमान्त के समासान्त में अवलोमम् उदाहरण बना। अवहीनं लोमः यह अलौकिक विग्रह है।

(8.3) ''अक्ष्णोऽदर्शनात्''

सूत्रार्थ–अच क्षु परि से अक्ष्ण समासान्त तद्धित संज्ञक को अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में अक्ष्णः अदर्शनात् यह पदच्छेद है। यहाँ अक्ष्णः इति अदर्शनात् च दो पद पञ्चमी एकवचनान्त है। ''अच् प्रत्यन्नव पूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र से अच् पद की अनुवृत्ति होती है। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''परश्चः'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकार सूत्र अधिकृत है। अर्थात् इन चारों का अधिकार है। दृश्यते अनेन इति दर्शनम् पद में करण में ल्युट् प्रत्यय है। नेत्र अर्थ है। न दर्शनम्, अदर्शनम्, तस्मात् अदर्शनात् इति नञ्तत्पुरुष समास है। नेत्रवाचिभिन्न से तात्पर्य अचक्षु पर्याय से है। समासस्यान्तः समासान्त (समास का अन्त समासान्त है) समास के इस अन्वय से विभक्ति विरिणाम तदन्तविधि में अचक्षुः पर्यायान्तस्य समासस्य प्राप्त होता है। एवं सूत्रार्थ होता है–''अचक्षुः पर्याय से अक्षिशब्द से समासान्त तद्धितसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है गवाक्षः। गवाम् अक्षि इव इति लौकिक विग्रह में गो आम् अक्षि सु इस अलौकिक विग्रह में ''षष्ठी'' से सूत्र से गो आम् इस षष्ठयन्त अक्षि सु सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर गो अक्षि इस स्थिति में ''ङिच्च'' इस परिभाषा से परिष्कृत ''अवङ्स्फोटायनस्य'' इससे गो शब्द के ओकार का अवङ् आदेश होने पर अनुबन्धलोप होने पर ग् अव अक्षि होता है। इसके बाद दोनों अकारों के स्थान पर सवर्णदीर्घ आकार होने पर गवाक्षि अ होता है। तब गवाक्षिशब्द का ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होने पर ''यस्थेति च'' इससे इकार का लोप होने पर सर्वसंयोग में निष्पन्न गवाक्षशब्द स लोकप्रसिद्वत्व से पुल्लिंग में विद्यमान सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में गवाक्षः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र से क्या विधान है?
2. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
3. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र का उदाहरण है?
4. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र में अनक्षे पद का क्यों है?
5. ''अच् प्रत्यन्नवपूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र से क्या विधान है?
6. ''अच् प्रत्यन्नवपूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
7. ''अच् प्रत्यन्नवपूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
8. ''अक्ष्णोऽदर्शनात्'' इस सूत्र से क्या विधान है?
9. ''अक्ष्णोऽदर्शनात्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
10. ''अक्ष्णोऽदर्शनात्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है।

(8.4) ''उपसर्गादध्वनः''

सूत्रार्थ–प्र आदि अध्वन् (भार्गवाची) से समासान्त तद्धिकसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में उपसर्गाद् अध्वनः यह पदच्छोद है। यहाँ ''उपसर्गाद्'', ''अध्वनः'' ये दो पद पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''अच्प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र से अच् पद की अनुवृत्ति आती है। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। उपसर्गपद से प्रादि का ग्रहण किया जाता है। एवं सूत्र का अर्थ होता है ''प्र आदि पूर्वक अध्वन्नन्त समास से समासान्त तद्धिकसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है प्राध्वो रथः। प्रगतः अध्वानम् इस लौकिक विग्रह में

प्र अध्वन् अम् इस अलौकिक विग्रह में अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इस वार्तिक से प्रादितत्पुरुष समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व होने पर सुप् का लोप होने पर प्रअध्वन् इस स्थिति में दो अकारों के स्थान पर सवर्णदीर्घ में आकार होने पर प्राध्वन् निष्पन्न होता है। प्राध्वन्शब्द का ''यचिभम्'' से भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे भसंज्ञक प्राध्व-शब्द के टि के अन् का लोप होने पर प्राध्व् अ होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न प्राध्वशब्द से पुल्लिंग में सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में प्राध्वः रूप बना।

समासान्तकार्यो के निषेधसूत्र नीचे दिये जा रहे हैं?

(8.5) ''न पूजनात्'' (4.8.69)

सूत्रार्थ–पूजन अर्थ से पर जो प्रातिपदिक है उससे समास से समासान्त नहीं होते है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त का निषेध का निधान है। द्विपदात्मक इस सूत्र में ''न'' अव्यय पद है और पूजनात् यह पञ्चमी एकवचनान्त रूप है। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। पूजन शब्द से पूजनार्थक का ग्रहण किया गया है। पूजनात् और प्रातिपदिकात् को अन्वयव है। उससे पूजन अर्थ परे जो प्रातिपदिक तस्मात् प्राप्त होता है। समास का अन्त समासान्त समास पद से अन्वय से प्रातिपदिकातात् समासात् प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ होता है–पूजनार्थ से पर जो प्रातिपदिक है उस तदन्त समासान्त का नहीं होता है। ''स्वातिभ्यामेत'' से ही भाष्य बल से सु अति इन दोनों उपसर्गों का पूजन अर्थ का ही ग्रहण किया गया है। इष्टि नाम इच्छसप्रतिपादक वचन है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है खुराजा। सुशोभनो राजा इस लौकिक विग्रह में सुशोभन सु राजन सु इस लौकिक विग्रह में ''कुगतिप्रदयः'' इस सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर सु राजन निष्पन्न होता है। सुराजन् से ''राजाहः सखि भ्यष्टच्'' इससे टच् प्राप्त होता है। परन्तु सुराजन् यहाँ सु प्रत्यय पूजनार्थक है। एवं सुराजन् का पूजनार्थ पूर्वपदकत्व से प्रोक्त सूत्र से टच् प्रत्यय का निषेध होने पर सुराजन् होता है। इसके बाद सुराजन् से पुल्लिंग का लोप होने पर सुप्रत्यय में प्रक्रियाकार्य में सुराजा रूप बना।

इसी प्रकार अतिशयितो राजा अतिराजा यहाँ पर न समासान्त प्रत्यय है।

(8.6) ''किमः क्षेपे''

सूत्रार्थ–निन्दा अर्थक किं शब्द से परे जो प्रातिपदिक तदन्त समास से समासान्त नहीं होते हैं।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त निषेध होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में किमः पञ्चमी एकवचनान्त रूप है। क्षेपे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। सूत्र में ''प्रत्ययः'',

टिप्पणियाँ

''ङ्याप्प्रातिपिदकात्'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र है। क्षेप नाम निन्दा का है। किम् का प्रातिपदिक से अन्वय होता है। उससे पूजनार्थ से परे जो प्रातिपदिकान्तात् समासात् पद प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ है। ''निन्दार्थक किं शब्द से परे जो प्रातिपदिक है उस समास से समासान्त नहीं होते हैं।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है किं राजा। कुत्सितो राजा इस लौकिक विग्रह में किम् सु राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''किं क्षेपे'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद किम् का पूर्वनिपात होने पर समास के प्रातिपदिकत्व से सुप का लोप होने पर किंराजन् होता है। किंराजन् से ''राजाह: सखिभ्यष्टच्

इससे टच् प्राप्त होने पर किं पूर्व पद से प्रोक्त सूत्र से उसका निषेध होने पर किंराजन् होता है। किंराजन् से पुल्लिंग में सु प्रत्यय होने पर किंराजा रूप बना।

(8.7) ''नञस्तत्पुरुषात्'' (4.8.69)

सूत्रार्थ–नञ् तत्पुरुष समास से समासान्त नहीं होते हैं।

सूत्रव्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त निषेध होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में नञ: तत्पुरुषात् से दो पद पञ्चमी एकवचनान्त है। इस सूत्र में ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। एवं सूत्रार्थ होता है–''नञ् तत्पुरुष समास से समासान्त नहीं होते हैं।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अराजा। न राजा इस लौकिक विग्रह में न राजन् सु इस अलौकिक विग्रगह में ''नञ्'' सूत्र से तत्पुरुष समास होने पर प्रातिपदिक से सुप् का लोप होने पर न लोपे अराजन् शब्द निष्पन्न होता है। अराजन् इससे ''राजाह: सखिभ्यष्टच्'' इस टच् प्रत्यय प्राप्त होने पर नञ्तत्पुरुष से प्रोक्त सूत्र से उसका निषेध होने पर अराजन् से पुल्लिंङ्ग में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में अराजा रूप बना।

(8.8) ''पथोविभाषा'' (5.4.72)

सूत्रार्थ–पथिन् शब्द से नञ् तत्पुरुष समास से विकल्प से समास नहीं होते हैं।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त का निषेध होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में ''पथ:'' पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''विभाषा'' विकल्प बोधक अव्यय पद है। इस सूत्र में ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''नञस्तत्पुरुषात्'' सूत्र की अनुवृत्ति आती है। पथिन शब्द का तत्पुरुषात् इत्यादि अन्वय से तदन्तविधि में पथिन् शब्द से तत्पुरुषात् पद प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ होता है–''पथिन् शब्द से नञ्तत्पुरुष समास से विकल्प से समासान्त नहीं होते हैं।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अपन्था:। न पन्था: इस लौकिक विग्रह में न पथिन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''नञ्'' सूत्र से तत्पुरुष समास होने पर, प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप

होने पर न लोप अपथिन् निष्पन्न होता है। अरापथिन् से ''ऋक्पूरब् धू: पथामानक्षे'' इससे अच् प्रत्यय प्राप्त होने पर पथिन शब्दान्त नञ्तत्पुरुष से प्रोक्त सूत्र से विकल्प से निषेध होने पर अपथिन् से पुल्लिंग में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में अपन्था: रूप होता है। निषेध के विकल्पता से उसके अभाव में अच् प्रत्यय होने पर अपथिन् अ इस स्थिति में, भसंज्ञक के टि (अन्) का लोप होने पर निष्पन्न अपथशब्द का ''पथ: संख्याव्ययादे:'' इससे नपुंसक होने पर सु प्रत्यय होने पर अपथम् रूप बना।

पाठगत प्रश्न-2

11. ''उपसर्गादध्वन:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है।
12. ''उपसर्गादध्वन:'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है।
13. ''न पूजनात्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
14. ''न पूजनात्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
15. ''किम: क्षेपे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
16. ''किम: क्षेपे'' इस सूत्र का उदाहरण है?
17. ''नञस्तत्पुरुषात्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
18. ''नञस्तत्पुरुषात्'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?
19. ''पथो विभाषा'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
20. ''पथो विभाषा'' इस सूत्र का क्या उदहारण है?

(8.1) वृत्तिस्वरूपम्, तद्भेदाश्च''

(वृत्ति का स्वरूप और उसके भेद)

''समर्थ: पदविधि:'' इस सूत्र में पद विधि: नाम पदसम्बन्धी विधि है। अर्थात् पदोद्देरथकविधि : है। पद्दोद्देश्यक विधित्व वृत्ति का नाम है। वृत्ति नाम किसका है? प्रश्न उत्पन्न होता है। इस प्रसंग में सिद्धान्त कौमुदी में भहोजिदीक्षित ने कहा है–वृत्ति पाँच प्रकार की होती है।

(1) कृन्तद्धित

(2) समास

(3) एकशेष

(4) सनाद्यन्त

(5) धातुरूप

टिप्पणियाँ

परार्थाभिधानं वृत्ति। पर अर्थ नाम को वृत्ति कहते है? ''परार्थाभिधानं वृत्तिः'' वृत्ति लक्षण है। परार्थ अभिधान परार्थाभिधान सृ षष्ठी तत्पुरुष समास है। ''अभिधानम्'' करण में ल्युट् प्रत्यय होता है। परार्थ नाम विग्रह वाक्य अवयव पदार्थों से पर जो अर्थ है वह परार्थ उस प्रातिपदिक वृत्ति होती है। अर्थात् विग्रह वाक्यों में जो पद हैं उनमें उनका अर्थ होता है, उसकाभिन्न विशिष्ट एक अर्थ की वृत्ति प्रातिपदिक होता है। एवं विग्रह वाक्य अवयव पदार्थों से पर अन्य जो विशिष्ट अर्थ है वह प्रातिपदिक वृत्ति है। अर्थात् प्रक्रिया दशा में प्रत्येक अर्थवत्व से प्रथम विगृहीता पदों समुदाय शक्ति से विशिष्टार्थप्रातिपदिक वृत्ति है। अर्थात् विग्रह वाक्यों में जो पद हैं उनमें अर्थ होते हैं उसके भिन्न का विशिष्टो से एकार्थ का प्रातिपदिका वृत्ति होती है। एवं विग्रह वाक्य अवयव पदार्थों से परे अन्य जो विशिष्ट का अर्थ प्रतिपादिका वृत्ति है। अर्थात् प्रक्रिया दशा में प्रत्येक अर्थवत्व् से प्रथमविगृहीत पदों का समुदाय शक्ति से विशिष्ट एकार्थक प्रतिपादिक वृत्ति है। समुदायशक्ति नाम एकार्थीभाव सामर्थ्यम् है। एवं एकार्थीभावसामर्थ्य विशिष्ट वृत्ति विशिष्ट अर्थ प्रतिपदान होता है।

वृत्ति के पञ्च भेद है–कृदन्तविधिः तद्धितान्तवृत्ति, समास वृत्तिः, एकशेष वृत्ति, सनाद्यन्तवृत्ति। वहाँ समास वृत्ति में जैसेः–''वृत्तिलक्षणसङ्गमनम्'' जैसेः–राज्ञः पुरुषः यहाँ पर राज्ञः इस पद का राजसम्बन्धी अर्थ है। पुरुषःपद का अर्थ है पुरुष। यहाँ समासवृत्ति में राजपुरुष निष्पन्न होता है। राजपुरुष पद का अर्थ होता है राजविशिष्ट पुरुष।

(8.2) ''विग्रहवाक्यसवरूपम्, तद्भेदाश्च

(विग्रह वाक्य स्वरूप और उसके भेद)

वृत्तिलक्षणावसर पर परार्थ नाम क्या है ऐसा पूछने पर विग्रह वाक्य अवयवपदार्थों से परे जो अर्थ होता है वह परार्थ होता है ऐसा कहा गया है। तब विग्रह क्या होता है ऐसा प्रश्न पैदा होता है। वह दो प्रकार का होता है। लौकिक और अलौकिक। परिनिष्ठतत्व से साधुः लौकिक विग्रह होता है। प्रयोगा अहो असाधुरलौकिक विग्रह है।

''वृत्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः'' यह विग्रह का लक्षण है। वृत्ति अर्थ का अवबोधक जो वाक्य है वही विग्रह है। जैसेः–राजपुरुषः इस समास वृत्ति में राज्ञः पुरुषः यह वाक्य तदर्थबोधक है। अतः वह विग्रह कहलाता है। और वह विग्रह लौकिक और अलौकिक दो प्रकार से विभक्त होता है।

वहाँ लौकिक विग्रह परिनिष्ठित होता है। परिनिष्ठित माम (व्याकरण संस्कृत) संस्कृत व्याकरण का है। व्याकरण से संस्कृतों में ही पदों का प्रयोग अर्हत्व से लोक में साधुत्व (सम्यक) होता है। एवं ''परिनिष्ठितत्वात् साधुलौकिकः'' यह लौकिक विग्रह वाक्य लक्षण है। लौकिक नाम लोक में प्रयोग होने का है। अलौकिक नाम लोक में प्रयोग नहीं होने से नहीं है। अर्थात् परिनिष्ठिततत्व के अभाव में जो विग्रह लोक में प्रयोग नहीं होता है वह अलौकिक विग्रह है। एवं ''प्रयोगानर्हः असाधुरलौकिकः'' यह अलौकि विग्रह वाक्य लक्षण है।

यथा उदाहरणः–समास में राजपुरुषः। राजः पुरुषः इस लौकिक विग्रह वाक्य का व्याकरण

संस्कृतत्व से लोक में प्रयोग होता है यहाँ राजन् ङस् पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह वाक्य में। इस वाक्य का संस्कृत व्याकरणत्व के अभाव से लोक में प्रयोग नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न-3

21. वृत्ति का लक्षण क्या है?

22. वृत्ति के कितने भेद हैं?

23. विग्रह नाम किसका है?

24. विग्रह के कितने भेद और वे कौन से हैं?

25. उदाहरण सहित लौकिक विग्रह का लक्षण लिखो?

26. उदाहरण सहित अलौकिक विग्रह का लक्षण लिखो?

(8.3) समास भेदाः

(समास के भेद)

समास दो प्रकार का होता है।

(1) नित्य

(2) अनित्य

अविग्रह अथवा अस्वपद विग्रह नित्य समास होता है। नास्ति विग्रहो यस्य सः अविग्रहः (नहीं है। विग्रह जिसका अविग्रह है) यहाँ विग्रह पद से लौकिक विग्रह स्वीकृत किया गया है। एवं लौकिक विग्रह वाक्य रहित नित्य समास है। नहीं है अपने पदों से विग्रह जिसका वह अस्वपद विग्रह है। समस्यमान अपने पदों से विग्रह वह समास नित्य समास होता है।

अविग्रह नित्यसमास का उदाहरण है–कृष्णसर्पः। यहाँ कृष्णः च असौ सर्पः च इति (कृष्ण है जो सर्प) काला है जो साँप इस लौकिक विग्रह में सर्पजाति विशेष वाचक बोध के अभाव से कृष्ण सर्पः अविग्रह नित्य समास है। अस्वपदविग्रह का नित्य समास का उदाहरण जैसेः–कुपुरुषः। कुत्सितः च असौ पुरुषः च इस लौकिक विग्रह है। समास में प्रयुज्यमान कु पदका अर्थ बोध के लिए लौकिक विग्रह में कुत्सितः पद का प्रयोग आदि समास अस्वपदविग्रह नित्य समास है।

स्वपदविग्रह होता है अनित्य समास। स्व से समस्यमान पदों से विग्रह जिसका है वह स्वपद विग्रह है। अर्थात् जिस समास में समासयुक्त पदों से ही विग्रह वाक्य निर्मित किया गया है वह स्वपदविग्रहः समास होता है। वह अनित्य होता है। जैसेः–पीतम् अम्बरं यस्य स (पीला है) वस्त्र जिसका वह पीताम्बर है। यहाँ पीतशब्द से और अम्बर शब्द से समस्यमान से ही विग्रह के दर्शन से यह अनित्य समास है।

टिप्पणियाँ

समास के कितने भेद होते हैं यहाँ बहुत सी विप्रतिपत्तियाँ हैं। सामान्यतः समास के पाँच भेद होते हैं यह कह सकते हैं और वे है–केवल समास, अव्ययीभावसमास, तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहि समास और द्वन्द समास होता है।

(8.3.1) केवल समास

अव्ययीभाव आदि विशेष संज्ञाओं से विनिर्मुक्त जो समास है वह केवल समास होता है। समास प्रकरण में विद्यमान समासविधायक सूत्रों द्वारा समास होता है। सूत्र से क्वचित् समास होता है परन्तु उस समास की विशेषसंज्ञा नहीं की जाती है। वह समास केवलसमास कहा जाता है। विशेष संज्ञायें में होती हैं- अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द और बहुव्रीहि। इस समास का सुप्सुपासमास यह नामान्तरण है। ''सह सुपा'' इस सूत्र को ''इवेन सह समासो विभक्त्यलोपश्च'' यह वार्तिक इस समास का विधायक है। भूतपूर्वः वागर्थाविव इत्यादि इस समास का उदाहरण है।

(8.3.2) अव्ययी भाव समास

''प्राय पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः'' यह अव्ययीभाव समास का लक्षण है। पूर्वपद का अर्थ है पूर्वपदार्थः। पूर्व पद का अर्थ प्रधान हो जहाँ यह पूर्वपदार्थ प्रधान ही बहुव्रीहि समास है। इस समास में प्राय पूर्वपदार्थ का ही प्राधान्य है। दिखाई देता है। अव्ययीभाव यह अन्वर्था संज्ञा है। अनव्यय अव्यय होता है। अव्ययीभाव है। ''अव्ययीभावः'' यह अधिकृत विहित समास अव्ययीभाव ''संज्ञक होता है। इस सूत्र से ''तत्पुरुष'' इस सूत्र से पहले तक जो सूत्र हैं उनसे विहित समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है।

अव्ययीभावसमास के पाठ में इस समास के विधायक पाँच सूत्र सन्निविष्ट किये है। वे होते हैं–''अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि-व्यद्ध्यर्याभावाऽत्ययाऽसम्प्रति-शब्द प्रादुर्भाव-पश्चाद्-यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्याऽन्तवचनेषु'', ''यावदवधारणे'', ''सुप्प्रतिना मात्रार्थे'', ''संख्या वश्येन'', ''नदीभिश्च''। यहाँ ''अव्ययविभक्ति...'' इस सूत्र के अधिहरि, उपकृष्णम्, समुद्रम्, दुर्यवनम् उदाहरण हैं। ''यावदवधारणे'' इस सूत्र का यावच्छलोकम् उदाहरण है।'' सुप्प्रतिनायात्रार्थे'' इस सूत्र का रूप् प्रति ''संख्यावेश्येन'' इस सूत्र का उदाहरण है–एकविंशतिभारद्धाजम्। ''नदीभिश्च'' इस सूत्र का उदाहरण है पञ्चगङ्गम्।

अव्ययीभाव समास में पूर्वपदार्थप्राधान्य दिखाई देता है। जैसेः–अधिहरि। हरौ इस लौकिक विग्रह में हरि ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में अधिहरि रूप निष्पन्न होता है। अधिहरि यहाँ अव्ययीभाव समास में अधि पूर्वपद है। यहाँ पूर्वपद का अधिकरण अर्थ के प्राधान्य से अधि हरि पूर्वपदार्थ प्रधान है।

परन्तु **सूपप्रति** यहाँ पूर्वपदार्थप्राधान्य का व्यभिचार है। ''सुप्प्रतिना यात्रार्थे'' इस सूत्र से सूप के लेश लौकिक विग्रह में समास में सूपप्रति रूप निष्पन्न होता है। सूपप्रति यहाँ प्रति मात्राबोधक

है। वस्तुत: यहाँ मात्रार्थ के उत्तरपद का ही प्राधान्य है और पूर्वपदार्थ का अप्राधान्य है। अत कहा गया है–प्राय पूर्वपदार्थ प्रधान अव्ययीभाव समास होता है।

''समासान्ता:'' ये अधिकृत करके कुछ समासान्त प्रत्यय होते हैं। और वे प्रत्यय है ''तद्धिता:'' इस अधिकार बल से तद्धितसंज्ञक होते हैं। यहाँ अल्ययीभाव समास का पाठ में टच् प्रत्यय विध ायक चार सूत्रों का उल्लेख किया गया है। उनमें ''अव्ययीभावेशरत्प्रभृतिभ्य:'', ''अनश्च'' ये दो सूत्र नित्य टच् प्रत्यय विधायक सूत्र है। यहाँ यथाक्रमम्, उपशरदम्, अध्यात्मम्, इत्यादि सूत्र हैं। ''नपुंसकादन्यतरस्थाम्--, ''झय:'' ये दो सूत्र विकल्प से टच् प्रत्यय विधायक है। यहाँ पर क्रमानुसार (यथाक्रम) उपचर्म, उपचर्मम् उपसभिधम् उपसमित् इत्यादि उदाहरण हैं।

अव्ययीभाव समास निष्पन्न शब्द का ''अव्ययीभाव:'' से नपुंसकत्व होता है। उससे ''ह्रस्वोनपुंसके प्रातिपदिकस्य'' इस सूत्र से नपुंसक का ह्रस्व होता है। अव्ययीभाव समास का ''अव्ययीभावश्च'' इस सूत्र से अव्यय संज्ञा होती है। अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्ययादाप्सुप:'' इससे सुप् का लुक् प्राप्त होता है। जब अव्ययीभावसमास निष्पन्न शब्द अकारान्त होता है तब विशेषकार्य होता है। तब ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्या'' अदन्त अव्ययीभाव से परे सुप् का ''अव्ययादाप्सुप:'' इससे लोप निषेध होता है। किन्तु पञ्चमी के बिना सुप् के स्थान पर अमादेश होता है। ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्'' इस सूत्र से अदत्त अव्ययीभाव से तृतीया में और सप्तमी में बहुलम् सु प्रत्यय को अम् आदेश होता है। उससे उपकृष्णम् उपकृष्णेन।

पाठगत प्रश्न-4

27. नित्यसमास का लक्षण क्या है?
28. नित्यसमास के दोनों पक्षों में उदाहरण दिखाइये?
29. समास के सामान्यत: कितने भेद हैं?
30. केवलसमास का लक्षण क्या है?
31. विशेष संज्ञा क्या है?
32. अव्ययीभावसमास का लक्षण क्या है?
33. अव्ययीभावसमास के लक्षण में प्रायेण पद किसलिए ग्रहण किया गया है?
34. अव्ययीभावसमास में समासान्त टच् प्रत्ययों के विधायक सूत्र कौन से हैं?
35. अव्ययीभावसमास में अमादेश विधायक दो सूत्र कौन से हैं?

(8.3.4) ''तत्पुरुषसमास''

प्रायेण उत्तर पदार्थ प्रधान: तत्पुरुष:। (प्राय उत्तर पदार्थ प्रधान तत्पुरुष समास कहलाता है) उत्तरपद का अर्थ होता है पूर्वपदार्थ। उत्तरपदार्थ प्रधान हर जहाँ प्रधान वह उत्तरपदार्थप्रधान

टिप्पणियाँ

बहुव्रीहि समास होता है। समास में प्राय उत्तर पदार्थ का प्राधान्य दिखाई देता है। ''तत्पुरुषः'' यह अधिकृत विहित समास तत्पुरुषसांक होता है। इस सूत्र से ''शेषो बहुव्रीहिः'' से पहले तक जो सूत्र हैं उनसे विहित समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

इस समास का उदाहरण है–कृष्णश्रितः। कृष्णश्रितः यहाँ समास में श्रितः उत्तरपद है। उस अर्थ के प्राधान्य से और उत्तरपदार्थ प्राधान्य से यह समास उत्तरपदार्थ प्रधान तत्पुरुष समास होता है।

तत्पुरुष समास के बहुत से भेद होते हैं। समानाधिकरण और व्यधिकरण ये दो भेद होते हैं ऐसा कह सकते हैं। यहां पर न्यधिकरणतत्पुरुष का द्वितीयातत्पुरुष, तृतीयातत्पुरुष, चतुर्थीतत्पुरुष, पञ्चमी तत्पुरुष, षष्ठीतत्पुरुष और सप्तमीतत्पुरुष से छः भेद होते हैं। समानाधिकरण तत्पुरुष नाम कर्मधारय समास का है। अन्यथा भी सामान्यतः कर्मधारय, द्विगु, नञ आदि चार भेद कह सकते हैं।

यहाँ द्वितीयादि सप्तमी तत्पुरुष सामान्य हैं। तत्पुरुष पाठ में सामान्यतत्पुरुष विधायक आठ सूत्र उल्लेखित हैं। द्वितीया तत्पुरुष का ''द्वितीयाश्रिताहीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः'' यह विधायक सूत्र है। कृष्णश्रितः दुःखातीतः इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण हैं। तृतीया तत्पुरुष का ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन'', ''कर्त्तकरणेकृता बहुलम्'' ये दो विधायक सूत्र हैं। शङ्कुलाखण्डः नखभिन्नः इत्यादि क्रमानुसार उदाहरण है। चतुर्थीतत्पुरुष का ''चतुर्थीतदथार्थबलि हित सुख रक्षितैः'' यह विधायक सूत्र है। यूपदारु द्विजार्थः सुपः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। पञ्चमीतत्पुरुष का ''पञ्चमीभयेन'' और ''स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन'' ये दो विधायक सूत्र हैं। चोरमयम् इत्यादि यहां उदाहरण है। षष्ठीतत्पुरुष समास का ''षष्ठी'' यह विधायक सूत्र है। राजपुरुषः यहाँ उदाहरण है। सप्तमी तत्पुरुष का ''सप्तमी शौण्डैः'' विधायक सूत्र है। इस सूत्र का उदाहरण है अक्षशौण्डः। किन्तु षष्ठी समास निषेध सात सूत्र हैं। ''न निर्धारणे'', ''पूरणगुणमुहितार्थसदव्ययतव्य-समानाधिकरवेन'' ''क्वेन च पूजायाम्'', ''अधिकरणवाचिना च'', ''कर्मणि च'', ''तृजकाभ्यां कर्तरि'' और ''कर्त्तरि च''। षष्ठी समास का अपवादभूत दो सूत्र हैं–''पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'' और ''अर्धं नपुंसकम्''। यहाँ पूर्वकायः, अध र्पिप्पली क्रम अनुसार उदाहरण हैं।

समान विभक्ति पदों का जब तत्पुरुषसमास होता है तब कर्मधारय संज्ञा होती है। यहाँ ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' यह सूत्र प्रमाण है। समानाधिकरण तत्पुरुष विधायक तत्पुरुष समास का पाठ में नौ सूत्र संग्रहित हैं। वे हैं–''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'', ''कुत्सितानि कुत्सचैः'', ''पापाणके कुत्सितैः'', ''उपमानानि सामान्य वचनैः'', ''उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्या प्रयोगे'', ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानै'', ''वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम्'' ''किं क्षेपे'', ''प्रशंसावचनैश्च''। इन सूत्रों के यथाक्रम उदाहरण हैं– नीलोत्पलम्, वैयाकरणखसूचिः, ''पापनापितः'', ''घनश्यामः'', ''पुरुषव्याघ्रः'', ''सद्वैद्यः'', ''गोवृन्दारकः'', ''किंराजा गोतल्लजः''। यहाँ ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्'' वार्तिक भी पढ़ा गया है। इसका उदाहरण है शाकपार्थिवः। इन सूत्रों से और वार्तिक से विधीयमान तत्पुरुष का समानाधिकरण से कर्मधारय संज्ञा होती है। एवं कर्मधारय का विशेषणपूर्वपद, विशेषणोत्तरपद, उपमानपूर्वपद, उपमानोत्तरपद, इत्यादि का अनात्तरभेदों की कल्पना कर सकते हैं।

तत्पुरुष का तृतीय भेद है द्विगुः। ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' इस सूत्र से विहित संख्यापूर्व

तत्पुरुष समासः द्विगु संज्ञा प्राप्त होता है। यहाँ प्रमाण ''संख्यापूर्वोद्विगुः'' है। द्विगु समास तीन प्रकार का होता है। समाहार द्विगु, तद्धितार्थ द्विगु और उत्तरपद द्विगु। यहाँ समाहार द्विगु का उदाहरण है-पञ्चगवम्। तद्धितार्थ द्विगु का उदाहरण है पौर्वशालः। और उत्तरपद द्विगु का उदाहरण है पञ्चगवधनः। ''द्वन्दतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्य समास वचनम्'', ''गोरतद्धितलुकि'' इस सूत्र वार्तिक में द्विगुसमास का रूप निष्पादन में उपयोगी है।

नञ् आदि समास पाँच होते हैं। नञ्तत्पुरुष, कुतत्पुरुष, गतितत्पुरुष, प्रादितत्पुरुष और उपपदतत्पुरुष है। ''नञ्'' नञ्तत्पुरुषविधायक सूत्र है। इसका उदाहरण है। अब्राह्मणः। कुतत्पुरुष, गतितत्पुरुषः और प्रादितत्पुरुषः ''कुगतिप्रादयः'' सूत्र से विधान होता है। यहाँ कुपुरुषः, ऊरीकृत्य, सुपुरुषः इत्यादि यथाक्रम उदाहरण हैं। प्रादि समास विधायक पांच वार्तिक भी यहाँ उल्लेखित किये गये हैं-''प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया'', ''अल्यादयः क्रात्ताद्यर्थे द्वितीयया'', ''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'', ''पर्यादयो ग्लानायर्थे चतुर्थ्या'', ''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या''। प्राचार्यः, अतिपालः, अवकोकिलः, पर्यध्ययनः, निष्कौशाम्बिः इत्यादि इन वार्तिक का क्रम से उदाहरण हैं। ''उपपदमतिङ्'' यह उपपदतत्पुरुष विधायक सूत्र है। यहाँ कुम्भकारः इत्यादि उदाहरण है।

तत्पुरुषसमास में ''समासान्ताः'' इससे अधिकृत कुछ समासान्त प्रत्ययों का विधान किये जाते हैं। और वे प्रत्यय हैं ''तद्धिताः'' इस अधिकारबल से तद्धित संज्ञक होते हैं। यहाँ तत्पुरुष समास का पाठ में अच् प्रत्यय विधायक ''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः'' और ''अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः'' इन दो सूत्रों का उल्लेख किया गया है। यहाँ द्व्यङ्गुलम्, सर्वरात्रः इत्यादि क्रम अनुसार उदाहरण हैं। यहाँ ''राजाहःसखिभ्यष्टच्'' टच् विधायक सूत्र हैं। यहाँ ''रात्राह्नाहाः पुंसि'', ''परवल्लिङ्गंद्वन्दतत्पुरुषयोः'', ''अर्धर्चाः पुंसि च'' इत्यादि लिङ्गानुशासनपरक सूत्र हैं। यहाँ अहोरात्रः, राजपुत्रः, अर्धर्चः इत्यादि क्रमानुसार उदाहरण हैं।

पाठगत प्रश्न-5

36. ''तत्पुरुष समास का लक्षण क्या है?

37. तत्पुरुषसमासलक्षण में प्रायेण पद किसलिए लिया गया है।

38. व्यधिकरणतत्पुरुष के कितने भेद हैं?

39. समानाविकरण तत्पुरुष की कौन संज्ञा और किस सूत्र से होती है।

40. द्विगु संज्ञा किसकी और किस सूत्र से होती है?

41. प्रादितत्पुरुष समास विधायक वार्तिक कौन से हैं?

42. प्रादितत्पुरुष समास विधायक वार्तिक कौन से हैं?

43. परमराजः यहाँ पर टच् प्रत्यय किस सूत्र से होता है।

टिप्पणियाँ

(8.3.5) बहुव्रीहि समास

''प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः'' यह बहुव्रीहि का सामान्य लक्षण है। अन्य पद का अर्थ अन्य पदार्थ होता है। समस्यमान पदार्थपेक्षता से मित्र पदार्थ अन्यपदार्थ होता है। अन्य पदार्थ है प्रधान जहाँ वह अन्यपदार्थ प्रधान है। इस समास में प्राय अन्यपदार्थ का प्राधान्य दिखाई देता है। ''शेषो बहुव्रीहिः'' यह अधिकृत करके विहित समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है। इस सूत्र से ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से पहले तक जो सूत्र हैं उनसे विहित समास बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

इस समास का उदाहरण है–पीताम्बरः।

पीताम्बर यहाँ समस्यमान पीतम् अम्बर दो पद हैं। पीताम्बररूप समस्यमान पदों की अर्थ अपेक्षा से अन्यपदार्थ विष्णु रूप होता है। उस अन्य पदार्थ विष्णु की प्राधान्यता से यह समास अन्यपदार्थ प्रधान बहुव्रीहि समास होता है।

परन्तु यहाँ अन्य पदार्थ प्राधान्य का व्यभिचार दो और तीन रूप हैं। ''संख्ययाव्ययासन्नदूराधिकसंख्याः संख्येये'' इस सूत्र से द्वौ च त्रयः च इस लौकिक विग्रह में समास होने पर द्वित्राः रूप निष्पन्न होते हैं। द्वित्राः यहाँ उन्नयपदार्थ का प्राधान्य है। और अन्य पदार्थ का प्राधान्यभाव है। अतः कहा जाता है ''प्रायेण अन्यपदार्थ प्रधान बहुव्रीहि समास होता है।''

बहुव्रीहि समास के पञ्च विधायक सूत्र है–''अनेकमन्यपदार्थे'', ''संख्ययाव्ययासन्नदूराधिक संख्या-संख्येये'', ''दिङ्नामान्यन्तराले'', ''तत्र तेनेदमिति सरुपे'', ''तेन सहेति तुल्ययोगे''। यहाँ पर पीताम्बरः, द्वित्राः, दक्षिणपूर्वा, हस्ताहस्ति, केशाकेशि, इत्यादि क्रमानुसार उदाहरण हैं। ''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपद लोपः'' ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपद लोपः'', ''सप्तम्युपमान पूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' ये वार्तिक बहुव्रीहि समास विधायक हैं।

बहुव्रीहि समास में पूर्वनिपात विधायक सूत्र ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'', ''निष्ठा'', ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' हैं। और यहाँ पर पूर्वनिपात के यथाक्रम-कण्ठेकालः, युस्तयोगः, अग्न्याहितः इत्यादि उदाहरण हैं।

बहुव्रीहि समास में ''समासान्ताः'' अधिकृत कुछ समासान्त प्रत्ययों का विधान है। और वे प्रत्यय ''तद्धिताः'' इस सूत्र के अधिकार बल से तद्धितसंज्ञक होती है। ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'', ''अन्तर्वहिर्भ्यां चे लोम्नः'' ये दो सूत्र अप् प्रत्यय विधायक हैं। इनके क्रमशः उदाहरण हैं– कल्याणी पञ्चमाः, अन्तर्लोमः। ''बहुव्रीहौ संख्येयेडजबहुगणात्'' यह डच् प्रत्यय विधायक सूत्र है। इसका उदाहरण ''उपदशाः'' है। ''इच्कर्मव्यतिहारे'' यह इच् प्रत्यय विधायक सूत्र है। केशाकेशि इत्यादि यहाँ उदाहरण हैं। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' यह षच् प्रत्यय विधायक सूत्र है। यहाँ उदाहरण है दीर्घसक्थः। ''द्वित्रिभ्यां स मूर्ध्नः'' यह ष प्रत्यय विधायक सूत्र है। द्विमूर्धः इत्यादि यहाँ उदाहरण है। ''उरः प्रभृतिभ्यःरूप्'' ''इनःस्त्रियाम्'' ''शेषाद्विभाषा'' ये तीन सूत्र कप् प्रत्यय विधायक हैं।

यहाँ पर व्यूढोरस्कः बहुदण्डिका, महायशस्कः इत्यादि उदाहरण है। समासान्त लोप विधान के लिए ''पदस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' ''संख्यासु पूर्वस्य'' ''उद्विभ्यां काकुदस्य'' ''पूर्णाद्विभाषा'' ये चार सूत्र पढ़े गये हैं। व्याघ्रपात्, द्विपात्, उत्काकुत्, पूर्णकाकुत् इत्यादि क्रमशः उदाहरण हैं।

(8.3.6) द्वन्द समास

''प्रायेण उभयपदार्थप्रधानः द्वन्दः'' यह द्वन्द समास का लक्षण है। उभयपद का अर्थ उभयपदार्थ है। समस्यमान पूर्वपद का और उत्तरपद का अर्थ उभयपदार्थ होता है। उभय पदार्थ प्रधान है जहाँ वह उभयपदार्थप्रधान है। इस समास में प्राय उभयपदार्थ का प्राद्यान्य दिखाई देते है। ''चार्थेद्वन्दः'' यह द्वन्दसमासविधायक सूत्र है। ''च'' अर्थ है–समुच्च्य, अन्वाचय, इतरेतरयोग समाहार। इनमें समुच्चय और अन्वाचय में असम अर्थ से समास नहीं होता है। एवं इतरेतरयोग और समाहार द्वन्दसमास दो प्रकार विभाजित किया जाता है।

इस समास का धवखदिरौ इत्यादि उदाहरण है। धवरवदिरौ यहाँ पर समस्यमान धव और खदिर पदों में अर्थ के प्राधान्यात् से यह उभयपदार्थ प्रधान द्वन्द समास है।

परन्तु दन्तोष्ठम् यहाँ उभयप्राधान्य का व्यभिचार है। ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से दन्तः च ओष्ठः च तयोः समाहारः इस लौकिक विग्रह में समास होने पर दन्तोष्ठम् रूप निष्पन्न होता है। दन्तोष्ठम् यहाँ अन्य पदार्थ के समाहार की प्राधान्य है और उभय पदार्थ का प्राधान्य नहीं है। एवं कहा जाता है-''प्रायेण उभयपदार्थप्रधानद्वन्द''।

द्वन्द समास में पूर्वनिपात विधायक ''द्वन्दे धि'', ''अगाद्यन्तम्'' ''अल्पाच्तरम्'' ये सूत्र हैं। यहाँ पर हरिहरौ, ईशकृष्णौ, शिवकेशवौ इत्यादि क्रमशः उदाहरण हैं। इसके बाद पर निपात विधायक सूत्रों में ''राजदन्तादिषु परम्'' का उल्लेख है। उससे राजदन्तः इत्यादि सिद्ध होते हैं। ''धर्मादिष्वनियमः'' ''अनेकप्राप्तावेकत्र नियमोऽनियमः शेषे'' ''ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येण'' ''लघ्वक्षरं पूर्वम्'' ''अभ्यर्हितंच'' ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' ''भ्रातुर्ज्यायसः'' इत्यादि पूर्वपर निपात बोधक वार्तिक है।

इसके बाद एक वद् भाव विधायक सूत्र हैं–''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'', ''जातिरप्राणिनाम्'', ''विप्रतिपिद्धं चानधिकरणवाचि'', ''येषां च विरोधः शाश्वतिकः'' इत्यादि हैं। यहाँ पाणिपदम्, धानाशष्कुनि, शीतोष्णम्, अहिनकुलम् इत्यादि उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-6

44. बहुव्रीहि समास का उदाहरण क्या है?
45. बहुव्रीहि समास लक्षण में प्रायेण क्यों लिया गया है।
46. बहुव्रीहि समासविधायक वार्तिक लिखो?
47. बहुव्रीहौ समासान्त अप्प्रत्यय विधायक सूत्र क्या है?
48. बहुव्रीहि में कौन-कौन से समासान्त प्रत्यय होते हैं?
49. समासान्तलोपविधायक सूत्र कौन से हैं? लिखो?
50. द्वन्द समास का लक्षण क्या हैं?

51. द्वन्द समास में लक्षण में प्रायेण पद क्यों लिया गया है?

52. द्वन्द समास में एकवद् भाव विधायक सूत्रों को लिखो?

53. द्वन्द समास में पूर्व निपात विधायक सूत्र लिखो?

54. द्वन्द समास में पूर्वपर निपात विधायक वार्तिक लिखो?

55. द्वन्द समास में समासान्त टच् प्रत्यय किस सूत्र से होता है?

पाठ सार

आदि सात पाठों में समासभेद वर्णित हैं। यहाँ तत्समासपर्यालोचन अवसर पर ही समासान्त कार्य विधायक निषेध सूत्रों का समुल्लेख विहित है। इस पाठ में सर्वसमास उपकारक समासान्त कार्य विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई है। तथाहि ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस समासान्त अप् प्रत्यय विधायक हैं। ''अच् प्रत्ययन्ववपूर्वात् लोम्नः'', ''अक्ष्णोऽदर्शनात्'' और ''उपसर्गादध्वनः'' अच् प्रत्यय विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई है। प्रसङ्गतः समासान्त निषेध सूत्र ''न पूजनात्'', ''किमःक्षेपे'', ''नञस्तत्पुरुषात्'' और ''पथोविभाषा'' समासान्त निषेध सूत्र प्रतिपादित हैं।

इसके बाद वृत्तिस्वरूप पर्यालोचित है। ''परार्थाभिधानं वृत्तिः'' यह वृत्ति लक्षण है। परार्थ का अभिधान परार्थाभिधान है। परार्थ नाम विग्रह वाक्य अवयव पदार्थों से परे जो अर्थ है वह परार्थ उसकी प्रतिपादिका वृत्ति है। वृत्ति के पाँच भेद होते हैं।

कृत्तद्धित, समास, सनाद्यत्त, एकशेष।

इसके बाद विग्रह स्वरूप प्रतिपादित किया गया है ''वृत्यार्थावबोधक वाक्य विग्रहः''। वृत्त्यर्थ का अवबोधक जो वाक्य है वही विग्रह है। और वह विग्रह दो प्रकार का होता है लौकिक और अलौकिक। यहाँ लौकिक विग्रह परिनिष्ठतः अर्थात् व्याकरण संस्कृत। लोक में व्याकरण से संस्कृतः पदों का प्रयोग होता है। अत एव ''परिनिष्ठितत्वात् साधुलौकिकः'' लौकिक विग्रह वाक्य का लक्षण हैं। अलौकिक नाम लोक में प्रयोग नहीं होता है। अर्थात् परिनिष्ठितत्वाभाव से जो विग्रह है उसका लोक में प्रयोग नहीं होता है वह अलौकिक विग्रह है। एवं ''प्रयोगानर्हः असाधुरलौकिकः'' यह अलौकिक विग्रह वाक्य का लक्षण है।

समास वृत्तियों में अन्यतम होता है। और समास सामान्यतः दो प्रकार का होता है नित्य और अनित्य। यहाँ अविग्रह अथवा अस्वपदविग्रह नित्य समास होता है। स्वपद विग्रह अनित्य समास होता है। समास के कितने भेद होते हैं यहाँ बहुत सी विप्रतिपत्तियाँ हैं। सामान्यतः समास के पाँच भेद हैं और वे हैं–केवल समास, अव्ययीभावसमास तत्पुरुष, बहुव्रीहि, और द्वन्द समास है। इसके बाद पूर्वपठित पाठों में केवल आदि पाँच समासों का कैसे परिशील सेहत किया गया है इस पाठ में प्रस्तुत किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' सूत्र की व्याख्या करो?
2. सर्वसमासान्त प्रत्यया: विषय आश्रित टिप्पणी लिखो?
3. समासान्त निषेधक विषय आश्रित टिप्पणी लिखो?
4. वृत्तिस्वरूप और उसके भेदों का वर्णन करो?
5. विग्रह स्वरूप और उसके भेदों का वर्णन कीजिये?
6. समास के कितने भेद होते हैं और उनके लक्षण क्या हैं?
7. अव्ययीभाव समास का विवेचन करो?
8. तत्पुरुष समास का विवेचन कीजिये?
9. द्वन्द समास का विवरण कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. समासान्त अ प्रत्यय।
2. ऋगाद्यन्त समास के अप्रत्यय का अन्तावयव होता है अक्षे या धू: तदन्त का नहीं होता है।
3. अर्धर्च:।
4. अनक्षे इस प्रतिषेध से अक्षशब्द से धुर् का समास में नहीं होता है।
5. सामासान्त अच् प्रत्यय होता है।
6. प्रत्यक्ववपूर्व से सामलोमन्त समास से समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।
7. प्रतिसामम्।
8. समासान्त अच् प्रत्यय होता है।
9. अचक्षु पर्याय से अक्ष्ण को समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।
10. गवाक्ष:।

उत्तर-2

11. प्रादि से अध्वन समासान्त तद्धितसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

12. प्राध्वो रथः।

13. पूजन अर्थ से परे जो प्रातिपदिक तदन्त से समास से समासान्त नहीं होता है।

14. युराजा।

15. निन्दार्थ किं शब्द से पर जो प्रातिपदिक तदन्त समास से समासान्त नहीं होते हैं।

16. किंराजा।

17. नञ्तत्पुरुषसमास से समासान्त नहीं होते हैं।

18. अराजा।

19. पथि-शब्दान्त से नञ्तत्पुरुष समास से विकल्प से समासान्त नहीं होते हैं।

20. अपन्थाः।

21. ''परार्थाभिधानं वृत्तिः'' यह वृत्ति का लक्षण है।

22. पञ्च।

23. ''वृत्यर्थावबोधक वाक्यं विग्रहः'' यह विग्रह वाक्य का लक्षण है?

24. दौ में भेद।

25. परिनिष्ठितत्वात् साधुलौकिकः'' यह लौकिक विग्रह वाक्य लक्षण है। उदाहरणं- राज्ञः पुरुषः।

26. ''प्रयोगानर्हः असाधुरलौकिकः'' यह अलौकिक विग्रह वाक्य लक्षण है। उदाहरणः-राजन् ङस् पुरुष सु।

उत्तर-4

27. अविग्रह अथवा अस्वपद विग्रह नित्य समास है।

28. कृष्णसर्पः इस अविग्रह में, कुपुरुषः इस अस्वपद विग्रह में।

29. पञ्च।

30. अव्ययीभावादिविशेषसंज्ञाओं से विनियुक्त जो समास है वह केवल समास है।

31. विशेषसंज्ञा होती हैं–अव्ययीभाव, तत्पुरुषः, द्वन्दः और बहुव्रीहिः।

32. ''प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधान अव्ययीभावः'' यह अव्ययीभाव समास का लक्षण है।

33. वस्तुतः यहाँ मात्रार्थ का उत्तरपदार्थ का ही प्राधान्य है। और पूर्वपदार्थ का अप्रधान्य है। अत कहा जाता है प्रायेण पूर्व पदार्थ प्रधानः अव्ययी भावः।

34. ''अव्ययी भावेशरत्प्रसृतिभ्यः'', ''अनश्च'' ये दो सूत्र नित्य टच् प्रत्यय विधायक है। ''नपुंसकादन्यतरस्याम्'', ''झयः'' ये दो सूत्र विकल्प से टच् प्रत्यय विधायक है।

35. नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः, तृतीया और सप्तमी में बहुलम् होता है।

उत्तर-5

36. ''प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः'' यह तत्पुरुष का लक्षण है।

37. ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इस वार्तिक से ''मालामतिकान्तः'' इस लौकिक विग्रह में समास होने पर अतिमालः रूप निष्पन्न होता है। अतिमाणः यहाँ पर अति अतिक्रान्तार्थ बोधक है। यहाँ पर अतिक्रान्तार्थ का पूर्वपदार्थ का ही प्राधान्य है और उत्तरपदार्थ का अप्राधान्य है। अतः कहा जाता है। ''प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः''।

38. व्यधिकरणतत्पुरुष का द्वितीयातत्पुरुष, तृतीयातत्पुरुष, चतुर्थीतत्पुरुष, पञ्चमीतत्पुरुष, षष्ठीतत्पुरुष और सप्तमीतत्पुरुष थे छः भेद होते हैं।

37. कर्मधारयसंज्ञा, ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' इस सूत्र से होता है।

40. संख्यापूर्व तत्पुरुष समासको द्विगु संज्ञा प्राप्त होती है। प्रमाणभूत सूत्र है–''संख्या पूर्वो द्विगुः''।

41. प्रादि समास के विधायक पाँच वार्तिकों का यहाँ उल्लेख किया गया है ''प्रादयोगताद्यर्थे प्रथमया'', ''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'', ''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'', ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'' ''निरादयः क्रात्ताद्यर्थे पञ्चम्या''।

42. ''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः'' और ''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः'' ये दो सूत्र उल्लेखित हैं।

43. ''राजाहः सखिभ्यष्टच्'' सूत्र से।

उत्तर-6

44. ''प्रायेण अन्य पदार्थ प्रधानः बहुव्रीहिः'' यह बहुव्रीहि समास का लक्षण है।

45. द्वित्राः यहाँ उभयपदार्थ का प्राधान्य है और अन्य पदार्थ का प्राधान्य भाव। अतः कहा जाता है'' प्रायेण अन्य पदार्थ प्रधानः बहुव्रीहिः''।

46. ''प्रादिभ्योधातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'' ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'', ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तर पदलोपश्च'' ये वार्तिक बहुव्रीहि विधायक हैं।

47. ''अप्पूरणीप्रमाल्योः'' ''अन्थर्बहिर्भ्यां च लोम्नः'' ये दो सूत्र अप् प्रत्यय विधायक हैं।

48. अप्, इच्, डच्, षच्, कप्, ये समासान्त पाँच प्रत्यय हैं।

49. समासान्त लोप विधान के लिए ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' ''संख्यासुपूर्वस्थ'', ''उद्विभ्यांकाकुदस्य'', ''पूर्णाद्विभाषा'' ये चार सूत्र पढ़े गये हैं।

50. ''प्रायेण उभयपदार्थप्रधानः द्वन्दः'' यह द्वन्द समास का लक्षण है।

टिप्पणियाँ

51. दन्तोष्ठम् यहाँ अन्यपदार्थ के समाहार का प्राधान्य है, उभय पदार्थ का प्राधान्य नहीं हैं।

52. ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'', ''जातिरप्राणिनाम्'', ''विप्रतिषिद्धं चानाधिकरण वाचि'', ''येषां च विरोधः शाश्वतिकः'' इत्यादि सूत्र हैं।

53. ''द्वन्देधि'', ''अजाद्यन्तम्'', ''अल्पाञ्तरम्'' ये सूत्र हैं।

54. ''धर्मादिष्वनियमः'', ''अनेक प्राप्तवेकत्र नियमोऽनियमः शेषे'' ''ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येण'', ''लध्वक्षरं पूर्वम्'', ''अभ्यर्हितं च'', ''वर्णानामानुपूर्व्येण'', ''भ्रातुर्ज्यायसः'' इत्यादि पूर्वपद निपात बोधक वार्तिक हैं।

55. ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' सूत्र से।

अष्टमः पाठ समाप्त

स्त्रीप्रत्यय प्रकरण

भूमिका

संस्कृतभाषा में प्रातिपदिक संज्ञक शब्दों के तीन अर्थ हैं। जाति, व्यक्ति और लिङ्ग। यहां तीन लिङ्ग होते हैं। पुस्त्वम्, स्त्रीत्व, और नपुंसकत्व। (पुल्लिंग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिंङ्ग)। पुस्त्व क्या है? स्त्रीत्व क्या है? और नपुंसकत्व क्या है? ऐसी जिज्ञासा होने पर शास्त्राकारों द्वारा तीन लिङ्गों के लक्षण कहा गया है?

स्तनकेशवती स्त्री स्थाल्लोमशः पुरुषः स्मृतः।
उभयोरत्तरं यच्च तदभावे नपुंसकम्।

स्तनवती स्त्री होती है। लोमवान (शरीर पर रोम या छोटे बाल वाला) पुरुष होता है। उसके अभाव में स्तनकेशलोमादित्व से स्त्रीत्व से लक्षण फलित होता है। लोमादित्व से पुस्त्व के लक्षण प्रतिफलित होते हैं। स्तनकेशलोमादिव्यजक के अभाव में होने पर उन दोनों में अन्तर सादृश्य होता है। वह नपुंसक होता है। इससे स्तनकेशादि स्त्रीत्व का लक्षण प्रतिफलित होती लोमादि से पुरुष का लक्षण प्रतिफलित होती है और स्तनकेशलोमादि के अभाव विशिष्ट दोनों का सादृश्य का अभाव हो वहाँ नपुंसकत्व का लक्षण प्रतिफलित होता है। परन्तु लिङ्ग का यह लौकिक लक्षण जडपदार्थों में सम्भव नहीं है। जैसेः—वृक्षादि प्रदार्थों का लिङ्ग दिखाई नहीं देता है। क्योंकि यहां लोमादिक नहीं है। खट्वा आदि पदार्थों का कुछ भी लक्षण दिखाई नहीं देता है। क्योंकि यहाँ स्तनकेश आदि नहीं है। अतः दोषयुक्त यह लक्षण है। तथाहि सुहृदः पर्यायभूत मित्र शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है। अर्थात् नपुंसकलिङ्ग विशिष्ट अर्थ का वाचक है। किन्तु मित्र वाच्य अर्थ तो बालिका हो सकती है और बालक भी हो सकता है। और यह (मित्र) स्तनकेशवती हो सकती है और लोभवान भी हो सकता है।

लौकिक लक्षण के अनुसार मित्र पद का अर्थ स्त्रीत्व भी प्राप्त हो सकता है और पुंस्त्व भी प्राप्त हो सकता है। किन्तु मित्र शब्द नित्यनपुंसक लिङ्गविशिष्ट अर्थ का वाचक है। अत एव यह शब्द नित्यनपुंसक लिङ्ग होता है ऐसा व्यवहार। उससे इस लक्षण के अनुसार शास्त्र में लिङ्ग की व्यवस्था। अतः लौकिक लिङ्ग के लक्षण में दोषों को देखकर शास्त्रकर्त्ताओं द्वारा लिङ्ग का शास्त्रीय लक्षण कल्पित है। सत्त्वम्, रजः, तमः ये तीन गुण हैं। और ये गुण जड़ में और चेतन में होते हैं। पुनः प्रत्येक वस्तु होती है। और सत्व, रज और तम तीन गुण होते हैं। और ये गुण जड़ में और चेतन में होते हैं। पुनः प्रत्येक वस्तु होती हैं। और सत्व, रज और तम तीन गुण होते हैं। और ये गुण जड़ में और चेतन में होते हैं। पुनज प्रत्येक वस्तु होते हैं। और सत्वरजतम प्रकृतगुणों का उपचयः पुरत्व होता है। सत्वरजतम प्राकृत गुणों का अपचय स्त्रीत्व है। सत्वरजतम प्राकृत गुणों का स्थिति मात्र नपुंसकत्व है। प्रत्येक पदार्थ में तीन गुण

टिप्पणियाँ

होते हैं। पुनः प्रत्येक पदार्थ में इन गुणों का उपचय और उपचय स्थिति मात्र होती है। प्रत्येक पदार्थ में तीन होते हैं। परन्तु एकलिङ्गक पदार्थ कौन है? कौन सा द्विलिङ्गक पदार्थ है? और कौन त्रिलिङ्गक है यहाँ पर कोशादि ही प्रमाण है। जैसे:-तट शब्द लिङ्गजयविशिष्ट अर्थ का वाचक है। तट शब्द, तीनों लिङ्गों में होता है। अतः नित्यनपुंसक होते हैं। इसी प्रकार अन्य जगह भी इस का बोध होता है। उससे कस्य शब्द का लिङ्ग क्या है इसके ज्ञान के लिए अमरकोशादिग्रन्थ और लिङ्गानुशासन को पढ़ने चाहिए। उन शब्दों के लिङ्ग विषय में प्रामाणिक ज्ञान होता है।

9

स्त्रीप्रत्यय - चाप्, टाप्, डाप् प्रत्यय

तीनों लिङ्गों के मध्य पुरुत्व बोध के लिए और नपुंसकत्व के ज्ञान के लिए प्रत्ययान्तर अपेक्षित नहीं है। प्रातिपदिक से ही उनकी प्रतीति होती है। किन्तु स्त्रीत्वबोध के लिए कुछ प्रयास कल्पित हैं। औन वे हैं–

टाप्, डाप् चापस्त्रयोध्येते ङीप्-ङीष्-ङीन् प्रत्ययै सह।
जङ-तिभ्यां मिलिताश्चापि सन्त्यष्टौ प्रत्यया: स्त्रियाम्॥

टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ, ति ये आठ प्रत्यय स्त्रीत्व द्योतन के लिए प्रातिपदिक से होते हैं। किस प्रातिपदिक से टाप् होता है अथवा डाप् होता है ऐसा जानने के लिए प्रकृत प्रकरण प्रवर्त्त होते हैं। और यहाँ पर पाठ में टाप्, डाप्, चाप्, ङीन्, ति ये पाँच प्रत्यय किस प्रातिपदिक से होते है।'' ऐसा प्रतिपादित किया जा रहा है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- टाप्, डाप्, चाप्, ङीन्, ति इन पाँचों स्त्री प्रत्ययों को जान पाने में;
- टाप्, डाप्, चाप्, ङीन, ति ये पाँच स्त्री प्रत्ययों प्रयोग कर पाने में;
- इन प्रत्ययों के संयोजन से शब्दों में क्या-क्या परिवर्तन होता है ऐसा कर पाने में;
- इन प्रत्ययों का संयोजन करके स्त्रीलिङ्ग शब्दों का निर्माण कर पाने में;
- पठनपाठन काल में जहाँ-जहाँ शब्दों में कौन स्त्री प्रत्यय है? ऐसा सुस्पष्ट कर पाने में।

टिप्पणियाँ

अजाद्यतष्टाप्

सूत्रार्थ–स्त्रीत्व द्योत्ये होने पर आजादिगण में पठितशब्दान्त प्रातिपदिक से परे टाप् प्रत्यय होता है। एवं स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ह्रस्व अकरान्त से प्रातिपदिक से टाप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र टाप् प्रत्यय विधायक है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। अजाद्यत: यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। टाप् प्रथमा एकवचनान्त पद है। यहाँ सूत्र में स्त्रियाम् (7/1) अधिकार जाता है। अपि च ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्यय:'' और ''परश्च'' यहाँ अधिकार आ रहा है। इस सूत्र में अजाद्यत: पद में बहुव्रीहिगर्भसमाहार द्वन्द समास है। और इसका विग्रह होता है। अज: आदि: येषां ते अजादय: (अच् है आदि मे जिसके)। एवं अर्थ होता है–अचादि के और अकार दो। यहाँ अजादे: पद का अजादिगणपठितशब्द से है। अत: का हस्व अकार से अर्थ होता है। वहाँ अजादे: प्रातिपादिकात् इसका विशेषण होता है। अत: येन विधिस्तदन्तस्य इस सूत्र से अजादे: यहाँ तदन्तविधि होती है। और अजादे: का अर्थ होता है अजादिगण पठितशब्दान्त से है। एव अत: इसका भी प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। इसके बाद अत: यहाँ पर भी येन विधिरतदन्तस्य इस सूत्र से तदन्तविधि होत है। उससे अत: का अर्थ होता है ह्रस्व अकारान्त से। और सूत्रार्थ होता है–अजादिगणपठितशब्दान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर टाप् प्रत्यय पर होता है। एवं ह्रस्व अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्थ होने पर टाप् प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण:-अजा, खट्वा।

अजा

अजादिगण में पठित अज प्रातिपदिक पठित है पुन: व्यपदेशिवत् भाव से ''अजाद्यत्त भी है। और अजादिगणपठितशब्दात्त प्रातिपदिक है। अज शब्द प्रातिपदिक है। उससे स्त्रीत्व द्योतन के लिए अजाद्यतष्टाप् सूत्र से टाप् प्रत्यय होता है। और उससे अज टाप् ऐसी स्थिति होती है इसके बाद ''चुटू'' सूत्र से प्रत्यय के आदि टाप् के टकार की इत्संज्ञा होती है। और ''तक्यलोप:'' सूत्र से उसका लोप होता है। और इसके बाद अज आ यह स्थिति होती है। इसके बाद ''अक: सवर्णे दीर्घ:'' इस सूत्र से दीर्घ होने पर आजा रूप सिद्ध होता है और इसके बाद स्वादिप्रत्यय प्रयोग से प्रथमा एकवचन में अजा सुबन्त पद सिद्ध होता है। अन्य रूपों की सिद्धि प्रक्रिया अजन्त स्त्रीलिङ्ग रमाशब्द के समान हैं।

खट्वा

यहाँ खट्व शब्द प्रातिपदिक है। और इसका अन्त्यवर्ण ह्रस्व अकार है। उससे यहाँ प्रातिपदिक ह्रस्व अकारान्त है। और इसके बाद ह्रस्व अकारान्त से खट्व प्रातिपदिक से स्त्रीद्योतन के लिए अजाद्यतष्टाप् इस सूत्र से टाप् प्रत्यय होता है। और उससे खट्व टाप् होता है। इसके बाद ''चुटू'' इस सूत्र से टाप् के टकार की इत्संज्ञा होती है। और ''तस्यलोप:'' सूत्र से उसका लोप होता है। पुन: टाप् प्रत्यय के पकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा होती है। और ''तस्यलोप:'' सूत्र से उसका लोप होता है। और इसके बाद खट्व आ यह स्थिति होती है। इसके बाद ''अक: सवर्णे दीर्घ:'' इस सूत्र से दीर्घ होने पर खट्वा रूप सिद्ध होता है।

यहाँ अजादिगण में पठित शब्दों के अन्य उदाहरण हैं-अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका,

बाला, वत्सा, होडा, पाका, मन्दा, विलाता, कुञ्चा, उष्णिहा, देवविशा, ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मध्यमा, कोकिला, दंष्ट्रा आदि।

यहाँ अदन्त प्रातिपदिक के अन्य उदाहरण है–

(9.2) ''डाबुआभ्यामन्यतरस्याम्'' (4.1.13)

सूत्रार्थ–मन्नन्त प्रातिपदिक से अन्नत बहुव्रीहिसंज्ञक से और प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङाप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङाप् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। ङाप् प्रथमा एकवचनान्त पद है। उभाभ्याम् पञ्चमीद्विवचनान्त पद है। अन्यतरस्याम् अव्ययपद है। यहाँ मनः सूत्र से मन की अनुवृत्ति होती है। अनोबहुव्रीहेः इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति आती है। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' यह अधिकार आता है। ''प्रत्ययः'' (1/1) यह अधिकार और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आता है। ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से प्रातिपदिक (5/9) की अनुवृत्ति आती है। यहाँ मन् का और अन् का प्रातिपदिक से विशेषण होता है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' इस सूत्र से मनः यहाँ पर और अनः यहाँ पर तदन्त विधि होती है। उससे मनः का मन्नन्तात् यह अर्थ होता है। औ अनः का अन्नन्तात् (अद्यन्त से) से अर्थ होता है। बहुव्रीहेः भी प्रातिपदिकात् पद का विशेषण है। और सूत्र का अर्थ है ''मनन्नत प्रातिपदिक से अद्यन्त बहुव्रीहि से और प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योतक होने से विकल्प से ङाप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण-दामा, बहुयन्वा

दामा

यहाँ दामन् शब्द प्रातिपदिक है। और मन्नन्त है। अतः मन्नन्त दामन् प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योद्यतन के लिए डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्'' सूत्र से विकल्प से डाप् प्रत्यय होता है। और उससे दामन् डाप् स्थिति होती है। इसके बाद पर को ''चुटू'' सूत्र दो डकार की इत्संज्ञा होती है। उससे दामन आ स्थिति होती है। इसके बाद पर के टेः सूत्र से दामन् शब्द के टि के अन् का लोप होने पर दाम आ स्थिति होती है। और वर्णसम्मेलन होने पर दामा रूप सिद्ध होता है। डाप् प्रत्यय के अभाव में तो दामन् रूप ही बैठता है। उसी प्रकार दामा, पामा, सीमा, अतिमहिमा इत्यादि में भी बोध्य है।

बहुयज्वा

यहाँ बहुयज्वन् शब्द प्रातिपदिक है। और अन्नन्त है। पुनः यहाँ बहुव्रीहि समास भी है। अतः यह बहुव्रीहि संज्ञक भी है। और अन्नन्त बहुव्रीहि संज्ञक बहुयज्वन् प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योतन के लिए ''डाबुभाभ्यामन्यत स्थान् सूत्र से विकल्प से डाप् प्रत्यय होता है। और उससे बहुयज्वत् डाप् स्थिति होती है। इसके बाद पर को ''चुटू'' सूत्र से डकार की इत्संज्ञा होती है। और ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' उन दोनों का लोप होता है। उससे बहुयज्वन् आ स्थिति होती है। इसके पर ''टेः'' सूत्र से बहुयज्वन् शब्द के ''टेः'' सूत्र

टिप्पणियाँ

से अन् का लोप होने पर बहुयज्व् आ स्थिति होती है। और वर्णसम्मेलन होने पर बहुयज्वा रूप सिद्ध होता है। डाप् प्रत्यय के अभाव में बहुयज्वन् रूप बैठता है। उसी प्रकार सुचर्मा, सुपर्वा बहुराजा इत्यादि में भी बोध्य है।

(9.3) ''यङश्चाप्'' (4.1.74)

सूत्रार्थ–ञ्यङन्त प्रातिपदिक से और व्यङन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर चाप् प्रत्यय परे होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र द्वारा चाप् प्रत्यय का विधान होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यङ् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद हैं। चाप् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। च'' यह अव्यय पद है। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' यह अधिकार आ रहा है। ''प्रत्ययः'' (1/1) यह अधिकार और ''परश्च'' यह अधिकार आ रहा है। यहाँ ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से प्रातिपदिकात् (5/1) पद की अनुवृत्ति आती है। यहाँ यङः से ब्यडः और व्यङः का ग्रहण है। ञ्यङः ब्यङः च प्रत्ययै कृत्वा यहाँ पर ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राप्ताः'' इस नियम से तदन्तविधि होती है। उससे ब्यडः पद का ब्यङन्त से और ब्यङ् से यह अर्थ होता है। पुनः यहाँ पर ष्यङन्तात् और व्यङ्न्तात् इन दोनों पदों में प्रातिपदिक से अन्वय होता है। और सूत्रार्थ होता है–''ञ्यङन्त प्रातिपदिक से, और ष्यङन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर चाप् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–आम्वष्ट्या/कारीपगन्ध्या।

सूत्रार्थ समन्वयः

आम्बष्ठया

यहाँ आम्बष्ठय शब्द ञ्यङन्त है। क्योंकि अम्बष्ठ शब्द से अम्बष्ठस्य अपत्यं स्त्री (अम्बष्ठय की पुत्री) इस अर्थ में ''वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ्'' सूत्र से ञ्यङ् प्रत्यय होने पर अम्बष्ठ ञ्यङ् होने पर ञकार का ''चुटू'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ङकार का ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः' इस सूत्र से उन दोनों का लोप होने पर अम्बष्ठ य यह स्थिति होती है। इसके बाद ''तद्धितेष्वचामादेः'' इस सूत्र से आदि वृद्धि होने पर ''यस्येति च'' सूत्र से अम्बष्ठ शब्द के अन्त्य अकार का लोप होने पर आम्बष्ठ य रूप होता है। इसके बाद वर्णसम्मेलन करके आम्बष्ठय रूप बना। और इसी प्रकार आमबष्ठय प्रातिपदिक ञ्यङन्त है यह सुस्पष्ट ही है। और उससे स्त्रीत्व विवक्षा में ञ्यङन्त आम्बष्ठय प्रातिपदिक से ''यङश्चाप्'' सूत्र से चाप् प्रत्यय होने पर आम्बष्ठय-चाप् स्थिति होती है। इसके बाद चाप् प्रत्यय के चकार का ''चुटू'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर पकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होने पर आम्बष्ठय आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अकः सवर्णे दीर्घः'' इस सूत्र से दीर्घ होने पर आम्बष्ठया रूप सिद्ध होता है। अम्बष्ठ नामक जन की पुत्री यही उसका अर्थ है।

कारीषगन्ध्या

यहाँ कारीषगन्ध्य शब्द ष्यङन्त है। क्योंकि कारीषगन्धि शब्द से कारीषगन्धेः गोत्रापत्यं स्त्री इत्यर्थे (कारीषग्रन्धि की गोत्र पुत्री) अण् प्रत्यय होने पर करीषगन्धि अण् स्थिति में अण् प्रत्यय के स्थान पर ''अणिञोरनार्षयोर्गुरुपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे'' इस सूत्र से ब्यङ् आदेश होने पर कारीषगन्धि ष्यङ् होने पर षकार की ''षः प्रत्ययस्य'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, ङकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञक पदों का लोप होने पर कारीषगन्धि य स्थिति होती है।

इसके बाद ''तद्धितेष्वचामादेः'' सूत्र से आदिवृद्धि होने पर और ''यस्येति च'' सूत्र से कारीषगन्धि शब्द के इकार का लोप होने पर कारीषगन्ध् य रूप होता है। इसके बाद वर्णसम्मेलन करके कारीषगन्ध्य रूप बना। और इसी प्रकार कारीषगन्ध्य प्रातिपदिक ष्यङत है यह सुस्पष्ट ही है। और उससे स्त्रीत्व विवक्षा में ष्यङन्त कारीषगन्ध्य प्रातिपदिक से ''यङश्चाप्'' सूत्र से चाप् प्रत्यय होने पर कारीषगन्ध्य चाप् स्थिति होती है। इसके बाद चाप् के चकार का ''चुटू'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, पकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होने पर कारीषगन्ध्य आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर कारीषगन्ध्या रूप सिद्ध होता है। कारीषगन्धि किसी आदमी का नाम है। उसके गोत्रापत्यं स्त्री (कारीषगन्धि की पुत्री) कारीषगन्ध्या रूप बना।

(9.4) ''यूनस्तिः'' (4.1.77)

सूत्रार्थ–युवन् प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ति प्रत्यय होता है और वह तद्धित का होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ति प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में यूनः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। ''ति'' यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' (7.1) यह अधिकार आ रहा है। ''प्रत्ययः'' (1/1) यह अधिकार ''परश्च'' अधिकार और ''तद्धिताः'' यह अधिकार यहाँ आ रहा है। यहाँ ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से प्रातिपदिकात् (4/1) की अनुवृत्ति आ रही है। यहाँ यूनः प्रातिपदिक से इसका विशेषण होता है। और सूत्रार्थ होता है–''युवन् प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ति प्रत्यय होता है और वह तद्धित होता है।

उदाहरण–युवति

सूत्रार्थ समन्वय

युवति

यहाँ युवन् नान्त प्रातिपदिक है। और स्त्रीत्व विवक्षा में युवन् प्रातिपदिक से ''युनस्तिः'' सूत्र से तिप् प्रत्यय होता है। उससे युवन् ति यह स्थिति होती है। इसके बाद ''न लोपः

टिप्पणियाँ

प्रातिपदिकान्तस्ये सूत्र से युवन् शब्द के नकार का लोप होता है। और उससे युवति होता है। इसके बाद तद्धितान्त होने से ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और स्वादि कार्य होने पर युवतिः रूप सिद्ध होता है। जिसका अर्थ होता है तरुणी।

(9.5) ''शाङ्र्गखाद्यञोङीन्'' (4.1.73)

सूत्रार्थ–जातिवाचक अनुपयर्जन से शार्ङ्गनादिगण पठित अदन्त से प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीन् प्रत्यय होता है। जातिवाचक अनुपसर्जन अनन्त अदत्त और प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीन् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इससे ङीन् प्रत्यय का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। शाङ्र्गखाद्यञः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद हैं। ङीन् यह प्रथमा एकवचनान्त पद हैं। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' (7/1) अधिकार आता है। इस सूत्र में ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र ''प्रातिपदिकात्'' (5/1) सूत्र की अनुवृत्ति आती है। ''अनाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अतः (5/1) पद की अनुवृत्ति आती है। ''जातेरस्त्रीविषयादयोपद्यात्'' इस सूत्र से जातेः'' (5/1) जाते पद की अनुवृत्ति आ रही है। अनुसर्जन से (5/1) यह अधिकार यहाँ आ रहा है। ''प्रत्ययः'' (1/1) अधिकार और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आ रहा है। ''शार्ङ्गखाद्यञः'' यह समस्त पद है। और यहाँ बहुव्रीहिगर्भसमाहारद्वन्द है। और इसका विग्रह होता है-शाङ्र्गखः आदि येषां ते शाङ्र्गखादयः (शाङ्र्गख आदि में है जिसमें-शाङ्र्गखः। शार्ङ्गखादयः च अञ् च (शार्ङ्गखादिक और अञ) शाङ्र्गखाद्यञ् उससे शाङ्र्गखाद्यञः। और इसका अर्थ होता है शार्ङ्गखादि का और अञ् का। शाङ्र्गखादि का शाङ्र्गखादिगण पठित से अर्थ है। यहाँ ''जातेः'' पद और अनुपसर्जनात् पद शाङ्र्गखादि इसका विशेषण होता है। पुनः शाङ्र्गखादेः पद प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। अञः प्रत्ययग्रहण है। उससे ''प्रत्यय ग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः'' इस परिभाषा से वहाँ तदन्तविधि होती है। उससे अञः का अञन्तात् अर्थ होता है। पुनः अञन्तात् का जातेः पद और अनुसर्जनात् पद विशेषण होता है। उससे जातिवाचकात् अनुपसर्जनात् अञन्तात् यह अर्थ होता है। अञन्तात् यह प्रातिपदिकात् इसका विशेषण है। अतः यह पद भी प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। उससे ''येन विधिस्तदन्तस्य'' परिभाषा से यहाँ तदत्तविधि होती है। उससे अदन्त प्रातिपदिक से (अदन्तात् प्रातिपदिकात्) यह अर्थ होता है। और सूत्रार्थ होता है-जातिवाचक अनुपसर्जन दो शाङ्र्गखादिगण में पठित अदन्त प्रातिपदिक से द्योत्य होने ङीन् प्रत्यय होता है। जातिवाचक अनुपसर्जन अञन्त और अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीन् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–शार्ङ्गखी। वैदी।

सूत्रार्थ समन्वय

शाङ्र्गखी

यहाँ शाङ्र्गख शब्द शाङ्र्गखाडिगण में पद्धित है। पुनः जातिवाचक है। अनुपसर्जन है और अदन्त है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में ''शाङ्र्गखाद्यजोङीन्'' सूत्र से ङीन् प्रत्यय होता है। उससे

शाङ्र्गख ङीन् यह स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' इस सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे शाङ्र्गख ई स्थिति होती है। ''यचि यम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर शार्ङ्गखी रूप सिद्ध होता है। और इसकी रूप प्रक्रिया अजन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरण में गौरी शब्द के समान जाननी चाहिए।

बैदी

यहाँ वैद शब्द है। यह शब्द अञन्त है। पुनः जातिवाचक है। अनुसर्जन है और अदन्त है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में ''शाङ्र्गखाद्यञोङीन्'' सूत्र से ङीन् प्रत्यय होता है। उससे बैद ङीन् यह स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे बैद ई स्थिति होती है। ''यचि यम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकारलोप होने पर और वर्ण सम्मेलन होने पर बैदी रूप सिद्ध होता है और इसकी रूप प्रक्रिया अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरण में गौरीशब्द के समान जानना चाहिए।

(9.6) ''प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः'' (7.3.44)

सूत्रार्थ–प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व के अत् के स्थान पर इत् होता है आप् परे। किन्तु युप् के आप् परे अकार के स्थान पर इकार नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र को इत् आदेश होता है। इस सूत्र में सात पद हैं। प्रत्ययस्थात् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''कात्'' पञ्चम्यत्त पद है। ''पूर्वस्य'' यह षष्ठयन्त पद है। अतः यह षष्ठयन्त पद है। इद् प्रथमान्त पद है। आपि सप्तम्यन्त पद है। असुपः यह पञ्चम्यन्त पद है। असुपः यह पद समस्त है। यहाँ नञ् तत्पुरुषसमास है। और इसका विग्रह है न सुप् इति अयुप्। तस्मात् असुपः। प्रत्ययस्यात् यह पद कात् पद का विशेषण है। कात् पद पूर्वस्य पद का विशेषण है। पूर्वस्य पद अतः का विशेषण होता है। और इस सूत्र का अर्थ होता है ''प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व अकार के स्थान पर आप् परे इकार होता है। किन्तु सप् के आप् परे अत् के स्थान पर इद् नहीं होता है। इत् में यहाँ तकार उच्चारण के लिए है किन्तु श्रवण के लिए नहीं होता है।

उदाहरण–कारिका, बालिका इत्यादि उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय

कारिका

यहाँ कृ धातु से ''व्वुल्तृचौ'' सूत्र से व्वुल् प्रत्यय होने पर कृ व्वुल् होने पर ''चुटू'' सूत्र से णकार की इत्संज्ञा होने पर और लकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होने पर कृ वु होता है। और इसके बाद ''युवोरनाकौ'' सूत्र

से वु के स्थान पर अक आदेश होने पर कृ अक होता है। ''अचोर्ञ्णिति:'' सूत्र से ऋकार के स्थान पर वृद्धि करके कार् अक होने पर और वर्णसम्मेलन में कारक: शब्द सिद्ध होता है। इसके बाद कृदन्त होने से ''कृन्तद्धित समासाश्च'' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा में कारक के अदन्त प्रातिपदिकत्व से ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर टाप् के टकार का ''चुटू'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, पकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, ''तस्यलोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होने पर कारक आ स्थिति होती है। तब टाप् प्रत्यय परे अकरूप प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व अकार के स्थान पर ''प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यातइदाप्यसुप:'' सूत्र से इत् आदेश होने पर कारिक आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अक: सवर्णे दीर्घ:'' सूत्र से सवर्णदीर्घ होने पर कारिका रूप सिद्ध होता है।

अन्य उदाहरण हैं–बालिका, अश्वपालिका, अध्यापिका, तारिका, हारिका, धारिका, परिव्राजिका, शयिका, नायिकाय, गायिका, पाचिका, पाठिका इत्यादि।

पाठगत प्रश्न

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये जा रहे हैं।

1. कितने लिङ्ग होते हैं वे कौन से हैं?
2. कितने स्त्री प्रत्यय हैं?
3. अजाद्यतष्टाप् सूत्र से क्या विधान है?
4. युनरित सूत्र से क्या विधान होता है?
5. दामा यहाँ कौन सा स्त्री प्रत्यय है?
6. ''यङश्चाप्'' सूत्र से क्या विधान होता है?
7. अजादिपद में कौन सा समास और कौन विग्रह हैं?
8. पुंस्त्व का शास्त्रीय लक्षण क्या है?
9. स्त्रीत्व का शास्त्रीय लक्षण क्या है?
10. नपुंसकत्व का शास्त्रीय लक्षण क्या है?
11. सिद्धान्त में लिङ्ग कितने होते हैं?

पाठ सार

यहाँ पाठ में टाप्, डाप्, ङीन् ति इन पाँच स्त्रीप्रत्ययों का वर्णन है। यहाँ सर्वप्रथम टाप् प्रत्यय विधायक ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र की भाख्यान है। और उसके उदाहरण दिये गये हैं पुन: डाप्

प्रत्यय विधायक ''डावुभाभ्यामन्यतरस्याम्'' सूत्र का व्याख्यान और उदाहरण हैं। इसके बाद चाप् प्रत्यय विधायक ''यङश्चाप्'' सूत्र का व्याख्यान और उदाहरण हैं। एवं तिप्रत्ययविधायक ''युनस्तिः'' सूत्र की व्याख्या है। पुनः ङीन् प्रत्ययविधायक ''शाङ्र्गखाद्यञोङीन्'' सूत्र की व्याख्या की गई और उसके उदाहरण साधे गये हैं। ''प्रत्ययस्थाल्कात्पूर्वस्यात् इदाप्यसुपः'' सूत्र की व्याख्यान की गई और उदाहरणों की सिद्धि दर्शायी गई है।

पाठान्त प्रश्न

यहाँ पर परीक्षोपयोगी प्रष्टव्य प्रश्न दिये गये हैं–

1. ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या लिखो?
2. ''डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिये?
3. ''यङश्चाप्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या करो?
4. युनस्ति सूत्र की सोदाहरण व्याख्या लिखो?
5. ''शाङ्र्गखाद्यञोङीन्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या करो?
6. प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः सूत्र की व्याख्या लिखो?
7. कारिका प्रयोग की सिद्धि प्रक्रिया को लिखो?
8. शार्ङ्गखी प्रयोग की सिद्धिप्रक्रिया लिखो?
9. कारीबगन्ध्या प्रयोग की सिद्धि प्रक्रिया लिखो?
10. बहुयज्वा प्रयोग की सिद्धि प्रक्रिया प्रदर्शित करो?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. तीन लिङ्ग होते हैं? स्त्रीत्व, पुरत्व और नपुंसकत्व हैं।
2. आठ स्त्री प्रत्यय होते हैं?
3. अजाद्यतष्टाप् सूत्र से टाप् प्रत्यय होते हैं?
4. यूनस्ति सूत्र से ति प्रत्यय होता है।
5. दामा यहाँ डाप् प्रत्यय है।

6. यडश्चाप् सूत्र से चाप् प्रत्यय होता है।

7. अजादिपद में बहुव्रीहि समास है। और इसका अजः आदिः येषां ते अजादयः बि यह विग्रह है।

8. सत्वरजतम प्राकृत गुणों का अपचयः स्त्रीत्व है।

10. सत्व, रज, स्तम प्राकृत गुणों का स्थिति मात्र नपुंसकत्व है?

11. पदार्थनिष्ठ।

नौवां पाठ समाप्त

10

स्त्रीप्रत्यय - ङीप् प्रत्यय

यहाँ स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के आदि में ही वर्णित जो आठ प्रत्यय हैं उनमें ङीप् प्रत्यय भी प्रमुख है। उसके विधायक अनेक सूत्र हैं। उनमें–ऋन्नेभ्यो ङीप् उगितश्चः वयसिप्रथमे, द्विगोः, ''वर्णादनुदान्तान्तोपधात् तो नः'', ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठवउञ्कञ्क् वरपः ये सूत्र यहाँ मुख्य रूप से चिन्तन करने योगय हैं। और उनके यहाँ व्याख्यान प्रस्तुत किये गये हैं–

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- ङीप् प्रत्यय को जान पाने में;
- ङीप् प्रत्यय किस प्रातिपदिक से होता है यह जान पाने में;
- ङीप् प्रत्ययान्तशब्द को जान पाने में;
- ङीप् प्रत्यय के संयोजन से शब्दपरिवर्तन को जान पाने में;
- ङीप् प्रत्यय का संयोजन करके स्त्रीलिङ्ग शब्दों के निर्माण कर पाने में;
- पठन पाठन काल में जहाँ-जहाँ शब्दों में ङीप् प्रत्यय है अथवा नहीं है यह सुस्पष्ट जान पाने में।

(10.1) ''ऋनेभ्योङीप्'' (4.1.5)

सूत्रार्थः–ऋदन्त प्रातिपदिक से और नान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

सूत्रावतरण–यहाँ टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ये छः मुख्यस्त्री प्रत्यय हैं। उनमें ङीप् प्रत्यय भी एक है। उस प्रत्यय के विधान के लिए भगवान् पाणिनी ने ऋनेभ्यो ङीप् सूत्र की रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। ऋन्नेभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। ङीप् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। यहाँ सूत्र में स्त्रियाम् (7/1) यह अधिकार आ रहा है। और ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् (5/1) सूत्र की अनुवृत्ति भी आती है।

''प्रत्ययः'' (1/1) अधिकार और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आ रहा है। ऋन्नोभ्यः यह पद समस्त (पूरा) है। और यहाँ इतरेतरयाग द्वन्द समास है। और उसका यहाँ विग्रह है ऋत् च नश्च इति ऋन्न, तेभ्यः, ऋन्नेभ्यः। एवं इसका अर्थ है ऋदन्त नान्त। वहाँ ऋतः यह और नात् प्रातिपदिकात् इसका विशेषण है। इसके बाद ''येन विधिस्तदन्तस्य'' इस सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे ऋदन्तात् प्रातिपदिकात् नान्तात् और प्रातिपदिकात् प्राप्त होता है। और उसके बाद सूत्र का अर्थ है–''ऋदन्त प्रातिपदिक से और नान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–कर्त्री, दण्डिनी।

सूत्रार्थ समन्वय

कर्त्री

यहाँ कर्तृ शब्द ऋदन्त है और ''कृन्तद्धितसमासाश्च'' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञक भी है। कर्तृपद ऋदन्त प्रातिपदिक है। उससे स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''ऋन्नेभ्यो ङीप्'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे कर्तृ ङीप् होता है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे कर्तृ ई स्थिति होती है। इसके बाद पर को ''इको यणचि'' सूत्र से यणादेश होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर कर्त्री रूप सिद्ध होता है।

दण्डिनी

यहाँ दण्डिन् शब्द नान्त है और ''कृत्तद्धितसामासाश्च'' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञक भी है। दण्डिन् शब्द नान्त प्रातिपदिक है। उससे स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे दण्डिन्+ङीप् होता है। इसके बाद ''लशक्वतद्धितेः'' इस सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र उन दोनों का लोप होता है। उससे दण्ड्डन्+ई स्थिति होती है। इसके बाद पर वर्णसम्मेलन होने पर दण्डिनी रूप सिद्ध होता है।

(10.2) ''उगितश्च'' (4.1.6)

सूत्रार्थ–उगित अन्त वाले प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से ङीप् प्रत्यय का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। उगितः पञ्चमी एक वचनान्त पद है। च अव्यय पद है। यहाँ ऋन्नेभ्यो ङीप् सूत्र से ङीप् सूत्र से ङीप् की अनुवृत्ति आती है। यहाँ सूत्र में स्त्रियाम् (7/1) अधिकार आ रहा है। और ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् (4/1) की अनुवृत्ति आती है। प्रत्ययः (1/1) यह अधिकार और परश्च अधिकार यहाँ आता है। उगितः यह पद समस्त (सम्पूर्ण) है। और यहाँ बहुव्रीहि समास है। और उसका विग्रह होता है–उक् इत् यस्य सः उगित्, तस्य उगितः। वहाँ उगितः पद प्रातिपदिकात् पद का विशेषण होता है। और उसके बाद ''येन विधि स्तदन्तस्य'' इस सूत्र से यहाँ तदन्तविधि होती है। उससे उगिदन्तात् प्रातिपदिकात् प्राप्त होता है। इसके बाद सूत्र का अर्थ होता है–''उगित प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–पचन्ती। भवन्ती।नमन्ती।पठन्ती।पतन्ती

सूत्रार्थ समन्वय

पचन्ती–पच् धातु ''वर्तमानेलट्'' सूत्र से लट् प्रत्यय होने पर पच् लट् होता है। इसके बाद लट् के स्थान पर ''लटःशतृशानचावप्रथमासमावाधिकरणे'' सूत्र से शतृ प्रत्यय होने पर पच् शतृ होने पर शकार की ''लशक्ततद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप होने पर ऋकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर पच्+अत् होता है। इसके बाद शतृ शित् से ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इस सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा होने पर ''कर्त्तरिशप्'' सूत्र से शप् प्रत्यय होने पर पच् शप् अत् होता है। इसके बाद शकार की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर पकार की ''हलन्त्यम्'' सूा से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर पच् अ अत् होता है और इसके बाद ''अतो गुणे'' सूत्र से पररूप होने पर पचत् सिद्ध होता है। वहाँ शतृ प्रत्यय की ऋकार की इत्संज्ञा होती है। उससे शतृप्रत्यय उगित् है। और इसके बाद पचत् शब्द उगिदन्त है। और ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' सूत्र से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा भी होती है। उससे पचत् उगिदन्त प्रातिपदिक है। अतः उगिदन्त प्रातिपदिक से पचत् इससे ''उगितश्च'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे पचत् ङीप् होता है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे पचत् ई होता है। इसके बाद ''शप्श्यनोनित्यम्'' सूत्र से नुम् आगम होने पर पचन्त ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर पचन्ती रूप सिद्ध होती है।

भवन्ती

भू धातु से ''वर्तमानेलट्'' सूत्र से लट् प्रत्यय होने पर भू लट् होता है। इसके बाद लट् के स्थान पर ''लटः शतृशानचाव प्रथमासमानाधिकरणे'' इस सूत्र से शतृ प्रत्यय होने पर भू शतृ होने पर शकार का ''लशक्वतद्धिते'' इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप होने पर ऋकार की ''उपदेशेऽजनुनासिकइत'' इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर भू अत् होता है। इसके बाद शतृ के शित्व से ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' सूत्र से सार्वध ातुक संज्ञा होने पर ''कर्न्तरिशप्'' इस सूत्र से शप् प्रत्यय होने पर भू शप् अत् होता है। इसके

टिप्पणियाँ

बाद शकार की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर भू अ अत् होता है। और इसके बाद शप् का भी शित्व सार्वधातुक से ''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' सूत्र से भू के ऊकार का गुण होने पर ओकार में ''एचोऽयवायावः'' सूत्र से अव् आदेश होने पर भत् अ अत् होने पर ''अतो गुणे'' सूत्र से पररूप होने पर भवत् सिद्ध होता है। यहाँ शतृप्रत्यय की इत्संज्ञा होती है। उससे शतृप्रत्यय उगित् है। और इसके बाद भवत् शब्द उगिदन्त है। और ''कृत्तद्धित समासाश्च'' सूत्र से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। इससे भवत् शब्द उगिदन्त प्रातिपदिक है। अतः उगिदन्त प्रातिपदिक से भवत् से ''उगितश्च'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे भवत् ङीप् होता है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों का लोप होता है। उससे भवत् ई होता है। इसके बाद नुमागम होने पर और अनुबन्धलोप होने पर भवन्ती रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार अन्य उदाहरण ही इस प्रकार सिद्ध होते हैं।

(10.3) ''वयसिप्रथमे'' (4.1.20)

सूत्रार्थ–प्रथमवयवाचक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। वयसि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। प्रथमे सप्तमी एकवचान्त पद है। यहाँ ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र से ङीप् (1/1) पद है और ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अत् (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ सूत्र में ''प्रथमे'' यह ''वयसि'' पद का विशेषण है। और वयसि प्रातिपदिक से इसका विशेषण होता है। उससे प्रथमवयवाचक से अर्थ आता है। अतः प्रातिपदिकात् इसका विशेषण होता है। और इसके बाद ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि होता है। उससे अदन्त प्रातिपातिपदिकात् अर्थ होता है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है–''प्रथमवयवाचक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है प्राणियों के कालकृत अवस्था विशेष वय है। और वय तीन प्रकार की होती है। कौमारं, यौवनं, वार्धकम्।

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
पुत्रस्तु स्थाविरे भावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति॥

एक स्त्री के बारे में कहा गया है कि बचपन में पिता रक्षा करता है। यौवनकाल (जवानअवस्था) में पति रक्षा करता है बुढ़ापे में पुत्र सहारा होता है इसी प्रकार स्त्री कभी भी स्वतंत्र नहीं है। यह शास्त्रवचन प्रमाण है। कुछ आचार्यों के मत में आयु चार प्रकार की होती है–उसी प्रकार पद्य है–

आद्ये वयसि नाद्यीतं द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये न तपस्तप्तं चतुर्थे किं करिष्यति॥

इसी तीन प्रकार की होती है अथवा चार प्रकार की होती है। प्रथम अवस्था तो कुमार्यावस्था ही होती है। उदाहरण:–कुमारी, वधूरी, चिरन्टी।

सूत्रार्थ समन्वय

कुमारी

कुमार शब्द अदन्त है और प्रातिपदिक भी है। उसी प्रकार प्रथम वय में विद्यमान शिशुवाचक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में प्रथमवयवाचक अदन्त कुमार शब्द प्रातिपदिक ''वयसिप्रथमे'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे कुमार ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। और ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे कुमार ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से कुमार की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर कुमारी रूप सिद्ध होता है।

(10.4) ''द्विगो:'' (4.1.21)

सूत्रार्थ–अदन्त द्विगुसंज्ञक से प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान करता है इस सूत्र में एक ही पद है। ''द्विगो:'' पञ्च्यम्यन्त पद है। यहाँ ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र से ङीप् (1/1) पद है, और ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अत: (4/1) पद की अनुवृत्ति आती है। यहाँ पर सूत्र में ''स्त्रियाम्'' (6/1) अधिकार आता है। और ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' (4/1) पद की अनुवृत्ति होती है। प्रत्यय (1/1) और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आ रहा है।

यहाँ सूत्र में ''द्विगो:'' यह प्रातिपदिकात् इसका विशेषण होता है। और इसके बाद ''येन विधि स्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे अदन्त प्रातिपदिक से यह अर्थ होता है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है–द्विगुसंज्ञक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–त्रिलोकी। त्रिपादी। अष्टाध्यायी। पञ्चवटी चतु:सूत्री। दशरथी। पञ्चमी। पञ्चलक्षणी।

सूत्रार्थ समन्वय

त्रिलोकी

त्रिलोक शब्द में द्विगु समास है। उसी प्रकार त्रयाणां लोकानां समाहार: इस विग्रह में ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' सूत्र से समास होता है। इसके बाद ''संख्यापूर्वो द्विगु:'' सूत्र से उसकी द्विगु संज्ञा होती है। इसी प्रकार त्रिलोक शब्द अदन्त है। और प्रातिपदिक है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में द्विगुसंज्ञक अदन्त त्रिलोक प्रातिपदिक से ''द्विगो:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे त्रिलोक ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की

टिप्पणियाँ

इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। और ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे त्रिलोक ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से त्रिलोक की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्थेति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर त्रिलोकी रूप सिद्ध होता है।

(10.5) ''वर्णादनुदात्तान्तोपधान्तोनः''

सूत्रार्थ–वर्णवाचक तोपध अनुपसर्जन से अनुदातान्त अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीप् प्रत्यय होता है और तकार के स्थान पर नकार होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में चार पद हैं। वर्णात् पञ्चभ्यन्त पद है। अनुदात्तात् यह पञ्चम्यन्त पद है। तोपधात् यह पञ्चभ्यन्त पद है। तः यह षष्ठयन्त पद है। नः प्रथमान्त पद है। यहाँ सूत्र में ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र से ङीप् (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अतः (4/1) पद की अनुवृत्ति होती है। ''मनोरौ वा'' इस सूत्र से विकल्प से अव्यय पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' अधिकार आता है। और ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' (4/1) की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्ययः'' (1/1) और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आ रहा है। तोपधात् यह समस्त पद यहाँ है। यहाँ बहुव्रीहिसमास है। उसी प्रकार तः उपधा यस्य सः लोपधः (त है उपधा में जिसके) तस्मात् तोपधात्। यहाँ सूत्र में अनुदान्तात् यहाँ पर और अतः यहाँ पर तदन्त विधि होती है। अनुदान्तात् से अनुदान्तान्तात् यह अर्थ है। अतः का अदन्तात् (अदन्त से) यह अर्थ होता है। वर्णात् पद, तोमधात् पद, अनुपसर्जनात् पद और प्रातिपदिकात् पद इसके ही विशेषण हैं। उससे सूत्र का अर्थ होता है–''वर्णवाची, तोपध अनुपसर्जन अनुदातान्त अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीप् प्रत्यय होता है और तकार के स्थान पर नकार होता है।

उदाहरण–एनी एता। रोहिणी रोहिता। श्येनीश्येता। हरिणी हरिता।

''सूत्रार्थ समन्वय''

एनी, एता

यहाँ पर एत शब्द है। यहाँ चित्रवर्ण का वाचक है। पुनः इस शब्द के उपधा में तकार है। अतः यह शब्द तोपध भी है। एत इस शब्द के अन्त्य अकार अनुदात है। अतः यह शब्द अनुदातान्त भी है। अनुपसर्जन भी है। पुनः अदन्त भी है। और अपि प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में वर्णवाचक तोपध अनुदातान्त अनुरार्जन अदन्त एत प्रातिपदिक से ''वर्णादनुदात्तातोपधातो नः'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है और तकार का नकार होता है। उससे एन ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे एनई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से एन की भ संज्ञा होती है। और उससे ''यस्थेति च'' सूत्र से अन्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन में एनी रूप सिद्ध होता है। और

इसी प्रकार ''वर्णादनुदान्तान्तोपधातोन:'' यह सूत्र से विकल्प से प्रवृत्त होता है। जब इस सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होती है तब एत के अदत्त स्त्रीत्व विवक्षा में ''अजाद्यतत्यप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर एता रूप सिद्ध होता है।

रोहिणी, रोहिता

यहाँ रोहित शब्द है। यह रक्त वर्ण का वाचक है। पुन: इस शब्द के उपधा में तकार है। अत: यह शब्द तोपध भी है। रोहित शब्द के अन्त्य अकार अनुदात है। अत: यह शब्द अनुदातान्त भी है। अनुपसर्जन भी है। पुन: अदन्त है। और अपि प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में वर्णवाचक तोपध अनुदात्तात्त अनुपसर्जन अदन्त रोहित प्रातिपदिक ''वर्णादनुदात्तान्तोपध ातोन:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है और तकार का नकार होता है। उससे रोहिन ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद लशक्ववद्धिते सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' इससे दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे रोहित ई स्थिति बनी। इसके बाद ''यचिञम्'' सूत्र से रोहित की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येतिच'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और नकार के णकार होने और वर्णसम्मेलन होने पर रोहिणी रूप सिद्ध होता है। पुन: ''वर्णादबुदात्तात्तोपद्यातोन:'' यह सूत्र विकल्प से प्रवर्त्तत होता है। और उसी प्रकार जब इस सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होती है, तब रोहित शब्द के अदन्त स्त्रीत्व विवक्षा में ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर रोहिता रूप सिद्ध होता है।

(10.6) ''टिडाणञ्दयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्कञ्कञ्क्वरप:'' (8.1.15)

सूत्रार्थ–टिढन्त ढ प्रत्ययान्त, अण् प्रत्ययान्त, अञ् प्रत्ययान्त, द्वथसच् प्रत्ययान्त, दहनञ् प्रत्ययान्त, मात्रच् प्रत्ययान्त, तयद् प्रत्ययान्त, ठक् प्रत्ययान्त, ठञ् प्रत्ययान्त, कञ् प्रत्ययान्त, क्वरप् प्रत्ययान्त, अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्य द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में एक ही पद है। ''टिट्टाणञ्दयसज्दघ्नञ् मात्रच् तपप्ठक्ठञ्कञ्कवरप:'' यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। यहाँ सूत्र में ''ऋन्नेम्योङीप्'' सूत्र से ङीप् (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अत: (4/1) पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ सूत्र में स्त्रियाम् (7/1) अधिकार आता है। और ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' (4/1) पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्यय:'' (1/1) और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आता है। यहाँ अनुपसर्जनात् अधिकार आता है। ''टिड्ढाणञ्दयसज्दध्नञ्मात्रध्तयप्उक्द्धञ्कञ्क्वरप:'' यह समस्त पद है। और यहाँ समाहारद्वन्दसमास है। और इसका विग्रह होता है। ''टित् च ढ: च अण् च अञ् च द्वयसच् च दध्नञ् च मात्र च् तपप् च ठक् च ठञ् च कञ् च क्वरप्'' यह टिड्ढाणञ्ढययञ्दध्नञ् मात्रच् तयप् ठक्ठञ्कञ्क्वरप्। तस्मात् टिड्ढाणञ्दयसञ्दयसञ्ढध्नग्मात्रच्तय पृ ठक्ठञ्कञ्क्वरप:''। यहाँ टित् पद समस्त है। और यहाँ बहुव्रीहि समास है। और उसका विग्रह होता है ट् इत यस्य स: टित्। अर्थात् टकार इत्संज्ञक। यहां सूत्र में टित् पद से टित प्रातिपदिक का के प्रत्यय और

टिप्पणियाँ

धातु का ग्रहण है। पुनः दिदंश में तदन्तनिधि होता है। उससे टित् से टिङतात् अर्थ होता है। सूत्र में ढ से आरम्भ होकर क्वरप् पर्यन्त सभी प्रत्यय आते हैं। और सभी जगह ''प्रत्ययग्रहणेतदन्ता ग्राह्या'' इस परिभाषा से तदन्त विधि होती है। और उससे ढप्रत्ययान्त से, अण् प्रत्ययान्त से, ठक् प्रत्ययान्तसे, ठञ्प्रत्ययान्त से, कञ्प्रत्ययान्त से, क्वरप् प्रत्ययान्त से उनमें यह अर्थ प्राप्त होता है। इन सब का भी प्रातिपदिक में अन्वय होता है। यहाँ सूत्र में अतः यह प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। उससे अतः इस अंश में ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे अतः का अदन्तात् यह अर्थ होता है। ''अनुपसर्जनात'' यह भी ''प्रातिपदिकात्'' यहाँ अन्वय होती है। और सूत्रार्थ होता है–''टिङत प्रल्ययान्त अण् प्रत्ययान्त अञ्प्रत्ययान्त द्वयसज् प्रत्ययान्त ठहनञ् प्रत्ययान्त मात्रच् प्रत्ययान्त तपप्प्रत्ययान्त ठक्प्रत्ययान्त ठञ्प्रत्ययान्त कञ्प्रत्ययान्त क्वरप् प्रत्ययान्त अनुसर्जन अदन्त प्रातिपदिकतो स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए।

उदाहरण–नदी। कुरुचरी। सौपर्णेयी। ऐन्द्री। कुम्भकारी। औत्सी। ऊरुद्वयसी। ऊरुदध्नी। ऊरुमानी। पञ्चतयी। आक्षिकी। लावणिकी। यादृशी। इत्वरी।

सूत्रार्थ समन्वय

नदी

टिडन्त अदन्त अनुपरार्जन प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। इस अंश का यह उदाहरण है। यहाँ पर नठट् शब्द है। इसके टकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होता है। उससे नठ अवशेष रहता है। यहाँ टित् प्रातिपदिक है। और व्यवदेशिवत् भाव से टिदन्तम् भी है। अदन्त भी है। अनुसर्जन भी है। उस टिडन्त अनुपसर्जन अदन्त नद प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ्मात्र च्तपप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' इस सूत्र से ङीप प्रत्यय होता है। उससे जद ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप हो जाता है। उससे नद ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से नद की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येतिच'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर नदी रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार देवी चोरी इत्यादि भी बोध्य है।

कुरुचरी

टिदन्त अनुसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। इस सूत्र का यह उदाहरण है। यहाँ पर कुरुचर शब्द है। यह शब्द कुरुषु चरति इस अर्थ में कुरु सु चर से ''चरेष्ट'' सूत्र से ट प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। उससे अय शब्द टिङन्त है। और यह अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक भी है। अतः टिडन्त अनुपसर्जन अदन्त से कुरुचर शब्द से प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ। मात्रच्तयपठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' इस सूत्र से ङीप प्रत्यय होता है। उससे कुरुचर ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' इस सूत्र से ङीप के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे कुरुचर ई स्थिति होती है। इसके

बाद ''यचियम्'' सूत्र से कुरुचर शब्द की भसंज्ञा होती है। उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्ण सम्मेलन होने पर कुरुचरी रूप सिद्ध होता है।

सौपर्णेयी

ढ प्रत्ययान्त अनुयसर्जन से अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। यह इस सूत्र का उदाहरण है। यहाँ सौपर्णेय शब्द है। यह शब्दर सुपठर्या: अपत्यं स्त्री अर्थ में ''स्त्रीभ्यो ढक्'' इस सूत्र से ढक प्रत्यय होने रूप सिद्ध होता है। उससे यह शब्द ढप्रत्ययान्त है। और अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक भी है। अत: ढप्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त से सौपर्णेय प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''टिड्ढाणञ् द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तय प्ढक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे सौपर्णेय ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से सौपर्णेय की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर सौपर्णेयी रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार वैनतेयी इत्यादि में भी बोध्य है।

ऐन्द्री

अणन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। यही इसका उदाहरण है। यहाँ पर ऐन्द्र शब्द है। यह शब्द इन्द्र: देवता अस्या: इस विग्रह में इन्द्र शब्द से सास्य देवता सूत्र से अण् प्रत्यय होने पर इन्द्र शब्द सिद्ध होता है। और यह शब्द अण् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इसी प्रकार अण् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से ऐन्द्र प्रातिपदिक ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे ऐन्द्र ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन दोनों इत्सांकों का लोप होता है। उससे ऐन्द्र ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचि भग्'' सूत्र से ऐन्द्र की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य के अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर ऐन्द्री रूप सिद्ध होती है।

कुम्भकारी

अणन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। इस अंश का यह उदाहरण है। यहां कुम्भकार शब्द है। यह शब्द कुम्भं करोति विग्रह में कुम्भ अम् कृ धातु से ''कर्मण्यण्'' सूत्र से अण् प्रत्यय होने पर कुम्भकार सिद्ध होता है। और यह शब्द अण् प्रव्ययान्त है। अदन्त भी हैं। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इसी प्रकार अण् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से कुम्भकार प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठ क्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होता है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से दोनों का लोप होता है। उस कुम्भकार ई स्थित बनी। इसके बाद ''यचि भम्'' सूत्र से कुम्भकार की भसंज्ञा होती। और उससे ''यस्येतिच'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर कुम्भकारी रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणियाँ

औत्सी

यह अञन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है यह इस अंश का उदाहरण है। यहां पर औत्स है। अयं शब्दः उत्सस्य इयम् इस विग्रह में उत्स शब्द से ''उत्सादिभ्योऽञ्'' सूत्र से अञ् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और यह शब्द अञ् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इस प्रकार अञ् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन औत्स शब्द प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' इस सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे औत्स ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वर्ताद्वते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे औत्स ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचि ञम्'' सूत्र से औत्स की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्ण सम्मेलन होने पर औत्सी रूप सिद्ध होती है।

ऊरुद्वयसी

यह द्वयसज् अन्त वाले अनुपञ्सर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''ङीप् प्रत्यय होना चाहिए यह इसका उदाहरण है। यहाँ अरुद्वयस शब्द है। यह शब्द ऊरु प्रमाणम् अस्याः इस विग्रह में ऊरु शब्द से प्रमाण में द्वयसजदघ्नञ्मात्रनः सूत्र से द्वयसच प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और यह शब्द द्वयसच्प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार द्वयसच्प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से ऊरुद्वयस् प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्ढघ्नञ्मात्रच्यतण्ढक्कञ्क्कञ्क्वरपः'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे ऊरुद्वयस ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे ऊरुद्वयस्+ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचि भम्'' सूत्र से ऊरुद्वयस् की ञसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर ऊरुद्वयसी रूप सिद्ध होता है।

ऊरुदघ्नी

यह दघ्नजत्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है यह इस अंश का उदाहरण है। यहाँ ऊरुदघ्न है। यह शब्द ऊरु प्रमाणम अस्था विग्रहे ऊरु शब्द प्रमाण में द्वयसजदघ्नञ् मात्रच.... सूत्र से दघ्नच् प्रत्यय होने पर रूप सिद्ध होता है। और इसी प्रकार अय शब्द दघ्नच्प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इसी प्रकार दघ्नच् प्रव्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन ऊरुदघ्न प्रातिपदिक ''टिड्ढाणञ्दयराज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठकठञ्कज् क्वरपः'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे ऊरुदघ्न+ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। और उससे ऊरुदघ्न ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से ऊरुदघ्न की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर ऊरुदघ्नी रूप सिद्ध होता है।

ऊरुमात्री

यह मात्रच् अन्तवाला अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय का यह अंश उदाहरण है। यहाँ पर ऊरुमात्र शब्द है। यह शब्द ऊरु प्रमाणम् अस्या इस विग्रह में ऊरु शब्द से प्रमाण में ''द्वयसजदघ्नञ्मात्रचः'' सूत्र से मात्रच् प्रत्यय होने पर ऊरुमात्र शब्द सिद्ध होता है। और यह शब्द मात्रच् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार मात्रच् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन ऊरुमात्र प्रातिपदिक ''टिडढाणञ् द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्कञ्कञ्क्वरपः'' इस सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे ऊरुमात्र ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते:'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' इससे उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे ऊरुदघ्न ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से ऊरुदघ्न की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर ऊरुदघ्नी रूप सिद्ध होती है।

पञ्चतयी

यह तयप् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है वह इस अंश का उदाहरण है। यहाँ पर पञ्चतय शब्द है। यह शब्द पञ्च अवयव अस्थाः इस विग्रह में पञ्च शब्द से ''संख्याया: अवयवेतयप्'' सूत्र से तयप् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और इसी प्रकार यह शब्द तपप् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार ''तयप् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन पञ्चतय प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' इस से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे पञ्चतय ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है।

''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे पञ्चतय ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिञम्'' सूत्र से पञ्चतय की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर पञ्चतयी रूप सिद्ध होता है।

आक्षिकी

यह हक् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन ये अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए यह इस अंश का उदाहरण है। यहाँ पर आक्षिक हैं। यह शब्द अक्षैः दीव्यति विग्रह में अक्ष शब्द से तेन दीव्यति खनति जयति त्रितम् सूत्र से ठक् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और यह शब्द ठक् प्रत्ययास्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। एव ठक् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से आक्षिक प्रातिपदिक से ''टिङढाणञ्दयसञ्दघ्नञ्मात्रच्त यप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे आक्षिक ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे आक्षिक ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से आक्षिक शब्द की भ संज्ञा होती है और

उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर आक्षिकी रूप सिद्ध होता है।

लावणिकी

यह ठञ् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए यह अंश इसका उदाहरण है। यहाँ लावणिक है। यह शब्द लवणं पव्यम् अस्था इति विग्रहे लवण शब्द से ''लवणाट् ठञ्'' सूत्र से ठञ् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और इसी प्रकार यह शब्द ठञ् प्रव्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इसी प्रकार ''ठञ् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से लावणिक प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच् तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे लावणिक ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' इस सूत्र उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे लावणिक ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचि यम्'' सूत्र से लावणिक की ञ संज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर लावणिकी रूप सिद्ध होता है।

यादृशी

यह कञ् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए यह इस अंश का उदाहरण है। यहाँ यादृश शब्द है। यह शब्द यत् शब्द से ''त्यदादिषु दृशोऽनालोचनेकञ्'' सूत्र से कञ् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और इसी प्रकार अयं शब्द कञ् प्रत्ययान्त है। यह अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार कञ् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से यादृश प्रातिपदिक से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दहनञ्मात्रच्तय प्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे यादृश ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे यादृश ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से यादृश शब्द की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्थेति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर यादृशी रूप सिद्ध होता है।

इत्वरी

यह क्वरप् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रव्यय होती चाहिए उस अंश का यह उदाहरण है यहाँ पर इत्वर शब्द है। यह शब्द इण् धातु से ''इष्नशलिसर्तिभ्य: क्वरप्'' सूत्र से क्वरप् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और उसी प्रकार यह शब्द क्वरप् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार क्वरप्प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन इत्वर प्रातिपदिक से ''टिड्ढाञ्दयसज्दध्नञ्मात्रच्तयप् ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय है। उससे इत्वर ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वणद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे इत्वर ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से इत्वर की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च''

सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर इत्वरी रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न

यहाँ कुछ पाठगतप्रश्न दिये जा रहे हैं।

1. ''ऋयेभ्य:'' पद में कौन सा समास है और उसका विग्रह क्या है?
2. उगित: पद में कौन समास है और कौन सा विग्रह है?
3. तोपधात् पद में कौन सा समास है और विग्रह क्या है?
4. कुञ्जकारी इसका विग्रह कौन सा है?
5. ऊरुद्वयसी का अर्थ क्या हैं?
6. पञ्चतयी का अर्थ क्या है?

पाठ सार

''ऋन्नेन्यो ङीप्'' सूत्र ङीप् प्रत्यय विधायक सूत्रों में प्रमुख सूत्र है। उसके सर्वप्रथम यहाँ पाठ में व्याख्या आती है। इसके बाद ''उगितश्च'' सूत्र की व्याख्या है। इसके बाद ''वयसिप्रथमे'' सूत्र की व्याख्या है। इसके बाद ''12 द्विय:'' सूत्र की व्याख्या है। इसके बाद ''वर्णादनुदात्तात्तोपधात् तो न:'' सूत्र का व्याख्यान है। और अन्तिम में ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र की व्याख्या है।

पाठान्त प्रश्न

यहाँ पर परीक्षा उपयोगी पूछने योग्य प्रश्न दिये जा रहे हैं।

1. ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र की व्याख्या लिखो?
2. ''उगितश्च'' सूत्र की व्याख्या करो?
3. ''वयसि प्रथमे'' सूत्र का व्याख्यान करो?
4. ''द्विगो:' सूत्र की व्याख्यान करो?
5. ''वर्णादनुदात्तान्तोपधात् तो न:'' सूत्र की व्याख्या लिखो?
6. ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
7. सौपर्णेयी प्रयोग सिद्ध करो?

8. कुमारी प्रयोग को सिद्ध कीजिये?

9. भवन्ती प्रयोग की सिद्धि प्रक्रिया लिखो?

10. इत्वरी प्रयोग की सिद्धि लिखो?

11. रोहिणी, रोहिता, इन दानों प्रयोगों की सिद्धि कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. ऋन्नेभ्यः पद में इतरेतरयोगद्वन्दसमास है और उसका विग्रह होता है–ऋच्च्च नश्च (ऋकार और नकार) ऋन्नः, तेभ्य (उनसे) ऋन्नेभ्यः।

2. उगितः पद में बहुव्रीहि समास है। और उसका विग्रह होता है–उक् इत् यस्य सः उगित्। (उक है इत्संज्ञक जिसके वह है उगितः) उगितः।

3. तोपधात् पद में बहुव्रीहि समास है। और उसका विग्रह है–तः उपधा यस्य सः तोपधः (त है उपधा में जिसके वह) तस्मात् तोपधात्।

4. कुम्भं करोति या सा कुभ्भकरी यह विग्रह का रूप सिद्ध करो?

5. ऊरु प्रमाणम् अस्थाः (जंघा है प्रमाण जिसके) ऊरुद्वयसी का अर्थ है?

6. पञ्च अवयवाः अस्था (पञ्च अवयव है जिसके) पञ्चतयी का अर्थ है।

दसवाँ पाठ समाप्त

11

स्त्रीप्रत्यय - ङीप् प्रत्यय

यहाँ स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के आदि में ही वर्णित जो आठ प्रत्यय हैं उनमें ङीप् प्रत्यय भी प्रमुख है। उसके विधायक अनेक सूत्र हैं। उनका ही यहाँ व्याख्यान किया जा रहा है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- ङीष् प्रत्यय को जान पाने में;
- ङीष् प्रत्यय किससे प्रातिपदिक होता है जान पाने में;
- ङीष् प्रत्ययान्त शब्द को जान पाने में;
- ङीष् प्रत्यय के संयोजन शब्दों में क्या-क्या परिवर्तन होता है जान पाने में;
- ङीष् प्रत्यय संयोजन करके स्त्रीलिङ्ग शब्दों का निर्माण कर पाने में;
- पठनपाठन काल में जहाँ-जहाँ शब्दों में ङीष् प्रत्यय होता है अथवा नहीं। यह सुस्पष्ट जान पाने में।

(11.1) ''षिदगौरादिभ्यश्च'' (4.1.89)

सूत्रार्थः–षिदन्त अदन्त प्रातिपदिक, गौरादिगणपठितशब्दान्त अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण

ङीप्, ङीष्, ङीन्, इन तीन प्रत्ययों में ङीष प्रत्यय अन्यतम् है। उसके विधान के लिए ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' सूत्र भगवान् पाणिनि ने रचा।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। षिद्गौरादिभ्य: यह पञ्चम्यन्त पद है। और ''च'' अव्यय पद है। यहाँ सूत्र में ''अन्यतों ङीष्'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति होती है। और अजाद्यतष्टाप्-- सूत्र से ''अत:'' पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङयाप्प्रातिपदिकातै सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ पर ''प्रत्यय:'' और ''परश्च'' अधिकार आता है। यहाँ पर ''षिद्गौरादिभ्य:'' पद समस्त है। और यहाँ बहुव्रीहिगर्भेन्तरेतरयोग द्वन्द समास है। और यहाँ विग्रह होता है ष् इत् यस्य स: षित्। गौर: आदि: येषां ते गौरादय:। गौ: राष्ट्र शब्द में है जिसके षिद्गौरादय: तेभ्य: षिद्गौरादिभ्य:। उससे इस शब्द का अर्थ होता है षित् का और गौर आदि का। और गौरादि का अर्थ गौरादिगण में पठित।

सूत्रार्थ विचार

यहाँ सूत्र में षिद्गौरादिभ्य: पद प्रातिपदिकात् पद का विशेषण है। उससे ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि है। और इसके बाद (षिदन्तात् गौरादिगणपठितप्रशब्दान्तात्) षित और गौरादिगण में पठित शब्दान्त से अर्थ आता है। पुन: अत: का भी प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। उससे अत: यहाँ भी ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि होती है। उससे अत: पद का अदन्तात् यह अर्थ प्राप्त होता है। एवं सभी पदों के संयोजन से सूत्रार्थ होता है'' षिदन्त अदन्त प्रातिपदिक से और गौरादिगण पठित शब्दों जो अदन्त प्रातिपदिक है। उनसे स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–नर्त्तकी, खनकी, रजकी इत्यादि षित के उदाहरण है। गौरी, सुन्दरी, नटी, कटी, पितामही, मातामही, इत्यादि गौरादिगण के उदाहरण हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–नर्त्तकी, गौरी इन दोनों उदाहरणों के सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

नर्त्तकी

नृत् धातु से ''शिल्पिनी ष्वुन्'' सूत्र से ष्वुन् प्रत्यय होने पर नृत् ष्वुन् स्थिति होती है। इसके बाद ''षकारस्य ष:'' प्रत्यय का इस सूत्र से षकार की और ''हलन्त्यम्'' सूत्र से नकार की इत्संज्ञाह होती है। इसके बाद ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन लोगों के लोप होने पर नृत् वु स्थिति होती हे। इसके बाद वु के आर्धधातुक संज्ञा से और ''पुगन्तलघूपघस्य च'' सूत्र से उपधा में गुण होने पर ''बु'' के स्थान पर अक आदेश होने पर नर्तक शब्द सिद्ध होता है। यहाँ ष्वुन् प्रत्यय षिद् है। उससे नर्त्तक शब्द षिदन्त है। अदन्त है। और कृदन्त होने से प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व की विवक्षा में षिदन्त अदन्त नर्त्तक प्रातिपदिक ''षिद्गौरादिम्यिश्च'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे नर्तक ङीष् स्थिति होती है। उसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन

दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उन से नर्तक ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिञम्'' सूत्र से नर्तक की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर नर्त्तकी रूप सिद्ध होता है।

गौरी

गौरादिगण में गौर शब्द पठित है। उससे यह शब्द गौरादिगण में पठित है। और व्यपदेशिवत् भाव से गौरादिगणपठित शब्दान्त का भी है। इसी प्रकार यह अदन्त है, और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में गौरादिगणपठित अदन्त शब्दान्त गौर शब्द प्रातिपदिक से ''षिद् गौरादिभ्यश्च'' सू। से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे गौर ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' इस सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे गौर ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिञम्'' सूत्र से गौर की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर गौरी रूप सिद्ध होता है।

(11.2) ''वोतोगुणवचनात्'' (4.1.44)

सूत्रार्थ–गुणवाचक अनुपसर्जन उदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योतक होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''वोतोगुणवचनात्'' सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। ''उतः'' पञ्चम्यन्त पद है। ''गुववचनात्'' पञ्चम्यन्त पद है। ''वा'' यह अव्ययपद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' पद की अनुवृत्ति होती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्ययः'' अधिकार और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आता है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ गुणवचनात् का गुणवाचक से अर्थ है। और यह पद प्रातिपदिकात् का विशेषण है। उतः पद भी ''प्रातिपदिकात्'' का विशेषण है और उससे ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि होती है। उससे उतः का उदन्तात् यह अर्थ होता है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है–''गुणवाची अनुपसर्जन उदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–मृद्वी, मृदुः। लध्वी, लघुः। गुर्वी, गुरुः। तन्ती, तनुः। पृथ्वी, पृथुः। साध्वी साधुः। पट्वी, पटुः। इत्यादि उदन्त गुणवाचक के उदाहरण होते हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–मृद्वी, मृदुः, यहाँ सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

मृद्वी, मृदुः–यहाँ मृदु शब्द है। यह शब्द गुणवाचक है। उदन्त है। और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में गुणवाचक मृदु प्रातिपदिक से ''वोतोगुणवचनात्'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे मृदु ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के

टिप्पणियाँ

ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे मृदु ई स्थिति होती है। इसके बाद ''इको यणचि'' सूत्र से यण आदेश होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर मृद्वी रूपं सिद्ध होता है। और जब ङीष् प्रत्यय नहीं होता है तब मृदुः रूप होता है।

(11.3) ''बह्वादिभ्यश्च'' (बहु आदि)

सूत्रार्थ–बह्वादिगण में पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''बह्वादिभ्यश्च'' सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। बह्वादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। ''च'' अव्यय पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ ''अन्यतो ङीष्'' सूत्र से ङीष् की अनुवृत्ति आती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिप्रदिकात्'' की अनुवृत्ति आती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्यय'' यह अधिकार और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आता है। यहाँ ''बह्वादिभ्यः'' पद समस्त है। और यहाँ बहुव्रीहिसमास है। इसका विग्रह होता है–बहुः आदिः येषां ते बह्वादयः, तेभ्यः बह्वादिभ्यः। इसका बहु आदिगण में पठित शब्दों से यही अर्थ है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ बह्वादिभ्यः प्रातिपदिकात् का विशेषण है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है–''बह्वादिगण में पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–बह्वी, बहुः। कपी, कपिः। अही, अहिः। मुनी, मुनिः। इत्यादि बह्वादिगण के उदाहरण हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–बह्वी, बहुः यहाँ सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

बह्वी, बहु–यहाँ बहु शब्द है। यह शब्द बह्वादि गण में पठित है। और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में बह्वादिगण में पठित बहु प्रातिपदिक से ''बह्वादिभ्यश्च'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे बहु ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे बहु ई स्थिति होती है। इसके बाद ''इकोयणचि'' सूत्र यण आदेश होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर बह्वी रूप सिद्ध होता है। जो ङीष् प्रत्यय नहीं होता है तब बहुः रूप सिद्ध होता है।

(11.4) ''इतो मनुष्य जातेः'' (4.1.64)

सूत्रार्थ–मनुष्य जाति वाचक अनुपसर्जन इदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''इतो मनुष्यजातेः'' यह सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। इतः यह पञ्चम्यन्त पद है। मनुष्यजातेः यह पञ्चम्यन्त पद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति होती है। द्वय सूत्र में ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' पद की अनुवृत्ति होती है। अनुपसर्जनात् अधिकार, ''प्रत्ययः'' अधिकार, और ''परश्च'' अधि कार है। यहाँ ''मनुष्य जातेः'' पद समस्त है। और यहाँ पर षष्ठीतत्पुरुषसमास है। इसका विग्रह है ''मनुष्याणां जातिः, मनुष्य जातिः तस्या मनुष्यजाते। यहाँ मनुष्य जातिवाचक से अर्थ है।

सूत्रार्थ–यहाँ इतः पद प्रातिपदिक का विशेषण होता है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे इतः का इदत्तात् यह अर्थ प्राप्त होता है। मनुष्यजातेः भी प्रातिपदिकात् का विशेषण है। और इसके बाद सूत्र का अर्थ होता है ''मनुष्य जातिवाचक अनुपसर्जन द्वदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–दाक्षी। प्लाक्षी। औदमेयी। अवन्ती। कुन्ती इत्यादि इदन्त मनुष्य जाति वाचक के उदाहरण है।

सूत्रार्थ–''दाक्षी'' यहाँ पर सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

दाक्षी–दाक्षि शब्द है। यह शब्द मनुष्य जाति वाचक है। और यह इदन्त भी है और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में इदन्त मनुष्य जातिवाचक से दाक्षि प्रातिपदिक से ''इतो मनुष्य जातेः'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे दाक्षि ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। तेन दाक्षि ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से इकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर दाक्षी रूप सिद्ध होता है।

(11.5) ''पुंयोगादाख्यायाम्''

सूत्रार्थ–''पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान पुरुषवाचक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीन प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। इसके विधान के लिए पुंयोगादाख्यायाम् सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद

टिप्पणियाँ

हैं। पुंयोगाद् यह पञ्चम्येकवचनान्तपद है। आख्यायाम् यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। परन्तु यहाँ पञ्चमी अर्थ में सप्तमी विभक्ति है, उससे आख्यायाम् के स्थान पर आख्याया: जानना चाहिए। यहाँ पर ''अन्यतोङीष्'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' की अनुवृत्ति आती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्यय:'' अधिकार, और ''परश्च'' अधिकार है। यहाँ र पुंयोगात् के और पुरुषसम्बन्ध से अर्थ बोध्य है। एवं आख्याशब्द का वाचक अर्थ है। उससे आख्याया: का वाचकात् अर्थ जानना चाहिए। यहाँ किसका वाचक की जिज्ञासा में पुंयोग से पदसान्निध्यवश से पुरुषवाचक से प्राप्त होता है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ पुंयोगात् का स्त्रियाम् से अन्वय होता है। और स्त्रियाम् का ''पुरुषवाचकात्'' से अन्वय होता है। पुरुषवाचक का प्रातिपदिक से अन्वय है। अत: यह पद प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। अत: ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि होती है। उससे अत: का अदन्तात् यह अर्थ प्राप्त होता है। और सर्वपदसंयोजन से सूत्र का अर्थ होता है। ''पुरुषसम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान पुरुषवाचक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीष्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''जातेस्त्रीविषयादयोपधात्'' सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। जाते: यह पञ्चम्यन्त पद है। अस्त्रीविषयाद् यह पञ्चम्यन्त पद है। ''अयोपधात्'' पञ्चम्यन्त पद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष्'' सूत्र से ङीश् पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से प्रातिपदिकात् की अनुवृत्ति होती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्यय:'' अधिकार, और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आता है। यहाँ पर अस्त्रीविषयात् पद समस्त है। और यहाँ पर बहुव्रीहि गर्भ नञ्तत्पुरुष समास है। इसका विग्रह होता है स्त्री विषय: यस्य स: स्त्रीविषय:। अस्य च नित्यस्त्रीलिङ्ग: इत्यर्थ (स्त्री विषय है जिसका वह है स्त्रीविषय और यह निव्यस्त्रीलिङ्ग है) न स्त्रीविषय: यस्य स: अस्त्रीविषय:। (नहीं है स्त्री विषय जिसका अस्त्री विषय) तस्मात् अस्त्रीविषयात्। अस्य नित्य स्त्रीलिङ्गमिन्नात् (नित्यस्त्रीलिङ्ग भिन्न से) अनियतस्त्रीलिङ्गात् तक है। पुन: अयोपध से ये भी समस्त पद है। यहाँ भी बहुव्रीहिगर्मनञ्तत्पुरुषसमास है। और इसका विग्रह होता है य: उपधा यस्य स: योपद्य (य है जिसके उपधा में, न योपध यह योपध है, तस्मात् अयोपस्तात्। और इसका यकार उपधा भिन्न यही अर्थ है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ जाते: पद है, अस्त्री विषयात् पद है, अयोपधात् पद है। और अनुपसर्जनात् पद इसका विशेषण है। उससे सूत्र का अर्थ होता है–''अनियतस्त्रीलिङ्ग यकारोपध भिन्न अनुपसर्जन जातिवाचक प्रापिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–तटी, कुक्कुटी, सूकरी, वृषली, कठी, वह्वची, औपगर्वा, इत्यादि उदाहरण हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–तटी, वृषली, कठी इन तीनों उदाहरणों में इस सूत्रार्थ का समन्वय किया जा रहा है।

वटी–यहाँ तट शब्द है। यह शब्द त्रिलिङ्गी है। यहाँ से अनिमतस्त्रीलिङ्ग है। इस शब्द के

उपधा में यकार नहीं है। अत: यह यकारोपधभिन्न भी है। और अनुपसर्जन भी है। पुन: जातिवाचक भी है। और इसी प्रकार प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में अनियत स्त्रीलिङ्ग से अयोपध अनुपसर्जन जातिवाचक तट प्रातिपदिक से ''जातेरस्त्री विषयादयोपधात्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे तट ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे तट ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार काल लोप होने और वर्ण सम्मेलन होने पर तटी रूप सिद्ध होता है।

वृषली–यहाँ वृषल शब्द है। यह शब्द द्विलिङ्ग है इससे अनियतस्त्रीलिङ्ग है। इस शब्द के उपधा में यकार नहीं है। अत: यकारोपधमिन्न भी है। और अनुसर्जन भी है। पुन: वाचक भी है। और इसी प्रकार प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में ''अनियतस्त्रीविषयोपद्यात्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे वृषल ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। इससे वृषल ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर वृषली रूप सिद्ध होता है।

कठी–यहाँ कठ शब्द है। यह शब्द द्विलिङ्गी है। इससे अनियतस्त्रीलिङ्ग है। इस शब्द की उपधा में यकार नहीं है। अत: यकारोपध भिन्न भी है। और अनुपसर्जन भी है। पुन: जातिवाचक भी है। इसी प्रकार प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में अनियतस्त्रीलिङ्ग अयोपध अनुपसर्ग जातिवाचक कठ शब्द प्रातिपदिक से ''नातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे कठ ङीष् स्थिति होती है। ''यचि भम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर कठी रूप सिद्ध होता है।

(11.6) ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' (4.1.54)

सूत्रार्थ–संयोगोपध भिन्न और उपसर्जनीभूत जो स्वाङ्ग, उस प्रकार के स्वाङ्वाची अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीज, इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' सूत्र भगवान पाणिनी ने रचा।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है इस सूत्र से ङीष् प्रत्यय का विधान होता है। इस सूत्र में चार पद हैं। स्वाङ्गात् यह पञ्चम्यन्त पद है। ''च'' अव्यय पद है। उपसर्जनात् पञ्चम्यन्त पद है। असंयोगोपधात् यह पञ्चम्यन्न पद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति आती है। ''बोतोगुणवचनात्'' सूत्र से ''वा'' पद की अनुवृत्ति होती है। ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अत: पद की अनुवृत्ति आती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' पद की अनुवृत्ति आती है। यहाँ सूत्र में ''प्रत्यय:'' अधिकार और ''परश्च'' अधिकार आता

टिप्पणियाँ

है। असंयोगोपधात् पद समस्त है। और यहाँ पर बहुव्रीहिगर्भनञ्तत्पुरुषसमास है। और इसका विग्रह है-संयोगः उपधायां यस्य सः संयोगोपधः (संयोग उपधा में है जिसके) न संयोगोपधः इति असंयोगोपधः, तस्मात् असंयोगोपधात् (नहीं है संयोग जिसकी उपधा में असंयोगोपध उससे असंयोगोपधा से। और इसका संयोगोपधभिन्न से अर्थ है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ पर उपसर्जनात् और असंयोगोपधात् स्वाङ्गात् पद का विशेषण है। अर्थात् उपसर्जन, असंयोगोपध स्वाङ्गवाची पद का विशेषण है। उससे संयोगोपधभिन्न और उपसर्जन जो स्वाङ्गम् प्राप्त होता है। पुनः स्वाङ्गात् पद प्रातिपदिकात् का विशेषण है। अतः पद भी प्रातिपदिकात् का विशेषण है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे स्वाङ्गन्त अदन्त यह अर्थ प्राप्त होता है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है संयोगोपधभिन्न और उपसर्जनीभूत जो स्वाङ्ग हे उस स्वाङ्गवाचक अदन्त प्रातिपदिक शब्द से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–अतिकेशी, अतिकेशा। चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा। सुकेशी, सुकेशा। पीनस्तनी, पीनस्तना इत्यादि उदाहरण हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–अतिकेशी, अतिकेशा। चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा यहाँ पर सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

अतिकेशी, अतिकेशा–यहाँ अतिकेश शब्द है। यहाँ केशशब्द स्वाङ्गवाचक है। पुनः केशशब्द की उपधा में संयोग नहीं है अतः यह असंयोगोपध भी है। और इस का अर्थ है केशान् अतिक्रान्तः। वह केश पदार्थ अतिक्रान्त अर्थ में उपसर्जन भी है। और इसी प्रकार असंयोगोपध उपसर्जनी भूत स्वाङ्गवाचक शब्द केश शब्द है। उस प्रकार केशशब्दान्त अदन्त प्रातिपदिक अतिकेश होता है। और इसी प्रकार असंयोगोपध और उपसर्जनीभूत स्वाङ्ग केश तदन्त अदन्त शब्द अतिकेश प्रातिपदिक से स्त्रीत्व विवक्षा में ''स्वाङ्गच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे अतिकेश ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे अतिकेश ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येतिच'' सूत्र से अकार लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर अतिदेशी रूप सिद्ध होता है। और जब ङीष् प्रत्यय नहीं होता है तब ''अजाव्यतष्टाप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर अतिकेश टाप् स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर अतिकेश आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अकःसवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ एकादेश होने पर अतिकेशा रूप सिद्ध होता है।

चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा–यहाँ पर चन्द्रमुख शब्द है। यहाँ मुखशब्द स्वाङ्गवाचक है। पुनः मुखशब्द के उपधा में संयोग नहीं है। अतः असंयोगोपध भी है। और इसका अर्थ भी होता है–चन्द्रसदृशमुखवान् (चन्द्रमा के समान मुख वाला) उस मुखपदार्थ का अन्यपदार्थ में उपजर्सन भी है। और इस प्रकार असंयोगोपध उपसर्जनीभूत स्वाङ्गवाचक शब्द मुख शब्द है। इस प्रकार मुखशब्दान्त अदनत प्रातिपदिक चन्द्रमुख शब्द होता है। और उसी प्रकार असंयोगोपध और उपसर्जनीभूत स्वाङ्ग मुख उस अदन्त चन्द्रमुख प्रातिपदिक से स्त्रीत्व विवक्षा में ''स्वाङ्गच्चोपसर्मनादसंयोगोपधात्'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे चन्द्रमुख

ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे चन्द्रमुख ई स्थिति होती है। ''यचि भम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर चन्द्रमुखी रूप सिद्ध होता है। और जब ङीष् प्रत्यय नहीं होता है तब ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर चन्द्रमुख टाप् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर चन्द्रमुख आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अकः सवर्णेदीर्घः'' सूत्र दीर्घ एकादेश होने पर चन्द्रमुखा रूप सिद्ध होता है।

(11.9) ''क्रीतात्करणपूर्वात्'' (8.9.40)

सूत्रार्थ–करण पूर्वक्रीतान्त अनुपसर्जन 'अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणम्–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''क्रीतात्करणपूर्वात्'' सूत्र की भगवान पाणिनी ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। क्रीतात् यह पञ्चम्यन्त पद है। करणपूर्वात् यह पञ्चम्यन्त पद है। यहाँ पर ''अन्यतो ङीष्'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति आती है। और ''अजाद्यलष्टाप्'' सूत्र से अतः पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' सूत्र की अनुवृत्ति आती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्ययः'' अधिकार और ''परश्च'' अधिकार सूत्र यहाँ आता है। यहाँ पर करणपूर्वात् पद समस्त है। और यहाँ बहुव्रीहिसमास है। और उसका विग्रह होता है करणं पूर्वं यस्य सः करणपूर्वः, तस्मात् करणपूर्वात्। (करण पूर्व में है जिसके वह है करण पूर्वः उससे करणपूर्व से। और इसका अर्थ है करणपूर्वकात्।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ पर अतः पद है और ''क्रीतात्'' और ''प्रातिपदिकात्'' इसका विशेषण है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि है। और उससे अदन्त क्रीतान्त अर्थ प्राप्त होता है। करणपूर्वात् पद भी ''प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। और इसके बाद सूत्र का अर्थ होता है–''करणपूर्व क्रीतान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–वस्त्रक्रीती। अश्वक्रीती।

सूत्रार्थ समन्वय–वस्त्रक्रीती यहाँ पर सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

वस्त्रक्रीती–यहाँ पर वस्त्रक्रीत शब्द है। यह शब्द क्रीतान्त है। और पुनः अदन्त भी इस शब्द का पूर्व भाग है। वस्त्र और उसका करण है। अतः यह शब्द करणपूर्वक भी है। और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में करण पूर्वक क्रीतान्त अदन्त प्रातिपदिक वस्त्रक्रीत शब्द से ''क्रीतात्करणपूर्वात्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे वस्त्रक्रीत ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे वस्त्रक्रीत

टिप्पणियाँ

ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर वस्त्रक्रीती रूप सिद्ध होता है।

(11.7) ''इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारण्ययवयवनमालुलाचार्याणांमानुक्''

सूत्रार्थ–इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम्, अरव्य, यव, यवन मातुल आचार्य इन अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष प्रत्यय होता है तथा इन्द्रादि प्रातिपदिकों का आनुक् आगम होता है।

सूत्रावरण–ङीष्, ङीष्, ङीन्, इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए भगवान पाणिनी ने इन्द्रवरुण भवशर्व रुद्रमृडहिमारव्ययवयवनमातुलाचार्यानामानुक्'' सूत्र की रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीष प्रत्यय और आनुक् आगम् का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं।'' इन्द्रवरुणभवशर्वरु द्रमृड हिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणाम्'' पद षष्ठी बहुवचनान्त है। ''आनुक्'' यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय पद की अनुवृत्ति होती है। ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृत्ति होती है। ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अतः और इति पद की अनुवृत्ति आती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' की अनुवृत्ति होती है। ''अनुपसर्जनात्'' यह अधिकार सूत्र, ''प्रत्ययः'' अधिकार और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आता है। यहाँ ''इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणाम्'' यह समस्त पद है। और यहाँ पर इतरेतरयोगद्वन्दसमास है। और इसका विग्रह है इन्द्रश्च वरुणश्च भवश्य शर्वश्च रुद्रश्च मृडश्च हिमं च अख्यं च यवश्च यवनश्च मातुलश्च आचार्यश्च इति इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारव्ययवयवनमातुल आचार्याः''। तेषाम् इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारव्ययवयवमातुलाचार्यालाम् इति। (इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अख्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य)। इन्द्र वरुणभवशर्वरुद्रमृड हिम अख्ययवयवन मातुल आचार्य का।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ अतः पद है और प्रातिपदिकात् इसका विशेषण है। अतः ''येन विधि स्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि है। और उससे अदन्तात् (अदन्त से) यह अर्थ प्राप्त होता है। ''इन्द्रवरुणभवशर्वकद्रमृड हिमारव्ययवयवनमातुलाचार्याणाम् पद भी प्रातिपदिकात् का विशेषण है। और इसके बाद इन्द्र वरुण भव शर्व रुद्र मूड हिम अरण्य यव यवन मातुल आचार्य इन अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है और इन्द्रादि प्रातिपदिकों से आनुक् आगम होता है। यहाँ यह बोध्य है कि यह इद्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, मातुल, आचार्य इन आठ प्रातिपदिकों से पुरुषसम्बन्ध दशा में होता है। अर्थात् उसकी स्त्री होने पर ङीष् प्रत्यय और आनुक आगम् होता है। हिम अरण्य इन दो प्रातिपदिकों से तो महत्त्व अर्थ में होता है। यव इस प्रातिपदिक से दुष्ट अर्थ होने पर होता है। यवन और इससे लिपि अर्थ में ङीष् प्रत्यय और आनुक आगम लिपि अर्थ में होता है।

उदाहरण–इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृदानी, हिमानी, अरण्यानी, यवानी, यवनानी, मातुलानी, आचार्यानी ये उदाहरण हैं–

इन्द्राणी–यहाँ पर इन्द्र शब्द है। यह शब्द देवराज का वाचक है। परन्तु परन्तु देवराज इन्द्र के साथ जिस शचीदेवी स्त्री का विवाह है उस शची देवी के लिए भी यह इन्द्रशब्द प्रयुक्त किया जाता है। अत: यह इन्द्रशब्द पुरुषसम्बन्ध से स्त्री में भी विद्यमान होता है। और यह अदन्त भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान अदन्त इन्द्र शब्द से प्रातिपदिक से ''पुंयोगाढारव्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है, और इन्द्र प्रातिपदिक का आनुक् आगम होता है। उससे इन्द्र आनुक् ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है और आनुक् के उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिकइत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे इन्द्र आन ई स्थिति होती है। इसके बाद इन्द्र आन यहाँ ''अक: सवर्णे दीर्घ:'' सूत्र से दीर्घ होने पर इन्द्रान ई इस स्थिति में वर्णसम्मेलन में इन्द्राणी होने पर ''अट्कुप्वाङ्नुभ्वयवायेऽपि'' सूत्र से णत्व होने पर इन्द्राणी रूप सिद्ध करो। और उसका अर्थ है इन्द्र की स्त्री।

वरुणानी–यहाँ पर वरुण शब्द है। यह शब्द जलदेव का वाचक है। परन्तु जलदेव के साथ जिस स्त्री का विवाह सम्पन्न हुआ है उसके लिए यह शब्द प्रयुक्त किया जाता है। अत: यह वरुण शब्द पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में भी विद्यमान होता है। और यह अदन्त भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में पुरुषसम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान अदन्त वरुण प्रातिपदिक शब्द से ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है और ''वरुण प्रातिपदिक से आनुक् का आगम होता है। उससे वरुण आनुक ङीष् की स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र ङीष् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से वकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक् के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। आनुक् और उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे वरुण आन ई स्थिति होती है। इसके बाद वरुण आन् यहाँ पर ''अक:सवर्णे दीर्घ:'' सूत्र से होने पर दीघे प्राप्ति पर वरुणान् ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर वरुणानी रूप सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है वरुण की स्त्री। और इसी प्रकार भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी इत्यादि रूप भी सिद्ध होते हैं। यहाँ विस्तारभय से लिख नहीं रहे है। यहाँ भवानी का अर्थ है भव की स्त्री। शर्वाणी का अर्थ है शर्व की स्त्री।

आचार्यानी–यहाँ आचार्य शब्द है। यह शब्द अध्यापक वाचक है। परन्तु अध्यापक के साथ जिसका विवाह हुआ है उसके लिए भी यह आचार्य शब्द प्रयोग किया जाता है। अत: यह आचार्यशब्द पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान होता है। और यह अदन्त भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में पुरुषसम्बन्ध से स्त्री में भी विद्यमान होता है। यह अदन्त भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान् अदन्त आचार्य प्रातिपदिक पर ''पुंयोगादारव्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। और आचार्य प्रातिपदिक का आनुक आगम होता है। इससे आचार्य आनुक् ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के डकार की इत्संज्ञा

टिप्पणियाँ

होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। उस इत्संज्ञक षकार का ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप होता है। उससे आचार्य आन् ई स्थिति होती है। इसके बाद आचार्य आन यहाँ ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर आचार्यान् ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर आचार्यानी सिद्ध होती है। यहाँ यद्यपि नकार के स्थान पर ''अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि'' सूत्र से णकार प्राप्त है किन्तु ''आचार्यादणत्वं च'' वातिक से नकार के णकार का निषेध होता है। उससे आचार्यानी रूप सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है आचार्य की स्त्री।

हिमानी–यह हिम प्रातिपदिक है। और यह अदन्त भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में अदन्त हिम प्रातिपदिक से परे ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। हिम प्रातिपदिक शब्द से आनुक् आगम होता है। और उससे हिम आनुक ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक् के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है आनुक् के उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से इन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे हिम आन् ई स्थिति होती है। इसके बाद हिम आन् यहाँ पर ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर हिमान् ई स्थिति में वर्ण सम्मेलन होने पर हिमानी सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है महद् हिमम् (विशाल वर्क वाला)।

अख्यानी–यहाँ अख्य शब्द प्रातिपदिक है। और यह अदन्त भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में अदन्त अरण्य प्रातिपदिक से परे ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है और अरण प्रातिपदिक का आनुक आगम् होता है। उससे वरुण आनुक् ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है उससे अरण्य आन ई स्थिति होती है। इसके बाद अख्य आन यहाँ पर ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर अख्यान ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर अख्यानी सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है महद् अख्यम् (बड़ा जंगल)

यवानी–यहाँ यव शब्द प्रातिपदिक है। और यह अदन्त भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में अदन्त यव प्रातिपदिक से परे ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। और यव प्रातिपदिक का आजुक आगम होता है। उससे यव आतुक ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तथ्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है और आनुक के उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे यव आन् ई स्थिति होती है। इसके बाद यवआन यहाँ पर व अकः सवर्णेदीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने यवान् ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर यवानी सिद्ध होता है। और अर्थ है दुष्टा यवा।

यवनानी–यहाँ यवन प्रातिपदिक है। और यह अदन्त भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में अदन्त यवन प्रातिपदिक से ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीश् प्रत्यय होता है। और यवन प्रातिपदिक आनुक आगम होता है। उससे यवन आनुक ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते''

सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक् के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है और आनुक के उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से इन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे यवन आन ई स्थिति होती है। इसके बाद यवन आन यहाँ ''अकः सवर्णेदीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर यवनान् ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर यवनानी रूप सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है–यवनानां लिपिः (यवनों की लिपि)।

पाठगत प्रश्न

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये जा रहे हैं।

1. गौरादयः इस पद में क्या समास है? और क्या विग्रह है?
2. अस्त्रीविषयात् पद का क्या अर्थ है?
3. संयोगोपद्यः पद में क्या समास है? और क्या विग्रह है?
4. गुणवचनात् पद का क्या अर्थ है?
5. करणपूर्वात् पद में कौन सा समास और कौन सा विग्रह है?
6. वस्त्रक्रीती का लौकिक विग्रह वाक्य लिखो?
7. अतिकेशी का लौकिक विग्रह वाक्य क्या है?
8. औपगवी का अर्थ क्या है?

पाठ सार

इस पाठ में ङीष् प्रत्यय का विवेचन है। यहाँ सर्वप्रथम ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' सूत्र का व्याख्यान है। इसके बाद ''वोतोगुणवचनात्'' सूत्र की व्याख्या है। इसके बाद ''बह्वादिभ्यश्च'' सूत्र का विवेचन है। इसके पश्चात् ''इतो मनुष्यजातेः'' सूत्र का सोदाहरण व्याख्यान है। पुनः ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र की व्याख्या प्रदर्शित की गई है। अतः के आगे ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद संयोगोपधात्'' सूत्र की व्याख्यान किया गया है। और अन्तिम में ''क्रीतात्पूर्वात्करणपूर्वात्'' सूत्र की व्याख्यान है। और अन्त में ''इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमाख्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्'' सूत्र का सोदाहरण व्याख्यान है।

पाठान्त प्रश्न

यहाँ परीक्षोप योगी पूछने योग्य प्रश्न दिये जा रहे हैं–

1. ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
2. ''वोतोगुणवचनात्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
3. इतो मनुष्यजातेः सूत्र की व्याख्या कीजिये?
4. ''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
5. ''स्वाङ्गच्चोपसर्जनादसंयोगपधात्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
6. ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
7. ''इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
8. गौरी प्रयोग की सिद्धि लिखो?
9. नर्त्तकी प्रयोग की सिद्धि लिखो?
10. मृद्वी, मृदुः प्रयोग की सिद्धि लिखो?
11. दाक्षी प्रयोग की सिद्धि लिखो?
12. वस्त्रक्रीती प्रयोग की सिद्धि लिखो?
13. चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा प्रयोग की सिद्धि लिखो?
14. तटी प्रयोग की सिद्धि लिखो?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. गौरादय पद में बहुव्रीहि समास है और गौरः आदि येषां ते गौरादयः विग्रह है।
2. ''अस्त्रीविषयात्'' का नित्यस्त्रीलिङ्गनिन्न से अर्थ है।
3. संयोगोपधः पद में बहुव्रीहि समास है। संयोग उपधा में है जिसके वह संयोगोपधः।
4. गुणवचनात् पद का अर्थ गुणवाचक से है।
5. करणपूर्वात् पद में बहुव्रीहि समास है। करणं पूर्वं यस्य सः करणपूर्वः? तस्मात् करणपूर्वात् विग्रह है।
6. वस्त्रकीती का लौकिक विग्रह वाक्य होता है वस्त्रैः क्रीता (वस्त्रों से खरीदा गया) वस्त्रक्रीती।
7. केशान् अतिक्रान्ता यह अतिकेशी का लौकिक विग्रह वाक्य है।
8. उपगोः अपत्यं स्त्री का औपगवी अर्थ होता है।

ग्यारहवाँ पाठ समाप्त